हमारे पूज्य तीर्थ

[भारत के लगभग सभी प्रमुख धामों, द्वादश ज्योतिर्लिंगो, सप्तपुरियो, त्रिस्थलियों तथा अन्यान्य महत्त्वपूर्ण तीर्थस्थलो की धार्मिक-ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का सचित्र वर्णन तथा तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए आवागमन सुविधाओ, आवश्यक साज-सामान व खाद्य-पदार्थों की उपलब्धता का पूरा-पूरा लेखा-जोखा।]

द्वितीय पूर्णतया संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण
175 से अधिक छायाचित्र

पुस्तक महल®
खारी बावली, दिल्ली-110006
नया शो रूम : 10-B, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली-110002

प्रकाशक

पुस्तक महल, दिल्ली-110006

सम्बद्ध संस्था

हिन्द पुस्तक भण्डार, दिल्ली-110006

बिक्री केन्द्र

1 गली केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार दिल्ली-110006
फोन 265403, 268292
2 खारी बावली, दिल्ली-110006
फोन 239314
3 10 B, नेता जी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
फोन 268293

प्रशासनिक कार्यालय

F-2/16, अन्सारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली-110002
फोन 276539, 272783, 272784

लेखक

राजेन्द्र कुमार राजीव

मूल्य

पेपरबैक संस्करण : 24/-
सजिल्द लायब्रेरी संस्करण : 36/-

तृतीय संस्करण : सितम्बर 1984
चौथा संस्करण : नवम्बर 1986

फोटो कम्पोजिंग : विवेक फोटो कम्पोजिंग सर्विसेस, F-2/16 अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

मुद्रक शिवानी एन्टरप्राइजेज, ए-9 [illegible] इंडस्ट्रियल एरिया, शाहदरा दिल्ली-110032

द्वितीय संशोधित व परिवर्धित संस्करण का प्रकाशकीय वक्तव्य

'हमारे पूज्य तीर्थ' का यह द्वितीय संशोधित व परिवर्धित सस्करण अब आपके हाथो मे है। लगभग दो-तीन वर्ष तक यह पुस्तक बाज़ार में अप्राप्य रही, जिसका प्रमुख कारण नये संस्करण के लिए पुस्तक का संशोधन एवं परिवर्धन करना था। विशेषज्ञों के अनवरत श्रम एवं सहयोग के बाद अब यह पुस्तक एक ऐसा आकार ग्रहण कर सकी है, जिसे भारतीय तीर्थों का विश्वकोश कहा जा सकता है। अनेकानेक संवर्धित तथ्यों व सूचनाओं को शास्त्र सम्मत बनाने, उनका नवीनीकरण करने के साथ-साथ इस संस्करण मे जैन व सिक्ख धर्मों के सभी तीर्थों को भी सम्मिलित कर लिया गया है। चित्रों की सख्या भी इस संस्करण मे पहले से लगभग तिगुनी हो गई है। पहले सस्करण मे मात्र 60-70 चित्र ही दिये जा सके थे; जबकि इस बार नितान्त दुर्लभ और प्रामाणिक किस्म के 175 चित्र दिये जा रहे हैं। इसके अलावा इस बार चित्रों की छपाई और मैटर के प्रस्तुतीकरण मे भी काफी निखार आया है, क्योंकि इसे कम्प्यूटर प्रणाली द्वारा फोटो-टाइप सेटिंग में कम्पोज कराकर आफ़सेट पद्धति से मुद्रित किया गया है। कुल मिला कर अब यह पुस्तक वह स्वरूप ग्रहण कर सकी है, जो हमे और आपको समान रूप से गौरवान्वित करेगा, ऐसी आशा है।

—प्रकाशक

प्रथम संस्करण की भूमिका

तीर्थ-स्थान हमारे देश के प्राण हैं। भारतीय समाज में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। हर व्यक्ति के मन मे एक महत्त्वाकांक्षा सदैव रहती है कि अपने जीवन-काल मे वह किसी पवित्र देव-स्थल के दर्शन अवश्य कर ले,ताकि उसको तीर्थ-दर्शन का पुण्य प्राप्त हो सके। धार्मिक ग्रथो के अनुसार तीर्थ परम पवित्र हैं। तीर्थ-यात्रा से मनुष्य के मन मे ईश्वर के प्रति आस्था और भक्ति-भावना जाग्रत होती है, उसके चरित्र का विकास होता है।

भारत-भूमि तीर्थों से भरी पडी है। हिन्दुओ के ये तीर्थ भारतीय सस्कृति को एक सूत्र में पिरोये रखने के लिए तथा मनुष्य में सदाचार, दयालुता, स्वच्छता, परोपकार की भवना जाग्रत करने के श्रेष्ठ साधन रहे हैं।

तीर्थ-स्थानो मे कई तीर्थ ऐसे हैं, जिन्हें स्वय देवी-देवताओ ने स्थापित किया। कुछ स्थानो पर भगवान ने अपने भक्तों को दर्शन दिए और वे परम तीर्थो मे परिणत हो गए। कुछ स्थानो पर ईश्वर के परम भक्तो का निर्वाण हुआ और वे स्थान पुण्य तीर्थ कहलाए।

इक्यावन ऐसे पवित्र तीर्थ-स्थान बने, जहां सती के अंग गिरे थे। कुछ पवित्र नदियो, पर्वतों की गणना भी तीर्थों मे की जाती है, जिन्हे ईश्वर की संतान माना गया है या ईश्वर ने वहा जाकर उन्हें तीर्थ बना दिया।

इस प्रकार हमारे तीर्थों का आविर्भाव किसी न किसी देव-कारणवश ही हुआ है।

इन तीर्थों के दर्शन हर वर्ष लाखों स्त्री-पुरुप करते हैं और अपना जीवन सफल बनाते हैं—अपनी मनोकामनाओ का वांछित फल पाते हैं।

अधिकाश स्त्री-पुरुप वृद्धावस्था मे तीर्थ-स्थानो की यात्रा किया करते थे, पर आजकल जब भी अवसर मिलता है लोग तीर्थ-यात्रा पर निकल पड़ते हैं। कुछ नव-विवाहित दम्पति विवाह के तुरन्त बाद ईश्वर का आशीर्वाद पाने के लिए इच्छित तीर्थ स्थान के दर्शन करने जाते हैं।

तीर्थ-यात्रा करते समय कई कठिनाइयां सामने आती हैं, जिनका पता लोगों को पहले नहीं होता और उसके एवज में उन्हे कष्ट झेलना या अधिक धन व्यय करना पड़ता है, फिर उन्हें मुख्य तीर्थ के आस-पास के अन्य तीर्थ-स्थानों की जानकारी भी नही होती। इससे वे उनके दर्शन से वंचित रह जाते हैं। वहां की जलवायु, मौसम, ठहरने के स्थान, खाद्य-पदार्थों की उपलब्धता, रास्ते मे काम आने वाले आवश्यक साज-सामान की जानकारी न होने से भी उन्हें भारी परेशानी उठानी पड़ती है।

प्रस्तुत पुस्तक मे भारत के लगभग समस्त प्रमुख तीर्थ-स्थानों की जानकारी, तीर्थों की धार्मिक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उपयोग में आने वाले साज-सामान, खाद्य-पदार्थों की उपलब्धता की जानकारी, आने-जाने के मार्ग का निर्देश, ठहरने की सुविधाओं व आस-पास स्थित अन्य महत्वपूर्ण मंदिरों का विवरण विस्तृत रूप में दिया गया है। यह सभी सामग्री प्रामाणिक व दुर्लभ संदर्भ-ग्रंथों के आधार पर तैयार की गई है।

इस प्रकार यह पुस्तक तीर्थ-यात्रा के इच्छुक जनों, पर्यटकों तथा देव-स्थानों की जानकारी पाने वाले हर सर्वसाधारण के लिए लाभदायक व उपयोगी सिद्ध होगी।

अन्त मे मै प्रकाशक महोदय का आभार व्यक्त करना भी अपना परम कर्तव्य समझता हूं, जिन्होंने इस योजना को कार्यरूप देने मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। मै अपने पूज्य पिता श्री गौरीशंकर जी. पहूजा का भी हृदय से आभारी हूं, जिन्होंने मुझे समय-समय पर भौगोलिक व यात्रा-मार्ग संबंधी महत्त्वपूर्ण जानकारी देकर मेरे काम को आसान बनाया।

मुझे आशा ही नही, पूर्ण विश्वास है, कि पाठक इस पुस्तक से अवश्य लाभान्वित होंगे और पुस्तक की त्रुटियों की ओर मेरा ध्यान समय-समय पर आकर्षित कराते रहेंगे, ताकि उन्हें अगले संस्करणों मे दूर किया जा सके।

—राजेन्द्र कुमार राजीव

अनक्रम

तीर्थों की महिमा और उनका उद्देश्य

तीर्थों की महिमा

'तीर्थ' संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है: पाप से तारने या पार उतारने वाला। पाप-पुण्य की भावना सभी धर्मों के साथ जुड़ी हुई है। पुण्य संचय और पाप का निवारण ही धर्म का मुख्य उद्देश्य है--इसीलिए मानव समाज मे धर्मभावना के जोर पकड़ने के साथ-साथ तीर्थों की कल्पना का विस्तार विशेष रूप से हुआ है।

साधारणतया किसी जल या जलखड के किनारे स्थित पुण्यस्थान को तीर्थ समझने की परम्परा रही है। पद्मपुराण की निम्न पंक्ति से इसी का बोध होता है--'तस्मात् तीर्थेषु गतव्य नरैः संसारभीरुभी. पुण्योदकेषु सततं साधुश्रेणी विराजेषु'। पद्मपुराण में लाक्षणिक आधार पर तीर्थ का व्यापक अर्थ लगाकर 'गुरुतीर्थ', 'माता-पिता तीर्थ', 'पत्नीतीर्थ' आदि का उल्लेख किया गया है। गुरु अपने शिष्य के अज्ञानमय अंधकार को नाश करते हैं, अतएव शिष्यों के लिए गुरु ही परम तीर्थ है। पुत्रों के इस लोक और परलोक के कल्याण के लिए प्रयत्न करने वाले माता-पिता से बढकर कोई नही है, अतः पुत्र के लिए माता-पिता का पूजन ही तीर्थ है। पत्नी के लिए पति सभी तीर्थों के समान है-पति के दाहिने चरण को प्रयाग और बाए को पुष्कर समझकर उसमे श्रद्धाभाव रखने को कहा गया है। इसी प्रकार व्यक्ति के कल्याण तथा उद्धार के लिए पत्नी को सबसे बडा तीर्थ बताया गया है--ज्ञान एवं गुण से सपन्न सदाचारिणी तथा पतिव्रता स्त्री सभी तीर्थों के समान है और ऐसी स्त्री जहा रहती है, वह स्थल तीर्थ-स्थान बन जाता है।

स्कंदपुराण के काशीखंड मे तीन प्रकार के तीर्थो का उल्लेख मिलता है--स्थावर, जगम तथा मानस। जगम तीर्थ ब्राह्मणो को बताया गया है। पृथ्वीतल के कतिपय स्थानों को स्थावर तीर्थ कहा गया है--ऐसे तीर्थों में जाने से उत्कृष्ट फल की प्राप्ति होती है। सत्य, क्षमा, इंद्रियनिग्रह, दया, ऋजुता, दान, दम, ब्रह्मचर्य, विप्रवादिता, ज्ञान और धैर्य आदि ऊर्ध्वमुखी मन की वृत्तियो को मानस तीर्थ कहा गया है। समस्त तीर्थों मे मानस तीर्थ को ही अधिक महत्त्व दिया गया है। स्कदपुराण में मिलता है, सत्य तीर्थ है, क्षमा तीर्थ है, लेकिन तीर्थो मे सर्वश्रेष्ठ है अत करण की आत्यतिक विशुद्धि।

जो लोभी है, चुगलखोर है, निर्दय है और विषयासक्त है, वह सभी तीर्थो में जाने के बाद भी तीर्थों के फल से वंचित एव मलिन रह जाता है। केवल शरीर से मैल को उतार देने से ही मनुष्य निर्मल नही हो जाता। मन के मल का परित्याग करने पर ही वह भीतर से निर्मल होता है।

भारत के विशाल भूखंड की चारो दिशाओ मे असख्य तीर्थ फैले हुए हैं--जिनकी गणना करना दुःसाध्य कार्य है। पद्मपुराण मे साढ़े तीन करोड तीर्थों का उल्लेख मिलता है।

तीर्थ का अभिप्राय है: पुण्यस्थान अर्थात् जो अपने मे पुनीत हो और अपने क्षेत्र मे आने वालो मे भी पवित्रता का संचार कर सके। कुछ ऐतिहासिक स्थानो को भी तीर्थ की सज्ञा दे दी जाती है। मानव जाति के कल्याण के लिए जहा भी कोई कार्य होता है,

वह तीर्थ है। इस प्रकार समय की आवश्यकता तथा परिस्थिति के अनुसार भी तीर्थों की नई कल्पना और नया निर्माण होता रहता है। उदाहरण के लिए गंगा तथा अन्य नदियो के तट पर बने हुए पुराने तीर्थों का उल्लेख किया जा सकता है। गंगोत्री से गंगा जिन पर्वतीय स्थलो को काटकर मैदान में आई वहा देवप्रयाग, कर्णप्रयाग, ऋषिकेश तथा हरिद्वार सरीखे तीर्थ बन गए और गंगा मे जहां कही दूसरी नदी आकर मिली है,उसको भी तीर्थ मान लिया गया है।

तीर्थों के साथ धार्मिक पर्वों का विशेष सबंध है और उन पर्वों पर की जाने वाली तीर्थ यात्रा विशेष महत्त्व रखती है। यह माना जाता है कि उन पर्वों पर तीर्थयात्रा और तीर्थ स्नान से विशेष पुण्य अर्जित किया जा सकता है। इसी कारण कुंभ, अर्धकुभ, गगा दशहरा तथा मकर संक्रांति आदि को विशेष महत्त्व प्राप्त है।

[illegible]

जिनको इस संसार के लिए तीर्थ मान लिया गया है। महापुरुषो के जन्मस्थान और समाधिस्थान भी कालांतर में तीर्थ का महत्त्व प्राप्त कर लेते हैं। अयोध्या, मथुरा, पपापुरी, कैशांबी, सारनाथ आदि को इसी कारण तीर्थ माना गया है और उनकी यात्रा भी इसी भावना से की जाती है।

इस प्रकार तीर्थ-स्थान तीन प्रकार के समझे जाते हैं—1. नित्य तीर्थ, 2. भगवदीय तीर्थ और 3. सन्त तीर्थ।

नित्य तीर्थ—काशी, कैलास और मानसरोवर आदि नित्य तीर्थ कहलाते हैं। सृष्टि के प्रारम्भकाल से ही यहां की भूमि मे दिव्य पावनकारिणी शक्ति रही है। इसी प्रकार गंगा, यमुना, रेवा (नर्मदा), गोदावरी और कावेरी नदियां भी नित्य तीर्थ मानी जाती हैं।

भगवदीय तीर्थ—जिस स्थान या क्षेत्र में भगवान का अवतार हुआ, जहां उन्होंने कोई लीला की अथवा जहां उन्होंने किसी भक्त को दर्शन दिये, वे भगवदीय तीर्थ कहे जाते हैं। अयोध्या, मथुरा, रामेश्वर आदि तीर्थों की गणना इसी प्रकार के तीर्थों में होती है।

सन्त तीर्थ—जो जीवनमुक्त, देहातीत, परम भागवत अथवा भगवत्प्रेम में तन्मय सन्त हैं, उनका शरीर भले ही पंच भौतिक तथा नश्वर हो, किन्तु उस देह में सत के दिव्य गुण ओत-प्रोत हैं। उस देह से उन दिव्य गुणो का प्रभाव सदा बाहर निकलता रहता है, जो अपने सम्पर्क मे आने वाली वस्तुओं को भी प्रभावित करता है। अतएव सन्त के चरण जहां-जहां पड़ते हैं, वह स्थान तीर्थ रूप हो जाता है। सन्त की जन्मभूमि, उसकी साधनभूमि और उसकी निर्वाण (देहत्याग) भूमि एव समाधि विशेष रूप से पवित्र मानी जाती है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि कैलास पर्वत से कन्याकुमारी और कामाख्या से कच्छ तक विस्तृत सम्पूर्ण भारत-भूमि पवित्र तीर्थ रूप मे है। इस भूमि का प्रत्येक कण भगवान या भगवान के महान् भक्तों, लोकोत्तर युग-पुरुषो की चरण-रज से परम पवित्र है। यहा ऐसा शायद ही कोई क्षेत्र होगा, जहां आस-पास कोई पुनीत नदी, पवित्र सरोवर, तीर्थभूत पर्वत, लोकपावन मंदिर या कोई तीर्थस्थल न हो। यहां तो सब कहीं तीर्थ हैं और एक-एक तीर्थ मे अनेकानेक तीर्थ हैं। इस प्रकार हमारी पवित्रतम भारत-भूमि सुरवन्दिता रही है। युग-युगो से लेकर आज तक ये तीर्थ अपनी महानता एवं पावनता का परिचय दे रहे है; इसी भावना से प्रेरित होकर भारतवासी आज भी लाखो की संख्या मे नित्य तीर्थ-यात्रा के लिए जाते हैं।

तीर्थ-यात्रा का उद्देश्य ही है—अन्त.करण की शुद्धि और उसके फलस्वरूप मानव-जीवन का चरम ध्येय, भगवत्प्राप्ति। इसीलिए शास्त्रो ने अन्तःकरण की शुद्धि करने वाले साधनो पर विशेष जोर दिया है। यहा तक कहा गया है कि—जो लोग इन्द्रियो को वश मे नही रखते, जो लोभ, काम, क्रोध, दम्भ, निर्दयता और विषयासक्ति को लेकर उन्ही की दासता करने के लिए तीर्थ-यात्रा करते हैं, उन्हे तीर्थ या दर्शन का फल नही मिलता।

धाम का अर्थ है: गृह, घर अर्थात् जहा ईश्वर का वास हो वह स्थान। निम्न चार धामो को इस कारण विशेष महत्ता दी गई है कि इनकी रचना मे स्वयं ईश्वर का हाथ रहा है। ये धाम हैं—1. जगन्नाथपुरी, 2. रामेश्वरम्, 3. बदरीनाथ, 4. द्वारका। ये चारो धाम हमारे भारत के चारो छोरो पर स्थित हैं—उत्तर भारत मे बदरीनाथ, पश्चिम मे द्वारकापुरी, दक्षिण मे रामेश्वर और पूर्व मे जगन्नाथ पुरी। कहा जाता है, जो व्यक्ति चार धामो की यात्रा कर ले, उसे सम्पूर्ण तीर्थों का फल मिल जाता है अर्थात् वह सब तीर्थों के दर्शन कर आया, ऐसा मान लिया जाता है। क्योंकि इन तीर्थों की यात्रा से सम्पूर्ण भारत-भूमि की परिक्रमा हो जाती है।

इसी प्रकार तीर्थ सप्तपुरियां हैं। इनकी गणना भी विशिष्ट तीर्थों मे होती है; 1. अयोध्या, 2. मथुरा, 3. हरिद्वार, 4. वाराणसी, 5. कांचीपुरम्, 6. अवंतिका और 7. द्वारका। द्वारका की गणना चार धामों में भी होती है।

भगवान शंकर से संबंधित बारह स्थानों पर बारह ज्योतिर्लिंग हैं, जो भारत के विभिन्न राज्यों में विद्यमान हैं। इनका भी विशेष महत्त्व है, ये हैं—1. सोमनाथ, 2. मल्लिकार्जुन, 3. महाकालेश्वर, 4. वैद्यनाथ, 5. ओंकारेश्वर, 6. भीमशंकर, 7. नागेश्वर, 8. काशी विश्वनाथ, 9. रामेश्वरम्, 10. त्र्यंबकेश्वर, 11. केदारनाथ और 12. घुश्मेश्वर।

तीर्थों मे इन पांच सरोवरों की महत्त्वपूर्ण स्थिति है—1. मानसरोवर, 2. पुष्कर सरोवर, 3. बिन्दु सरोवर(सिद्धपुर) 4. नारायण सरोवर और 5. पम्पा सरोवर।

शक्तिपीठों के स्थान

एक प्रसिद्ध पौराणिक कथा के अनुसार प्रजापति दक्ष ने अपने 'बृहस्पति-सक' नामक यज्ञ के आयोजन में सारे देवताओ को निमंत्रित किया, किन्तु अपने दामाद शंकरजी को नहीं बुलाया। पिता के यहां यज्ञ का समाचार पाकर सती भगवान शकर के विरोध करने पर भी पिता के घर चली गई। अपने पिता प्रजापति दक्ष के यज्ञ में अपने पति शिवजी का भाग न देखकर और पिता द्वारा शिवजी की निन्दा सुनकर क्रोध के मारे उन्होंने अपने प्राण त्याग दिये। इस पर भगवान शंकर के गणो ने दक्ष को मार डाला। भगवान शंकर सती का प्राणहीन शरीर देखकर क्रोध से उन्मत्त हो गए और सती का मृत शरीर कन्धे पर रखकर उन्मत्त भाव-से ताण्डव नृत्य करते तीनों लोकों में घूमने लगे। सारी सृष्टि के ध्वस हो जाने की आशंका से भगवान विष्णु ने अपने चक्र से सती के शरीर के टुकडे-टुकडे करके गिरा दिए। सती के शरीर के खण्ड तथा आभूषण 52 स्थानों पर गिरे। उन स्थानो पर एक-एक शक्ति तथा एक-एक भैरव, नाना प्रकार के स्वरूप धारण करके स्थित हुए। देश के उन स्थानों को 'महापीठ' कहा जाता है। यहां इन स्थानों की सूची दी जा रही है। इनका उल्लेख 'तन्त्र-चूड़ामणि' में है.—

निर्दिष्ट स्थान	अंग या आभूषण	शक्ति	भैरव	वर्तमान स्थान
1. हिंगुला	ब्रह्मरन्ध्र	कोटरी (भैरवी)	भीमलोचन	हिंगलाज—बिलोचिस्तान के लासबेला स्थान में हिंगोस नदी के तट पर (पश्चिम पाकिस्तान) है। यहा गुफा के भीतर ज्योति के दर्शन होते हैं।
2. किरीट	किरीट	विमला (भुवनेशी)	संवर्प्त (किरीट)	हावडा बरहरवा लाइन पर खटाराघाट रोड स्टेशन से 5 मील दूर लालबाग कोर्ट रोड स्टेशन है। वहा से 3 मील वटनगर के पास गगा-तट पर स्थित है।
3. वृन्दावन	केश-कलाप	उमा	भूतेश	मथुरा-वृन्दावन रोड पर वृन्दावन से लगभग डेढ़ मील दूर भूतेश्वर महादेव का मंदिर है।
4. करवीर	तीनो नेत्र	महिषमर्दिनी	क्रोधीश	कोल्हापुरा का महालक्ष्मी-मंदिर ही महिषमर्दिनी का स्थान है। इसे अम्बाजी का मंदिर भी कहते हैं।
5. सुगन्धा	नासिका	सुनन्दा	त्र्यम्बक	बगला देश के खुलना स्टेशन में स्टीमर द्वारा बरीसाल जाना पडता है। वहा से 13 मील उत्तर में शिकारपुर ग्राम में सुनन्दा नदी के तट पर, सुनन्दा (उग्रतारा) देवी मंदिर है।
6. करतोया-तट	वामतल्प	अपर्णा	वामन	बंगला देश के बोगरा स्टेशन में 20 मील 'भवानीपुर' ग्राम मे।
7. श्रीपर्वत	दक्षिणतल्प	श्रीसुन्दरी	सुन्दरानन्द	लद्दाख (कश्मीर) के पास बताया गया है। पीठ-स्थान का ठीक पता नहीं है।
8. वाराणसी	कर्ण-कुण्डल	विशालाक्षी	कालभैरव	काशी में मणिकर्णिका-घाट के पास विशालाक्षी मंदिर है।

निर्दिष्ट स्थान	अंग या आभूषण	शक्ति	भैरव	वर्तमान स्थान
46. विभाष	वाम-गुल्फ (टखना)	कपालिनी (भीम रूपा)	सर्वानन्द (कपाली)	बगाल के मिदनापुर जिले मे पंचकुडा स्टेशन से मोटर बस तमलुक जाती है। तमलुक का काली मंदिर प्रसिद्ध है।
47. कुरुक्षेत्र	दक्षिण गुल्फ	सावित्री	स्थाणु	कुरुक्षेत्र प्रसिद्ध तीर्थ है। वहां द्वैपायन सरोवर के पास शक्तिपीठ है।
48. लंका	नूपुर	इन्द्राक्षी	राक्षसेश्वर	वर्तमान श्रीलका को पुराणों में सिंहल कहा गया है। प्राचीन लका का ठीक पता नही है।
49. युगाद्या	दक्षिण-पादांगुष्ठ	भूतधात्री	क्षीरकंटक (युगाद्या)	बर्द्दवान स्टेशन से 20 मील उत्तर क्षीर ग्राम में।
50. विराट	दाहिने पैर की अगुलियां	अम्बिका	अमृत	जयपुर (राजस्थान) से 40 मील उत्तर वैराट ग्राम।
51. कालीपीठ	शेषपादागुलि	कालिका	नकुलीश	कलकत्ते का काली मंदिर प्रसिद्ध है। अनेक विद्वानों के मतानुसार शक्तिपीठ आदि काली मंदिर है, जो कलकत्ते मे काली गज से बाहर है।
52. कर्णाट	दोनो कर्ण	जयदुर्गा	अभी	कर्नाटक मे है। निश्चित स्थान का पता नही।

'तन्त्रचूडामणि' मे स्थान तो 53 गिनाये गये हैं, पर वामगण्ड के गिरने के स्थानो की पुनरुक्ति छोड़ देने पर 52 स्थान ही रहते हैं। 'शिवचरित्र' तथा 'दाक्षायणी-तंत्र' मे 51 ही शक्तिपीठ गिनाये गये हैं।

देश के विभिन्न स्थानो मे बारह प्रधान देवी-विग्रह हैं, जो इस प्रकार हैं—

जगज्जननी भगवती महाशक्ति काञ्चीपुरम् मे कामाक्षी रूप से, मलयगिरी मे भ्रामरी (भ्रमराम्बा) नाम से, केरल (मलाबार) मे कुमारी (कन्याकुमारी), आनर्त (गुजरात) में अम्बा, करवीर (कोल्हापुर) में महालक्ष्मी, मालवा (उज्जैन) मे कालिका, प्रयाग मे ललिता (अलोपी) तथा विन्ध्यगिरि मे विन्ध्यवासिनी रूप से प्रतिष्ठित हैं। वे वाराणसी में विशालाक्षी, गया मे मगलावती, बगाल मे सुन्दरी और नेपाल मे गुह्यकेश्वरी कही जाती हैं। मगलमयी पराम्बा पार्वती इन बारह रूपो से भारत मे स्थित हैं। इन विग्रहों के दर्शन से मनुष्य सभी पापो से छूट जाता है।

इसी प्रकार देश भर में 51 सिद्ध क्षेत्र हैं। इनका भी तीर्थों मे अपना-अपना विशिष्ट स्थान है। ये निम्नलिखित हैं—

1. कुरुक्षेत्र, 2 बदरिकाश्रम क्षेत्र 3. नारायण क्षेत्र (बदरिकाश्रम), 4. गयाक्षेत्र, 5. पुरुषोत्तम क्षेत्र (जगन्नाथपुरी), 6 वाराणसी क्षेत्र 7. वाराह क्षेत्र (अयोध्या के पास), 8. पुष्कर क्षेत्र 9. नैमिषारण्य क्षेत्र, 10. प्रभास क्षेत्र, 11. प्रयाग क्षेत्र, 12. शूकर क्षेत्र (सौरो), 13. पुलहाश्रम (मुक्तिनाथ), 14. कुब्जामृक क्षेत्र (ऋषिकेश), 15. द्वारका, 16. मथुरा, 17. केदारक्षेत्र, 18. पम्पा क्षेत्र (हासपेट), 19 बिन्दुसार (सिद्धपुर), 20. तृणबिन्दुवन, 21 दशपुर (मध्यप्रदेश का वर्तमान मन्दसौर), 22 - गङ्गासागर-संगम, 23 तेजोवन, 24 विशाख सूर्य (विशाखापत्तनम्), 25 उज्जयिनी, 26. दण्डक (नासिक), 27. मानस (मानसरोवर), 28. नन्दा क्षेत्र (नन्दादेवी पर्वत), 29. सीताश्रम (बिठूर), 30. कोकामुख, 31. मन्दार (भागलपुर), 32. महेन्द्र (मडासा), 33. ऋषभ, 34. शालग्राम क्षेत्र (दामोदर कुण्ड), 35 गोनिष्क मण, 36. सह्य (सह्याद्रि), 37. पाथ, 38. चित्रकूट, 39. गन्धमादन (रामेश्वर, 40. हरिद्वार, 41 वृन्दावन 42 हस्तिनापुर, 43. लोहाकुल (लोहागलि), 44. देवशैल, 45. कुमारि क्षेत्र (कुमार स्वामी), 46 देवदारुवन (आसाम), 47. लिंग स्फोट, 48 अयोध्या, 49. कुण्डिन (आर्वी के पास), 50. त्रिकूट और 51. माहिष्मती।

तीर्थ—रूप मे सप्त पुण्य नदियो की महिमा भी देश-व्यापी है। ये नदियां इस प्रकार हैं :— 1. गगा, 2. यमुना, 3 गोदावरी, 4 सरस्वती, 5. कावेरी, 6 नर्मदा और 7. सिन्धु।

इन पवित्र नदियों के तट पर अनेक छोटे-बडे तीर्थ हैं, जिनकी यात्रा करके यात्री पुण्य लाभ प्राप्त करते हैं।

इस प्रकार देश में अनेक तीर्थ हैं, जिनकी यात्रा मनुष्य मात्र के लिए, स्नान, ध्यान, दर्शन, पूजा-पाठ और दान-पुण्य करने पर पापों से मुक्त कर मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करती है। तात्पर्य यह है कि तीर्थ-यात्रा से मनुष्यों को महान् पुण्य की प्राप्ति बताई गई है। वहां जाने पर उचित रीति से विधिवत् कर्मकाण्ड करने पर मनुष्य के सम्पूर्ण पाप-ताप उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं, जैसे भगवान सूर्य के उदय होने पर अन्धकार समाप्त हो जाता है। वहां जाने पर मनुष्य देवाधि देव हो जाता है, क्योंकि वह तीर्थ जाने से पहले अपने शरीर को सदाचार, सद्विचार और सदुपासना द्वारा विशुद्ध बना लेता है, जिससे तीर्थ-यात्रा का महान् उद्देश्य सार्थक हो जाता है।

तीर्थ का फल किसे मिलता है !

तीर्थ स्थान पर पवित्र मन से संयमपूर्वक रहना चाहिए। मन, शरीर तथा वाणी से जो स्त्री-पुरुष पवित्र होता है, उसे ही तीर्थ का सुफल मिलता है। क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या-द्वेष मन में नहीं रहना चाहिए।

तीर्थ में दिए गए दान की बड़ी महत्ता है, पर दान यथाशक्ति ही देना चाहिए। मेहनत और ईमानदारी से कमाए एक पैसे का दान भी बहुत कीमत रखता है। इसके विपरीत चोरी, बेईमानी, ठगी या अन्य किसी बुरे मार्ग से कमाए हजारों रुपयों का दान भी कुफल ही देता है।

तीर्थ जाने से पहले तन-मन-धन से अपनी शुद्धि कर लेनी चाहिए और तीर्थ से वापस आकर ब्राह्मण-भोजन, कीर्तन, कथा-वाचन या पितृश्राद्ध अवश्य करना चाहिए।

तीर्थ के दौरान शुद्ध भोजन करना चाहिए। यदि किसी अच्छे दिन का उपवास रखें तो और भी उत्तम ! तीर्थ में दान नही लेना चाहिए। नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए। तीर्थ के दौरान प्रतिदिन स्नान-ध्यान करना चाहिए।

दुर्गुणों पर विजय पाकर ईश्वर मे लीन होकर जो व्यक्ति तीर्थ दर्शन करता है, उसे तीर्थ-यात्रा का फल अवश्य मिलता है।

खंड 1

चार धाम

[बदरीनाथ, द्वारका, रामेश्वरम्, जगन्नाथपुरी]

1. बदरीनाथ धाम

भारत में चार तीर्थ-स्थल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और पवित्र माने जाते हैं। ये हैं—बदरीनाथ, द्वारका, जगन्नाथ और रामेश्वरम्। इनमे से बदरीनाथ-दर्शन का महत्त्व सबसे अधिक माना जाता रहा है।

पुराणो के अनुसार बदरीनाथ भारत का सबसे प्राचीन क्षेत्र है, जिसकी स्थापना सतयुग मे हुई थी। इस प्रकार बदरी-खण्ड ने शुरू से ही भारत की भावनात्मक एकता और सीमा-रक्षा मे महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। आदि युग मे नर और नारायण, त्रेता मे भगवान राम, द्वापर मे भगवान वेदव्यास और कलियुग मे शकराचार्य ने बदरीनाथ मे ही शांति अर्जित कर धर्म और सस्कृति के सूत्र पिरोये। बदरी अर्थात् बेर के घने वन होने के कारण इस क्षेत्र का नाम 'बदरी-वन' पडा। शकराचार्य जी के समय मे यह क्षेत्र बदरीनाथ के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

बदरिकाश्रम इसलिये भी प्रसिद्ध है कि वहा व्यास मुनि का आश्रम था। 'बदरी-वन' मे जन्म होने के कारण ही उन्हे 'बादरायण' कहा गया। उन्होने वेदो का पुनर्प्रबन्ध किया, इसलिए वेदव्यास कहलाये।

कुछ वर्ष पूर्व तक बदरीनाथ की यात्रा बहुत दुर्गम मानी जाती थी। तब वर्ष मे पाच-छ सौ से अधिक यात्री बदरीनाथ नही पहुच पाते थे। मार्ग की दुर्गमता और कठिनाइयो के कारण ही

श्री बदरीनाथ जी
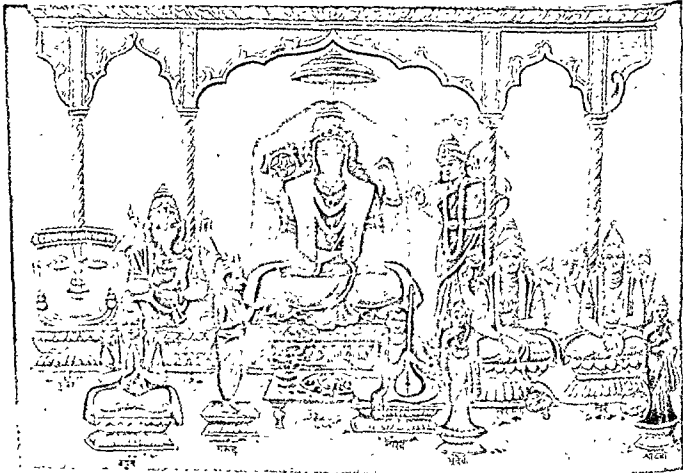
सम्भवत: बदरीनाथ-दर्शन का महत्त्व सबसे अधिक और परम पुण्य-कार्य माना जाता रहा।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

एक किम्वदन्ती प्रसिद्ध है कि नर और नारायण नाम के दो ऋषियों ने जो धर्म और कला के पुत्र थे और भगवान विष्णु के चतुर्थ अवतार थे, बदरिकाश्रम में आध्यात्मिक शांति प्राप्त करने के लिए कठोर तपस्या की। उनकी तपस्या के कारण इंद्र डर गये और उनका मन डिगाने को उन्होने कुछ अप्सराए भेजी। इससे नारायण बहुत क्रुद्ध हो गये और उन्हे श्राप देने लगे, पर नर ने उन्हें शात किया। फिर नारायण ने उर्वशी की सृष्टि की, जो उन अप्सराओ से कही अधिक सुंदर थी। उर्वशी को उन्होने इद्र की सेवा मे भेट कर दिया। अप्सराओ ने जब नारायण से विवाह करने का विशेष अनुरोध किया तो उन्होने अपने अगले (श्रीकृष्ण) जन्म मे उनके साथ विवाह करने का वचन दे दिया। अपने अगले जन्म में नर और नारायण अर्जुन तथा कृष्ण हुए। 'देवी भागवत' मे एक आख्यायिका है कि एक बार प्रसाद ने बदरिकाश्रम मे नर-नारायण आश्रम के निकट कुछ सैनिक-दल देखे। वे उन्हे धूर्त समझकर उनसे लड़ पडे। यह युद्ध ऐसा चला कि उसका अंत होने को नही आता था। अत में भगवान विष्णु ने हस्तक्षेप करके किसी प्रकार शांति स्थापित की।

महाभारत में कहा गया है कि एक बार नारद बदरी में नर और नारायण के पास गये। नारायण अपनी दैनिक पूजा कर रहे थे। नारद ने पूछा—"वह कौन है, जिसकी पूजा नारायण स्वय कर रहे है?" नारायण ने उत्तर दिया—"हम आत्मा की पूजा करते हैं!" नारद यह पूजा देखना चाहते थे। नारायण ने कहा कि इसके लिए वे (नारद) श्वेतद्वीप जाएं, वहां वह नारायण का मौलिक रूप देखेगे। नारद, श्वेतद्वीप गये और वहां नारायण को दोनो निर्गुण तथा विश्व-रूपो मे देखा। नारद ने, पचरात्र सिद्धात, श्वेतद्वीप मे स्वय नारायण से सीखे और दूसरो पर प्रकट किये। फिर वे बदरी लौटकर आये और उन्होने नर तथा नारायण के दर्शन किये।

धर्म, सस्कृति, साहित्य और इतिहास की साधना के लिए प्रसिद्ध बदरीनाथ धाम आदिकाल से भारत-तिब्बत सीमा का प्रहरी भी रहा है। शकराचार्य ने इसे सुनियोजित सैनिक शिविर का रूप दिया। इस स्थान का सैनिक महत्त्व भी है, क्योंकि हिमालय के दो बडे दर्रे माना और नीति यही आकर निकलते है। अब तिब्बत पर चीन का आधिपत्य हो जाने के कारण इस क्षेत्र का सैनिक महत्त्व और भी बढ गया है। भारत-चीन सीमा पर स्थित मणिभद्र अथवा माना ग्राम बदरीनाथ से केवल दो मील आगे स्थित है, जहां भारतीय सेना और सीमा सुरक्षा बल का पहरा रहता है। माना से 25 मील और आगे माना दर्रा है, जिसके बाद चीन-अधिकृत तिब्बत की सीमा आ जाती है।

कहा जाता है कि बौद्ध धर्म की स्थापना के बाद तिब्बतियो ने भारत पर आक्रमण किया और उसकी संस्कृतिपीठ बदरीनाथ को नष्ट-भ्रष्ट कर वहा स्थापित भगवान विष्णु की मूर्ति को नारद-कुंड मे डाल दिया। शकराचार्य ने जब फिर से हिंदूधर्म अथवा वैदिक-विचारधारा का प्रचार किया, तब नारद-कुड से उस प्रतिमा को निकालकर वही स्थित गरुड-गुफा मे स्थापित कर दिया। आगे चलकर चद्रवशी गढवाल-नरेश ने यहां एक मदिर का निर्माण करा दिया, जिस पर इदौर की महारानी अहिल्याबाई ने सोने का शिखर चढवाया, जो आज भी दमकता है।

बदरीनाथ तभी से पवित्र तीर्थ ही नही, वरन् भारत की भावनात्मक एकता का आधार-पीठ बन गया और यह नियम बन गया कि दक्षिण मे स्थित केरल के नम्बूद्रीपाद 'रावल' ही इस प्रतिमा का स्पर्श कर सकते है। उत्तर-दक्षिण की इस भावनात्मक एकता को और पुष्ट करने के लिए यह नियम भी बना कि जब तक उडीसा मे स्थित जगन्नाथपुरी के तांबे के कडे बदरीनाथ मे नही चढाये जाते, तब तक भारत-खण्ड की तीर्थ-यात्रा पूर्ण नही होती।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

बदरीनाथ मंदिर हिममंडित नर और नारायण पर्वतों के बीच मे नारायण पर्वत के समीप स्थित है। नारायण पर्वत से प्राय भारी-भरकम हिमशिलाए खिसकती रहती है, किन्तु आज तक मंदिर की कोई क्षति नही हो पाई है।

बदरीनारायण या विशाल बदरी मे पाच तीर्थ हैं—ऋषि गगा, कूर्मधारा, प्रह्लादधारा, तप्तकुण्ड और नारदकुण्ड। बदरिकाश्रम मे कुछ पवित्र शिलाए भी है, जिनके नाम है—नारद शिला, मार्कण्डेय शिला, नृसिंह शिला और गरुड शिला आदि। बदरीनाथ से उत्तर अलकनदा नदी के दाहिने किनारे पर प्रसिद्ध, ब्रह्म का पाल है, जहा तीर्थयात्री अवश्य ही जाते है। यही पूर्वजो का श्राद्ध किया जाता है।

अलकनंदा के दाये तट पर नारायण का 45 फीट ऊंचा मंदिर है, जिसका द्वार पूर्व दिशा की ओर है। मंदिर के ऊपर एक स्वर्ण-कलश है। मंदिर के भीतर भगवान नारायण पद्मासन मे बैठे हैं। उनके दोनो हाथ योगमुद्रा मे है। प्रतिमा काली-शालिग्राम पत्थर की है, जो लगभग तीन फीट ऊची है। दाई ओर नर और नारायण की पत्थर की मूर्तिया हैं तथा बाईं तरफ गरुड तथा कुबेर की।

बदरी से लगभग आठ मील की दूरी पर वसुधारा तीर्थ है, जहा पर आठ वसुओ ने तपस्या की थी। यहा जाना कठिन है। पहाड
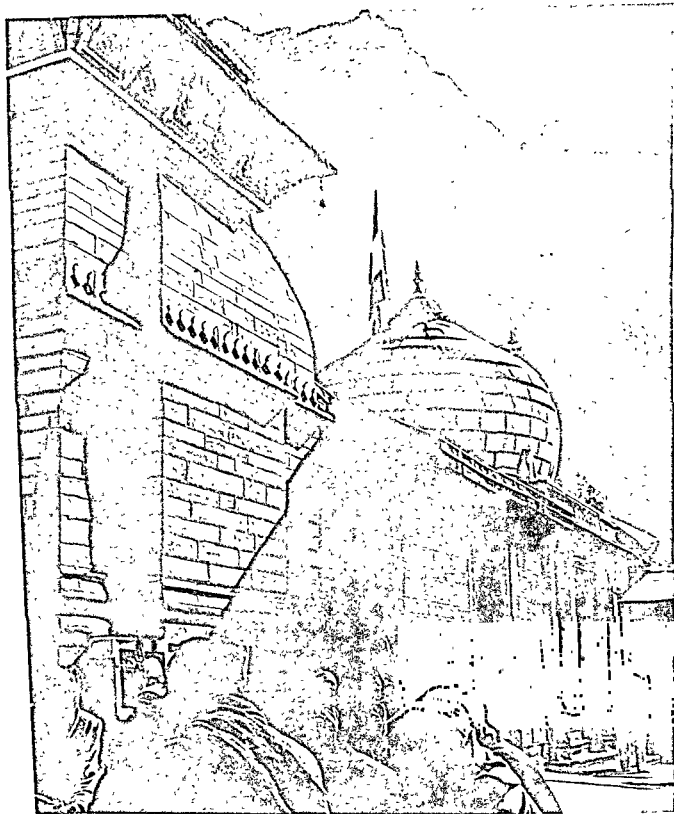
वदरीनाथ मंदिर (उत्तर भारत)

से जल गिरता रहता है। शास्त्रो मे वर्णित पच सरोवर में से एक नारायण सरोवर भी बदरिकाश्रम मे ही है।

अन्य दर्शनीय स्थल

पंचप्रयाग—गढवाल प्रांत मे ऋषिकेश से बदरीनाथ के बीच पाच प्रसिद्ध 'प्रयाग' है—देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, नदप्रयाग और विष्णुप्रयाग।

देवप्रयाग, अलकनदा और भागीरथी नदी का सगम स्थल है। यही पर से भागीरथी का नाम 'गगा' पडता है। यह स्थान सुदर्शन क्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है। यहा श्री रघुनाथ जी का मंदिर है, जहा भारत के कोने-कोने से यात्री आते है।

भागीरथी संगम से पहले अलकनदा तीन और नदियो से मिलती है। मदाकिनी नदी से सगम स्थल को रुद्रप्रयाग कहते हैं। यहीं से केदार यात्रा का मार्ग है।

रुद्रप्रयाग से ऊपर अलकनंदा मदाकिनी नदी से सगम करती है, नंदप्रयाग नामक स्थान पर और उससे पहले सगम होता है, कर्णप्रयाग पर पिंदर नामक नदी से। एक और सगमस्थल विष्णुप्रयाग भी मार्ग मे है, जो जोशीमठ से पाच किलोमीटर पर है।

गुप्तकाशी—रुद्रप्रयाग से मंदाकिनी नदी के किनारे-किनारे गुप्तकाशी है। दूरी लगभग 38 किलोमीटर है। पैदल, घोडा या डांडी से लोग जाते हैं। चढाई बड़ी विकट है और रास्ते मे विशेप कुछ खाने-पीने को नही मिलता है। चढाई आरम्भ होने के स्थान को अगस्त्य मुनि कहते हैं, यही पर अगस्त्य का मंदिर भी है। सामने बाणासुर की राजधानी शोणितपुर के भग्नावशेप हैं। चढाई पूरी होने पर गुप्तकाशी के दर्शन होते हैं।

गुप्तकाशी मे एक कुड है, जिसका नाम है मणिकर्णिका कुड। लोग इसी मे स्नान करते हैं। कुंड में दो जलधाराए बराबर गिरती रहती है, जो गगा और यमुना नाम से जानी जाती है। कुंड के सामने विश्वनाथ का मंदिर है और उसीसे मिला हुआ अर्धनारीश्वर का मदिर है।

जोशीमठ—पीठाधीश जगद्गुरु शंकराचार्य का उत्तरपीठ होने के कारण यह स्थान भी बहुत पवित्र माना जाता है। सर्दी के दिनो मे बदरीनाथ जी की चलमूर्ति यहा आकर लगभग छह महीने रहती है। यहां पर ज्योतीश्वर शिव और भक्तवत्सल भगवान नामक दो मंदिर है।

तपोवन—जोशीमठ से नीतिधारी की ओर जाने वाले मार्ग मे लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर तपोवन नामक पवित्र स्थान है। यह गरम पानी का एक कुंड है और वहां से पाच किलोमीटर पर विष्णु मंदिर है। यहां निकट ही एक वृक्ष है, जिसके नीचे प्राकृतिक रूप से एक विष्णु मूर्ति का निर्माण हो रहा है। कहा जाता है कि जोशीमठ के पास नृसिह मदिर की मूर्ति की एक बाह बहुत ही पतली है। जब यह टूटेगी तो बदरीनाथ मंदिर के दोनो ओर के पहाड, नर और नारायण, आपस मे मिल जाएगे और बदरीनाथ मंदिर हमेशा के लिए बद हो जाएगा। तपोवन मे वृक्ष के नीचे बन रही मूर्ति ही भविष्य के बदरीनाथ कहलाएंगे।

अन्य मंदिर—विष्णु प्रयाग से 10 किलोमीटर दूरी पर पाण्डुकेश्वर नामक स्थान है, जहां पर योगवद्री का मंदिर है। पाण्डुकेश्वर से लगभग 20 किलोमीटर पर हेमकुड नामक स्थान है, जहां गुरु गोविद सिह जी ने कालिका की तपस्या की थी। यहा एक गुरुद्वारा भी है। हेमकुड से पहले फूलो की घाटी नामक मनोरम जगह है। यहा लगभग हर ऋतु में रग-बिरगे फूलो की छटा देखते ही बनती है।

इसके बाद बदरीनाथ का मंदिर है। बदरीनाथ से थोडी दूर ऊपर अलकनदा के उत्तराचल मे शास्त्रों मे लिखित 'अलकापुरी'-कुबेर की महानगरी स्थित है।

बदरीनाथ से ऊपर जाने वाले यात्री ध्यान रखें कि खाने-पीने का सामान वे साथ ले जाए।

नोट—इसी क्षेत्र की अन्य यात्राओ के लिए देखे खड-दो में केदारनाथ ज्योतिर्लिंग।

गंगोत्री-यमुनोत्री और उत्तरकाशी यात्राओ के लिए देखे अन्य महत्त्वपूर्ण तीर्थ।

यात्रा मार्ग

पहले बदरीनाथ की यात्रा बहुत दुर्गम समझी जाती थी और यात्री अपना अतिम सस्कार कराके ही वहा जाते थे। चीनी आक्रमण के बाद, सेना और उत्तरप्रदेश सरकार के सार्वजनिक निर्माण विभाग की सहायता से पर्वत-पथ बना दिया गया है, जिस पर बसे भी चालू हो गई है।

स्कदपुराण के माहेश्वर खड मे केदारधाम का सबसे पहले उल्लेख और वर्णन है, इसीलिए यात्रा का यथाविधि क्रम भी यही है कि पहले केदार यात्रा करके रुद्रप्रयाग वापस लौटें और फिर बदरीनाथ जाए। पापनाशी केदार का दर्शन किए बिना लौटना व्यर्थ समझा जाता है।

बदरीनाथ और केदारनाथ जाने का मुख्य मार्ग ऋपिकेश से आरम्भ होता है। ऋपिकेश से केदारनाथ 225 किलोमीटर के लगभग है तथा केदारनाथ से बदरीनाथ की दूरी लगभग 30 किलोमीटर है। इन दोनो स्थानो के लिए बस-यात्रा सुलभ है। पहले काफी रास्ता पैदल ही तय करना पड़ता था, जो बहुत ही ऊबड-खाबड और कष्टप्रद था। परन्तु सडक मार्ग बन जाने से यह यात्रा बहुत ही आरामदेह हो गयी है। हा, पडने से कभी-कभी यह मार्ग अवरुद्ध हो जाता है और टूट-फूट जाती है।

बदरीनाथ और केदारनाथ कोटद्वार और काठगोदाम होकर भी जाया जा सकता है। इस मार्ग पर ज्यादा भीड-भाड नही होती। कोटद्वार से श्रीनगर की दूरी लगभग 138 किलोमीटर है। यहा से बदरीनाथ लगभग 230 किलोमीटर दूर है। काठगोदाम से रानीखेत होकर कर्णप्रयाग यदि पहुचे तो वहा से बदरीनाथ लगभग 125 किलोमीटर दूर रह जाता है। इन मार्गों से हिमालय के मनोहर दृश्य काफी देखने को मिल जाते है।

बदरीनाथ हरिद्वार से लगभग 360 किलोमीटर दर है। माना दर्रे से बदरीनाथ की दूरी लगभग 50 किलोमीटर है। यह मदिर जिस घाटी मे है, वह पाच किलोमीटर लबी और लगभग दो किलोमीटर चौडी है।

ठहरने के स्थान और आवश्यकताएं

वाया ऋषिकेश बदरीनाथ की यात्रा कुल डेढ दिन की है। रास्ते में खाने-ठहरने की बहुत अच्छी व्यवस्था है। ध्यान रहे यहा पानी उबालकर ही पीना चाहिए। पानी एक टिन या बर्तन मे अपने साथ उबालकर अवश्य रखें। सूखे खाद्य-पदार्थ और मेवे आदि भी रखें ताकि दिक्कत न हो।

यहा ठहरने के लिए डाक बगला, पी. डब्ल्यू.डी. के बंगले तथा धर्मशालाए आदि की अच्छी व्यवस्था है।

ध्यान में रखिये

जो कोई बदरीनाथ की यात्रा करना चाहे, उसे निम्नलिखित कार्यवाही करनी चाहिए—

उसे अपने घर मे यात्रा का संकल्प करके नारायण को नमन करके चलना चाहिए। रास्ते में उसे तीन चीजो से बचना चाहिए—चोरी, हिंसा और भिक्षा, जिसमे दूसरे का दिया हुआ भोजन भी सम्मिलित है। मार्ग में उसे उन पवित्र स्थलों के दर्शन करने चाहिए, जहा प्राचीन ऋषियो ने मानवता के हित के लिए तपस्या की थी।

यदि बदरी का नैवेद्य दिया जाए तो उसे अस्वीकार नही करना चाहिए। भगवान के सामने अस्पृश्यता नही है, इसलिये किसी के भी हाथ से प्रसाद ग्रहण करना अशुद्धता नही है।

2. द्वारका धाम

भारत के चार धामो मे द्वारका का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। द्वारका गुजरात के सौराष्ट्र (काठियावाड) क्षेत्र मे जामनगर नामक सुदर नगर के समीप समुद्र-तट पर है। यहा भगवान श्रीकृष्ण का द्वारकाधीश नामक प्रसिद्ध मदिर है।

धार्मिक पृष्ठभूमि

पुराणो के अनुसार श्रीकृष्ण जी ने उत्तरकाल मे शातिपूर्वक एकात क्षेत्र मे रहने के उद्देश्य से सौराष्ट्र मे समुद्र-तट पर द्वारकापुरी नामक नगरी बसाकर आस-पास के क्षेत्र मे अपना राज्य स्थापित किया था।

द्वारका नगरी का महत्त्व अपने आप मे गौरवपूर्ण है। यद्यपि अब यह अपने अतीतकाल के उस ऐश्वर्य और वैभव के रूप मे नही है, जबकि यह स्वर्ण-नगरी कहलाती थी, जहा मर्यादित

द्वारका मदिर, काठियावाड, गुजरात

बदरीनाथ और केदारनाथ कोटद्वार और काठगोदाम होकर भी जाया जा सकता है। इस मार्ग पर ज्यादा भीड-भाड नही होती। कोटद्वार से श्रीनगर की दूरी लगभग 138 किलोमीटर है। यहा से बदरीनाथ लगभग 230 किलोमीटर दूर है। काठगोदाम से रानीखेत होकर कर्णप्रयाग यदि पहुचे तो वहा से बदरीनाथ लगभग 125 किलोमीटर दूर रह जाता है। इन मार्गों से हिमालय के मनोहर दृश्य काफी देखने को मिल जाते हैं।

बदरीनाथ हरिद्वार से लगभग 360 किलोमीटर दूर है। माना दर्रे से बदरीनाथ की दूरी लगभग 50 किलोमीटर है। यह मदिर जिस घाटी मे है, वह पाच किलोमीटर लबी और लगभग दो किलोमीटर चौडी है।

ठहरने के स्थान और आवश्यकताएं

वाया ऋषिकेश बदरीनाथ की यात्रा कुल डेढ दिन की है। रास्ते मे खाने-ठहरने की बहुत अच्छी व्यवस्था है। ध्यान रहे यहा पानी उबालकर ही पीना चाहिए। पानी एक टिन या बर्तन मे अपने साथ उबालकर अवश्य रखें। सूखे खाद्य-पदार्थ और मेवे आदि भी रखें ताकि दिक्कत न हो।

यहा ठहरने के लिए डाक बगला, पी. डब्ल्यू.डी के बंगले तथा धर्मशालाए आदि की अच्छी व्यवस्था है।

ध्यान में रखिये

जो कोई बदरीनाथ की यात्रा करना चाहे, उसे निम्नलिखित कार्यवाही करनी चाहिए–

उसे अपने घर मे यात्रा का सकल्प करके नारायण को नमन करके चलना चाहिए। रास्ते मे उसे तीन चीजो से बचना चाहिए–चोरी, हिंसा और भिक्षा, जिसमे दूसरे का दिया हुआ भोजन भी सम्मिलित है। मार्ग मे उसे उन पवित्र स्थलों के *दर्शन करने चाहिए, जहां प्राचीन ऋषियों ने मानवता के हित* के लिए तपस्या की थी।

यदि बदरी का नैवेद्य दिया जाए तो उसे अस्वीकार नहीं करना चाहिए। भगवान के सामने अस्पृश्यता नही है, इसलिये किसी के भी हाथ से प्रसाद ग्रहण करना अशुद्धता नहीं है।

2. द्वारका धाम

भारत के चार धामों में द्वारका का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। द्वारका गुजरात के सौराष्ट्र (काठियावाड) क्षेत्र में जामनगर नामक सुंदर नगर के समीप समुद्र-तट पर है। यहां भगवान श्रीकृष्ण का द्वारकाधीश नामक प्रसिद्ध मंदिर है।

धार्मिक पृष्ठभूमि

पुराणों के अनुसार श्रीकृष्ण जी ने उत्तरकाल में शांतिपूर्वक एकांत क्षेत्र में रहने के उद्देश्य से सौराष्ट्र में समुद्र-तट पर द्वारकापुरी नामक नगरी बसाकर आस-पास के क्षेत्र में अपना राज्य स्थापित किया था।

द्वारका नगरी का महत्त्व अपने आप में गौरवपूर्ण है। यद्यपि अब यह अपने अतीतकाल के उस ऐश्वर्य और वैभव के रूप में नहीं है, जबकि यह स्वर्ण-नगरी कहलाती थी, जहां मर्यादित

द्वारका मंदिर, काठियावाड, गुजरात

सागर प्रतिपल लीला पुरुषोत्तम भगवान श्रीकृष्ण के श्रीचरणो को धोया करता था, जहा कचन और रत्नजडित मंदिर की सीढियो पर खडे होकर दीन-हीन सुदामा ने मित्रता की दुहाई दी थी, जहा ऐश्वर्य, वैभव और प्रभुता का भोग करने वाले मधुसूदन द्वारपाल के मुख से सुदामा का नाम सुनते ही नगे पैरो उठ भागे थे, जहा प्रियतम के प्रेम मे पगी वियोगिनी मीरा ने प्रियतम के चरणो पर अपने प्राण न्यौछावर कर दिये थे। परन्तु ये तो इस पुण्यधाम के अतीत की बाते है, जिनकी स्मृतियो मे हम गौरव अनुभव करते है। आजकल तो यह एक बहुत छोटा नगर है। भले ही यह कभी स्वर्ण-नगरी रही हो, परन्तु आज न तो वे स्वर्ण मंदिर शेष है और न उनका कोई

श्री द्वारकानाथ जी

चिन्ह दिखाई पडता है। पुराणो मे प्राप्त घटनाओ के अनुसार कहा जाता है कि सागर ने यादववंश के गौरव और कारुणिक पतन के इतिहास को मूल द्वारकापुरी के साथ ही अपने गर्भ मे छिपा लिया है। भूमि पर अब उसका कोई अस्तित्व शेष नही बचा है।

रेलवे स्टेशन से पाच किलोमीटर की दूरी पर समुद्र किनारे यह नगरी बसी है। द्वारका के पश्चिम मे समुद्रजल से भरा रहने वाला गोमती नामक तालाब है, जिससे इस स्थान को गोमती द्वारका भी कहते हैं।

तीर्थ स्थल का दर्शनीय विवरण

द्वारका के मंदिरो मे रणछोड जी का मंदिर अतीव सुदर है। कथा है कि भगवान कृष्ण कालयवन के विरुद्ध युद्ध से भागकर द्वारका पहुचे। इस प्रकार उनका नाम रणछोड जी पडा। 40 वर्गफुट लम्बा चोडा और 140 फुट ऊचा यह मंदिर दोहरी दीवालो से निर्मित है। और बीच मे परिक्रमा के लिए स्थान छुटा हुआ है। अदर के फर्श पर सफेद और नीले सगमरमर के टुकडे कलात्मक ढग से जुडे हुए हैं। रणछोड जी की मूर्ति मे, द्वार के चौखटो आदि मे सोने और चादी का काम है। इस मंदिर के अतिरिक्त यहां त्रिविक्रम, कुशेश्वर, प्रद्युम्न और शारदा मंदिर हैं।

द्वारका के निकट बेट द्वारका है। बेट द्वारका 32 किलोमीटर की दूरी पर कच्छ की खाडी मे स्थित एक द्वीप में है। बेट द्वारका नाव द्वारा जाया जाता है। यहां दो मंदिर हैं—एक रणछोड जी का और दूसरा शखोद्धार का। मार्ग में गोपी तालाब है। इस तालाब की सफेद मिट्टी को गोपी चदन कहा जाता है। तीर्थ यात्री इस मिट्टी को ले जाते है, तथा मस्तक और वक्षस्थल पर लगाते है।

ठहरने के स्थान

द्वारका और बेट द्वारका मे यात्रियो के ठहरने के लिए अनेक धर्मशालाए है, जिनमे सभी सुविधाओ के अतिरिक्त स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इनके अतिरिक्त कुछ विश्रामगृह भी है, जिनमे ये उल्लेखनीय है—

1. बजरग लॉज, तीन बत्ती, द्वारका।
2. महालक्ष्मी लॉज, तीन बत्ती, द्वारका।

3. रामेश्वरम् धाम

मद्रास (तमिलनाडु राज्य) के रामनाथपुरम् (रामनाद) जिले में भारत की दक्षिण सीमा के अंतिम स्थल पर यह रामेश्वर द्वीप है। यहीं पर बगाल की खाडी अरब सागर में मिलती है। 25 किलोमीटर लम्बा और 2.16 किलोमीटर चौडा यह द्वीप पुराणो में गधमादन पर्वत के नाम से वर्णित है। यह भारत के अत्यत आदरणीय तीर्थ स्थानो में से एक स्थान है। श्रीराम के नाम पर इसका नाम रामेश्वर हुआ, क्योंकि श्रीराम ने ही इसे यहा स्थापित किया था, जो भगवान् शकर के आदि द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। प्राचीन काल से यह मंदिर अत्यत पवित्र समझा जाता है।
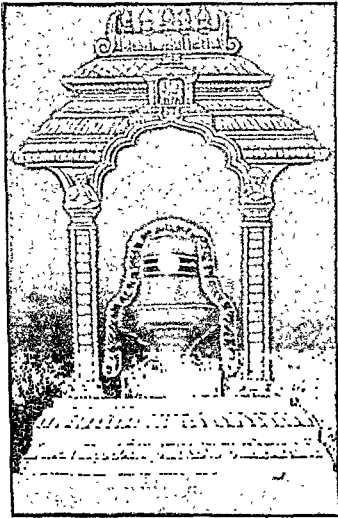
श्री रामेश्वर जी

धार्मिक पृष्ठभूमि

इसकी स्थापना की कथा इस प्रकार है—सुग्रीव की सेना को साथ लिये श्रीराम सीता की खोज में यहा आये। रावण पर आक्रमण करने के लिए समुद्र पार करना जरूरी था, जो सौ योजन पार था। राम ने सागर से मार्ग मागा, परन्तु उसने मार्ग नही दिया। इस पर राम को कुछ क्रोध आया और उन्होंने अग्निबाण द्वारा सागर को सुखा देने की बात सोची, तब सागर ने ब्राह्मण रूप में प्रकट होकर उनसे ऐसा न करने को कहा और इसके बदले एक पुल का निर्माण करने को कहा। श्रीराम ने सागर की बात मान ली और विश्वकर्मा के पुत्र नल-नील को, जो महान् शिल्पी थे, बुलवाया। नल ने अपनी शिल्प-विद्या के प्रबल प्रताप से लकडी, पत्थर, जो मिला, उसी को पानी पर तैरा दिया और देखते-देखते राम की आज्ञा से सौ योजन लबा तथा दस योजन चौडा पुल तैयार कर दिया।

प्रचलित धारणा के अनुसार श्रीराम ने लंका के राजा रावण पर चढाई करने से पहले यहा शकर की आराधना कर मंदिर की स्थापना की थी।

युद्ध में विजयी होकर तथा रावण का नाश करके राम लका से इसी गधमादन पर्वत पर वापस आये। यहा पर सीता जी ने अपनी पवित्रता के प्रमाण में अग्निपरीक्षा दी। तब अगस्त्य आदि ऋषियो ने राम से रावण को मारने का प्रायश्चित्त करने के लिए कहा, क्योंकि रावण ब्राह्मण और ऋषि पुलस्त्य का नाती था। प्रायश्चित्तस्वरूप राम को शिवजी का एक ज्योतिर्लिंग स्थापित करना था। श्रीराम ने हनुमान से कैलाश जाने को और स्वय शंकर भगवान् से ही उनकी कोई उपयुक्त मूर्ति लाने को कहा। हनुमान कैलाश गये, किन्तु उन्हे अभीष्ट मूर्ति नहीं मिल सकी, अत: उन्होने (हनुमान ने) इसके लिए तप शुरू कर दिया।

इधर हनुमान को बहुत देरी होते देख राम और ऋषियो ने मूर्ति-स्थापना का शुभ-मुहूर्त गवाना ठीक नही समझा। अत. सीता द्वारा बनाये हुए बालू के शिवलिंग को उन्होने स्वीकार कर लिया और सीता तथा राम ने उस ज्योतिलिंग की ज्येष्ठ शुक्लादशमी, बुधवार को, जब चद्रमा हस्त नक्षत्र में और

सूर्य वृष राशि में था, स्थापना की, जो रामेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

स्थापना के बाद हनुमान भी एक शिवलिंग लेकर कैलाश से आ गये। उनको, राम के प्रतीक्षा न करने पर दुःख और कुछ क्रोध भी हुआ। हनुमान के इस भाव को देखकर राम ने रामेश्वर की बगल में ही हनुमान द्वारा लाये शिवलिंग की स्थापना करके उन्हें सन्तुष्ट किया और यह भी घोषणा की कि रामेश्वर की पूजा करने से पहले लोग हनुमान द्वारा लाये हुए शिवलिंग–जिसका नाम काशी विश्वनाथ रखा गया था–की पूजा करेंगे। आज तक यह प्रथा चली आ रही है कि यात्रीगण रामेश्वर की पूजा से पहले काशी विश्वनाथ की ही पूजा करते हैं।

रामेश्वर यात्रा का महत्त्व

भगवान रामेश्वर पर गंगाजल चढ़ाने का बहुत माहात्म्य है। रामेश्वर दर्शन से ब्रह्महत्या जैसे महान् पाप भी नष्ट हो जाते है।

रामेश्वर मंदिर के पास ही सेतुमाधव नाम का वैष्णव मंदिर भी है। इसकी कथा इस प्रकार है–

एक पाड्य-राजा की पुत्री गुणनिधि से, जो लक्ष्मी का अवतार थी, भगवान विष्णु सेतुमाधव नाम के ब्राह्मण बनकर गुप्त रूप से प्रेम करते थे। पता चलने पर राजा ने सेतुमाधव को बंदी बना लिया, किन्तु अंत में विष्णु-लक्ष्मी के अवतार की बात खुल गई। राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने सेतुमाधव नाम का मंदिर बनवा दिया।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

कहा जाता है कि मलिक गफूर सन् 1311 में रामेश्वर पहुंचा और उस द्वीप पर एक मस्जिद बनवाई। जहा रामेश्वर का मंदिर है, वह भूमि पहले रामनाद के राजाओ, सेतुपाटियों की जमीदारी में थी, जिन्होने पूजा-अर्चना के लिए बहुत कुछ दिया था। सपूर्ण मंदिर का निर्माण लगभग 350 वर्षों में और प्राय सेतुपाटी परिवार द्वारा ही हुआ है। मंदिर के व्यय और विशेष विधिवत् अर्चना-पूजा के लिए 72 गाव दिये गये थे। इन गावो में अधिकाश रामनाद जमीदारी से मिले थे। मडपो और प्राकारो में राजाओं तथा चदा दाताओं की मूर्तिया बनाई गई है।

रामेश्वर मंदिर द्वीप के पूर्वीय तट पर है। इसके भवन बड़े विशाल है और ऊची-ऊची दीवारो से घिरे हुए है। यह सपूर्ण मंदिर, पूर्व से पश्चिम तक हजार फुट और उत्तर से दक्षिण साढे छ: सौ फुट के क्षेत्र में फैला हुआ है। इसके मुख्य द्वार पर सौ फुट ऊचा गोपुरम है। उत्तर, दक्षिण और पूर्व के इसके तीन गोपुरम है। अपूर्ण अंतरतम में प्रकोष्ठ भगवान रामेश्वर विराजमान हैं, साथ ही उनकी शक्ति (पर्वतवर्धिनी अम्मा), विश्वनाथ स्वामी तथा उनकी शक्ति (विशालाक्षी अम्मा) भी है। समीप ही गरुड़-स्तम्भ है, जो सोने के पत्रों से मढ़ा हुआ है। नंदी बहुत ही दीर्घकाय है, 12 फुट लम्बा, 8 फुट चौड़ा और 9 फुट ऊंचा। पूर्व-पश्चिम ओर के दोनों गलियारे स्नानागार तथा महातीर्थ कहलाते है। उनकी सीढ़िया भी है।

यहा के खंभे अत्यन्त विशाल है। बरामदे लगभग चार हजार फुट लम्बे है और चौड़ाई 17 फुट से लेकर 21 फुट तक है तथा इनकी ऊंचाई 30 फुट के लगभग है।

इसके आस-पास और भी अनेक तीर्थ है, जैसे माधवचक्र, अमृत, शिव, गंगा, कोटि इत्यादि। गीले कपड़ों में सिर्फ लंगोट यात्रीगण इन सभी 24 तीर्थों के क्रम से स्नान करते है।

यात्राक्रम

श्री विनायक–यात्रा का शास्त्रीय क्रम यह है कि यात्री को पहले उप्पूर में जाकर गणेशजी का दर्शन करना चाहिये। रामनाथ पुरम् से 32 किलोमीटर उत्तर यह ग्राम है। यहा श्रीराम द्वारा स्थापित श्री विनायक का मंदिर है।

देवीपत्तन–उप्पूर के पश्चात देवीपत्तन जाना चाहिये। रामनाथपुर से यह 20 किलोमीटर है। श्रीराम ने यहा नवग्रहों की स्थापना की थी। सेतुबंध यहीं से प्रारम्भ हुआ, अत: यह मूल सेतु है। यहा धर्म ने तप करके शिव-वाहनत्व प्राप्त किया है। उनके द्वारा निर्मित धर्म पुष्करिणी है। महर्षि गालव की यह तपोभूमि है।

यहा समुद्र उथला है। उसमें पत्थर के नौ छोटे स्तम्भ है। ये नवग्रह के प्रतीक है। सरोवर में स्नान करके तब समुद्र में इनकी परिक्रमा की जाती है। यहा कुछ दूरी पर महिषमर्दिनी देवी का मंदिर है। बाजार में शिव मंदिर है।

धनुषकोटि–रामनाथपुरम् को पावन द्वीप भी कहते है। द्वीप के पश्चिम छोर पर भैरव तीर्थ में स्नान करना चाहिये। इसके पश्चात् पूर्वी छोर पर धनुषकोटि जाकर समुद्र स्नान कर रामेश्वरम् के दर्शन करने चाहिये। धनुषकोटि रामेश्वरम् से 20 किलोमीटर दूर स्थित है। रामेश्वरम् जाने से पूर्व यहा 36 बार स्नान तथा बालुका पिड देना चाहिये। परन्तु समुद्री तूफान में यह नष्ट हो गया। अब वहा कुछ निर्माण हो रहा है। परन्तु वहा मोटर बोट द्वारा अब भी पहुचा जा सकता है। जब सूर्य मकर में हो अथवा ग्रहण लगा हो, उस समय धनुषकोटि में स्नान करने का विशेष महत्त्व है।

धनुषकोटि का नामकरण रामायण काल की एक घटना पर आधारित है। कहते है कि राम, रावण का बध कर लका से वापस लौटते समय जब सेतुस्थल में आकर ठहरे तो विभीषण ने उनसे प्रार्थना की थी कि ऐसी कृपा कीजिए जिससे इस देश
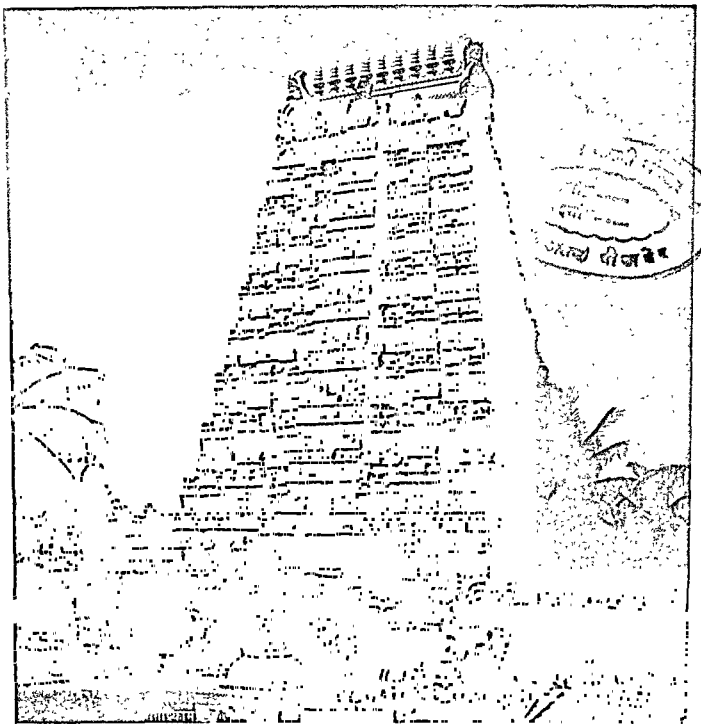
के शक्तिशाली लोग हमें सताने के लिए सेतु द्वारा लंका में प्रवेश न करें। तब श्रीराम ने अपने भारी कोदण्ड अर्थात् धनुष की कोटि से उस सेतु को काटकर समुद्र में मिला दिया था। इस प्रकार धनुष और कोटि इन दोनों शब्दों के योग से इस स्थल का नाम 'धनुषकोटि' हुआ।

धार्मिक महत्त्व

धनुषकोटि का धार्मिक महत्त्व भी प्राचीनकाल से चला आ रहा है। महाभारत युद्ध के अठारहवें दिन रात्रि में अश्वत्थामा ने शिवजी की तपस्या कर एक चमत्कारी तलवार पाई और पाण्डवों के डेरे में जाकर धृष्टद्युम्न व पांचों युवा पाण्डव-पुत्रों आदि सोते हुए लोगों का वध कर दिया। इस शिशुहत्या और सोते हुए क्षत्रियों का वध करने के पाप से अश्वत्थामा पीड़ित हुआ और दुःखी होकर वेदव्यास की शरण में गया। व्यासजी का आदेश पाकर अश्वत्थामा ने

धनुषकोटि मे तीन दिन तक स्नान किया और समस्त पापो के प्रभाव से मुक्त होकर शांति पाई।

आज भी भक्त जनों को इस तीर्थ की धार्मिक पवित्रता मे विश्वास है। विशेषकर आषाढ और माघ मास मे इसे विशेष पावन माना जाता है और इन्ही दिनो यात्रीगण धनुषकोटि मे स्नान कर पुण्यलाभ लेते है। सूर्य और चंद्रग्रहण के समय यहा स्नान करने से पितृ-ऋण और देव-ऋण से मुक्ति मिलती है।

धार्मिक मान्यताओ के अतिरिक्त इस स्थान का भौगोलिक महत्त्व भी है। धनुषकोटि बगाल की खाडी, अरब सागर और हिन्दमहासागर के सम्मिलन का स्थल है। पौराणिक मान्यता के अनुसार यहा रत्नाकर और महोदधि ये दो महासागर एक-दूसरे से मिलते है। महोदधि मे लहरे नही उठती। वह एकदम धीर-गम्भीर और शात है। रत्नाकर ऊची-ऊची तरगों मे तरगायित रहता है। लोग दोनो के इस स्वरूप और स्वभाव के कारण महोदधि को ब्राह्मण और रत्नाकर को क्षत्रिय रूप मे मानते है।

धनुषकोटि—रामनाथपुरम को पावन द्वीप भी कहते हैं। द्वीप के पश्चिम छोर पर भैरव तीर्थ पर स्नान करना चाहिए। इसके पश्चात् पूर्वी छोर पर धनुषकोटि जाकर समुद्र स्नान करके रामेश्वरम् के दर्शन करने चाहिए।

अन्य दर्शनीय स्थल

रामेश्वर जाकर यात्री पहले लक्ष्मण तीर्थ मे स्नान करते हैं। यह रामेश्वर मंदिर से सीधे 2 किलोमीटर पश्चिम है। सरोवर पक्का है। वहा लक्ष्मणेश्वर शिव मंदिर है। यहा मुडन तथा श्राद्ध भी होता है। यहा से लौटते समय सीता तीर्थ कुड मिलता है। वहा श्रीराम तथा पंचमुखी हनुमान मूर्ति है। उससे कुछ आगे रामतीर्थ नामक बडा सरोवर है। जल खारा है। किनारे पर श्रीराम-मंदिर है।

ठहरने के स्थान

ठहरने के लिए रामेश्वरम् मे मीनाक्षी लॉज के अलावा कुछ धर्मशालाए भी है। जो बाकायदा होटलो जितना ही किराया लेती है।
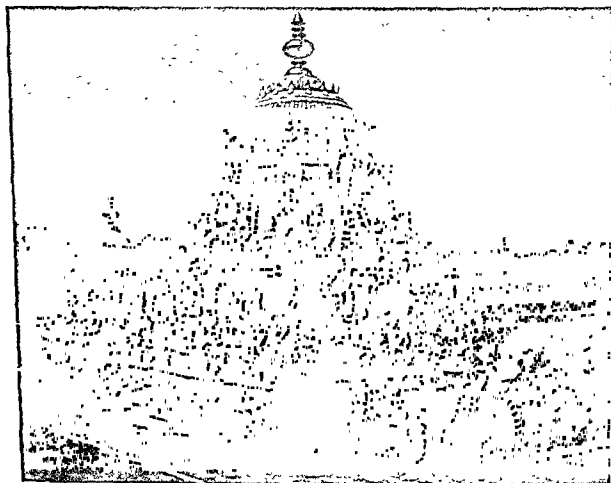
रामनाथ स्वामी मंदिर, रामेश्वर

4. जगन्नाथपुरी धाम

चार धामों मे पुरी का अपना एक विशिष्ट स्थान है। रथ-यात्रा और छुआछूत निवारण की भावना के कारण भी इसका विशेष महत्त्व है। महाप्रभु जगन्नाथ का महाभोग लेते वक्त जाति विचार नही किया जाता है।

धार्मिक पृष्ठभूमि

प्रचलित कथा के अनुसार सतयुग मे पुरी मे एक वन था, जहा नीलाचल नाम का पर्वत स्थित था। इस पर्वत शिखर पर सबकी इच्छा पूर्ण करने वाला कल्पद्रुम वृक्ष खडा था। पर्वत के पश्चिम की ओर एक पवित्र जल-स्रोत था, जिसका नाम रोहिणी था। इसके निकट नीलमणि धारण किये हुए विष्णु भगवान की एक सुदर मूर्ति थी, जिसे 'नीलमाधव' कहा जाता था।

इस आश्चर्यजनक प्रतिमा की चर्चा अवती के तत्कालीन राजा इद्रद्युम्न ने सुनी। वह विष्णु का अनन्य भक्त था। एक दिन जातक नाम के साधु ने उसे नीलमाधव के विषय में बताया। इन्द्रद्युम्न ने इसकी खोज के लिए चारो दिशाओ में ब्राह्मणो को भेजा। इनमे विद्यापति को छोडकर अन्य सभी असफल होकर लौट आये। विद्यापति दूर-दूर तक भटकने के पश्चात शवर देश मे पहुचा। यहा की आदिवासी वन्य जाति को भगवान की प्रतिमा तथा उसके स्थान का पता था।

एक दिन विद्यापति ने विश्ववसु नामक व्यक्ति को फल व फूल लेकर जगल में पूजा के लिए जाते देखा तो उसकी उत्सुकता जाग्रत हो गई। वह विश्ववसु का अतिथि बन गया। उसकी पुत्री ललिता विद्यापति से प्रेम करने लगी तो उसके
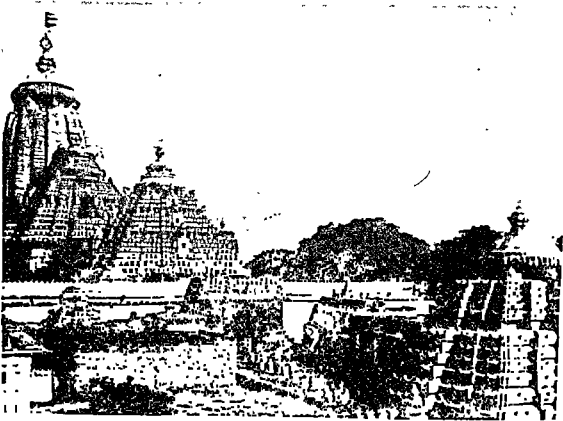
जगन्नाथ पुरी मंदिर, उडीसा

अनुनय-विनय पर विश्ववसु उसकी आखो पर पट्टी बाधकर भगवान् की प्रतिमा तक ले जाने को तत्पर हो गया।

विद्यापति अपने साथ सरसो के दाने ले गया, जिन्हे वह रास्ते मे डालता गया। पर्वत के पास पहुचकर उसे कल्पद्रुम के नीचे नीले पत्थर के रूप मे नीलमाधव के दर्शन हुए।

विद्यापति ने देखा कि एक कौवा वृक्ष के नीचे गिर पड़ा और सीधे स्वर्ग को चला गया। उसके मन मे भी यह इच्छा जाग्रत हुई कि वह पेड पर चढकर वहा से कूद पडे और स्वर्ग प्राप्त करे। पर उसी समय यह आकाशवाणी हुई—"हे ब्राह्मण! सर्वप्रथम राजा को जाकर सूचना दो कि तुम्हे सृष्टि के स्वामी जगन्नाथ मिल गये है।

जब विश्ववसु ने पूजा की तो पुन आकाशवाणी हुई—"हे श्रद्धालु भक्त! तुम्हारी वन्य-वस्तुओ मे मेरी इच्छा पूरी हो चुकी है। अब मै भात और मिठाई खाना चाहता हू। अब तुम मुझे नीलमाधव के रूप मे नही देखोगे। भविष्य मे मेरी पूजा जगन्नाथ के रूप मे होगी।"

विश्ववसु ने समझ लिया कि इस गडबडी का कारण यह ब्राह्मण है। अत ईश्वर से अलग कर देने के अपराध मे विश्ववसु ने विद्यापति को कैद कर लिया। बाद मे अपनी पुत्री के दु ख को देखकर तथा उसके बहुत अनुनय-विनय पर विद्यापति को वापस जाने दिया।

विद्यापति द्वारा नीलमाधव की खोज का समाचार सुनकर राजा इद्रद्युम्न अत्यन्त हर्षित हुए। वे अनेक वृक्ष काटने वालो को साथ लेकर नीलमाधव की खोज मे चल पडे। तब पुन आकाशवाणी हुई—"हे दम्भी राजा ! तुम मेरा मंदिर बनाओगे, परन्तु मेरा दर्शन न कर सकोगे।"

परन्तु इद्रद्युम्न न माने। वे विद्यापति के साथ आगे बढे। तभी उन्हे नारदजी मिले। उन्होने बताया कि नीलमाधव की मूर्ति लुप्त हो चुकी है। राजा ने निराश होकर भगवान को प्रसन्न करने के लिए तपस्या की। तब आकाशवाणी हुई—"हे राजा! अगर तुम एक हजार अश्वमेध यज्ञ करो तो तुम्हे नीलमाधव के रूप मे नही, वरन् समुद्र के द्वारा ब्रह्म के रूप मे दर्शन दूगा।" अश्वमेध यज्ञ पूरे होने पर कुछ लोगो ने समुद्र मे कुछ तख्ते तैरते हुए देखे। यह स्थान चक्रतीर्थ कहलाता है।

राजा ने देशभर के बढई बुलाकर उनसे जगन्नाथ की मूर्ति बनाने को कहा। परन्तु ज्यो ही वे तख्ते पर आरी चलाते उसके टुकडे-टुकडे हो जाते। राजा ने दुखी होकर पुन प्रार्थना की। तब भगवान स्वय एक वृद्ध बढई अनत महाराणा का रूप धारण कर प्रकट हुए और तीन सप्ताह मे मूर्ति को तैयार करने का वचन दिया, लेकिन उन्होने शर्त रखी कि मूर्ति तैयार होने से पूर्व राजा उसके दर्शन न करे।

बढई तख्ते लेकर एक अधेरे कमरे मे बन्द हो गया। जब कई दिन तक भीतर से कोई ध्वनि नही सुनाई दी तो राजा चिंतित हुए। द्वार खोला तो तीन अधूरी मूर्तिया मिली, जिनके हाथ तथा पावो के पजे नही थे। बढई का पता नही था। राजा ने बहुत बडा समारोह कर इन अपूर्ण मूर्तियो की स्थापना की और जगन्नाथ के रूप मे उनकी पूजा आरम्भ की। उनके साथ उनकी बहिन सुभद्रा और भाई बलराम की मूर्ति की भी पूजा की। आषाढ मास मे इन मूर्तियो को बाहर निकाला गया और उनकी रथयात्रा का उत्सव किया गया।

कहा जाता है कि राजा ने जगन्नाथजी से वर मागा था कि उनके परिवार का कोई सदस्य मंदिर पर अपना अधिकार न जता सके। जगन्नाथजी ने यह प्रार्थना स्वीकार कर ली और महाराजा सतानहीन होकर मरे। चूकि महाराजा के कोई वारिस नही था, अत स्वय जगन्नाथजी ने महाराजा का वार्षिक श्राद्ध किया, जो अभी भी प्रति वर्ष मार्गशीर्ष की चद्र पूर्णिमा को मनाया जाता है।

कुछ लोगो का मत है कि जगन्नाथ की पूजा तथा रथयात्रा बौद्धो के समय से प्रचलित है, किन्तु इस पर भी मतभेद है। इतना अवश्य है कि रथयात्रा का उत्सव न केवल पुरी मे होता है, वरन् भुवनेश्वर मे शिवजी के लिए, जयपुर मे विरजादेवी के लिए तथा दक्षिणी भारत के अनेक मंदिरो मे अन्य देवी-देवताओ के लिए भी होता है।

छुआछूत का निषेध

एक ही थाल मे महाप्रसाद ग्रहण करने की प्रथा आदिवासी शबरो के समय से चली आ रही है। इस कारण छुआछूत के अभाव को बौद्धधर्म का प्रभाव कहना गलत होगा। यह सम्भव
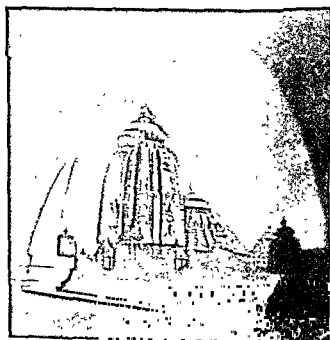
जगन्नाथ पुरी मंदिर

है कि उनके तथा वैष्णव मत के प्रभाव में छुआछूत के बचेखुचे अवशेष भी समाप्त हो गये हों।

प्रचलित लोककथा के अनुसार इद्रद्युम्न ने जगन्नाथ का मंदिर बनवाया, परन्तु वह मंदिर उसके प्रतिद्वंद्वी राजाओं ने नष्ट कर दिया। पुरी के लेखागार में पाये गये वर्ण के अनुसार वर्तमान मंदिर का निर्माण गग वश के सप्तम् राजा अनग भीमदेव ने किया। मंदिर का निर्माण 1198 ई. में पूर्ण हुआ। अनग भीमदेव ने ब्रह्महत्या के प्रायश्चित्त स्वरूप इस विशाल मंदिर का निर्माण किया और ब्राह्मणों को इसका पुजारी नियुक्त किया।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

इस मंदिर के कई भाग हैं। सबसे पूर्व भोगमडप, उसके बाद जग मोहन (नृत्यशाला), मुखशाला (दर्शक कक्ष) तथा अत में विमान या मुख्य मंदिर है, जिसके ऊपर नोकदार मीनार बनी हुई है।

भोगमडप का निर्माण राजा पुरुषोत्तम देव (1465-95) ने किया और मुखशाला का निर्माण राजा प्रताप रुद्रदेव (1495-1532) ने किया। बाद में बगाल के मुसलमान राजा हुसेनशाह तथा पठान शासक काला पहाड ने पुरी नगर के मंदिरों को काफी क्षति पहुचाई। मराठा शासनकाल में इस मंदिर की व्यवस्था के लिए 27 हजार रुपये वार्षिक स्वीकृत किया गया। मराठों ने कोणार्क के अरुण स्तम्भ को हटाकर जगन्नाथ मंदिर के सामने गाड दिया।

पूजाविधि और रथयात्रा

श्रद्धालु भक्त, मंदिर की, भीतर और बाहर से पूरी परिक्रमा करते हैं और भगवान जगन्नाथ तथा सुभद्रा व बलराम की मूर्ति के आगे नतमस्तक होते हैं। पुरी में 400 ब्राह्मण रसोइये 50 से अधिक प्रकार के चावलों का भात, सब्जी तथा मिठाइया तैयार करते हैं। ये सर्वप्रथम जगन्नाथ को चढाये जाते हैं। उसके बाद भक्तों में बाटे जाते हैं, जिनकी सख्या रथयात्रा के दिन चार लाख तक पहुच जाती है।

मंदिर में तीन प्रकार के भोग का निर्माण होता है। जगन्नाथ भोग सादा भात होता है, बलराम भोग में खीर आदि और सुभद्रा भोग में नाना प्रकार के पकवान होते हैं। इन भोगों की हाडी में भरकर अलग-अलग दामों में मंदिर से ही बिक्री होती है।

रथयात्रा के दिन तीनों मूर्तियां मंदिर से रथ में रखी जाती हैं। उसके बाद वे एक मील दूर इन्द्रद्युम्न की रानी गुडीचा के महल तक लाखों मनुष्यों के जुलूस में ले जाई जाती हैं और जगन्नाथ जी की मौसी के मंदिर में रखी जाती हैं। दस दिन पश्चात् वहा से वापस आने की यात्रा में भी उसी प्रकार धूमधाम से जुलूस आता है। इस यात्रा को 'उल्टारथ' कहते
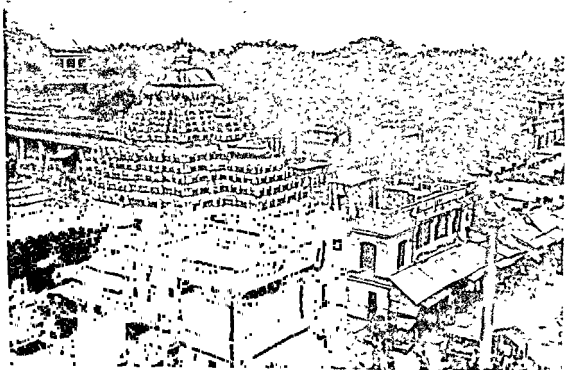
पुरी के मंदिर का एक दृश्य

हैं। रथयात्रा के दिन अनेक भक्त उपवास रखते है। अनेक भक्त रथ के रस्सों को खीचने का प्रयास करते है, परन्तु अब इसकी व्यवस्था उडीसा सरकार ने अपने हाथ मे ले ली है, जिसके कारण अब भगदड और दुर्घटनाए नही होती।

जगन्नाथजी के मदिर मे प्रात काल सात बजे मगला के दर्शन होते हैं, ग्यारह बजे राजभोग के दर्शन होते है। दो बजे छत्रभोग, चार बजे मध्यान्ह भोग, सायकाल सात बजे आरती, रात को दस बजे सँध्या भोग तथा 11 बजे चदन लेप, रात को दो बजे श्रृगार। इसके बाद तीन बजे रात को शयन का दर्शन होता है।

गुडीचा मदिर के पास इद्रद्युम्न कुड है। इसके अतिरिक्त लोकनाथ मंदिर, हनुमान मदिर और गौराग तीर्थ आदि है।

स्नान के पवित्र स्थान

श्री जगन्नाथपुरी मे स्नान करने के कई पवित्र स्थल है जिनमे नहाकर तीर्थयात्री अपने को धन्य करते है।

स्नान के निम्न प्रधान स्थान है—

1 महोदधि (समुद्र)
2. रोहिणी कुड
3. इद्रद्युम्न सरोवर
4. मार्कडेय सरोवर
5. चदन तालाब
6. श्वेत गगा
7. श्री लोकनाथ सरोवर
8 चक्र तीर्थ

अन्य दर्शनीय स्थल

महोदधि—जगन्नाथ मदिर से समुद्र की ओर सीधा मार्ग जाता है। स्नान के स्थान से पहले स्वर्ग द्वार बना हुआ है। यह स्नान-स्थल मदिर से लगभग 2½ किलोमीटर दूर पडता है।

रोहिणी कुंड—रोहिणी कुड जगन्नाथ मदिर के पास ही है। इस कुड मे सुदर्शन चक्र की छाया पडती है, ऐसा कहा जाता है।

इंद्रद्युम्न सरोवर—यह पवित्र सरोवर जगन्नाथ मदिर से लगभग चार किलोमीटर दूर गुडीचा मदिर के पास स्थित है। यहीं जगन्नाथजी की मौसी का मदिर है।

मार्कंडेय तथा चंदन ताल—ये दोनो स्नान-स्थल पास-पास हैं। ये दोनो कुड जगन्नाथ मदिर से लगभग डेढ किलो मीटर दूर पडते है।

श्वेत गंगा सरोबर—महोदधि (स्वर्ग द्वार) के रास्ते मे यह सरोवर पडता है। यह समुद्र का ही एक भाग है।

श्री लोकनाथ सरोवर—श्री लोकनाथ मदिर के पास ही यह पवित्र सरोवर स्थित है। यह स्थान जगन्नाथ मंदिर से लगभग 3-4 किलोमीटर दूर स्थित है।

चक्रतीर्थ—चक्रतीर्थ नामक स्नान-स्थल समुद्र तट पर है। यह स्थान स्टेशन से लगभग डेढ़-दो किलोमीटर दूर पडता है। जो भी तीर्थ यात्री यहा आते है, वे इनमे से किसी भी सरोवर में स्नान अवश्य करते हैं।

यात्रा मार्ग

कलकत्ता से पुरी रेल द्वारा पहुचा जा सकता है। दोनो स्थानो के बीच दिन में दो विशेष बसे चलती है। दिल्ली और बम्बई से भी जगन्नाथ पुरी तक सीधी रेल सेवाए उपलब्ध है। शहर मे अधिकतर दर्शन के लिए पैदल चलना पडता है। रिक्शा, टागा भी उपलब्ध है।

यात्रियों के लिए ठहरने की व्यवस्था

जगन्नाथपुरी मे यात्रियो के ठहरने के लिए छोटी-बडी अनेक धर्मशालाए है। इनमे भाटिया की धर्मशाला और सेठ हरिराय बेलजी की धर्मशाला मुख्य है।

धर्मशालाओं के अतिरिक्त अनेक कमरो वाले निम्न होटल और लाज भी ठहरने के लिए उत्तम व्यवस्था से परिपूर्ण हैं

1. ग्राड होटल
2. पुरी होटल
3 रेणुका भवन
4 सागरिका होटल
5. विक्टोरिया क्लब
6 सी व्यू होटल
7. पुरी व्यू होटल
8. ओशन व्यू होटल
9. प्लाजा होटल

जगन्नाथ पुरी के आसपास अन्य दर्शनीय स्थल

उडीसा प्रदेश के इस भूभाग पर अनेक दर्शनीय स्थल एव तीर्थ है हालाकि जगन्नाथ पुरी जितने माहात्म्य का वर्णन औरो के लिए नही किया जाता है लेकिन फिर भी यहा पर आए यात्री को इन स्थलो की भी यात्रा करनी चाहिए। जगन्नाथ पुरी की यात्रा साक्षी गोपाल को साक्षी माने बिना अधूरी मानी जाती है और भुवनेश्वर, कोणार्क आदि के मंदिर न केवल देवस्थान है बल्कि स्थापत्य कला के भी आदर्श नमूने है।

साक्षी गोपाल

श्री जगन्नाथपुरी से लगभग 18 किलोमीटर पर साक्षी गोपाल का मदिर स्थित है। साक्षी गोपाल नामक रेलवे स्टेशन से यह मदिर करीब एक किलोमीटर दूर पडता है। ठहरने के लिए मंदिर के निकट धर्मशाला भी है।
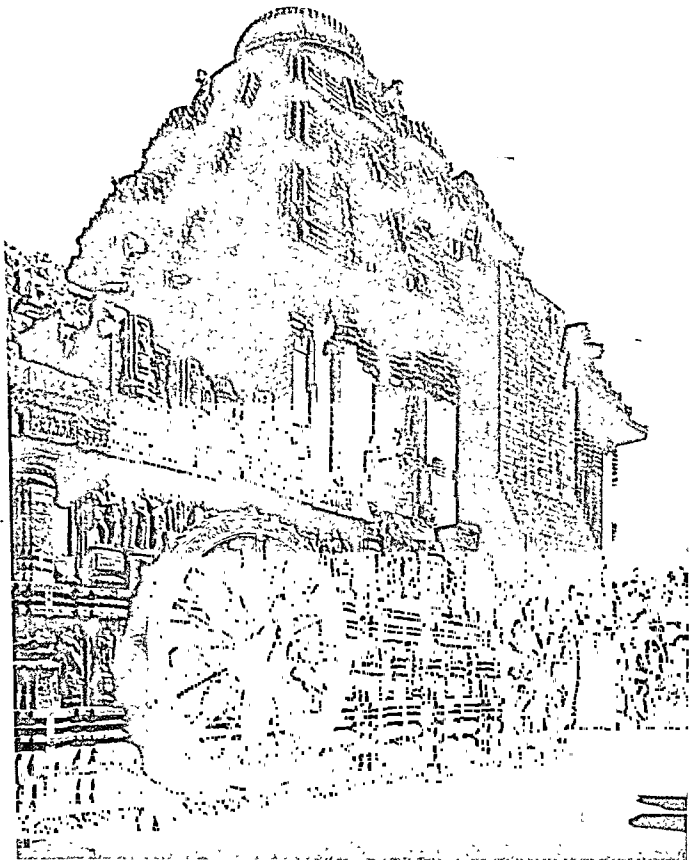
सूर्य मंदिर, कोणार्क

पुरी की यात्रा पर आने वाले दर्शनार्थी यहा भी अवश्य जाते हैं, बल्कि कहा तो यह जाता है कि पुरी की तीर्थयात्रा साक्षी गोपाल के दर्शन करने पर ही पूर्ण मानी जाती है।

धार्मिक पृष्ठभूमि

इस मंदिर से सबंधित एक कथा प्रचलित है कि उत्कल देश मे एक ब्राह्मण तीर्थयात्रा पर निकला। यह ब्राह्मण बहुत धनवान था। उसने अपने साथ एक अन्य ब्राह्मण को भी ले लिया, जो गरीब था। गरीब ब्राह्मण युवक ही था, जबकि धनी ब्राह्मण वृद्ध था। उस समय तीर्थयात्रा पैदल करनी पडती थी। अतः यात्रा के दौरान गरीब युवक ब्राह्मण ने वृद्ध ब्राह्मण की खूब सेवा की।

उसकी सेवा से प्रसन्न होकर वृद्ध ब्राह्मण ने इस युवक से कहा कि यात्रा से वापस लौटकर वह उसका विवाह अपनी पुत्री से कर देगा।

तीर्थयात्रा से वापस लौटने पर जब वृद्ध ब्राह्मण ने अपने पुत्रो से विवाह के बारे में विचार किया तो वे अपनी बहन का विवाह एक गरीब ब्राह्मण से करने के लिए तैयार न हुए।

गरीब युवक का ब्राह्मण के लडको ने बहुत अपमान किया और उसकी खिल्ली उड़ाई। इससे वह गरीब युवक बहुत दुखी हुआ और अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर उसने वृद्ध ब्राह्मण की लडकी से विवाह करने की ठान ली। उसने पंचायत बुलाई।

पचो को तो सबूत की आवश्यकता थी। उन्होने युवक से पूछा कि वृद्ध ब्राह्मण ने किसके सामने अपनी पुत्री का विवाह तुमसे करने का प्रस्ताव रखा था?

युवक ने कहा—"भगवान गोपालजी के सामने उन्होंने मुझसे अपनी कन्या का विवाह करने का प्रस्ताव रखा था।"

तब पचो ने कहा—"तब गोपालजी को ही साक्षी के लिए बुलाओ।" यह पंचो ने व्यग्य मे कहा था।

लेकिन उस भोले ब्राह्मण युवक को यह बात लग गयी। वह लौटकर फिर तीर्थ पर गया और गोपाल मंदिर मे गोपालजी से प्रार्थना की। गोपालजी ने प्रकट होकर उसे दर्शन दिए और कहा कि वे उसकी साक्षी देने अवश्य चलेगे। उन्होने कहा कि वह आगे-आगे चले और वे पीछे-पीछे आएंगे। घुघरू की छन-छन से उसे पता चलता रहा कि गोपालजी उसके पीछे आ रहे हैं।
मुडकर न देखे। अन्यथा जिस जगह वह पीछे मुडकर देखेगा, गोपालजी वही स्थिर हो जाएगे।

काफी दूर आने के बाद पुल अलसा नामक स्थान पर रेत होने मे गोपाल जी के पांव जमीन मे धस गए और उनके नूपुरो की छन-छन वद हो गई। उस युवक ने समझा कि भगवान कही रुक गए। उसने पीछे मुडकर देखा और भगवान गोपाल वही स्थिर होकर रह गए।

लेकिन भगवान के वहा तक आने का साक्ष्य तो लोगों को मिल ही गया।

बाद मे कटक के राजा ने भगवान गोपालजी के विग्रह को वहा से निकालकर जगन्नाथ पुरी के मंदिर मे स्थित कर दिया। लेकिन वहां विचित्र घटना होने लगी, समय से पहले ही गोपाल पूरा नैवेद्य लेने लगे। तब राजा ने पुरी से 16-17 किलोमीटर दूर मंदिर मे गोपालजी की मूर्ति को प्रतिष्ठित कर दिया।

मंदिर मे गोपाल बिन राधा के अकेले कब तक रहते। मंदिर के पुजारी के यहां कन्या के रूप मे राधिका जी अवतीर्ण हुई।

उसका नाम लक्ष्मी रखा गया। जब वह युवती हुई तो विलक्षण घटनाए घटने लगी। कभी गोपाल विग्रह की माला लक्ष्मी के पलंग पर होता। कभी लक्ष्मी के वस्त्र मंदिर के विग्रह के पास पाए जाते।

अत मे पुजारी ने यह तय किया कि गोपाल के पास राधिका की मूर्ति भी अवश्य होनी चाहिए। जिस दिन राधिका जी की मूर्ति बनकर आयी और उसकी प्रतिष्ठा हुई, उसी दिन पुजारी जी की कन्या लक्ष्मी अचानक स्वर्ग सिधार गयी। आश्चर्य की बात तो यह थी कि राधिका की मूर्ति का रूप बिल्कुल लक्ष्मी के रूप जैसा ही था।

इस प्रकार साक्ष्य देने आए गोपालजी के इस मंदिर का नाम ही साक्षी गोपाल पड गया।

कोणार्क

जगन्नाथपुरी से 33 किलोमीटर उत्तरपूर्व समुद्रतट पर चंद्रभागा नदी के किनारे स्थित एक सूर्य मंदिर है। इस मंदिर की कल्पना सूर्य के रथ के रूप मे की गई है। रथ मे बारह जोडी विशाल पहिए लगे हैं और उसे सात शक्तिशाली घोडे तेजी से खीच रहे हैं। यह विशाल मंदिर मूलतः चौकोर दीवाल से घिरा था। मंदिर का मुख पूर्व मे उदीयमान सूर्य की ओर है और इसके तीन प्रधान अंग—देउल (गर्भगृह) जगमोहन (मंडप) और नाटमडप एक ही अक्ष पर है।

सबसे पहले नाटमडप मे प्रवेश किया जाता है—यह नाना अलंकरणो और मूर्तियो से विभूषित ऊंची जगती पर है, चारों दिशाओ मे स्तम्भ है। पूर्व दिशा मे सोपानमार्ग के दोनो ओर गजशार्दूलो की भयावह और शक्तिशाली मूर्तिया बनी हैं। नाटमडप का शिखर नष्ट हो गया है। कोणार्क मे नाटमडप समानाक्ष होकर भी भोगमंदिर पृथक है—दक्षिण पूर्व मे है। नाटमडप से उतरकर जगमोहन मे आते हैं, पहले यहा एक एकाश्म अरुण स्तम्भ था। जो अब जगन्नाथपुरी के मंदिर के सामने लगा है। जगमोहन और देउल एक ही जगती पर खडे

है। नीचे गजभर बना है जिसमें विभिन्न मुद्राओ में हाथियो के दृश्य अंकित हैं। गजभर के ऊपर जगती अनेक मूर्तियो से अलंकृत है।

धार्मिक पृष्ठभूमि

इस स्थान के एक पवित्र तीर्थ होने का उल्लेख कपिल संहिता, ब्रह्मपुराण, भविष्य पुराण, साब पुराण, वराह पुराण आदि मे मिलता है। कथा है कि कृष्ण के जांबवती से जन्मे पुत्र सांब अत्यत सुंदर थे। कृष्ण की स्त्रियां जहा स्नान किया करती थी वही से एक दिन नारद निकले—उन्होने देखा कि वहा स्त्रिया सांब के साथ प्रेमचेष्टा कर रही हैं। यह देखकर नारद श्रीकृष्ण को वहा लिवा लाए। कृष्ण ने यह सब देखकर सांब को कोढी हो जाने का शाप दिया। सांब ने अपने को निर्दोष बताया तो कृष्ण ने उन्हे मैत्रेय वन (अब जहां कोणार्क है) जाकर सूर्य की आराधना करने को कहा। प्रसन्न होकर सूर्य ने उन्हे स्वप्न मे दर्शन दिया और दूसरे दिन जब साब चद्रभागा नद मे स्नान करने गए तो उन्हें कमल के पत्ते पर सूर्य की एक मूर्ति दिखाई पडी। सांब ने यथाविधि उस मूर्ति की स्थापना की और पूजा के लिए अठारह शाकद्वीपी ब्राह्मणों को बुलाकर वहा बसाया। पुराणो मे इस पूर्ति का उल्लेख कोणार्क अथवा कोणादित्य नाम से किया गया है।

तीर्थस्थल का महत्त्व

कहते है कि रथ सप्तमी के दिन साब ने चद्रभागा नदी मे स्नान कर सूर्य मूर्ति प्राप्त की थी अत: आज भी उसी तिथि को वहा लोग स्नान कर सूर्य पूजा करने जाते है। उस दिन सूर्य पूजा करने से व्यक्ति निरोग हो जाता है।

यात्रा मार्ग

पुरी से समुद्र तट तक पैदल मार्ग है लेकिन ठीक नही है—इस मार्ग से कोणार्क 30 किलोमीटर है। पुरी से सुबह कइ बसे कोणार्क के लिए जाती है। बस द्वारा कोणार्क 81 किलोमीटर है। सभी बसे शाम को लौट आती हैं। भुवनेश्वर से भी कोणार्क के लिए बसे चलती हैंऔर दूरी 66 कि मी है।

ठहरने का स्थान

कोणार्क में कोई बस्ती नही है। ठहरने का स्थान भी नही है। सुबह जाकर शाम तक लौटना होता है और दिन भर के भोजन का सामान साथ ले जाना चाहिए। मदिर में कोई आराध्य मूर्ति भी नही हैं।

ध्यान रखना चाहिए कि वर्षा के दिनो मे बसे नही चलती हैं और पैदल रास्तों से भी नही जाया जा सकता है।

भुवनेश्वर

भुवनेश्वर, वाराणसी के समान ही शिव मंदिरों का नगर है। कहा जाता है कि यहां कई सहस्र मंदिर थे। अब भी यहां मंदिरो की सख्या कई सौ है। इसे 'उत्कल वाराणसी' और 'गुप्त काशी' भी कहते है। पुराणो में इस क्षेत्र का वर्णन 'एकाग्र क्षेत्र' के रूप मे हुआ है। भगवान शकर ने स्वय इस क्षेत्र को प्रकट किया है इसीलिए इसे 'शाम्भव क्षेत्र' भी कहते हैं।

पुरी के समान यहा भी महाप्रसाद का माहात्म्य माना जाता है।

धार्मिक पृष्ठभूमि

काशी मे सभी तीर्थाधिदेवो के बस जाने पर भगवान शंकर को एकांत मे रहने की इच्छा हुई। देवर्षि ने एकाग्र क्षेत्र की प्रशसा की। यहा आकर शकर जी ने क्षेत्रपति अनत वासुदेव जी से कुछ काल निवास की अनुमति मांगी। भगवान वासुदेव ने शकर जी को यहा नित्य निवास का अनुरोध करके रोक लिया।

स्नान के पवित्र तीर्थ

भुवनेश्वर मे 9 प्रसिद्ध तीर्थ हैं, जिनमें यात्री को स्नान-प्रेक्षणादि करना चाहिए—1. बिंदु सरोवर, 2. पाप-नाशिनी, 3 गंगा-यमुना, 4 कोटि तीर्थ, 5. देवी पापहरा, 6 मेघ-तीर्थ, 7. अलावुतीर्थ, 8 अशोक कुड (रामहृद), 9. ब्रह्मकुंड।

इनमे भी बिंदु सरोवर तथा ब्रह्मकुड का स्नान मुख्य माना जाता है।
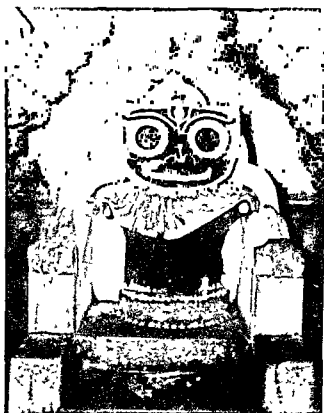
भुवनेश्वर मंदिर
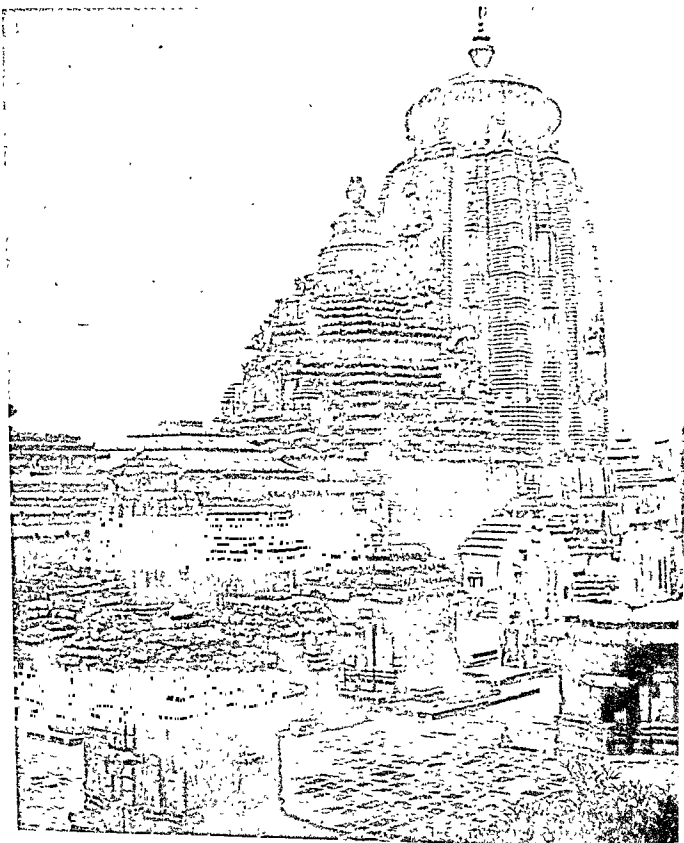
लिंगराज मंदिर भुवनेश्वर

बिंदु सरोवर

भुवनेश्वर के बाजार के पास मुख्य सड़क से लगा हुआ यह सुविस्तृत सरोवर है। समस्त तीर्थों का जल इसमें डाला गया है। इसलिए पवित्र माना जाता है। सरोवर के मध्य में एक मंदिर है। वैशाख महीने में यहां चंदन-यात्रा (जल-विहार) का उत्सव होता है। सरोवर के चारों ओर बहुत से मंदिर हैं।

ब्रह्मकुंड

बिंदु-सरोवर से लगभग दो फर्लांग दूर नगर के बाहरी हिस्से में एक बड़े घेरे के भीतर ब्रह्मेश्वर मंदिर तथा और बड़े मंदिर हैं। इसी घेरे में ब्रह्मकुंड, मेघकुंड, रामहृद तथा अलाबुतीर्थ कुंड हैं। इन कुंडों के समीप मेघेश्वर, रामेश्वर एवं अलाबुकेश्वर मंदिर हैं। इनमें से ब्रह्मकुंड में स्नान किया जाता है। कुंड में गोमुख से बराबर जल गिरता है और एक मार्ग से कुंड के बाहर जाता रहता है।

कोटितीर्थ

यह तीर्थस्थान, भुवनेश्वर नगर आने के मुख्य मार्ग पर है। वर्षा यहां रुकती है।

देवी पापहरा

यह मुख्य मंदिर (लिंगराज-मंदिर) के सम्मुख कार्यालय के प्रांगण में है। इसी प्रकार मुख्य मंदिर के पिछले भाग यमेश्वर-मंदिर के सामने पापनाशिनी-तीर्थ है।

श्रीलिंगराज-मंदिर

यही भुवनेश्वर का मुख्य मंदिर है। श्रीलिंगराज का ही नाम भुवनेश्वर है। यह मंदिर उच्च प्राकार के भीतर है। प्राकार में चारों ओर चार द्वार हैं जिनमें मुख्य द्वार को सिंहद्वार कहा जाता है।

सिंहद्वार से प्रवेश करने पर पहले गणेशजी का मंदिर मिलता है। आगे नंदी स्तम्भ है और उसके आगे मुख्य मंदिर का भोगमंडप है। इसी मंडप में हरिहर मंत्र से लिंगराज जी का भोग लगाया जाता है।

इस मंदिर के तीन भागों में तीन मंदिर हैं। मुख्य मंदिर के दक्षिणी भाग वाले मंदिर में गणेश जी की मूर्ति है। इस भाग को 'निशा' कहते हैं। *लिंगराजजी के मंदिर के पिछले भाग में* पार्वती मंदिर है। यह मूर्ति खंडित होने पर भी सुंदर है। उत्तर भाग में कार्तिकेय स्वामी का मंदिर है। इन तीनों मंदिरों के भोग मंडप के आगे नाट मंडप है। आगे मुखशाला है, जिसमें दक्षिण की ओर द्वार है। यहां से आगे विमान (श्री मंदिर) है। इस निज-मंदिर की निर्माणकला उत्कृष्ट है। इसके बाहरी भाग में अत्यंत मनोरम शिल्प सौन्दर्य है। भीतर का अंश भी मनोहर है।

अतिरिक्त श्रीलिंगराज मंदिर के ऊर्ध्व भाग में कीर्ति मुख, नाट्येश्वर, दश दिक्पालादि की मूर्तियां अंकित हैं।
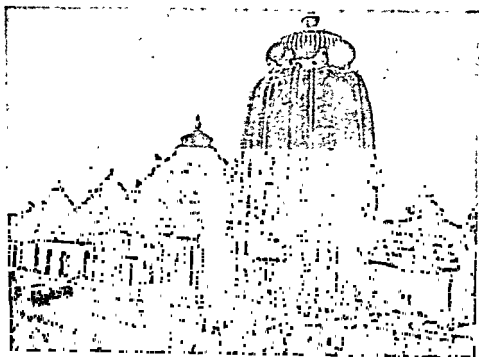
अनंत वासुदेव मंदिर, भुवनेश्वर

श्रीलिंगराजजी के निज मंदिर में चपटा अगठित विग्रह है। यह वस्तुत: बुद्बुद्लिंग है। शिला में बुद्बुदाकर उठे हुए अंकुर भागों को बुद्बुद् लिंग कहा जाता है। यह चक्राकार होने से हरिहरात्मक लिंग माना जाता है और हरिहरात्मक मानकर हरिहर मंत्र से इसकी पूजा होती है। कुछ लोग त्रिभुजाकार होने से इसे हरगौर्यात्मक तथा दीर्घ होने से कालरुद्रात्मक भी मानते हैं। यात्री भीतर जाकर स्वयं इनकी पूजा कर सकते हैं। हरिहरात्मक लिंग होने से यहां त्रिशूल मुख्यायुध नहीं माना जाता, पिनाक (धनुष) ही मुख्यायुध माना जाता है।

मुख्य लिंगराज मंदिर के अतिरिक्त प्राकार के भीतर बहुत से देव-देवियों के मंदिर हैं। उनमें महाकालेश्वर, लक्ष्मी-नृसिंह, यमेश्वर, विश्वकर्मा, भुवनेश्वरी, गोपालिनी (पार्वती) के मंदिर मुख्य हैं। इनमें भुवनेश्वरी तथा पार्वतीजी को श्रीलिंगराजजी की शक्ति माना जाता है। भुवनेश्वरी मंदिर के समीप ही नंदी मंदिर है, जिसमें नंदी की विशाल मूर्ति है।

अन्य दर्शनीय स्थल

भुवनेश्वर में इतने अधिक मंदिर हैं कि उनकी नामावली भी देना संभव नहीं है। केवल मुख्य मंदिरों का संक्षिप्त उल्लेख ही किया जा सकता है। वैसे यहां के प्राय: सभी मंदिरों के सम्मुख भोग मंदिर है और उनके पीछे उच्च श्रीमंदिर (विमान या निज मंदिर) है। मंदिरों का ढांचा प्राय: एक-सा है, किन्तु हर एक मंदिर कला में अपनी विशेषता रखता है।

अनन्त वासुदेव:एकाम्र क्षेत्र (भुवनेश्वर) के ये ही अधिष्ठातृ देवता हैं। भगवान शंकर इन्हीं की अनुमति से इस क्षेत्र में पधारे। बिंदु-सरोवर के मणिकर्णिका घाट पर ऊपरी भाग में यह मंदिर है। यहां मुख्य मंदिर में सुभद्रा, नारायण तथा लक्ष्मीजी के श्रीविग्रह हैं।

बिंदु सरोवर के चारों ओर बहुत से मंदिर हैं। उनमें पश्चिम तट पर ब्रह्माजी का मंदिर और दक्षिण में भवानी शंकर का मंदिर दर्शनीय है।
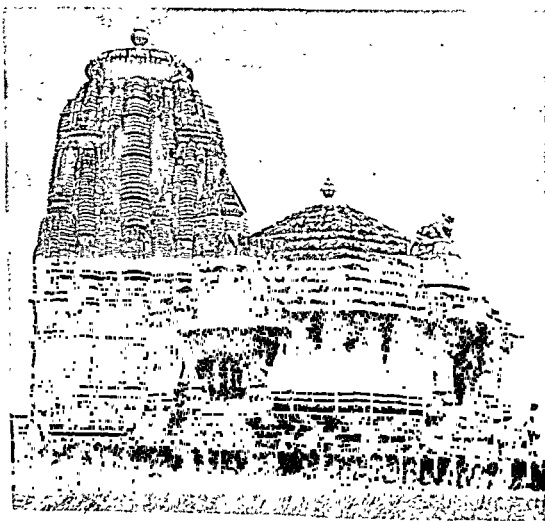
राजारानी मंदिर भुवनेश्वर
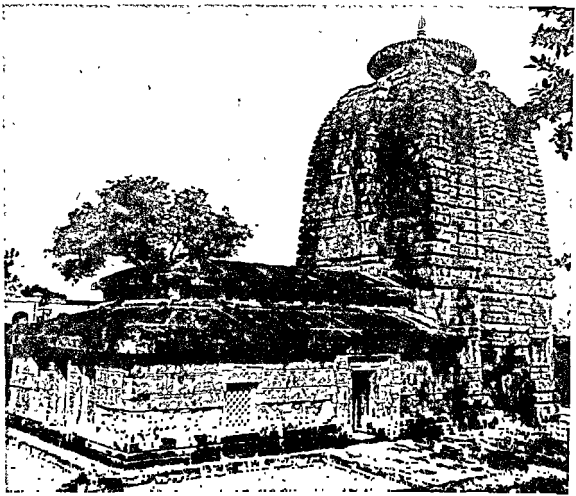
परशुरामेश्वर मंदिर भुवनेश्वर

सामेश्वरः स्टेशन से भुवेनश्वर आते समय मार्ग मे यह मदिर पडता है। इसे गडीचा मदिर भी कहते हैं, क्योकि चैत्र शुक्ला अष्टमी को श्रीलिंगराज जी का रथ यहा आता है।

ब्रह्मेश्वर : ब्रहमकुंड के समीप यह अत्यत कलापूर्ण मदिर है। इसमे शिव, भैरव, चामुडा आदि की मूर्तिया दर्शनीय हैं।

मेघेश्वरः ब्रह्मकुड के पास ही मेघेश्वर तथा भास्करेश्वर मदिर हैं। ये दोनो मदिर प्राचीन हैं और कलापूर्ण हैं।

राजा-रानी मंदिरः यह पहले विष्णु मदिर था। कटक-भुवनेश्वर सडक के पास है। इसमें अब कोई आराध्य-मूर्ति तो नही है किन्तु मदिर बहुत सुदर है। इसका शिल्प-सौन्दर्य देखने यात्री बहुत सख्या मे आते हैं।

इसी प्रकार मुक्तेश्वर, सिद्धेश्वर तथा वही परशु रामेश्वर मदिर भी कला की दृष्टि से सुदर एव दर्शनीय है। यहा कलापूर्ण सुदर मदिर बहुत हैं, किन्तु अधिकाश मदिरो मे आराध्य मूर्ति नही रही। कई मंदिर तो अब ऐसे खडे हैं कि उनमे प्रवेश करना भी भयावह है। वे कभी भी गिर सकते हैं।

यात्रा मार्ग

हावडा-वाल्टेयर लाइन पर, कटक से लगभग 28 किलोमीटर दूर भुवनेश्वर स्टेशन है। यहा से भुवनेश्वर का मुख्य मदिर लगभग 5 किलोमीटर दूर है। स्टेशन से मुख्य मदिर तक बसे जाती हैं। तांगे रिक्शे भी मिलते हैं।

भुवनेश्वर शहर मे घूमने के लिए रिक्शे, टैक्सी, सिटी बस और तागे मिलते हैं। एक से चार किलोमीटर तक की दूरी मे ही अधिकतर मंदिर हैं। भुवनेश्वर पुरी से 63 किलोमीटर है और यहा हवाई अड्डा भी है। हवाई जहाज़ की भी नियमित सेवा उपलब्ध है।

ठहरने का स्थान

भवनेश्वर नगर मे यात्रियो के ठहरने के लिए अनेक धर्मशालाए हैं। इनके अतिरिक्त अनेक होटल और लॉज हैं। इनमे मुख्य ये हैं—

(1) होटल राजमहल,
जनपथ, भुवनेश्वर।
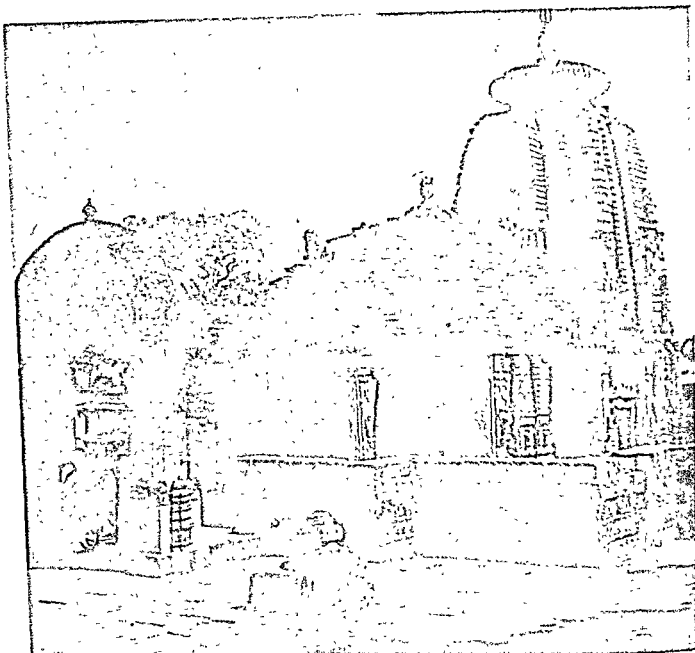
मुक्तेश्वर मंदिर, भुवनेश्वर

(2) न्यू केपीटल होटल,
भुवनेश्वर।

मुख्य धर्मशालाए निम्नलिखित हैं–

(1) श्री हरगोविंदराय जी, मथुरादास डालमिया भिवानी वाले की, बिंदु सरोवर के पास।

(2) रायबहादुर हजारीमल जी दूध वाले की, बिंदु सरोवर के पास।

(3) हरलाल जी विश्वेश्वर लाल गोयनका की, बिंदु सरोवर के पास।

(4) स्टेशन के पास भी एक उत्तम छोटी धर्मशाला है।

इनके अलावा ट्रेवलर्स लॉज और गेस्ट हाउस भी हैं लेकिन किराया महगा है। पहले से आरक्षण करवा कर पर्यटन विभाग के टूरिस्ट बंगले और यूथ हॉस्टल मे भी ठहरा जा सकता है।

खंड 2

द्वादश ज्योतिर्लिंग

[सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकालेश्वर, ओंकारेश्वर,
केदारनाथ, भीमशंकर, विश्वनाथ, त्र्यम्बकेश्वर,
वैद्यनाथ, नागेश्वर, रामेश्वर, घुश्मेश्वर]

नोट : रामेश्वरम् का वर्णन हम चार धाम वाले खंड में कर चुके हैं।

1. सोमनाथ

प्रभासपाटन, जहा सोमनाथ मंदिर अवस्थित है, भारत मे प्राचीन तीर्थ-स्थानो मे एक है। इस पवित्र तीर्थस्थल का उल्लेख ऋग्वेद, स्कदपुराण और महाभारत मे भी आया है। देश के अन्य ग्यारह पवित्र शिव मंदिरो मे से सोमनाथ ही ऐसा मंदिर है, जहा परम पावन 'ज्योतिर्लिंग' स्थापित है। यह मंदिर तथा तीर्थस्थान अनेक शताब्दियो से भारत की सास्कृतिक एकता का प्रतीक बना हुआ है।

धार्मिक पृष्ठभूमि

कहा जाता है कि सोमनाथ मंदिर, जगतोत्पत्ति जितना ही प्राचीन है। पुराणो के अनुसार दक्ष-प्रजापति की 27 कन्याएं थी और सभी का विवाह चंद्र के साथ हुआ था। रोहिणी सभी बहनो मे सुंदर थी और चंद्र की उसके प्रति विशेष आसक्ति थी। यह जानकर शेष सभी बहनो को बडी ईर्ष्या हुई और उन्होंने इसकी शिकायत अपने पिता से की। उनके पिता ने
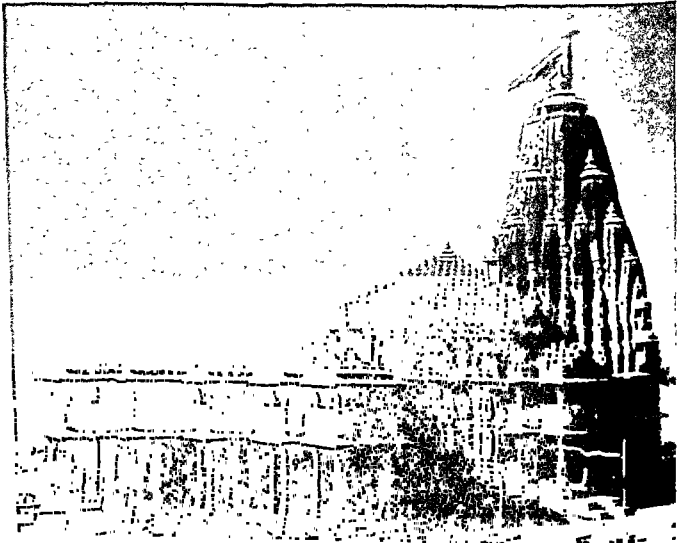
सोमनाथ मंदिर

चंद्र को समझाया, किन्तु चंद्र ने उनकी एक न सुनी। इस पर क्रुद्ध होकर दक्षप्रजापति ने चंद्र को राजयक्ष्मा से पीड़ित होने का शाप दिया। फलस्वरूप चंद्र की शक्ति दिन-प्रतिदिन क्षीण होती गई। यह देख सब देवताओं ने मिलकर चंद्र को दिए गए शाप को वापस लेने के लिए ब्रह्मा से अनुरोध किया।

ब्रह्मा ने कहा कि मैं दक्ष का दिया हुआ शाप तो नहीं वापस ले सकता लेकिन शाप-मुक्ति का उपाय बता सकता हूं—चंद्र से कहो कि वह प्रभासक्षेत्र में जाए और शिवलिंग की प्रतिष्ठा कर तपस्या करे। चंद्र ने लगातार 38 महीने तक तपस्या की और शिव के वरदान से शापमुक्त हुए। और शिव वहां पर प्रतिष्ठित होकर सोमेश्वर कहलाए।

स्कंदपुराण के सप्तम खंड को प्रभास खंड का नाम दिया गया है। पहले 365 अध्यायों में प्रभास तीर्थ का वर्णन दिया गया है। अगले 19 अध्यायों में वस्त्रापथ या गिरनार पर्वत का वर्णन है। उसके बाद के 63 अध्यायों में अर्बुदाचल का वर्णन है और अंतिम 44 अध्यायों में द्वारका का वर्णन है। प्रभास खंड के सातवें अध्याय में तीर्थों का परम्परागत वर्णन किया गया है। इसमें कहा गया है कि इस तीर्थ में अनंत काल से भगवान शंकर का निवास है और भविष्य में भी अनंत काल तक वास करेंगे। प्रभास खंड (4-12) में इस तीर्थ के क्षेत्र का वर्णन है। प्रभास तीर्थ का क्षेत्रफल बारह योजन बताया गया है, जिसमें क्षेत्रपीठ पांच योजन और गर्भगृह एक कोस है। पूर्व में तप्तोदक स्वामी का मंदिर है, पश्चिम में माधव का, दक्षिण में महासागर है और उत्तर में भद्रा नदी। सोमेश्वर के ज्योतिर्लिंग की पूजा करके श्रद्धालु को मुक्ति प्राप्त होती है।

जिस इष्टदेव को वैदिक ऋषि कालाग्नि रुद्र कहते थे, उसे प्रभास में भैरव नाम प्राप्त हुआ। उसे अग्नि-ईशान भी कहते हैं। विभिन्न कल्पों में इस देवता को अलग-अलग नाम दिए गए हैं—प्रभास खंड (4-68-73)। सोमनाथ पंचमुखी हैं और उच्चतम इष्टदेव हैं, जिन्हें 'हंस' और 'नाद' भी कहा गया है—प्रभास खंड (6-36)। शिव के कालभैरव रूप की प्रभास में चंद्रमा ने बड़ी तपस्या के साथ उपासना की थी और जब वे तप से प्रसन्न हुए तो चंद्रमा ने वर मांगा कि वे अपने भक्त चंद्रमा के नाम से विख्यात हों—इसलिए वे सोमनाथ कहलाये और बाद में भी सभी चंद्रमाओं के कुलदेवता के रूप में प्रसिद्ध हुए—(प्रभासखंड 8-3-13)।

महाभारत, आदि पर्व (238) में अर्जुन की प्रभास यात्रा का वर्णन है। वे वहां सुभद्रा से मिलते हैं और उन्हें अपने साथ भगा ले जाना चाहते हैं। कृष्ण को उनके इस इरादे का पता लगता है और वे अर्जुन की सहायता करते हैं। वनपर्व (80) में अगस्त्य ने भीष्म को विभिन्न तीर्थों का महात्म्य सुनाया है। उसमें प्रभास को ऋषियों का निवास स्थान बताया है, जहाँ अग्नि सतत रूप में विद्यमान रहती है। स्कंदपुराण में प्रभास को कालाग्नि रुद्र का स्थान बताया गया है, जो बाद में सोमनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वह रुद्र अग्नि ही है जैसा कि ऋग्वेद और विशेष कर बाद की संहिताओं में भी उसका उल्लेख है।

सोमनाथ का संबंध सोम या चंद्र से है, क्योंकि कथा के अनुसार चंद्रदेव ने यहां भगवान शंकर का मंदिर पहले-पहल बनवाया। सोम का अर्थ उमा सहित शिव भी है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 406 ई. में सोमनाथ का मंदिर विद्यमान था। ह्वानसांग नामक बौद्ध चीनी यात्री भारत में 630 से 644 ई. तक रहा। वह घूमता हुआ गिरनार भी गया था, जो सोमनाथ से 52 मील दूर है, किन्तु उसके यात्रा विवरण में सोमनाथ मंदिर का उल्लेख नहीं है। संभवतः बौद्ध होने के कारण उसने वहां जाना पसन्द नहीं किया। इतिहासज्ञों का अनुमान है कि सोमनाथ के देव स्थान का निर्माण ईसवी सन् 487-767 के बीच शैव संप्रदायी वल्लभी शासकों द्वारा किया गया होगा। परमारों के एक शिलालेख के अनुसार यह मंदिर मालवा के भोज परमार द्वारा बनवाया गया था। चंद्रग्रहण के अवसर पर यहाँ एक बृहत

सोमनाथ मंदिर में पुजारियों द्वारा लिंग पूजन

बडा मेला लगता है। कहते हैं, इस अवसर पर स्नान करने का बहुत अधिक महत्व है।

मंदिर की श्री एवं वैभव का विशद वर्णन करते हुए प्रख्यात इतिहासकार इब्न असीर लिखता है—"मंदिर में भारत के कोने-कोने से राजाओं द्वारा दान में दिये गये दस हजार गांवों की जागीर लगी है तथा मूर्ति के अभिषेक के लिए प्रतिदिन गंगाजल आता है। मंदिर में एक हजार ब्राह्मण पूजन करते है। मंदिर 56 रत्नजडित खंभों पर आधारित है। इन्हें भिन्न-भिन्न राजाओं द्वारा एक या अनेक स्मृतियों के उपलक्ष में निर्मित किया गया है। मंदिर के भीतर के कक्ष में शिवलिंग स्थापित है, जिसकी ऊंचाई 7 फुट तथा घेरा तीन हाथ है। शिवलिंग जमीन में दो हाथ गहरा गडा हुआ था। कमरे में सूर्य का प्रकाश न पहुंचने पर भी वहां जडे हीरे-जवाहरातों से पर्याप्त प्रकाश रहता है। पूजन के अवसर पर यात्रियों तथा ब्राह्मणों को बुलाने के लिए सोने की जंजीर में दो सौ मन का घंटा लटका हुआ है।"

इसी प्रकार अन्य अनेक मुस्लिम इतिहासकारों ने सोमनाथ के वैभव और संपन्नता का विशद वर्णन किया है।

प्रति वर्ष श्रावण की पूर्णिमा और शिवरात्रि के दिन तथा सूर्य एवं चंद्रग्रहण के दिन भारी मेला लगता है, जहां देश के कोने-कोने से भक्तजन तथा व्यापारी आते थे। यहां तक कि अरब, ईरान तथा अफगानिस्तान के व्यापारी भी यहां आया करते थे। ग्यारहवीं शताब्दी के प्रमुख आक्रमणकारी महमूद गजनवी, जिसने भारत के थानेश्वर, कन्नौज, ग्वालियर,

ज्योतिर्लिंग, सोमनाथ

दिल्ली, कालिजर, नगरकोट और मथुरा को अपनी क्रूर दृष्टि से पराजित तथा ध्वस्त कर दिया था, सन् 1025 में उसकी गिद्ध दृष्टि, धन-सम्पत्ति और प्रसिद्धि से समृद्ध सोमनाथ पर पडी।

मंदिर को लूटने और ध्वस्त करने के उद्देश्य से महमूद गजनवी ने भारी सेना लेकर भारत पर आक्रमण किया और कई जगहो पर लूटपाट करने के पश्चात् अत मे अनेक राजाओं के प्रतिरोध का मुकाबला करता हुआ महमूद गजनवी सोमनाथ मंदिर मे प्रविष्ट हुआ। उसने शिवमूर्ति को तोड डाला। मंदिर के हीरे-जवाहरात और स्वर्णादि लूट लिए और मंदिर मे आग लगा दी।

मंदिर का निर्माण उसी समय गुजरात के राजा भीम और मालवा के राजा भोज ने कराया था। सन् 1169 मे गुजरात के शक्तिशाली राजा कुमारपाल ने पाचवा मंदिर बनवाया, जिसके खडहर 1950 ई तक अपनी गौरव-गाथा सुनाते रहे। 1297 ई मे दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति अलफखाँ ने इस मंदिर को विध्वस्त किया और उसके बाद चुडासभा वश के राजा महिपाल ने उसकी मरम्मत करायी। इसके बाद क्रमश. 1390 ई 1490 ई , 1530 ई. और 1701 ई मे मुजफ्फरशाह प्रथम, मोहम्मद बेगडा, मुजफ्फर द्वितीय और औरगजेब ने इस मंदिर का विध्वस कराया, परन्तु हर बार किसी न किसी हिंदू राजा ने इसकी मरम्मत करायी। 1783 ई मे महारानी अहिल्याबाई ने इसके पास एक नया मंदिर बनवाया।

अत मे शासकीय स्थापत्य विभाग की सहायता से खुदाई का काम प्रारभ हुआ और पुराने अवशेषो को एकदम हटाकर प्राचीन सोमनाथ के स्थान पर, उसी के अनुरूप, एक नये सोमनाथ मंदिर के निर्माण का निर्णय हुआ। 11 मई, 1951 ई को सोमनाथ के ज्योतिर्लिग की फिर एक बार वहाँ स्थापना की गई। परपरा के अनुसार विश्व के समस्त देशो की मिट्टी, सारी पवित्र नदियो का जल तथा सारे समुद्रो का क्षारयुक्त पानी उस मुहूर्त के लिए सोमनाथ लाया गया।

अब एक करोड रुपये से अधिक की लागत से सोमनाथ का मंदिर बनकर फिर इतिहास के पृष्ठो पर आ गया है, जो भारत के प्राचीन सास्कृतिक गौरव का प्रतीक समझा जाता है।

तीर्थ स्थल का महत्त्व

कहा जाता है कि यहा पर समस्त देवताओ ने मिलकर सोमकुड की स्थापना की है जिसमे शिव और ब्रह्मा का सदा निवास रहता है। चद्रकुड इस भूतल पर पापनाशन तीर्थ के रूप मे प्रसिद्ध है—इस कुड मे स्नान करने से सभी पापो से मुक्ति मिलती है। क्षय आदि जो असाध्य रोग होते हैं वे सब इसी कुड मे स्नान करने मात्र से नष्ट हो जाते हैं।

सोमनाथ का पूजन करने से उपासक क्षय तथा कोढ़ आदि रोगो से छुटकारा पा जाता है।

ज्योतिर्लिग मंदिर मे पार्वती की तीन मूर्तिया

सोमनाथ का मार्ग

पश्चिमी रेलवे की राजकोट वेरावल अथवा खिजडिया-वेरावल से वेरावल स्टेशन जाया जा सकता है। यह समुद्र के किनारे बसा है और एक बदरगाह है। वेरावल से सोमनाथ (प्रभासपाटण) लगभग 5 किलोमीटर दूर है। रेलवे स्टेशन से हर पन्द्रह मिनट पर सिटी बसे चलती हैं।

ठहरने के स्थान

सोमनाथ के दर्शन के लिए, यात्रियों को वेरावल मे ही ठहरना पडता है। स्टेशन के पास ही कुछ होटल और धर्मशालाए हैं जहा आसानी से ठहरा जा सकता है।

अन्य दर्शनीय स्थल एवं मंदिर

सोमाथ अर्थात् प्रभास-नगर से लगभग दो किलोमीटर दूर प्राची त्रिवेणी नामक स्थान है। इससे पहले ब्रह्मकुंड तथा ब्रह्मेश्वर मंदिर हैं।

प्राची त्रिवेणी से थोडी दूरी पर सूर्य मंदिर है। कुछ दूरी पर गुफा मे हिंगलाज भवानी और सिद्धनाथ शिव का मंदिर है। पास ही एक वटवृक्ष के नीचे बलदेवजी का मंदिर है। यही से बलदेव जी शेष रूप मे पाताल को प्रस्थान कर गए थे।

यादवस्थली-देहोत्सर्ग अर्थात् भालक तीर्थ से आगे हिरण्या नदी के किनारे यादवस्थली नामक स्थान है, जहां यादव लोग आपस मे लडकर कट मरे थे।

बाणतीर्थ–वेरावल स्टेशन और सोमनाथ के मार्ग में समुद्र-किनारे यह स्थान है। यहा शिवजी का एक प्राचीन मंदिर है। इसके पश्चिमी तट पर चद्रभागा तीर्थ है।

सोमनाथ मंदिर का उत्तरी द्वार और प्रदक्षिणा मार्ग

2. मल्लिकार्जुन

मल्लिकार्जुन द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। यह ज्योतिर्लिंग श्रीशैल पर है। वहां 51 शक्तिपीठों में से एक शक्तिपीठ भी है। सती की देह का ग्रीवा-भाग जहां गिरा, वहां भ्रमराम्बा देवी का मंदिर है। वीर-शैवमत के पंचाचार्यों में से एक जगद्गुरु श्रीपति पंडिताराध्य की उत्पत्ति मल्लिकार्जुन लिंग से ही मानी जाती है।

धार्मिक पृष्ठभूमि

पहले विवाह किसका हो—इस बात को लेकर कार्तिकेय और गणेशजी में आपस में विवाद हो गया। गणेशजी ने पृथ्वी प्रदक्षिणा का प्रसंग आने पर माता-पिता की प्रदक्षिणा कर ली अतएव उनका विवाह पहले हो गया। इसमें कार्तिकेय रुष्ट होकर कैलास छोड़कर श्रीशैल पर आ गए।

पुत्र के वियोग में माता पार्वती को बड़ा दुःख हुआ। वे स्कंद से मिलने चलीं। भगवान शंकर भी उनके साथ श्रीशैल पधारे, किन्तु कार्तिकेय माता-पिता से मिलना नहीं चाहते थे। वे उमा-महेश्वर के पहुंचते ही श्रीशैल से तीन योजन दूर कुमार-पर्वत पर जा विराजे। वह स्थान अब 'कुमार-स्वामी' कहा जाता है। भगवान शंकर तथा पार्वतीजी श्रीशैल पर स्थित हुए। यहां शिवजी का नाम अर्जुन तथा पार्वतीदेवी का नाम मल्लिका है। दोनों नाम मिलकर 'मल्लिकार्जुन' होता है।

तीर्थ-स्थल का महत्त्व

मल्लिकार्जुन लिंग में पार्वती और शिव दोनों की ही ज्योतियां प्रतिष्ठित हैं और कहा जाता है कि इस लिंग के दर्शनमात्र से सम्पूर्ण मनोकामना की पूर्ति होती है। इसका दर्शन सब प्रकार के सुख देने वाला बताया गया है।

तीर्थ-स्थल का दर्शनीय विवरण

आंध्र प्रदेश के कृष्णा नदी के तट पर श्रीशैल नामक पर्वत पर
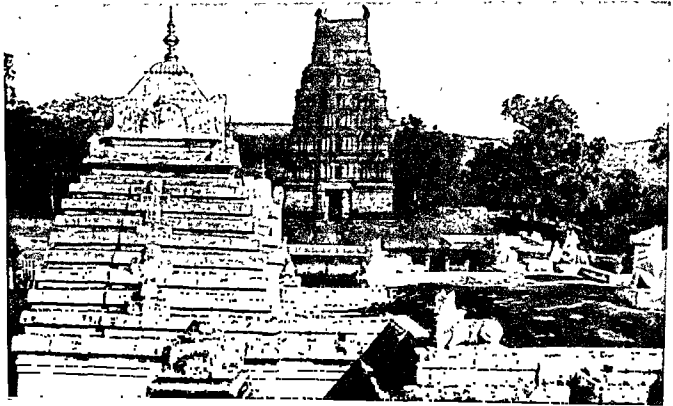
मल्लिकार्जुन, श्रीशैल, आन्ध्र प्रदेश

मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग प्रतिष्ठित है। श्रीशैल को दक्षिण का कैलास भी कहते हैं।

श्रीशैल के शिखर पर वृक्ष नहीं हैं। दक्षिणी मंदिरों के ढंग का पुराना मंदिर है। एक ऊंची पत्थर की चहारदीवारी है, जिस पर हाथी-घोड़े बने हैं। इस परकोटे में चारों ओर द्वार हैं। द्वारों पर गोपुर बने हैं। इस प्राकार के भीतर एक प्राकार और है। दूसरे प्राकार के भीतर श्रीमल्लिकार्जुन का निज-मंदिर है। यह मंदिर बहुत बड़ा नहीं है। मंदिर में मल्लिकार्जुन-शिवलिंग है। यह शिवलिंग-मूर्ति लगभग आठ अंगुल ऊंची है और पाषाण के अनगढ़ अरघे में विराजमान है।

मंदिर के बाहर एक पीपल-पाकर का सम्मिलित वृक्ष है। इसके चारों ओर पक्का चबूतरा है। मेले के समय यहां ठहरने के स्थान का बड़ा कष्ट रहता है। आसपास बीस-पच्चीस छोटे-छोटे शिव मंदिर हैं। उनमें ही यात्री किराया देकर ठहरते हैं। मंदिर के चारों ओर बावड़ियां है और दो छोटे सरोवर भी हैं।

श्रीमल्लिकार्जुन मंदिर के पीछे पार्वती देवी का मंदिर है। यहां उनका नाम मल्लिकादेवी है। मल्लिकार्जुन के निज-मंदिर का द्वार पूर्व की ओर है। द्वार के सम्मुख सभामंडप है। उसमें नंदी की विशाल मूर्ति है। मंदिर के द्वार के भीतर नंदी की एक छोटी मूर्ति और है। शिवरात्रि को यहां शिव-पार्वती विवाहोत्सव होता है।

पातालगंगा मंदिर के पूर्वद्वार से एक मार्ग कृष्णा नदी तक गया है। उसे यहां पाताल गंगा कहते हैं। पाताल गंगा मंदिर से लगभग पौने दो मील है, किन्तु मार्ग बहुत कठिन है। आधा मार्ग सामान्य उतार का है और उसके पश्चात् 852 सीढ़ियां हैं। ये सीढ़ियां खड़े उतार की हैं। बीच-बीच में चार स्थान विश्राम करने के लिए बने हैं। पर्वत के पाद-देश में कृष्णा नदी है। यात्री वहां स्नान करके चढ़ाने के लिए जल ले आते हैं। ऊपर लौटते समय खड़ी चढ़ाई बहुत कष्टकर होती है।

यहीं पास में कृष्णा में दो नाले मिलते हैं। उस स्थान को लोग त्रिवेणी कहते हैं। कृष्णा तट पर पूर्व की ओर जाने पर एक कंदरा मिलती है। उसमें देवी तथा भैरवादि देवताओं की मूर्तियां हैं।

अन्य दर्शनीय स्थल

शिखरेश्वर तथा हाटकेश्वर—मल्लिकार्जुन से छह मील दूर शिखरेश्वर तथा हाटकेश्वर के मंदिर हैं। मार्ग कठिन है। कुछ यात्री शिवरात्रि के पूर्व वहां तक जाते हैं। शिखरेश्वर से मल्लिकार्जुन-मंदिर के कलशदर्शन का भी महत्त्व माना जाता है। कहते हैं, श्रीशैल के शिखर का दर्शन करने से पुनर्जन्म नहीं होता।

अम्बाजी—मल्लिकार्जुन-मंदिर से पश्चिम में लगभग 3 किलोमीटर पर भ्रमराम्बादेवी का मंदिर है। यह 51 शक्तिपीठों में से एक है। अम्बाजी की मूर्ति भव्य है। आसपास प्राचीन मठादि के अवशेष हैं।

बिल्ववन—शिखरेश्वर से लगभग छह मील आगे (मल्लिकार्जुन से 20 किलोमीटर पर) यह स्थान है। यहां एकमा देवी का मंदिर है, किन्तु दिन में भी यहां हिंस्र पशु घूमते हैं। बिना मार्ग-दर्शक तथा आवश्यक सुरक्षा के इधर नहीं आना चाहिए।

महानदी—यह स्थान नंदयाल स्टेशन से दस मील दूर है। यहां भगवान शंकर का मंदिर है। एक ओंकारेश्वर मंदिर भी है।

यात्रा मार्ग

मनमाड-काचीगुडा लाइन के सिकंदराबाद स्टेशन से एक लाइन द्रोणाचलम् तक जाती है। इस लाइन पर कर्नूल टाउन स्टेशन है, वहां से श्रीशैल 200 किलोमीटर दूर है। मोटर बसें कुछ दूर तक जाती हैं। कर्नूल टाउन में धर्मशाला है।

मसुलीपट्टम-हुबली लाइन पर द्रोणाचलम् से लगभग 80 किलोमीटर पहले नंदयाल स्टेशन है। इस स्टेशन से श्रीशैल लगभग 120 किलोमीटर दूर है।

तमिलनाडु के प्रसिद्ध नगर गुंटूर से भी बसें जाती हैं। यहां से दूरी 215 किलोमीटर है। तिरुपति से भी बसें जाती हैं।

ठहरने का स्थान एवं अन्य आवश्यकताएं

मंदिर के समीप यात्रियों के निवास के लिये धर्मशालायें हैं। (यात्री-निवास) टूरिस्ट-हाउस भी हैं और तिरुपति के समान पृथक-पृथक सभी सुविधा युक्त छोटे मकान भी हैं जो किराये पर मिल जाते हैं।

मंदिर के बाहर पीपल-पाकर का सम्मिलित वृक्ष है। उसके आस-पास चबूतरा है। दक्षिण भारत के दूसरे मंदिरों के समान यहां भी मूर्ति तक जाने का टिकट कार्यालय से लेना पड़ता है। पूजा का शुल्क टिकट भी पृथक होता है। यहां लिंग मूर्ति का स्पर्श प्राप्त होता है।

3. महाकालेश्वर

कोटिरुद्र संहिता के अनुसार महाकालेश्वर क्षिप्रा नदी के तट पर उज्जैन नामक नगर में है। उज्जैन उन पवित्र सात नगरियों में से एक है, जहां की यात्रा मोक्षदायिनी है। वे सात नगरियां हैं–अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, कांची, उज्जैन और द्वारका। पुरानी उज्जैन नगरी वर्तमान नगर से एक किलोमीटर दूर है।

धार्मिक पृष्ठभूमि

शिवपुराण में वर्णित महाकाल की कथा इस प्रकार है–अवंती नाम से प्रसाद नगरी, भगवान शिव को बहुत ही प्रिय है और समस्त देहधारियों को मोक्ष प्रदान करने वाली है। वहीं एक धर्मात्मा ब्राह्मण वास करता था। उसके चार पुत्र थे। रत्नमाला पर्वतवासी दूषण नाम के एक राक्षस ने नगर को घेर कर जनता को त्रस्त करना आरंभ किया। जनता योग सिद्ध करने वाले उस ब्राह्मण की शरण में गई। उसके तप से प्रसन्न होकर भगवान महाकाल पृथ्वी फाड़कर प्रगट हुए और राक्षस का संहार किया। भक्तों ने भगवान से प्रार्थना की–"हमें पूजा की सुविधा देने के लिए, आप यहीं निवास करने की कृपा कीजिए।" भक्तों के आग्रह पर महाकाल ज्योतिर्लिंग के रूप में वहीं स्थित हो गए।

'स्कंदपुराण' में इस क्षेत्र को महाकाल वन कहा गया है। 'अग्निपुराण' के अनुसार यह सर्वोत्तम तीर्थ है। कहते हैं कि महाकाल के दर्शन से भक्त की मुक्ति होती है और व्यक्ति की अकाल मृत्यु से रक्षा होती है।

ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक महत्त्व

मध्य प्रदेश में स्थित वर्तमान उज्जैन, मालवा की राजधानी थी और इसे 'अवंती' के नाम से पुकारा जाता था। 'स्कंदपुराण' के अनुसार यह नगरी भिन्न-भिन्न कल्पों में भिन्न-भिन्न नामों से प्रसिद्ध थी। वे नाम हैं–कनकश्रृंग, कुशस्थली, अवंती, उज्जयिनी, पद्मावती, कुमुदवती, अमरावती और विशाला। यह नगरी क्षिप्रा नदी के दाहिने तट पर स्थित है।

भगवान बुद्ध के काल में उज्जैन, मगध साम्राज्य की राजधानी राजगृह से दक्षिण के प्रतिष्ठान अथवा पैठन जाने वाले मार्ग का प्रमुख विश्रामस्थल था। पाणिनि ने अपने सूत्र 4-1-176 में अवंती का उल्लेख किया है। पतंजलि ने भी अपने महाभाष्य (पाणिनि रचित सूत्र 3-1-26 पर वार्तिक 10) में लिखा है कि यदि मनुष्य प्रभात के समय उज्जयिनी से चलना आरंभ करे तो माहिष्मती में उसे सूर्य भगवान के दर्शन होंगे। मनुष्य को पापों से बचाने के कारण ही इसका नाम अवंती पड़ा।

महाभारत में लिखा है कि विंद और अनुविंद नामक अवंती के दो राजकुमारों ने एक-एक अक्षौहिणी सेना लेकर कौरवों के पक्ष में युद्ध किया।

कालिदास ने (मेघदूत–35) लिखा है कि उनके समय में उज्जैन जाने वाले यात्रियों को वहां के मार्गदर्शक उस स्थान की किम्वदंतियां सुनाया करते थे। उदाहरणस्वरूप वे कहते थे–"यह वही स्थान है, जहां वत्सराज उदयन ने अवंती के
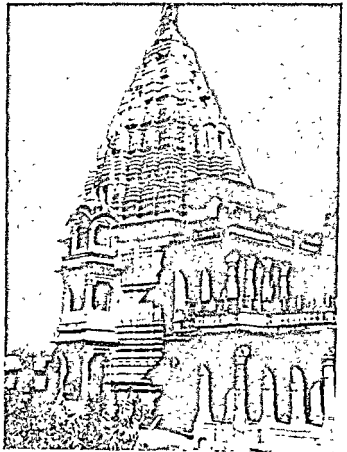
महाकाल मंदिर, उज्जैन

महाराज प्रद्योत की महासुंदरी कन्या वासवदत्ता का अपहरण किया था।"

कई गणराज्यों के अतिरिक्त बौद्धकालीन उज्जैन में अवंती, वत्स, कौशल, और मगध नाम के चार साम्राज्य थे।

जब युवराज अशोक उज्जैन का उप-शासक था, तब उसने विदिशा के एक व्यापारी की पुत्री 'देवी' से विवाह किया था, जिसने राजकुमार महेंद्र और राजकुमारी संघमित्रा को जन्म दिया। ये दोनों भाई-बहिन इतिहास-प्रसिद्ध हैं। मौर्य राजकुमारों को उप-शासक बनाकर यहां केंद्रित किया जाता था। गुप्त उप-शासकों का भी प्रधान कार्यालय उज्जैन में ही रहता था।

कहते हैं कि प्रद्योत का जन्म भी उसी दिन हुआ था, जिस दिन बुद्धदेव का, और प्रद्योत अवंती के सिंहासन पर उसी दिन बैठा, जिस दिन बुद्धदेव बोधिसत्व को प्राप्त हुए, किन्तु जहां बुद्धदेव परम शांत स्वभाव के थे, वहां प्रद्योत अपने उग्र स्वभाव के कारण चंड, और अस्थिर राजनीति के कारण न्यायवर्जित कहलाता था। प्रद्योत के गोपालक और पालक नाम के दो पुत्र तथा वासवदत्ता नाम की परम सुंदरी एक पुत्री थी। इन चारों का तथा वत्सराज उदयन का विशद वर्णन महाकवि भास के नाटकों, विशेषकर 'स्वप्नवासवदत्ता', 'प्रतिज्ञा योगंधरायण' और 'प्रियदर्शिका' में है।

प्रसिद्ध सम्राट् यशस्वी विक्रमादित्य की राजधानी भी उज्जैन ही थी। भारतीय परंपरा के अनुसार वे इतिहास के अद्वितीय व्यक्ति थे। ईसा पूर्व 23 फरवरी, 57 में आरम्भ होने वाला संवत् उनके शासनकाल के प्रथम वर्ष में ही चला। राजनीति और सेना संबंधी महान योग्यता रखने वाले महाराज विक्रमादित्य आदर्श शासक, न्यायशील, प्रजापालक, शूरवीर, कला, विद्या, साहित्य और, संस्कृति के महासंरक्षक तथा परपीड़ा निवारक थे। इसीलिए भारतीय इतिहास के कई अन्य राजाओं ने भी बड़े गर्व के साथ विक्रमादित्य की पदवी से अपने को विभूषित किया।

लौकिक गुणों के अतिरिक्त उन्हें अलौकिक गुणों का होना भी समझा जाता था, जिनका वर्णन 'बेताल पच्चीसी' और 'सिंहासन बत्तीसी' में आता है। 'वृहत्-कथा' में भी उनके कई चमत्कारिक कार्यों का उल्लेख है। कहा जाता है कि उनकी राजसभा में धन्वंतरि, क्षपणक, अमरसिंह, संकु, बेताल भट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि नाम के नौ रत्न थे। इतिहास द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि उपरोक्त नौ व्यक्ति एक ही समय के नहीं थे। सम्भवतः इस जनश्रुति का उद्देश्य यह सही सिद्ध करना है कि सम्राट् विक्रमादित्य विद्या और शिक्षा के परम प्रेमी एवं ग्राहक थे।

सम्राट् विक्रमादित्य के सम्बन्ध में ऐतिहासिक तथ्यों के विषय में विद्वानों में काफी मतभेद है। अब तक प्राप्त तथ्यों के अनुसार आधुनिक संवत् के साथ 'विक्रम' शब्द का प्राचीनतम प्रयोग ४९४ वि.सं. में मिलता है।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

महाकालेश्वर मंदिर—उज्जैन में सुप्रसिद्ध स्थल है—भगवान महाकाल का मंदिर। भगवान शंकर के बारह ज्योतिर्लिंगों में से यहां एक लिंग है। यह मंदिर एक झील के पास है और इसके पांच तल्लों में से एक तल्ला भूमग्न है। मुख्य मंदिर के मार्ग में बड़ा अंधेरा रहता है। अतः यहां निरन्तर दीप जलते रहते हैं।
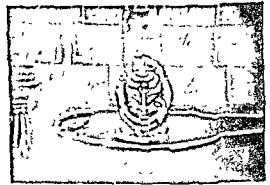
श्री महाकाल ज्योतिर्लिंग, उज्जैन

ऐसा माना जाता है कि भगवान शिव को जो भी सामग्री चढ़ाई जाती है, वह निर्माल्य बन जाती है, जिससे उसका पुनः प्रयोग करना वर्जित है, किंतु यह बात ज्योतिर्लिंग के साथ नहीं है। यहां न केवल चढ़ाया हुआ प्रसाद ही लिया जाता है, अपितु एक बार चढ़ाये गए बिल्वपत्र भी धोकर पुनः चढ़ाये जा सकते हैं। यात्रीगण रणघाट पर स्नान करने के बाद महाकाल की पूजा को जाते हैं।

हरसिद्धि मंदिर—उज्जैन का दूसरा प्रसिद्ध मंदिर हरसिद्धि है। 'स्कंदपुराण' की कथा के अनुसार भगवान शंकर एक बार कैलाश में अपनी पत्नी गौरी के साथ पासा खेल रहे थे। चंड और प्रचंड नाम के दो असुरों ने उनके खेल में बाधा डाली तथा नंदी को घायल कर दिया। 'हर' ने देवी का ध्यान किया और उन राक्षसों का संहार करने की प्रार्थना की। भगवती ने प्रकट होकर 'हर' का कार्य सिद्ध किया। इसी कारण उन्हें 'हरसिद्धि' कहा जाता है। वे भगवती दुर्गा के नौ मुख्य स्वरूपों में से एक हैं। कहा जाता है कि हरसिद्धि, सम्राट् विक्रमादित्य की कुलदेवी थी।

यात्री सिद्धवट नाम के एक वट-वृक्ष के भी दर्शन करने जाते हैं। यह आकार में बहुत ही छोटा है। कहा जाता है कि वर्षों से उसका यही आकार है।

अन्य दर्शनीय स्थल

उज्जैन भारत का ग्रीनविच है अथवा हिन्दू भूगोल एवं खगोल शास्त्रियों के मत से प्रथम खमध्य रेखा या शून्य देशान्तर का स्थान है। इसका अक्षाश भूमध्यरेखा से उत्तर 11'10"पर 23 अंश है। यहीं प्रत्येक 12 वर्ष मे कुंभ का मेला लगता है। उज्जैन मे मगलनाथ मंदिर, हरसिद्धि, गोपाल मंदिर, कालियादह महल, भर्तृहरिगुफा और सदीपनी आश्रम आम दर्शनीय स्थल हैं।

ज्योतिष-विद्या का केंद्र—उज्जैन, जयपुर नरेश महाराज जयसिह द्वारा निर्मित वेधशाला के लिए भी प्रसिद्ध है, जो 1693 ई मे शासन करते थे। वह ज्योतिष-शास्त्र के बहुत बड़े विद्वान् थे। उन्होंने यह अनुभव किया कि आकाश मे ग्रहो और नक्षत्रो की स्थिति वही नही है, जो भारतीय, मुस्लिम या यूरोपीय विद्वानो के ग्रथो के अनुसार गणना करने से आती है। अत. ग्रहों की शुद्धतम स्थिति या गति जानने के लिए उन्होने भारत मे पाच स्थानो—जयपुर, दिल्ली, उज्जैन, काशी और मथुरा मे पत्थरो तथा चूने-गारे की वेधशालाए बनवाई। विद्वानो का मत है कि जयसिह की गणना उस समय के यूरोपीय ज्योतिषियों की अपेक्षा अधिक शुद्ध और सूक्ष्म थीं।
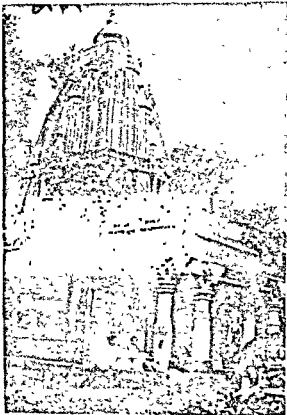
सादीपनि-आश्रम, उज्जैन

यात्रा मार्ग

दिल्ली से रेल द्वारा नागदा होकर जाया जा सकता है। उज्जैन नागदा से 55 किलोमीटर पर स्थित स्टेशन है। ग्वालियर जाकर वहां से बस द्वारा जाया जाता है। भोपाल स्टेशन पर उतरकर, भोपाल से उज्जैन के लिए लगातार चलती बसो मे यात्रा की जा सकती है। वैसे मध्य प्रदेश के, हर बड़े शहर से, उज्जैन के लिए बसे उपलब्ध हैं।

शहर मे भ्रमण के लिए तागा, रिक्शा, ऑटोरिक्शा, टेपो और सिटी बसे उपलब्ध हैं।

ठहरने के स्थान

रेलवे स्टेशन पर रिटायरिंग रूम है। शहर मे पर्यटन विभाग का विश्राम-गृह और रेस्ट हाउस तथा मर्किट हाउस हैं। कुछ होटल हैं जिनमे किराया 12 से 25 रुपये प्रतिदिन तक है।

1 नटराज होटल
2 सवेरा होटल
3 विक्रम होटल

श्रीहरसिद्ध देवी का मंदिर
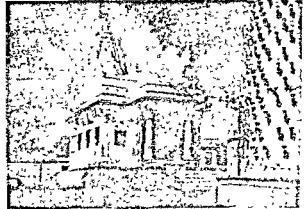
शिप्राघाट

4. ओंकारेश्वर

ओकारेश्वर मध्य प्रदेश का मनोरम तीर्थ-स्थल है।भारत भर के तीर्थ-स्थानो की परपरा मे इसका भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। यद्यपि शैवदर्शन की आधार-भूमि पर इसकी रचना हुई है, किन्तु यह दूसरे मतावलम्बियो के हृदय मे भी पूज्य भावना जाग्रत करता रहा है। देश के विभिन्न भागो से आने वाले यात्रियो का यहा ताता लगा रहना, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

कोटिरुद्र सहिता के अनुसार ओकारतीर्थ मे ज्योतिर्लिंग परमेश्वर हैं। ओकारतीर्थ मे होने के कारण ओंकारेश्वर नाम पडा।

धार्मिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

उज्जयिनी के महाराजा के पास स्थित एक मणि को छीनने के लिए अनेक महाराजाओं ने मिलकर सयुक्त प्रयास किया तो उज्जयिनी के महाराजा एक शिव मदिर मे उपासना मे बैठ गए जिसे एक बालक ने देखा और अपनी भोपडी में जाकर एक सामान्य पत्थर को शिवलिंग मानकर पूजा करने लगा। बालक की मा ने उस पत्थर को उठाकर फेक दिया तो बालक बगैर खाए-पिए वही पडा रहा। शिव सतुष्ट हुए ओर ओकारेश्वर के रूप मे वही पर प्रतिष्ठित हुए।
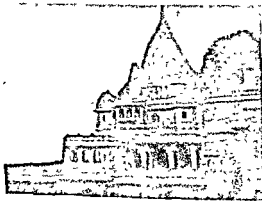
ओकारेश्वर मदिर

यही पर पास ही एक और शिवलिग है जिसे अमलेश्वर कहते हैं और ज्योतिर्लिग माना जाता है। शास्त्रो के अनुसार यह स्थान सयुक्त ज्योतिर्लिग के रूप मे प्रतिष्ठित है।

यह क्षेत्र राजा माधाता के नाम पर माधाता क्षेत्र कहलाता है। 'स्कदपुराण' के रेवा खड मे विस्तार से इसका वर्णन प्राप्त है। वरुणयज्ञ करने वाले राजा यौवनाश्व ने भूल से अभिमंत्रित जल पी लिया था। कहा जाता है कि उस पुसवन जल को पीने से राजा ने पुरुष होकर भी पुत्र प्रसव किया। नाम पडा उसका माधाता। तेजस्वी माधाता को सुरराज इंद्र ने अपनी तर्जनी पिलाकर पाला। वर्चस्वी मांधाता इद्र के आधे सिहासन के अधिकारी बन गए थे। ईर्ष्यावश एक बार इंद्र ने वर्षा बंद कर दी। तप-तेज से दीप्त माधाता ने यही वैदूर्य पर्वत पर तप किया। तप-बल से पूरे बारह वर्ष वर्षा कराकर इंद्र का मान-भग किया। तपस्या से आशुतोष भगवान को प्रसन्न कर उसने सब देवताओ समेत यही विराजमान होने की प्रार्थना की। तब से भगवान शकर ज्योतिर्लिंग के रूप में इस क्षेत्र में नित्य विद्यमान हैं।
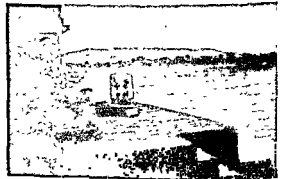
नर्मदा तट पर काले महादेव की मूर्ति

नर्मदा-तट पर स्थित इस क्षेत्र का उल्लेख 'हरिवश' मे 'माहिष्मती' के नाम से हुआ है। विध्य तथा ऋक्षवत् पर्वतो के मध्य इस क्षेत्र को माधाता के पुत्र मुचुकुद ने बसाया था। ओकार पर्वत के दोनो ओर रेवा और कावेरी की जल-धाराए उसे रमणीय बनाती हैं। नाव वाले सगम का दर्शन कराने तथा नौकाविहार के लिए भी यात्रियो को ले जाते हैं। स्वय महर्षि च्यवन ने ओकारेश्वर का दर्शन कर अपने को धन्य समझा था।

तीर्थस्थल का महत्त्व

ओकारेश्वर के दर्शन मात्र से परमधाम की प्राप्ति होती है

और सम्पूर्ण अभिलाषाए पूर्ण होती हैं। प्रत्येक मास की एकादशी,अमावस्या और पूर्णिमा पर यहा विशेष पूजा विधि प्रचलित है। वर्ष मे एक बार कार्तिक पूर्णिमा के दिन यहा विशाल मेला लगता है।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

सघन हरियालियो के बीच बहती हुई नर्मदा नदी मे जहा कावेरी नदी आकर विलीन होती है, उसमे कुछ ही आगे नर्मदा के मनोरम तट पर ओंकारेश्वर का स्थान है। अनेक यात्री बसो में बैठकर जाते हैं तथा अन्य नावो मे बैठकर नर्मदा को पार करते हुए मंदिर तक पहुंचते हैं। यह प्राकृतिक दृष्टि मे अत्यत रमणीक स्थान है। यहा नर्मदा नदी, दो पहाड़ी टेकरियो के बीच मे से निकलती हुई प्रतीत होती है। किनारे की तांबे के रग की चट्टाने, इसकी शोभा को और भी अधिक बढ़ा देती हैं।

नर्मदा तट पर श्री ओकारेश्वर मदिर

जब यात्री नाव में बैठकर मंदिर की ओर जाने लगते हैं तो लगता है कि सामने टेकरी पर स्थित मंदिर यात्रियो को अपने आकर्षण से खीच रहा है। मंदिर का शिखर श्वेत रग का लम्बा-सा आकार लिए हुए, भारतीय संस्कृति के गर्वीले योद्धा की भांति खडा है। यात्री नौका से उतरते ही सीढिया चढकर ऊंचाई पार करते हुए मंदिर मे जाते हैं।

ओकारेश्वर मंदिर की बनावट भारतीयता से ओत-प्रोत है। मंदिर की रचना कब हुई, इसके बारे मे कोई प्रमाण नही मिलते, किन्तु इसमे सदेह नही कि यह बहुत पुराना मदिर है। इसकी जानकारी के सम्बन्ध मे किम्वदंतियों के अतिरिक्त और कोई माध्यम नही है।

मंदिर मे कुछ घुमाव पार कर अन्य देवताओ के दर्शन करते हुए गर्भगृह तक पहुंचा जाता है, जहा ओकारेश्वर महादेव की मूर्ति के दर्शन करने का सौभाग्य मिलता है। मूर्ति प्राकृतिक रूप मे धरातल मे कुछ ऊपर उठे हुए अनगढ काले पत्थर का एक फुट व्यास का लगभग छह इंच ऊंचा कछुआनुमा गोलाकार स्वरूप मात्र है,किन्तु बनावटी नही। यद्यपि इसके पीछे की ओर श्वेत पत्थर की बनी हुई पार्वती की एक मूर्ति अलग रखी हुई है।

यहा पूजा करने की विधि भी अत्यत सरल है। कई व्यक्ति मूर्ति पर बिल्वपत्र और फूलो की मालाए चढाते हैं और नर्मदा का जल अपने पात्र मे भरकर मूर्ति पर उडेलते हैं। कई लोग केवल पानी ही चढ़ाते हैं। बिल्वपत्र और मालाए मंदिर मे प्रवेश करने से पहले ही मोल मिल जाते हैं।

शकर को अर्पित नैवेद्य ग्रहण नही किया जाता, किन्तु ओकारेश्वर प्रणव रूप हैं। अत: इन्हें तुलसी-दल भी अर्पित किया जाता है। साथ ही चरणामृत भी ग्रहण करते हैं। कहा जाता है, इन्हे अभिषेक किया जल सीधा नर्मदा मे पहुच जाता है।

अन्य दर्शनीय स्थल

यहा से एक मील दूर त्रिशूल कुंड है। यहां स्नान कर पचरत्न दान करने से सतान-प्राप्ति का उल्लेख पुराणो में भी है। उसके निकट ही कुबेरेश्वर तीर्थ है। 'पद्मपुराण' के अनुसार इस स्थल पर कुबेर ने सौ वर्ष तक तप कर शकर को प्रसन्न किया था। पर्वत पर गौरी सोमनाथ के मंदिर की शिवमूर्ति चमत्कार युक्त बताई जाती है। कभी इसमे तीन जन्मों का रूप दिखाई देता था, किन्तु औरंगजेब को उसमें अपने जीवन के कुत्सित दृश्य दिखाई दिए। क्रुद्ध होकर उसने उसे नष्ट करने का प्रयत्न किया था। यही पत्थर के हाथियो से घिरे 76 खंभों वाला सिद्धनाथ मंदिर है। इसे देखने लार्ड कर्जन भी आए थे।

राजा मुचुकुंद के किले मे भी अनेक देव मूर्तिया दर्शनीय हैं। शिव, नंदी, गणेश, हनुमान एव अष्टभुजा देवी की प्रतिमाए अनुपम हैं। दुर्ग के अंतिम द्वार पर दोनों पार्श्वों मे महाभारत के वीर नायकों—अर्जुन और भीम की प्रतिमाए हैं। इसी कारण इसका नामकरण अर्जुन-भीम द्वार हुआ है। कहा जाता है, विख्यात किरातार्जुन और परशुराम का युद्ध यही हुआ था। इस प्रकार यह क्षेत्र अपनी प्राचीनता के लिए भी प्रसिद्ध है,साथ ही धर्म-स्थल, प्राकतिक शोभा-संपन्न और सिद्धक्षेत्र भी है। यहां से मडलेश्वर का तीर्थ भी बहुत दूर नही है, जहा शंकराचार्य और मडन मिश्र के मध्य हुए इतिहास-प्रसिद्ध शास्त्रार्थ मे उनकी पत्नी ने मध्यस्थता की थी।

समीप ही गोकर्ण महाबलेश्वर लिंग है। इस लिंग का अभिषेक गोमुख से निरंतर निकलती हुई जलधारा करती है। ब्रह्मराक्षस का वध करने पर ब्रह्माजी के आदेशानुसार शिवजी ने यहा त्रिशुल से धरती पर प्रहार किया था। उससे

उत्पन्न त्रिधारा ही लिग का अभिषेचन करती है। त्रिशूल-भेद कुड से निकलने वाली इस धार का जल गोहत्या के पाप को भी दूर करने वाला माना गया है। कपिलेश्वर के नीचे मे प्रवाहित होने के कारण इसे कपिलधारा की सज्ञा भी दी गई है।

यहा से निकट ही अमलेश्वर का मदिर है। शात वातावरण, विराट चूडावाला मदिर, भक्ति-भावना का सचार करने वाली प्रेरणा का प्रदायक है। दाहिनी ओर अन्य ज्योतिर्लिगो के प्रतीक शिवालय एक पक्ति मे बने हुए हैं। 'शिवपुराण' के अनुसार विध्य पर्वत के तप से शिवजी रीझ गए। उन्होने ओकार यंत्र मे ओकारेश्वर और अपने पार्थिव रूप से अमलेश्वर ज्योतिर्लिग उत्पन्न किया था। 'स्कदपुराण' मे इस माधाता क्षेत्र मे स्थित पाच ज्योतिर्लिग चिरकालिक माने गए हैं–विश्वेश्वर, अमरनाथ, ओकार, महाकालेश्वर और केदारनाथ।

विष्णुपरी मे स्वामी कार्तिक, अधीर गणपति, मारुति, नृसिह टेकरी, गुप्तेश्वर, ब्रह्मेश्वर, लक्ष्मी-नारायण, विश्वनाथ,

शरणेश्वर, कपिलेश्वर, गगेश्वर तथा भगवान कृष्ण मदिर आदि अनेक मदिर हैं। विष्णुपुरी मे वैसे अमलेश्वर और विष्णु-मदिर मुख्य हैं। करीब-2 किलोमीटर की दूरी तर कुबेरेश्वर मदिर और च्यवण ऋषि का आश्रम हैं। यहां मे लगभग 5 किलोमीटर दूरी पर सप्त मातृकाओ के मदिर हैं।

यात्रा मार्ग

उज्जैन से खडवा जाने वाली रेलवे की छोटी लाइन पर मोरटक्का नामक स्टेशन पर उतरकर 7 मील के फासले पर ओकारेश्वर है। स्टेशन का एक और नाम ओकारेश्वर रोड भी है। यहा से ओकारेश्वर के लिए लगातार बसे उपलब्ध हैं।

इदौर और रतलाम से भी गाडियाँ उपलब्ध हैं। ओकारेश्वर रोड स्टेशन पर यात्रियो के लिए सभी सुविधाए उपलब्ध हैं।

ठहरने के स्थान

ओकारेश्वर रोड स्टेशन पर ठहरने की व्यवस्था है तथा स्टेशन के पास कई धर्मशालाए भी हैं।

श्रीसिद्धनाथजी का प्राचीन भग्न मदिर, ओकारेश्वर
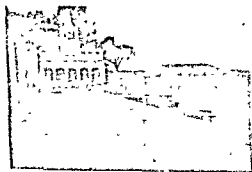
मुख्य घाट पर हनुमान जी का मदिर, होशगाबाद
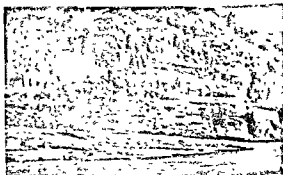
भृगुपतनवाली पहाडी, ओकारेश्वर

भेडाघाट मे श्वेत सगमरमर की चट्टानो के बीच नर्मदा जी

5. केदारनाथ

श्री केदारनाथजी द्वादश ज्योतिर्लिंगो में से एक हैं। इनको केदारेश्वर भी कहा जाता है और केदार नामक पहाड पर स्थित हैं। सतयुग मे उपमन्युजी ने यही भगवान शकर की आराधना की थी। द्वापर मे पाडवों ने यहा तपस्या की। यह केदारनाथ क्षेत्र अनादि है। महिषरूपधारी भगवान शकर के विभिन्न अग पाच स्थानों में प्रतिष्ठित हुए, जो पचकेदार माने जाते हैं। उनमें से (तृतीय केदार) तुगनाथ मे बाहु, (चतुर्थ केदार) रुद्रनाथ में मुख, (द्वितीय केदार) मदमाहेश्वर मे नाभि, (पंचम केदार) कल्पेश्वर में जटा तथा (प्रथम केदार) केदारनाथ मे पृष्ठभूमि और पशुपतिनाथ (नेपाल) में सिर माना जाता है। केदारनाथ मे भगवान शकर का नित्य सान्निध्य बताया गया है।

धार्मिक पृष्ठभूमि

शिवपुराण मे कथा है कि नर और नारायण नामक दो अवतार बदरिकाश्रम नामक तीर्थ मे तपस्या करते थे। उन दोनो ने पार्थिव शिवलिंग बनाकर उसमें स्थित हो पूजा ग्रहण करने के लिए भगवान शम्भु से प्रार्थना की। शिवजी प्रतिदिन पार्थिवलिंग में पूजित होने के लिए आया करते थे। बहुत दिनो बाद शिव ने प्रसन्न होकर वर मागने को कहा। नर और

केदार नाथ मंदिर, हिमाचल

[illegible]

तीर्थस्थल का महत्त्व

[illegible]

तीर्थस्थल का विवरण

[illegible]

अकमाल देते हैं। मंदिर प्राचीन साधारण शिव मंदिर सा है। पावन मदाकिनी नदी की मनोरम घाटी का मुकुट जैसा दीखता मंदिर केदारनाथ है और यहां का सम्पूर्ण स्थल केदारधाम कहलाता है। वैदिक धर्म को नए सिरे से प्रतिष्ठित करने वाले श्री आदि शकराचार्य इसी क्षेत्र मे थे। उनकी एक समाधी मंदिर के पीछे बनी है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि वे 32 वर्ष की अवस्था मे केदार आए और सदेह कैलास जाकर शिवत्व मे लीन हो गए। पाण्डव भी इसी राह प्राण त्याग करने हिम शिखरो की ओर गए थे। यहा पाचो पाण्डवो की मूर्तिया हैं।

श्रीकेदारनाथ मंदिर मे ऊषा, अनिरुद्ध, पच-पाडव, श्रीकृष्ण, तथा शिव-पार्वती की मूर्तिया हैं। मंदिर के बाहर परिक्रमा के पास अमृतकुड, ईशानकुड, हंसकुंड, रेतसकुंड आदि तीर्थ हैं। पास ही मधुगगा, क्षीरगगा, वासुकिताल आदि स्थान भी है।

अन्य दर्शनीय स्थल

ऊखीमठ—जाडो में केदार-क्षेत्र हिमाच्छादित हो जाता है। उस समय केदारनाथजी की चल-मूर्ति यहा ले आई जाती है।

[illegible]

शिव मंदिर, ऊखीमठ, केदार नाथ

यही शीतकाल भर उनकी पूजा होती है। यहा मंदिर के भीतर बदरीनाथ, तुगनाथ, ओंकारेश्वर, केदारनाथ, ऊषा, अनिरुद्ध, माधाता तथा सतयुग, त्रेता, द्वापर की मूर्तिया एव अन्य कई मूर्तिया हैं।

कालीमठ—मदाकिनी के उस पार काली मंदिर अति प्राचीन प्रसिद्ध मंदिर है, ऊखीमठ से ही मार्ग है। यहां महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती के मंदिर हैं। यह सिद्धपीठ माना जाता है। कहते हैं कि रक्तबीज दैत्य के वध के लिए यहां देवताओं ने आराधना की और उन्हे महाकाली ने दर्शन दिया था।

यह स्थान वन तथा बर्फीली चट्टानो के बीच मे है।यहां एक कुड है, जो एक शिला से ढका रहता है। वह केवल दोनो नवरात्रों मे खोला जाता है। नवरात्रो मे *यहा यज्ञ होता है।*

तुंगनाथ—तुगनाथ पचकेदार मे से तृतीय केदार है। इस मंदिर मे शिवलिग तथा कई और मूर्तियां हैं। यहां पातालगगा नामक एक अत्यन्त शीतल जल की धारा है। तुगनाथ-शिखर पर से पूर्व की ओर नदादेवी, पचचूली तथा द्रोणाचल शिखर दीखते हैं। उत्तर की ओर गगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ चतुःस्तम्भ, बदरीनाथ तथा रुद्रनाथ के शिखर दीख पडते हैं।

नोट : 1 इसी क्षेत्र के अन्य दर्शनीय स्थलो के लिए कृपया *प्रथम खड मे बदरीधाम देखें।*

2 गगोत्री, यमुनोत्री, उत्तरकाशी के लिए देखे अन्य महत्त्वपूर्ण तीर्थ— खड 5

यात्रा मार्ग

ऋषिकेश से केदारनाथ लगभग 216 किलोमीटर दूर है। रुद्रप्रयाग से होते हुए सोनप्रयाग जो करीब 194 किलोमीटर दूर है, बस से पहुचा जा सकता है। सोनप्रयाग के पास करीब 8 किलोमीटर पर गौरीकुड है। यहा भी बस द्वारा पहुचा जा सकता है।

गौरीकुंड से लगभग 13-14 किलोमीटर तक का मार्ग पैदल तय करना पडता है।

ठहरने के स्थान

केदारनाथ मे ठहरने के लिए धर्मशालाए और पर्यटक-लॉज *आदि हैं जहां भोजन की भी उचित व्यवस्था है।*

केदार नाथ मंदिर, एक झाकी

6. भीमशंकर

भीमशकर, द्वादश ज्योतिर्लिगो मे से एक है। इसका एक पवित्र स्थान तो आसाम मे (गोहाटी के पास ब्रह्मपुर पहाड़ी पर बताया जाता है और दूसरा महाराष्ट्र राज्य मे बम्बई से लगभग 320 किलोमीटर दूर दक्षिण-पूर्व में सह्याद्रि पर्वत के शिखर पर है। भीमशकर का स्थान, वन के मार्ग से पर्वत पर है। वहा तक पहुचने का कोई भी सुविधापूर्ण मार्ग नही है। केवल शिवरात्रि पर पूना से भीमशकर तक बस जाती है।
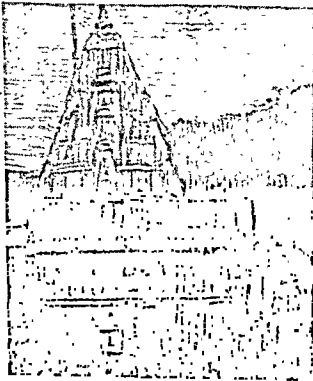
श्री भीमाशकर मंदिर

धार्मिक पृष्ठभूमि

कुम्भकर्ण का बेटा भीम ब्रह्म के वर से इतना बलशाली हो गया कि उसने सभी देवताओ को हराकर इंद्र को भी परास्त किया और फिर कामरूप के महाराजा सुदक्षिण को कैद कर लिया। सुदक्षिण शिव भक्त थे। उन्होंने कारागार मे पार्थिव लिग बनाकर पूजा-पाठ करना आरम्भ किया। भीम ने क्रुद्ध होकर उस लिग को तोडना चाहा तो शिव प्रकट हुए और भीम का वध करके भीमेश्वर ज्योतिर्लिग के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

तीर्थस्थल का महत्त्व

भीमशकर कल्याणकारी ज्योतिर्लिग है। इनके दर्शन मात्र से सबका कल्याण होता है।

तीर्थस्थल का विवरण

मध्य पर्वत के शिखर का नाम डाकिनी है। कहा जाता है कि कभी वहा डायन और भूतो का निवास था।

भीमशकर मंदिर अत्यत प्राचीन है। मंदिर के सम्मुख का जगमोहन बीच से टूट गया है। शिवाजी सह्याद्रि पर्वत पर अवस्थित है और भीमा नदी वहीं से निकलती है। मुख्य मूर्ति से थोडा-थोडा जल झरता है। मंदिर के निकट ही दो कुड है जिन्हे प्रसिद्ध इतिहास पुरुष नाना फडनवीस ने बनवाया था।

मंदिर के आसपास छोटी-सी बस्ती है। मंदिर कलापूर्ण है किन्तु जीर्ण होने से भग्न होता जा रहा है। मंदिर के पीछे दो कुए और एक कुड है।

यात्रा मार्ग

भीमशकर बम्बई से पूर्व और पूना से उत्तर भीमा नदी के किनारे पर्वत पर है। पहला मार्ग, दिल्ली-बम्बई मध्य रेलवे लाइन के नासिक रोड रेलवे स्टेशन से होकर है। नासिक से बस द्वारा लगभग 190 किलोमीटर जाया जाता है। आगे लगभग 30 किलोमीटर का मार्ग बैलगाडी, पैदल या टैक्सी से तय करना पडता है।

दूसरा मार्ग बम्बई-पूना लाइन पर लगभग 100 किलोमीटर दूर नेरल स्टेशन से है, किन्तु यह मार्ग केवल पैदल का है। बम्बई से लगभग 175 किलोमीटर दूर तले गाव उतरा जाता है। वहा से बस के मार्ग से भीमशंकर 200 किलोमीटर दूर है। तले गाव से मंचर तक रेलवे की ही मोटर-बस चलती है। मचर से आवा गाव तक बस मिल जाती है। आवा गांव से मार्ग-दर्शक तथा भोजन आदि लेकर पैदल या बैलगाडी से लगभग 30 किलोमीटर जाना पडता है। बीच मे एक गाव है, वहां यात्री स्कूल मे रात को ठहर सकते हैं।

ठहरने का स्थान

भीमशकर के करीब अनेक धर्मशालाए है, किंतु वे अक्सर खाली रहती है। पास ही कुछ झोपडिया हैं, उनमे पण्डों के यहा या धर्मशाला मे ठहरा जा सकता है।

अन्य भीमशंकर मंदिर

आसाम—शिवपुराण की एक कथा के अनुसार भीमशंकर ज्योतिर्लिंग कामरूप जिले में गोहाटी के माम ब्रह्मपुर पहाडी पर कहा गया है।

तीर्थस्थल—ब्रह्मपुर पहाडी पार कर नीचे उतरते समय एक प्राचीन भग्न मंदिर नजर आता है,इसी में स्थित शिवलिंग को भीमशंकर कहा जाता है। पहाडी से नीचे ब्रह्मपुत्र नदी है और पर्वत शिखर पर एक देवी मंदिर है।

यात्रा मार्ग—गोहाटी तक रेल से यात्रा की जाती है और गोहाटी से पैदल यात्रा करनी पडती है।

ठहरने का स्थान

गोहाटी आसाम की राजधानी है और प्रसिद्ध कामाख्या मंदिर यहीं होने के कारण अनेक धर्मशालाए हैं।

उत्तरप्रदेश के भीमशंकर

कुछ लोगो का मत है कि नैनीताल के पास स्थित, उज्जनक नामक जगह, विशाल शिवमंदिर ही भीमशंकर का स्थान है।
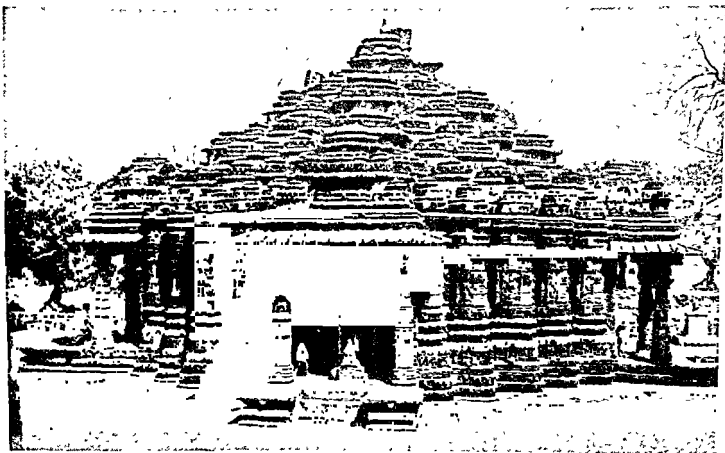
शिव मंदिर, अम्बर नाथ, थाना, महाराष्ट्र

7. विश्वनाथ

विश्वनाथ का एक और नाम विश्वेश्वर है। यह ज्योतिर्लिंग काशी शहर के मध्य स्थित है। काशी का आधुनिक नाम वाराणसी है।

गगा, वरणा और असी जैसी पावन नदियो के बीच में बसी हुई वाराणसी नगरी, भारत के ही नही, ससार के प्राचीनतम नगरो मे से एक है। बीच के काल मे इसे बनारस के नाम से भी पुकारा जाता रहा।

वाराणसी का तीर्थ के रूप मे महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह सदियो से भारतीयो के लिए आस्था, पवित्रता, ज्ञान और धर्म का केंद्र रही है। गगा के किनारे बने यहा के घाट सर्वत्र विख्यात हैं। प्रत्येक घाट का अपना ऐतिहासिक और धार्मिक महत्त्व है।

बारह ज्योतिर्लिंगो मे से एक विश्वनाथ के होने से ही वाराणसी का महत्त्व नही है बल्कि वाराणसी की गिनती सप्तपुरियों और त्रिस्थली मे की जाती है।

चारो दिशाओ मे पाच-पाच कोस फैला वाराणसी क्षेत्र कहा गया है। जीव को मृत्युकाल में अगर यह क्षेत्र मिल जाए तो अवश्य ही वह मोक्ष प्राप्त करता है।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

सनातन काल से ही वाराणसी अर्थात् काशी नगरी भारत की सस्कृति और धर्म का केंद्र रही है। वैदिक धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म के अतिरिक्त हिंदू धर्म की शाखाओ के मठ एव पीठ यहा हैं। शकराचार्य द्वारा सनातन धर्म का उद्धार करने के बाद वाराणसी संन्यासियो का भी गढ़ बन गया। इस समय लगभग एक हजार पाच सौ मंदिर यहा हैं, जिनमे से कई मंदिरो की परपरा बहुत प्राचीन है। इनमे विश्वनाथ, सकटमोचन और दुर्गाजी के मंदिर भारत भर मे प्रसिद्ध हैं।

सस्कृत के विकास मे वाराणसी की देन अनुपम है और यह ससार-प्रसिद्ध विद्वानो का गढ बन गयी है। इन विद्वानो के कारण भारत की प्राचीन सस्कृति और धर्म सुरक्षित है। भाषा-विज्ञान के आचार्यो के मतानुसार हिंदी साहित्य का मूल स्थान काशी है। भक्ति-साहित्य का सूत्रपात करने वाले रामानद के शिष्य कबीर एव रैदास ने निर्गुण भक्ति साहित्य तथा गोस्वामी तुलसीदास ने सगुण साहित्य का निर्माण यही किया था।

आज भी यहा माधवाचार्य, वल्लभाचार्य, नानक-पंथी, अघोर-पथ, रामानुज, निम्बार्क, चैतन्य, लिगायत, राधास्वामी मतो के मानने वाले और उनके अखाड़े अथवा पीठ हैं। नगर मे रामकृष्ण मिशन, भारत सेवा संघ आदि की शाखाएं हैं तथा आनदमयी मा का आश्रम है। अत. भारत की सांस्कृतिक राजधानी होने का गौरव इस प्राचीन नगर को आज भी प्राप्त है। भारत का कोई ऐसा विद्वान् नही हुआ, जिस पर काशी की मुहर न लगी हो। दूसरे शब्दो मे देश मे कोई ऐसा विद्वान् नही होगा, जो कभी काशी न रहा हो।
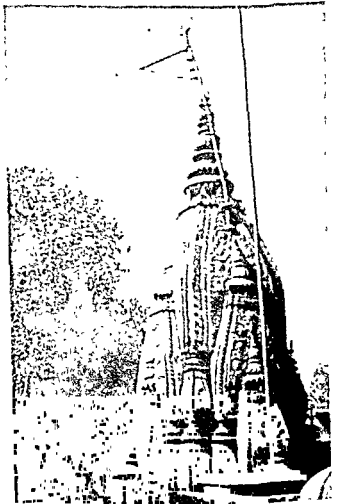
विश्वनाथ मंदिर, वाराणसी

भारतीय सांस्कृतिक एकता के निर्माण तथा सरक्षण मे काशी ने भारी योग दिया है। आज भी यहा तीन-तीन विश्वविद्यालय हैं और प्राचीन परपरा की सस्कृत पाठशालाए तो सैकडो हैं। सस्कृत के विकास में काशी की देन अनुपम है। आज भी यह सस्कृत के विद्वानो का केन्द्र है।

वृहद आरण्यक के एक श्लोक मे है 'स द्वितीयमैच्छत्' यानि कि परमेश्वर ने एक मे दो हो जाना चाहा और शिव ही पुरुष और स्त्री दो रूपो में प्रकट हो गए। उनमे जो पुरुष था उसका 'शिव' नाम हुआ और जो स्त्री हुई उसे 'शक्ति' कहते हैं। उन्ही शिव-शक्ति ने दो चेतनो की–प्रकृति और पुरुष-की सृष्टि की। परमेश्वर ने उन्हे तपस्या करने को कहा तो उन्होंने एक जगह की कामना की।

शिव ने तेज के सारभूत पाच कोस लम्बे चौडे शुभ एव सुदर नगर का निर्माण किया, जो उनका अपना ही स्वरूप था। वह नगर आकाश मे पुरुष के पास आकर स्थित हो गया। पुरुष ने सृष्टि की कामना से अनेक वर्षो तक तप किया। तप के परिश्रम से उनके शरीर से अनेक जलधाराए निकली। विष्णु ने आकाश पर स्थित उस विचित्र वस्तु को देखकर हिलाना चाहा तो उनके कानो से एक मणि गिरकर 'मणिकर्णिका' बनी। जब वह पचक्रोशी जल मे डूबने लगी तो शिव ने उसे त्रिशूल पर

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का विश्वनाथ मंदिर

धारण कर लिया और बाद में ब्रह्माण्ड बन जाने पर उस पचक्रोशी को पृथ्वी पर स्थापित कर दिया। यही काशी है जहां शिव नित्य विराजते हैं।

तीर्थस्थल का महत्त्व

पचक्रोशी काशी इस लोक में कल्याणदायिनी कर्मबंधन का नाश करने वाली, ज्ञानदात्री तथा मोक्ष को प्रकाशित करने वाली मानी गयी है। कर्मों का कर्षण करने से ही इस पुरी को काशी कहते हैं।

तीर्थस्थल का विवरण

विश्वनाथ के मूल मंदिर की परंपरा अतीत के इतिहास के अज्ञात युगों तक चली गई है, किन्तु वर्तमान मंदिर अधिक प्राचीन नहीं है। आजकल यहां तीन विश्वनाथ मंदिर हैं। एक ज्ञानवापी में है, जिसका निर्माण रानी अहिल्याबाई ने किया था। दूसरा काशी हिंदू विश्वविद्यालय में है, जिसे उद्योगपति बिडला ने बनवाया है। तीसरा मीरघाट में है, जिसका निर्माण स्वामी करपात्री जी ने कराया है।

काशी की एक संकरी गली में प्रवेश करने पर प्राचीन विश्वनाथ मंदिर के दर्शन होते हैं। भक्तजनों में यह प्रचलित विश्वास है कि यहां आए प्रत्येक व्यक्ति की मनोकामना शिवशंकर पूर्ण करते हैं। इस मंदिर की ध्वजा सोने की बनी हुई है। यहां हर समय दर्शकों की भीड़ लगी रहती है। यह मंदिर बड़ा भव्य और सुंदर है।

मूल प्राचीन मंदिर के अतिरिक्त काशी हिंदू विश्वविद्यालय के प्रांगण में स्थित नवीन विश्वनाथ का मंदिर है। इसका निर्माण कुछ ही वर्ष पूर्व हुआ है। यह मंदिर श्वेत धवल संगमरमर से बना हुआ है। यह मंदिर बहुत सुंदर और दर्शनीय है। मंदिर दुमंजिला है। इसकी ऊपरी मंजिल में शिवलिंग स्थापित है। यह हर समय भक्तजनों द्वारा शिवजी के चरणों में अर्पित की गई पुष्प-मालाओं और बेल-पत्रों से अलंकृत रहता है। इस विश्वनाथ मंदिर में चारों तरफ संपूर्ण श्रीमद्भगवद्गीता अंकित है।

स्वामी करपात्री द्वारा बनवाया गया विश्वनाथ मंदिर भी भव्य एवं दर्शनीय है। यह मीरघाट में स्थित है।

अन्य दर्शनीय स्थल

काशी के घाट हजारों साल से काशी की महिमा और गंगा का गुणगान संसार में होता रहा है। गंगा यहां इस प्रकार अर्ध
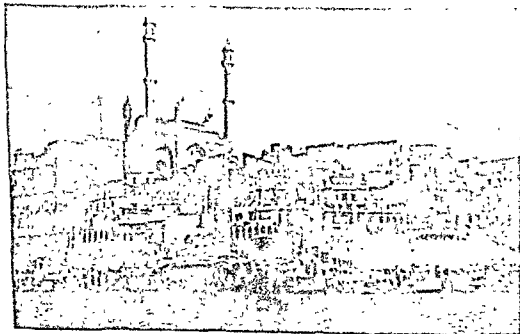
पचवर्णिका घाट, काशी

उत्तरवाहिनी हुई है कि काशी के घाटो को अर्ध-चद्राकार रूप धारण करना पड़ा है, जैसा कि अन्यत्र कही नहीं है।

काशी के इन जीवंत घाटो पर आज भी कथा, कीर्तन, प्रवचन, भाषण, साहित्यिक गोष्ठी, दर्शन-विवेचन आदि सब कुछ सुना और देखा जा सकता है।

गगा-तट के विभिन्न घाटो पर विभिन्न राज्यों की बस्तिया मिलती है। ब्रह्म-घाट, पचगगा घाट और दुर्गाघाट मे महाराष्ट्रीय समाज, मणिकर्णिका घाट, गायघाट में पजाबी, रामघाट, भोसला घाट और सिन्धिया घाट मे गुजराती, दशाश्वमेध घाट और अहिल्याबाई घाट मे बगाली तथा केदार घाट, हनुमान घाट और हरिश्चंद्र घाट में दक्षिणी समाज की बस्तियां हैं।

काशी का प्रत्येक घाट भारत के किसी न किसी राज्य का प्रतिनिधित्व करता है। काशी भारत की सास्कृतिक राजधानी है और काशी के घाट भारत के विभिन्न प्रदेशों के बिम्ब।

वैसे तो काशी के घाटो पर, विशेषकर दशाश्वमेध घाट पर साल भर मेला-सा लगा रहता है, परन्तु विशेष पर्वों पर घाटो की छटा देखने योग्य होती है। दशहरे पर दशाश्वमेध घाट पर दुर्गा की प्रतिमा का विसर्जन, कार्तिक मास मे पचगंगा घाट का स्नान, कार्तिक की पूर्णिमा को गंगा तट की दीप-मालिका, दुर्गा घाट की मुक्की, पंचगगा घाट की कुश्ती, तुलसी घाट की नाग-नथैया विशेष आकर्षक हैं।

भारत की जीवन-गंगा, काशी में अपना उन्मुक्त हास्य बिखेरती है। काशी के घाट युगो से गगा की शोभा निहार रहे हैं। तट की विशाल अट्टालिकाए, गगा के दर्पण में अपना मुख निहारती हैं। हजारों विद्युत-दीप और आकाश-दीप गंगा की आरती उतारते हैं।

इस समय इन घाटो की सख्या लगभग 51 है। इन पक्के घाटो का निर्माण आज से लगभग चार सौ वर्ष पूर्व बताया जाता है। ऐतिहासिक प्रमाणो से यह पता चलता है कि आज के वर्तमान घाट भारत के पूर्व राजाओं की देन हैं। इन घाटों का अधिकाश श्रेय काशी नरेश श्री बलवतसिह को है, जिन्होने भारत के विभिन्न देशी राजाओ को गगा-तट पर घाट बनवाने को आमंत्रित किया था, किन्तु कुछ ऐतिहासिक दस्तावेजों से इस बात का भी निष्कर्ष निकलता है कि इन घाटो का निर्माण मराठो के काल में हुआ था। असि से लेकर राजघाट के बीच मे बने अनेक घाटो के नाम समय-समय पर बदलते रहे हैं। कुछ प्रसिद्ध घाटो का विवरण इस प्रकार है—

असि घाट—यह घाट प्रारंभ से ही कच्चा है। पक्का घाट यहा कभी नही बना। इस घाट के ऊपर जगन्नाथजी का मंदिर है। इस घाट से लोग पचक्रोशी की यात्रा आरम्भ करते हैं।

तुलसी घाट—इस घाट के ऊपर तुलसीदास जी का मंदिर है। यहा उनकी खड़ाऊ अभी तक सुरक्षित हैं। काशी स्थित सकट मोचन् मंदिर का निर्माण भी गोस्वामी तुलसीदास ने ही किया था।

शिवाला घाट—यह घाट महाराज बलवंतसिह के कोषाध्यक्ष पडित बैजनाथ मिश्र ने बनवाया था। यह घाट अभी तक अच्छी दशा मे है। घाट पर बारहदरी,महल और मंदिर भी हैं। इस घाट का ऐतिहासिक महत्त्व भी है। इसी घाट पर ईस्ट इंडिया कपनी के सैनिको के साथ महाराज चेतसिह का युद्ध हुआ था और वह खिडकी के रास्ते गगा मे कदूकर लापता हो गए थे। इस पर कपनी ने अपना अधिकार कर लिया और बाद मे पेंशन पानेवाले मुगल बादशाह के वशजो को दे दिया था। बहुत दिनों बाद स्वर्गीय काशी नरेश ने इसे फिर खरीदा, मरम्मत कराई और मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया।

मणिकर्णिका-घाठ

हनुमान घाट—यह घाट पक्का है। घाट के ऊपर हनुमान का मंदिर है। नागाओं का जूना अखाड़ा मठ है। यहां दक्षिण भारतीयों की बस्ती है।

हरिश्चंद्र घाट—यह काशी के प्रमुख घाटों में है। इसकी स्थिति संतोषजनक है।

दशाश्वमेध घाट—यह घाट वाराणसी की चौपाटी है। नागरिकों के लिए घूमने-फिरने की यही एक जगह है। यह सबसे प्रसिद्ध और पावन घाट माना जाता है। यह एक चौड़ी सड़क से शहर से मिला हुआ है। काशी के पंच-तीर्थों में इसका भी एक स्थान है। काशीखंडानुसार शिवप्रसाद से ब्रह्मा ने यहीं पर दस अश्वमेध यज्ञ किए। शिवरहस्यानुसार यहां पहले रुद्रसरोवर था परन्तु गंगा आगमन के बाद पर्व में प्रयागेश्वर, दक्षिण में दशहरेश्वर, पश्चिम में अगस्त्य कुंड और उत्तर सोमनाथ इसकी चौहद्दी बनी। यहां प्रयागेश्वर का मंदिर है। सन् 1929 में रानी पुटिया के मंदिर के नीचे खुदाई में अनेक यज्ञकुंड निकले थे। तिथीं में यहां स्नान करना अनिवार्य है।

अहिल्याबाई घाट—इंदौर की महारानी अहिल्याबाई ने यह घाट बनवाया था। घाट के ऊपर इंदौर राजघराने का मकान भी है।

श्मशान घाट—मणिकर्णिका का श्मशान घाट बहुत पुराना नहीं है, किन्तु फिर भी लगभग 170 वर्ष से इस घाट पर श्मशान है। पहले हरिश्चंद्र घाट पर ही शवदाह होता था।

मणिकर्णिका घाट—इस घाट को इंदौर की महारानी अहिल्याबाई ने 1795 में बनवाया था। कहा यह जाता था कि घाट पूरी तरह बन नहीं पाया था कि बीच में ही महारानी का देहान्त हो गया। अतः घाट का एक हिस्सा अधूरा ही रह गया, जो अभी तक उसी तरह पड़ा हुआ है। इस घाट के ऊपर मणिकर्णिका का कुंड है। इस कुंड में प्राकृतिक जल-स्रोत हैं, जिससे निरंतर निर्मल जल निकलता रहता है। काशी के पंचतीर्थों में इसका भी स्थान है। विश्वास किया जाता है कि इस कुंड में विष्णु प्रतिबिंब दिखाई देता है। गंगाजी के अर्द्धचंद्र में मध्य बिंदु पर यह स्थित है। यह काशी का सबसे प्राचीन घाट माना जाता है। कथा है कि विष्णु के कान की बाली यहां गिरी थी जिससे इस घाट का नाम मणिकर्णिका पड़ा है। यहां चरण-पादुका बनी हुई है जिसे विष्णुजी का पद-चिन्ह कहा जाता है।

मुंशी घाट—यह घाट नागपुर के दीवान मुंशी श्रीधर नारायण द्वारा बनवाया गया था। काशी के घाटों में यह घाट दर्शनीय है। इसमें पत्थर की कारीगरी बहुत आकर्षक है।

मान मंदिर घाट—यह घाट जयपुर के राजा मानसिंह ने बनवाया है। घाट के ऊपर महल भी है। इस महल का एक [illegible]रा अपनी कलात्मक बनावट के लिए प्रसिद्ध है। 1633 ई. में राजा मानसिंह के पश्चात जयसिंह ने यहां ज्योतिष सम्बन्धी वेधशाला का निर्माण कराया था।

[illegible]

[illegible]

सारनाथ

[illegible]

[illegible]

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् राज्य सरकार ने सारनाथ की ओर विशेष ध्यान दिया। नये राज-मार्गों के अतिरिक्त हिरनों के विचरण के लिए बाग, नहर और पुलों के दरीचे लगाये गए हैं। इस स्थान की उन्नति के लिए श्रीलंका निवासी अनागारिक धर्मपाल की देन अविस्मरणीय है। यहां सरकार द्वारा स्थापित संग्रहालय, चीनी बौद्ध-मंदिर, अतिथिशाला और वाराणसी का रेडियो स्टेशन है।

विशालाक्षी मंदिर—तंत्र चूड़ामणि के अनुसार 52 शक्तिपीठों में से एक वाराणसी में है—यहां पर सती का कर्णकुंडल गिरा था। शक्ति विशालाक्षी हैं और भैरव कालभैरव हैं। मणिकर्णिका घाट के पास ही यह मंदिर है।

मूलगन्ध कुटी-विहार, सारनाथ

यात्रा मार्ग

वाराणसी भारत के लगभग सभी बड़े शहरो से सीधा आया जाया जा सकता है। रेल और बस सेवा हर शहर से ही उपलब्ध है। इलाहाबाद से वाराणसी 126 किलोमीटर दूर है और मुगलसराय से केवल 17 किलोमीटर।

शहर मे मंदिरों आदि के दर्शन के लिए तांगों, इक्कों और सिटी बसों की अच्छी व्यवस्था है। रिक्शा भी मिलते हैं।

ठहरने के स्थान

शहर में अनेक धर्मशालाएं और होटल हैं। यात्री इच्छानुसार कही भी आराम से ठहर सकते हैं। विभिन्न धर्मावलंबियो और प्रातो की अलग-अलग धर्मशालाए हैं। कुछ मुख्य स्थानो के नाम इस प्रकार हैं —

धर्मशालाएं

1. रेवाबाई की धर्मशाला।
2. जैन धर्मशाला।
3 लखनऊ धर्मशाला।
4. पांडे धर्मशाला।
5. डाह्या लाल धनजीभाई गुजराती धर्मशाला।
6. हरसुदरी धर्मशाला।
7. श्रीकृष्णचद्र धर्मशाला।
8 श्रीकृष्ण धर्मशाला।

विश्रामगृह (लॉज) और होटल

1. सेंट्रल होटल, दशाश्वमेध घाट रोड।
2. क्वालिटी होटल, प्रकाश टाकीज के पास, लहुराबीर।
3. के.वी एम. होटल, आनद बाजार, गोदोलिया।
4 क्लाक्स होटल, दि मॉल।
5. होटल-डी-पेरिस, 15 मॉल।
6 होटल नरेंद्र, पी. 292, परेड कोठी, जी. टी. रोड।
7 पैलेस होटल, बिड़ला टावर।
8. नेशनल लॉज, विद्यापीठ रोड, बनारस छावनी।
9. मॉडर्न बोर्डिंग, गोदोलिया।
10. बनारस लॉज, दशाश्वमेध रोड।
11. ग्रीन लॉज, नई सडक।

8. त्र्यम्बकेश्वर

गोदावरी के तट पर त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग की गणना, भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में होती है। यहां के निकटवर्ती ब्रह्मगिरि नामक पर्वत से पुण्य सलिला गोदावरी निकलती है। जो महत्त्व उत्तर भारत में गंगा का है, वही गोदावरी का दक्षिण भारत में है। जैसे गंगावतरण का श्रेय तपस्वी भगीरथ को है, वैसे ही गोदावरी का प्रवाह ऋषिश्रेष्ठ गौतम की घोर तपस्या का फल है, जो उन्हें भगवान आशुतोष से प्राप्त हुआ था।

धार्मिक पृष्ठभूमि

ब्रह्मगिरि पर ऋषि गौतम तपस्या करते थे और उन्हें अनेक सिद्धियां प्राप्त थीं। उनसे ईर्ष्यावश कुछ सन्यासियों ने उन पर गोहत्या का दोष लगा दिया और प्रायश्चित्त में वहां गंगा जी को लाने को कहा। गौतम ऋषि ने एक करोड़ शिवलिंगों की पूजा की तो शिव प्रसन्न हुए और शिवा के साथ प्रकट हुए। वर में गौतम ने गंगा जी की मांग की तो गंगा तैयार नहीं हुईं। उनका कहना था कि शिव यदि प्रतिष्ठित हों तो वह रहेंगी। शिव त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रतिष्ठित हुए और गंगा 'गौतमी' के रूप में उतरीं। उसी समय सभी तीर्थ, क्षेत्र, देवता, पुष्कर आदि सरोवर, समस्त नदियां, श्री विष्णु आदि देवता वहां उपस्थित हुए और गंगा का अभिषेक किया।

तभी से गुरु जब सिंहराशि पर रहते हैं, सभी तीर्थ गौतमी या गोदावरी के किनारे उपस्थित होते हैं।

तीर्थस्थल का महत्त्व

त्र्यम्बक नामक ज्योतिर्लिंग इस लोक में सभी इच्छाओं को पूरा करने वाला तथा परलोक में उत्तम मोक्ष प्रदान करने वाला है। बृहस्पति हर बारह वर्ष में एक बार सिंह राशि पर पहुंचते हैं इसीलिए कुम्भ लगता है। कुंभ के समय सभी तीर्थ यहां उपस्थित होते हैं, इसीलिए उस समय यहां स्नान करने से समस्त तीर्थ-यात्राओं का पुण्यफल मिलता है। सभी तीर्थ जब तक गौतमी के किनारे रहते हैं, अपने स्थल में उनका महत्व नहीं होता है। इसीलिए गोदावरी कुम्भ के समय बाकी तीर्थ वर्जित हैं।

तीर्थस्थल का विवरण

यहां का मुख्य मंदिर त्र्यम्बकेश्वर मंदिर है। मंदिर के भीतर एक छोटे-से गड्ढे में तीन छोटे-छोटे लिंग हैं, जो ब्रह्मा, विष्णु और महेश—इन तीनों देवताओं के प्रतीक माने जाते हैं। मंदिर के पीछे परिक्रमा मार्ग में 'अमृतकुंड' नामक एक कुंड है।

अन्य दर्शनीय स्थल

कुशावर्त—त्र्यम्बकेश्वर-मंदिर से थोड़ी दूर पर ही यह एक सरोवर है। इसमें नीचे से गोदावरी का जल आता है। इस
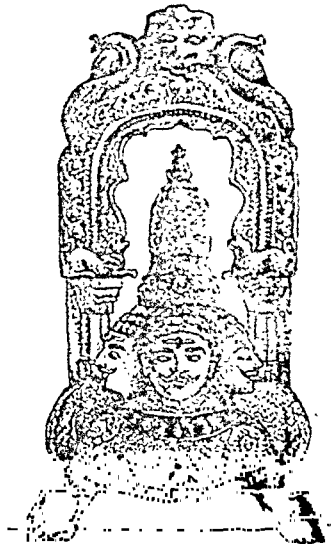
श्री त्र्यम्बकेश्वर, त्र्यम्बक

सरोवर में स्नान नहीं किया जाता। उसका जल लेकर बाहर स्नान किया जाता है। यहा स्नान करके तब देव-दर्शन किया जाता है। यात्री कुशावर्त की परिक्रमा भी करते हैं।

श्री त्र्यम्बकेश्वर मंदिर, त्र्यम्बक
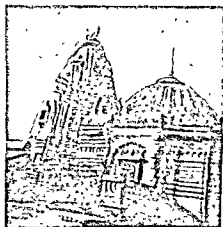
कुशावर्त से त्र्यम्बकेश्वर दर्शन के लिए जाते समय मार्ग मे नीलगंगा संगम पर संगमेश्वर, कनकेश्वर, कपोतेश्वर, विसंध्या देवी और त्रिभुवनेश्वर के दर्शन करते हैं।

त्र्यम्बकेश्वर के तीन पर्वत—त्र्यम्बकेश्वर के समीप तीन पर्वत पवित्र माने जाते हैं—1. ब्रह्मगिरि, 2. नीलगिरि और 3. गगाद्वार। इनमें से अधिकाश यात्री केवल गगाद्वार जाते हैं।

ब्रह्मगिरि—इस पर्वत पर त्र्यम्बकेश्वर का किला है। यह किला आजकल खंडहर की दशा मे है। पर्वत पर जाने के लिए 500 सीढ़िया बनी हुई हैं। यहां एक जल-कुड है और उसी के पास त्र्यम्बकेश्वर मंदिर है। निकट ही गोदावरी का मूल उद्गम है। ब्रह्मगिरि को शिवस्वरूप माना जाता है। कहते हैं कि ब्रह्मा के शाप से भगवान शंकर यहा पर्वत रूप मे स्थित हैं।

नीलगिरि—इस पर्वत पर 250 सीढ़िया चढ़कर जाना पड़ता है। यह ब्रह्मगिरि की वाम गोद है। यहां नीलाम्बिका देवी का मदिर है। यहा नवरात्रि मे मेला लगता है। यही पास मे गुरु दत्तात्रेय का मदिर है। वही नील कठेश्वर मंदिर भी है। इसे सिद्ध तीर्थ कहा जाता है।

गंगाद्वार—इस पर्वत को कौलगिरि भी कहते हैं। इस पर 750 सीढ़ियां चढ़कर जाना पडता है। ऊपर गगा (गोदावरी) का मंदिर है। मूर्ति के चरणों के समीप धीरे-धीरे बूंद-बूद जल निकलता है। यह जल समीप के एक कुंड मे एकत्र होता है। यह पचतीर्थो मे एक तीर्थ है।

यहा एक बावड़ी और गोशाला है। गगाद्वार से लगभग आधा मार्ग उतरने पर 'रामकुड' और 'लक्ष्मणकुंड' मिलते हैं। गगाद्वार के पास ही उत्तर की ओर कोलाम्बिका देवी का मंदिर है।

तीर्थराज कुशावर्त, त्र्यम्बक

मार्ग मे सीढ़ियो पर आधे से कुछ अधिक ऊपर जाकर दाहिनी ओर एक मार्ग जाता है। वहा अनोपान-शिला है। यह शिला गोरखनाथजी के नाथ-सप्रदाय मे अत्यन्त पवित्र मानी जाती है। इस पर अनेक सिद्धो ने तपस्या की है। यह गोरखनाथ सप्रदाय का तीर्थ स्थान है।

चक्रतीर्थ-यह स्थान त्र्यम्बक से लगभग 10 किलोमीटर दूर जगल मे है। कहा जाता है कि कुशावर्त से गुप्त हुई गोदावरी यहां आकर प्रकट हुई है। गोदावरी का प्रत्यक्ष उद्गम तो यही है। यहा अत्यन्त गहरा कुंड है और उससे निरतर जल-धारा बाहर निकलती है। यही धारा गोदावरी की है, जो नासिक आयी है।

अन्य मंदिर

कुशावर्त सरोवर के पास ही गगा-मंदिर है। उसके निकट श्रीकृष्ण-मंदिर है। बस्ती मे श्रीलक्ष्मीनारायण मदिर, श्रीराम मंदिर और परशुराम मदिर है। कुशावर्त के पास केदारेश्वर, इन्द्रालय के पास इद्रेश्वर, त्र्यम्बकेश्वर के पास गायत्री-मंदिर और त्रिसन्ध्येश्वर, कांचन तीर्थ के पास काचनेश्वर तथा ज्वरेश्वर, कुशावर्त के पीछे बल्लालेश्वर, गौतमालय के पास गौतमेश्वर, रामेश्वर, महादेवी के पास मुकुदेश्वर, काशी विश्वेश्वर, भुवनेश्वरी, त्रिभुवनेश्वर आदि अनेक छोटे-बडे मदिर हैं।

यात्रा मार्ग

यह ज्योतिर्लिंग, महाराष्ट्र के नासिक जिले मे है। मध्य रेलवे की जो लाइन दिल्ली से बबई को गयी है, उस पर नासिक रोड नामक एक स्टेशन है। वहां से दस-ग्यारह किलोमीटर दूरी पर नासिक-पंचवटी है, जहा सीताहरण हुआ था। नासिक रोड से नासिक-पचवटी तक बसे चलती हैं। वहा से 30 किलोमीटर दूर त्र्यम्बकेश्वर का स्थान है। मार्ग बडा रमणीक है।

ठहरने के स्थान

त्र्यम्बकेश्वर मंदिर के आसपास अनेक धर्मशालाए हैं, जिनमें यात्री सुविधापूर्वक ठहर सकते हैं।

9. श्रीवैद्यनाथ धाम

श्रीवैद्यनाथ द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है और वैद्यनाथ धाम 51 शक्तिपीठों में से एक पीठ भी है। सती का हृदय यहां गिरा था। अनेक लोग सांसारिक कामनाओं से वैद्यनाथ आते हैं और संकल्पपूर्वक निर्जलव्रत करके मंदिर में धरना देकर पड़े रहते हैं। इनमें से अधिकांश क्षुधा-पिपासा न सह सकने से लौट जाते हैं, किन्तु जो बराबर टिके रहते हैं, उनकी कामना पूर्ण होती सुनी जाती है।

युगल मंदिर का एक दृश्य वैद्यनाथ

धार्मिक पृष्ठभूमि

राक्षसराज रावण ने कैलाश पर भगवान शंकर को संतुष्ट करने के लिए कठोर तप किया। उसकी तपस्या से संतुष्ट होकर शंकरजी ने प्रत्यक्ष दर्शन दिया और वरदान मांगने को कहा। रावण ने प्रार्थना की कि भगवान शंकर लंका में निवास करें। शंकरजी ने रावण को वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग प्रदान करके आज्ञा दी कि उसे लंका में स्थापित करे, किन्तु शंकरजी ने सावधान कर दिया कि मार्ग में कहीं पृथ्वी पर यह मूर्ति रखेगा तो फिर उठा नहीं सकेगा।

देवता नहीं चाहते थे कि ज्योतिर्लिंग लंका जाए। आकाश-मार्ग से मूर्ति लेकर जाते हुए रावण के उदर में वरुणदेव ने प्रवेश किया। रावण को लघुशंका का अत्यधिक वेग प्रतीत हुआ। विवश होकर वह पृथ्वी पर उतर पड़ा। वृद्ध ब्राह्मण का वेश बनाए भगवान विष्णु वहां पहले से खड़े थे। रावण ने कुछ क्षण रुकने को कहकर मूर्ति ब्राह्मण को दे दी।

रावण के उदर में तो वरुणदेव बैठे थे। उसकी लघुशंका जल्दी पूरी कैसे हो सकती थी। इधर वृद्ध ब्राह्मण ने कहा—"मैं और प्रतीक्षा नहीं कर सकता। यह रखी है तुम्हारी मूर्ति।" इतना कहकर ब्राह्मण वेशधारी विष्णु चले गए।

[illegible]

तीर्थस्थान का विवरण

वैद्यनाथ धाम का मुख्य मंदिर श्री वैद्यनाथ मंदिर ही है। मंदिर के घेरे में ही [illegible]

श्री वैद्यनाथ-धाम

मंदिरों का समूह [illegible] पत्थरों से बनी एक ऊंची दीवार से घिरा है। यहां पर तीन मंदिर महादेवजी के तथा तीन मंदिर पार्वतीजी के हैं, जो ऊपर ही ऊपर रेशमी रस्सी द्वारा एक दूसरे से संबद्ध हैं।

वैद्यनाथ धाम का एक और नाम देवघर है। यहां के 24 शिवमंदिरों का एक घेरा प्रसिद्ध है।

श्री वैद्यनाथ मंदिर के घेरे में ही 21 मंदिर और हैं—

1. गौरी मंदिर—वैद्यनाथजी के सम्मुख ही यह मंदिर है। यही यहां का शक्तिपीठ है। इसमें एक ही सिंहासन पर श्री जयदुर्गा तथा त्रिपुर सुंदरी की दो मूर्तियां विराजमान हैं।

2. कार्तिकेय-मंदिर—परिक्रमा में चलने पर यह दूसरा मंदिर

आता है। इसमे मदनमोहनजी तथा कार्तिकेय की मूर्तिया हैं। इनके अतिरिक्त परिक्रमा मे ये मंदिर क्रमश· मिलते हैं—3. गणपति-मंदिर, 4. ब्रह्माजी का मंदिर, 5. संध्यादेवी का मंदिर, 6.कालभैरव-मंदिर, 7. हनुमानजी का मंदिर, 8. मनसादेवी का मंदिर, 9. सरस्वती-मंदिर, 10 सूर्य-मंदिर, 11 बगलादेवी का मंदिर, 12. श्रीराम-मंदिर, 13 आनन्दभैरव-मंदिर, 14. गगा-मंदिर, 15. मानिक-चौक चबूतरा, 16. हरगौरी मंदिर, 17. कालिका-मंदिर, 18. अन्नपूर्णा-मंदिर, 19. चद्रकूप, 20. लक्ष्मीनारायण मंदिर, 21. नीलकठ महादेव मंदिर।

अन्य दर्शनीय स्थल

शिवगंगा सरोवर—कहा जाता है कि रावण ने जल की आवश्यकता होने पर पदाघात से यह सरोवर उत्पन्न किया था। मंदिर के पास ही यह सरोवर है। यात्री इसमें स्नान करके तब दर्शन करने जाते हैं।

तपोवन—वैद्यनाथ (देवघर) से 6 किलोमीटर पूर्व एक पर्वत पर यह स्थान है। यहां शिखर पर एक शिव-मंदिर है और शूलकुड नामक एक कुंड है। स्थानीय लोग इसे महर्षि वाल्मीकि का तपोवन कहते हैं।

त्रिकूट—तपोवन से 9 किलोमीटर (वैद्यनाथ से लगभग 15 किलोमीटर) पूर्व यह पर्वत है। इस पर त्रिकूटेश्वर शिव मंदिर है। इस पर्वत से मयूराक्षी नदी निकलती है।

हरिलाजोड़ी—यह वैद्यनाथ से उत्तर-पूर्व एक ग्राम है। कहा जाता है कि यही एक हर्र के वृक्ष के नीचे रावण ने वैद्यनाथ लिंग ब्राह्मण वेशधारी श्रीनारायण के हाथ मे दिया था। अब यहां एक काली-मंदिर है।

दोलमंच—श्रीवैद्यनाथ मंदिर से कुछ दूर पश्चिम की ओर यह स्थान है। दोलपूर्णिमा (फाल्गुन पूर्णिमा) होली के दिन यहा श्री राधा-कृष्ण का झूला एवं रग खेलने का महोत्सव होता है।

बैजू-मंदिर—दोलमंच से पश्चिम में बैजू भील की समाधि है। कहा जाता है कि बैजू भील ही श्रीवैद्यनाथ का प्रथम पूजक था।

नंदन पर्वत—वैद्यनाथ धाम के उत्तर-पश्चिम कोण पर यह पर्वत है। इसके ऊपर छिन्नमस्ता देवी का मंदिर है। इसी पर्वत के नीचे काली मंदिर है।

यात्रा मार्ग

पूर्वी रेलवे की हावडा-पटना लाइन पर जसीडीह स्टेशन है। जसीडीह से एक रेलवे-लाइन वैद्यनाथ धाम स्टेशन तक जाती है। जसीडीह से वैद्यनाथ धाम स्टेशन लगभग 6 किलोमीटर है। स्टेशन से वैद्यनाथ मंदिर लगभग 2 किलोमीटर है। मंदिर तक पक्की सडक है। सवारिया मिलती है। यह स्थान भागलपुर से 88 किलोमीटर पर है। जसीडीह से बस सेवाए भी उपलब्ध हैं।

ठहरने का स्थान

वैद्यनाथ धाम में बहुत से लोग पंडो के घरो मे ठहरते हैं। यात्रियों के ठहरने के लिए निम्नलिखित धर्मशालाए भी हैं-

1. हजारीमल दूध वाले की धर्मशाला, स्टेशन के पास।
2. हरिकृष्णदास भट्टर की धर्मशाला, शिवगगा पर।
3. मुखाराम लक्ष्मी नारायण की धर्मशाला, मंदिर के पास।
4. रामचंद्र गोयनका की धर्मशाला, बडा बाजार।
5. ताराचद्र रामनाथ पूना वाले की धर्मशाला, ज्ञान गुदडी।
6. शकर धर्मशाला, चौक।

अन्य वैद्यनाथ

कहीं-कहीं 'परल्या वैद्यनाथ च' ऐसा पाठ मिलता है—इसके अनुसार हैदराबाद नगर के पास परभनी जंक्शन से परली तक एक ब्रांच लाइन है। परली स्टेशन से थोडी दूरी पर परली गाव है जहा श्रीवैद्यनाथ नामक ज्योतिर्लिंग है।

10. नागेश्वर

नागेश्वर द्वादश ज्योतिर्लिंग में से एक तीर्थ है। यह तीर्थ गोमती द्वारका से लगभग 20 किलोमीटर पूर्व-उत्तर में पड़ता है।

धार्मिक पृष्ठभूमि

सुप्रिय नाम का एक वैश्य था। वह बड़ा ही धर्मात्मा और सदाचारी था। वह शिवजी का बड़ा भारी भक्त था। एक बार वह नौका पर सवार होकर कहीं जा रहा था। अचानक दारुक नामक राक्षस ने उस नौका पर आक्रमण किया। उसमें बैठे हुए सभी यात्रियों को राक्षस ने अपनी पुरी में ले जाकर जेल में बंद कर दिया। पर सुप्रिय की शिवपूजा वहां भी बंद नहीं हुई। वह तन्मय होकर शिवपूजा करता रहा। संयोग से दूसरी राक्षस

श्रीनागनाथ मंदिर

यात्रा मार्ग

राजकोट (गुजरात) से परिवहन बसों की सहायता-और साधन द्वारा द्वारका जाया जा सकता है। फिर वहां से बस द्वारा नागेश्वर पहुंचा जा सकता है। द्वारका से नागेश्वर जाने के लिए बस तथा अन्य वाहन थोड़ी-थोड़ी देर में मिलते रहते हैं।

ठहरने का स्थान

द्वारका जाने वाले अधिकांश यात्री नागेश्वर ज्योतिर्लिंग दर्शन करने अवश्य जाते हैं। अतः वे यहीं द्वारका धर्मशाला या होटल में ही अपना सामान छोड़ जाते हैं और दिन में ही दर्शन कर लौट आते हैं। नागेश्वर में भी धर्मशाला है।

11. रामेश्वर

नोट : रामेश्वरम् का विवरण हम धाम वाले खण्ड में दे चुके हैं।

12. घुश्मेश्वर

घुश्मेश्वर को घुसृणेश्वर और घृष्णेश्वर भी कहते हैं। भारत की सुप्रसिद्ध एलोरा-गुफाओं के समीप ही घुश्मेश्वर का भव्य मंदिर है। द्वादश ज्योतिर्लिगों मे से यह एक ज्योतिर्लिंग है। मंदिर एक घेरे के भीतर है। वहा पास ही सरोवर है।

श्री घुश्मेश्वर-शिव और देवगिरि दुर्ग के बीच सहस्रलिंग पातालेश्वर, सूर्येश्वर हैं। यह बहुत प्राचीन स्थान है। कुछ लोग एलोरा के कैलास-मंदिर को ही घुश्मेश्वर का वास्तविक स्थान मानते हैं। एलोरा इतना सुंदर स्थान है कि बौद्ध और जैन तथा अन्य धर्मावलबी तक इसके प्रति आकर्षित हो गये और उन्होंने इस सुरम्य पहाडी पर अपने-अपने स्थान बनाये हैं।

धार्मिक पृष्ठभूमि

भगवान शिवजी के इस महिमामय भव्य मंदिर की स्थापना से सम्बन्धित कथा इस प्रकार है :—

दक्षिण देश मे देवगिरि पर्वत के निकट सुधर्मा नामक एक ब्राह्मण रहता था। उसकी पति-परायणा पत्नी का नाम सुदेहा था। वे बडे सुखी थे, किन्तु उनके कोई संतान न थी। इससे सुधर्मा चिंतित रहने लगा। यह देख सुदेहा ने अपने पति से दूसरा विवाह करने का आग्रह किया। उसने अपनी बहिन घुश्मा के साथ विवाह करने पर जोर दिया। उसने कहा कि घुश्मा के साथ मेरा अत्यन्त स्नेह-सम्बन्ध है। उसके साथ किसी प्रकार के मनोमालिन्य की भी शंका नही हो सकती। हम दोनों साथ-साथ प्रेम के साथ रहेगी।

अत मे निश्चित होकर सुधर्मा घुश्मा के साथ विवाह करके उसे घर ले आया। दोनो बहने प्रेम-पूर्वक रहने लगी। घुश्मा अतीव सुलक्षणा गृहिणी थी। वह अपने पति की सब प्रकार से सेवा करती और अपनी बडी बहिन को माता के समान मानती। साथ ही वह शिवजी की अनन्य उपासिका थी। वह प्रतिदिन नियमपूर्वक 101 पार्थिव-शिवलिंग बनाकर उनका विधिवत् पूजन करती। कुछ समय बाद शिवजी की कृपा से उसने पुत्र को जन्म दिया। सुधर्मा के साथ-साथ सुदेहा के आनद की भी सीमा न रही, किन्तु आगे चलकर न जाने क्यो उसके मन मे ईर्ष्या उत्पन्न हुई और उसने ईर्ष्यावश घुश्मा के पुत्र की हत्या कर डाली। शव को उसी सरोवर मे डाल दिया, जिसमे घुश्मा जाकर पार्थिव शिवलिगो को छोडती थी। प्रात काल जब घुश्मा पूजन करके पार्थिव-लिंग सरोवर में विसर्जित कर घर लौटने लगी, तब जीवित होकर उसका पुत्र उसके पास आ गया। भगवान शकर ने प्रकट होकर उसे दर्शन दिए। वरदान मांगने को प्रेरित किये जाने पर घुश्मा ने भगवान शिव से वहा नित्य स्थित रहने की प्रार्थना की। जिससे ससार का कल्याण हो।

भगवान् शकर 'एवमस्तु' कहकर ज्योतिर्लिंग के रूप मे वहा *वास करने लगे और घुश्मेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुए।* उस तालाब का नाम भी तब से शिवालय हो गया।
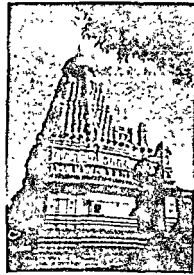
श्री घुश्मेश्वर मंदिर वेरूल

तीर्थस्थल का महत्त्व

इन घुश्मेश्वर भगवान की बडी महिमा गायी गई है—

> ईदृश चैव लिंगं च दृष्ट्वा पापैः प्रमुच्यते।
> सुखं संवर्धते पुसां शुक्लपक्षे यथा शशी॥
>
> (शिवपुराण श्लोक 82)

अर्थात् घुश्मेश्वर महादेव के दर्शन से सारे पाप दूर हो जाते हैं और सुख की वृद्धि उसी प्रकार होती है, जिस प्रकार शुक्लपक्ष मे चंद्रमा की वृद्धि होती है।

अन्य दर्शनीय स्थल

अजंता-एलोरा— [illegible]
एलोरा गुफाएं हैं। [illegible]

आसान और सुविधाजनक है। गुफाए अलग-अलग सम्प्रदाय के लिए बटी हुई है, जैसे एक से तेरह नबर तक की गुफाए बौद्धो की है, चौदह से उन्तीस हिदुओ की और तीस से चौतीस सख्या तक की गुफाए जैन मूर्तियो के लिए है।

यहा पर कुछ प्रसिद्ध मदिर भी है। विश्वकर्मा व बौद्ध मदिर 1500 वर्ष पुराना है और प्रसिद्ध कैलास मदिर लगभग 1200 वर्ष पूर्व का है—कैलास मदिर मे प्राचीन इजीनियरो ने पतली एक धारा को ऐसे घुमाया है कि उसका जल बूद-बूद कर शिवलिग पर निरतर टपकता रहता है, जो पिछली 12 सदियो से वैसे ही टपकता रहा है।

अजता की 29 गुफाए 70 किलोमीटर दूर हैं। यहा पर जैन, बौद्ध और हिन्दू धर्म के अवशेष देखे जा सकते हैं। एलोरा की गुफाएं जैसे मूर्ति प्रधान हैं, वैसे ही अजता की गुफाए चित्र प्रधान हैं।

औरंगाबाद—औरंगाबाद में 12 सदी पुराना एक पत्थर का किला है, जिसके पास ही मुगल सम्राट औरंगजेब की समाधि है।

यात्रा मार्ग

मध्य रेलवे की काचीगुडा (हैदराबाद) मनमाड लाइन पर मनमाड से लगभग 135 किलोमीटर दूर औरंगाबाद स्टेशन है। औरंगाबाद से घृश्मेश्वर लगभग 25 किलोमीटर दूर वेरूल गाव के पास शिवालय नामक स्थान पर है। औरंगाबाद मोटर-बस सर्विस का केंद्र है। स्टेशन के पास ही घृश्मेश्वर जाने के लिए बस मिलती है। एलोरा घृश्मेश्वर के पास है, पर अजता जाने के लिए औरंगाबाद से जाया जाता है।

ठहरने का स्थान

घृश्मेश्वर का भव्य मदिर वेरूल गाव के पास है। मदिर के घेरे में ही यात्रियो के ठहरने की व्यवस्था भी है। वैसे यात्री गांव में पडो के यहा भी ठहर सकते हैं।

कैलास मदिर, एलोरा

खंड 3
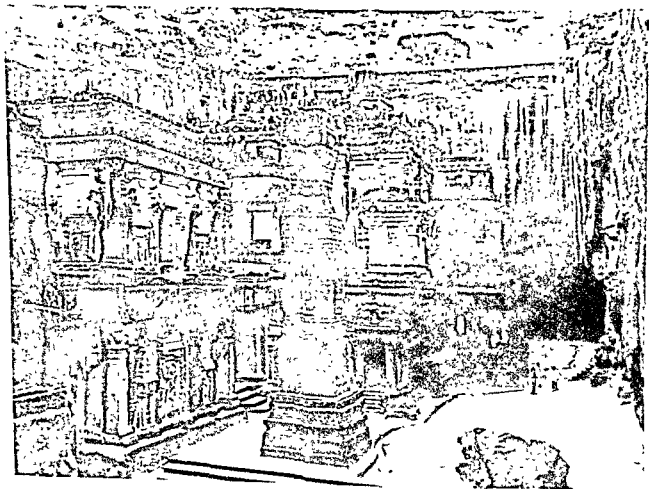
सप्तपुरी-यात्रा

[हरिद्वार, मथुरा, अयोध्या, कांची, द्वारका, काशी तथा अवंतिका]

नोट : द्वारका के लिए देखें खंड 1 चार धाम
काशी तथा अवंतिका (उज्जैन) का विवरण खंड 2 में
द्वादश ज्योतिर्लिंगो में दिया जा चुका है।

आसान और सुविधाजनक है। गुफाए अलग-अलग सम्प्रदाय के लिए बटी हुई है, जैसे एक से तेरह नवर तक की गुफाए बौद्धो की है, चौदह से उन्तीस हिंदुओ की और तीस से चौतीस सख्या तक की गुफाए जैन मूर्तियो के लिए है।

यहा पर कुछ प्रसिद्ध मदिर भी है। विश्वकर्मा व बौद्ध मदिर 1500 वर्ष पुराना है और प्रसिद्ध कैलास मदिर लगभग 1200 वर्ष पूर्व का है—कैलास मदिर मे प्राचीन इजीनियरो ने पतली एक धारा को ऐसे घुमाया है कि उसका जल बूद-बूद कर शिवलिंग पर निरतर टपकता रहता है, जो पिछली 12 सदियो से वैसे ही टपकता रहा है।

औरंगाबाद—औरंगाबाद में 12 सदी पुराना एक पत्थर का किला है, जिसके पास ही मुगल सम्राट औरंगजेब की समाधि है।

यात्रा मार्ग

मध्य रेलवे की काचीगुडा (हैदराबाद) मनमाड लाइन पर मनमाड से लगभग 135 किलोमीटर दूर औरंगाबाद स्टेशन है। औरगाबाद से घृश्मेश्वर लगभग 25 किलोमीटर दूर वेरूल गाव के पास शिवालय नामक स्थान पर है। औरगाबाद मोटर-बस सर्विस का केंद्र है। स्टेशन के पास ही घृश्मेश्वर जाने के लिए बस मिलती है। एलोरा घृश्मेश्वर के पास है,पर अजता जाने के लिए औरगाबाद से जाया जाता है।

ठहरने का स्थान

घृश्मेश्वर का भव्य मंदिर वेरूल गांव के पास है। मंदिर के घेरे में ही यात्रियो के ठहरने की व्यवस्था भी है। वैसे यात्री गाव मे पडो के यहा भी ठहर सकते हैं।

कैलास मंदिर, एलोरा

खंड 3

सप्तपुरी-यात्रा

[हरिद्वार, मथुरा, अयोध्या, कांची, द्वारका, काशी तथा अवंतिका]

नोट : द्वारका के लिए देखें खंड 1 चार धाम
काशी तथा अवंतिका (उज्जैन) का विवरण खंड 2 में
द्वादश ज्योतिर्लिंगो में दिया जा चुका है।

वर्णन किया है। उस समय भी उक्त कुंड में कृत्रिम रूप से जल पहुचाया जाता था।

चीनी यात्री के विवरण में स्पष्ट लिखा है कि उस समय हिन्दू धर्म को मानने वाले पुण्य प्राप्त करने के निमित्त हरिद्वार में एकत्र होते थे। हजारों की संख्या में वहां धार्मिक जनता स्नान करने के लिए पहुंचती थी। दानी राजाओ द्वारा अनेक धर्मशालाएं बनवाई गई थीं। उन धर्मशालाओं में विधवा, रोगी और दु:खी-जनों के लिए नि:शुल्क निवास की व्यवस्था थी।

हर्षवर्धन के समय हरिद्वार का महत्त्व और अधिक बढ गया था। महाराज हर्षवर्धन कुंभ के अवसर पर हरिद्वार और प्रयाग में यज्ञ कराते थे।

हरिद्वार में समतल मैदान होने के कारण अनेक मुस्लिम शासकों के भी यहा आक्रमण होते रहे। दिल्ली का सुलतान नासिरुद्दीन भी अपनी सेना लेकर हरिद्वार तक चढ आया था। हरिद्वार पर तैमूरलग ने भी आक्रमण किया था। हरिद्वार की पहाडी जनता ने डटकर तैमूरलंग का सामना किया था। उस समय हरिद्वार में निवास करने वाले साधु-सन्यासियों ने भी विधर्मी आक्रमणकारियों का साहस के साथ मुकाबला किया था। उस युद्ध मे कई हजार साधु एवं सन्यासी भी मारे गए थे। मुगलों के शासनकाल में बहुत दिनों तक हरिद्वार मे मुसलमानी शासन रहा था।

सन् 1621 में हरिद्वार में कुंभ के अवसर पर सम्राट् जहांगीर भी उपस्थित था। उस कुंभ में वैरागियो एव संन्यासियो मे संघर्ष हो गया था। सम्राट् जहांगीर ने सुरक्षा का प्रबंध किया था। मुगल साम्राज्य के पतन के बाद हरिद्वार महाराष्ट्रियो के हाथ में भी कुछ दिनों तक रहा। सन् 1779 में महाराष्ट्रियों ने गगा पार की थी। सन् 1857 के मुक्ति सघर्ष से हरिद्वार भी अछूता न बचा था। उस समय हरिद्वार के पंडा-समुदाय ने हरिद्वार की रक्षा की था।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

गगाद्वार (हर की पैडी), कुशावर्त, बिल्वकेश्वर, नीलपर्वत तथा कनखल—ये पाच प्रधान तीर्थ हरिद्वार मे हैं। इनमे स्नान तथा दर्शन करने से पुनर्जन्म नहीं होता।

ब्रह्मकुंड या हर की पैड़ी—राजा भगीरथ के मर्त्यलोक में गगाजी को लाने पर राजा श्वेत ने इसी स्थान पर ब्रह्माजी की बडी आराधना की थी। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने वर मागने को कहा। राजा ने कहा कि यह स्थान आपके नाम से प्रसिद्ध हो और यहा पर आप भगवान विष्णु तथा महेश के साथ निवास करें तथा यहा पर सभी तीर्थों का वास हो। ब्रह्मा ने कहा, "ऐसा ही होगा। आज से यह कुड मेरे नाम से प्रख्यात होगा और इसमें स्नान करने वाले परम पद के अधिकारी होंगे।" तभी से इसका नाम ब्रह्मकुड हुआ। कहते हैं, राजा विक्रमादित्य के भाई भर्तृहरि ने यहा तपस्या करके अमर पद
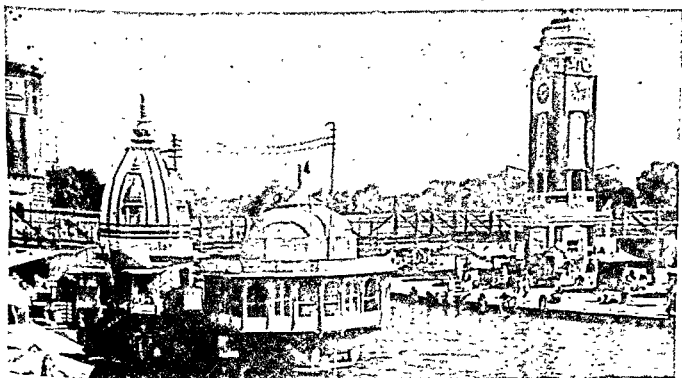
हर की पैडी, हरिद्वार

पाया था। भर्तृहरि की स्मृति मे राजा विक्रमादित्य ने पहले-पहल यह कुड तथा पैडिया (सीढ़िया) बनवाई थी। इसका नाम 'हर की पैडी' इसीलिए पडा। खास हर की पैडी के पास एक बडा-सा कुड बनवा दिया गया है। इस कुड मे एक ओर से गगा की धारा आती है और दूसरी ओर से निकल जाती है। कुड मे कही भी जल कमर भर से ज्यादा गहरा नही है। इस कुड मे ही हरि अर्थात् विष्णु-चरण-पादका, मनमादेवी, साक्षीश्वर एव गगाधर महादेव के मदिर तथा राजा मानसिह की छतरी है। सायकाल के समय गगाजी की आरती की शोभा बडी सुदर लगती है। यहा कुभ के अवसर पर साधुओ का स्नान होता है। यहा पर प्रात और सायकाल विद्वानो के उपदेश होते हैं।

गऊघाट—ब्रह्मकुड के दक्षिण मे यह घाट स्थित है। यहा पर स्नान करने से गोहत्या का पाप दूर होता है। पहले यहा भगी हत्यारे को जूते से मारता है, फिर स्नान कराता है। गोहत्या के लिए इतना बडा दड पाने पर तब उसका उद्धार होता है।

कुशावर्त घाट—यह घाट गऊघाट से दक्षिण मे पडता है। यहा दत्तात्रेयजी ने तप किया था। यहा पितरो को पिडदान किया जाता है।

नीलधारा—नहर के उस पार नीलपर्वत के नीचे वाली गगा की धारा को नीलधारा कहते हैं। वास्तव मे नीलधारा ही गगा की मुख्य धारा है। हरिद्वार के घाटो पर बहने वाली धारा नहर के लिए कृत्रिम रूप से लाई गई धारा है। इस धारा मे से नहर के लिए आवश्यक पानी लेकर शेष पानी नहर के बगल मे कनखल के पास इसी नीलधारा मे मिला दिया जाता है। नीलपर्वत के नीचे नीलधारा मे स्नान करके पर्वत पर नीलेश्वर महादेव के दर्शन करने का बडा महात्म्य है। कहते हैं कि शिवजी के नील नामक एक गण ने यहा पर शकरजी की प्रसन्नता के लिए घोर तपस्या की थी। इसलिए इस पर्वत का नाम नीलपर्वत, नीचे की धारा का नाम नीलधारा तथा उसने जिस शिवलिग की स्थापना की, उसका नाम नीलेश्वर पडा।

बिल्वकेश्वर—स्टेशन से हर की पैड़ी के रास्ते मे जो ललतारो नदी पर पक्का पुल पडता है, वही से बिल्वकेश्वर महादेव को रास्ता जाता है। रेलवे लाइन के उस पार बिल्व पर्वत है, उसी पर बिल्वकेश्वर महादेव हैं। मंदिर तक जाने का रास्ता सुगम है। बिल्वकेश्वर महादेव की दो मूर्तिया हैं—एक मंदिर के अदर और दूसरी मंदिर के बाहर। पहले यहां पर बेल का बहुत बडा वृक्ष था, उसी के नीचे बिल्वकेश्वर महादेव की मूर्ति थी। इसी पर्वत पर गौरीकुड है। बिल्वकेश्वर महादेव की बायी ओर गुफा मे देवी की मूर्ति है। दोनो मंदिरो के बीच एक नदी है, जिसका नाम शिवधारा है।

कनखल—कनखल मे स्नान का बडा महात्म्य है। नीलधारा, तथा नहर वाली गगा की धारा, दोनो यहा आकर मिल जाती है। सभी तीर्थों मे भटकने के बाद यहां पर स्नान करने से एक खल की मुक्ति हो गई थी, इसलिए ऋषि-मुनियो ने इसका नाम 'कनखल' रख दिया। हर की पैडी से कनखल 5 किलोमीटर दूर है। हरिद्वार की भांति यह भी एक बडा कस्बा है। यहा भी बाजार हैं।

दक्षेश्वर महादेव—मुख्य बाजार मे दक्षप्रजापति मार्ग पर एक किलोमीटर आगे जाने पर दक्षप्रजापति का मदिर मिलता है। इसकी सक्षिप्त कथा इस प्रकार है—

सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार
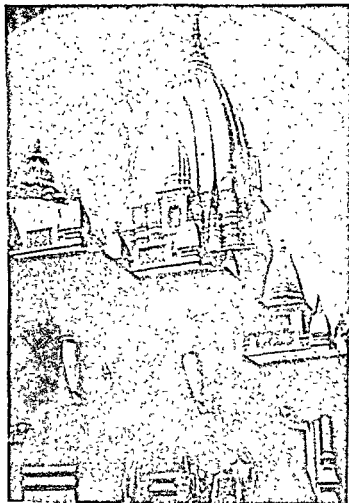
दक्षप्रजापति मंदिर कनखल
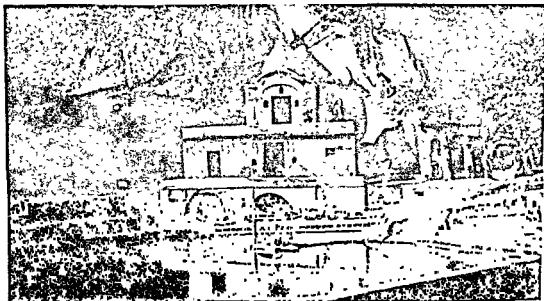
दक्षप्रजापति अपने जामाता शिवजी से द्वेष करते थे। एक बार इन्होंने वृहस्पति-सक नामक यज्ञ किया। उसमे और सब देवताओं को तो निमंत्रित किया,किन्तु देवाधिदेव महादेव तथा अपनी पुत्री सती को नही बुलाया। पिता के घर यज्ञ होने की बात सुनकर, शिव के मना करने पर भी, सती बिना बुलाए पिता के घर चली गई।

यज्ञ मे अपने पति शिवजी का भाग न देखकर तथा अपने पिता द्वारा उस भरे समाज मे शिवजी की निंदा सुनकर सती को बहुत क्रोध आया। उन्होने योगाग्नि द्वारा अपने प्राण त्याग दिए। सती के साथ गए हुए शिवजी के गणो ने शिव को इस बात की खबर दी। शिवजी ने अपने गणों द्वारा यज्ञ-विध्वस कराकर तथा दक्ष का सिर कटवाकर अग्नि-कुड मे डलवा दिया और सती का शव कधे पर रखकर सर्वत्र घूमते हुए ताडव करने लगे। तब विष्णु ने चक्र से सती के शरीर के टुकडे काट-काटकर भारत भर मे 51 स्थानो पर गिराये। ये ही 51 स्थान 51 शक्तिपीठ हुए। बाद में जब देवताओ ने शिवजी की बड़ी स्तुति की, तब प्रसन्न होकर उन्होने कहा, "बकरे के सिर को दक्ष के धड मे जोड दो, दक्ष जीवित हो जाएगे। यह सब काम माया के कारण हुआ है। इसलिए इस क्षेत्र का नाम मायाक्षेत्र होगा। इस क्षेत्र के दर्शन मात्र से ही जन्म-जन्मातरो के पापो से छुटकारा मिल जाएगा।" इस स्थान पर शिवरात्रि पर बडा मेला लगता है।

सतीकुंड—दक्षेश्वर से एक किलोमीटर दूर पश्चिम मे सतीकुड है। कहते हैं यहा सती ने शरीर त्याग किया था और दक्षप्रजापति ने भी यही तप किया था। इस कुड मे स्नान का महात्म्य है।
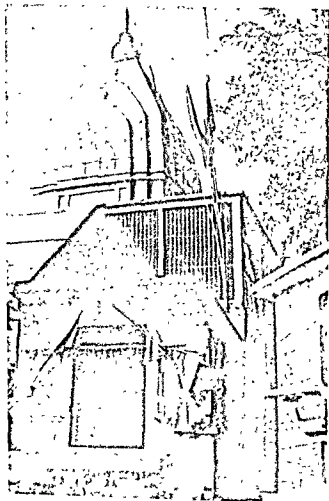
भीमगोडा, हरिद्वार

चडीदेवी मंदिर, हरिद्वार

भीमगोडा— हर की पेडी से पहाड़ के नीचे होकर जो सड़क ऋषिकेश को जाती है, उसी पर यह तीर्थ है। पहाडी के नीचे एक मंदिर है। उसके आगे एक चबूतरा तथा कुड है। कुड मे पहाडी सोते का पानी आता है। कहा जाता है कि भीमसेन ने यहा तपस्या की थी और उनके गोडा (पैर के घुटने) टेकने से यह कुड बन गया था और इसी कारण इसका यह नाम भी पड गया। यहा स्नान का बडा महात्म्य है।

चंडीदेवी और मनसादेवी—हरिद्वार मुख्यत: दो पहाड़ियो के बीच स्थित है। इन दोनो पहाडियो को चंडी पहाड और मनसा पहाड कहते हैं। इन दोनो पहाडियो पर ही एक-एक देवी मंदिर है। चडी पहाड पर चडीदेवी और मनसा पहाड पर मनसादेवी। दोनो पहाडियो पर चढ़ने के लिए सुगम मार्ग हैं। आजकल हरिद्वार से मनसादेवी तक जाने के लिए एक रोपवे (रस्सी मार्ग) भी है।

यात्रा मार्ग

हरिद्वार वस्तुत. उत्तराखड (बदरीनाथ,केदारनाथ, ऋषिकेश, यमुनोत्री-गगोत्री आदि तीर्थ क्षेत्र) का प्रवेश-द्वार कहलाता है। इसे हिमालय का भी प्रवेश-द्वार कहते है।

दिल्ली से हरिद्वार लगभग 262 किलोमीटर दूर है। दिल्ली से दिन मे अनेक बसे हरिद्वार के लिए रवाना होती है। दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, पटियाला, उत्तर प्रदेश आदि बडे शहरो से हरिद्वार सडक व रेल द्वारा जुडा हुआ है। अत अनेक रेले व बसे यहा के लिए उपलब्ध है। यहा से ऋषिकेश केवल 24 किलोमीटर दूर है।
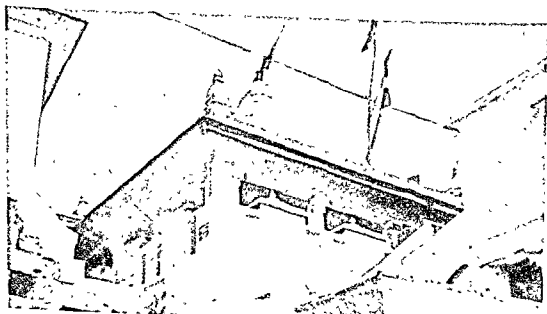
मनसादेवी मंदिर हरिद्वार

ऋषिकेश से देवप्रयाग, कीर्तिनगर और श्रीनगर होती हुई बस रुद्रप्रयाग जाती है। केदारनाथजी जाने वाले यात्री यहीं उतर जाते है। आगे बदरीनाथ के मार्ग पर बस जाती है।

गगोत्री और यमुनोत्री के लिए ऋषिकेश से नरेंद्रनगर होती हुई धरासू तक बस जाती है। यमुनोत्री जाने वाले यात्री धरासू से स्याना चट्टी तक बस द्वारा जा सकते हैं और गगोत्री जाने वाले यात्री धरासू से दूसरी बस द्वारा लंका चट्टी तक जा सकते हैं।

हरिद्वार शहर मे घूमने के लिए सिटी बसो की अच्छी व्यवस्था है। इसके अलावा तांगे, रिक्शे, स्कूटर आदि भी आसानी से मिल जाते है।

ठहरने के स्थान

हरिद्वार मे ठहरने-खाने के लिए अनेक धर्मशालाएं और होटल हैं। अतः आवास और भोजन सबधी कोई भी कठिनाई यहा नहीं है। धर्मशालाओ मे केवल बिजली, पानी का खर्च व कुछ रुपये श्रद्धानुसार दान के रूप मे ही लिए जाते हैं।

धर्मशालाएं

यहा की कुछ धर्मशालाओ के नाम और पते इस प्रकार हैं-

1. रायबहादुर सेठ सूरजमल शिवप्रसाद झुंझनूवाले की धर्मशाला, ऊपर बाजार में।
2. महाराज कपूरथला की धर्मशाला।
3. सदामुख गंभीर चद्र बीकानेर वाले की धर्मशाला।
4. पचायती धर्मशाला, स्टेशन के पास।
5. खुशीराम रामगोपाल अग्रवाल की धर्मशाला, रेल रोड पर।
6. जयराम अन्नक्षेत्र धर्मशाला।
7. विनायक मिश्र की धर्मशाला।
8. सूरजमल रुइया की धर्मशाला, कनखल।
9. मुरलीमल अग्रवाल की धर्मशाला, रेल रोड।
10. चडीराम बेद्रामल की सिंधी धर्मशाला।
11. जयपुरिया स्मृति भवन, रामघाट।
12. भीखामल-मुसद्दीलाल अग्रवाल लखनऊ वाले की धर्मशाला।
13. रावलपिंडी वाले की धर्मशाला।
14. गुरुधाम, भोलागिरी आश्रम धर्मशाला।

होटल

- वासुदेव मद्रास होटल, ज्ञान निकेतन होटल, गुरुदेव होटल, आनद निवास, रायल होटल,विदेश विराम होटल तथा यात्री निवास आदि।

इनके अलावा टूरिस्ट बगले, गुजरात भवन, कस्तूरी भवन, गगा आश्रम, बाटला भवन, अबाला भवन आदि स्थान भी हैं, जहा पहले से रिजर्वेशन (आरक्षण) करवाना पडता है। यहा

- ठहरने की व्यवस्था नि.शुल्क होती है। क्योंकि ये विभिन्न समाजो द्वारा सचालित हैं।

ऋषिकेश

धार्मिक पृष्ठभूमि

ऋषिकेश मे देवदत्त नामक ब्राह्मण ने घोर तपस्या की। लेकिन वह विष्णु और शिव को अलग-अलग मानता था। इसी भेद बुद्धि के कारण इद्र एक अप्सरा के द्वारा उसकी तपस्या भग कराने मे सफल हो गये। उसने पुन: भगवान शिव की तपस्या की। शिव ने प्रकट होकर कहा कि तुम मुझे विष्णु ही समझो। मुझे और विष्णु को जब तुम समान भाव से देखोगे तभी तुम्हे सिद्धि मिलेगी। तुमने मुझमे और विष्णु मे भेद समझा, तभी तुम्हारी तपस्या भग हो गई और कोई फल न निकल सका।

उसके बाद देवदत्त की लड़की 'रूस' ने घोर तपस्या की। भगवान ने प्रसन्न होकर दर्शन दिये। 'रूस' ने भगवान से यही अवस्थित होने की प्रार्थना की। भगवान ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। फलत ऋषिकेश मे भगवान सदा विद्यमान रहते हैं।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

ऋषिकेश मे यात्री त्रिवेणी घाट पर स्नान करते हैं। यहा का मुख्य मंदिर भरत-मंदिर है। यह प्राचीन तथा विशाल मंदिर है। इसके अतिरिक्त राम-मंदिर, वराह-मंदिर, चद्रेश्वर-मंदिर आदि अनेक मंदिर हैं।

ऋषिकेश बाजार से आगे ढाई किलोमीटर पर मुनि की रेती है। मुनि की रेती पर स्वामी शिवानद जी का प्रसिद्ध आश्रम है। उसके आगे जाकर नौका से गगा पार करने पर स्वर्गाश्रम आता है। स्वर्गाश्रम बडा रमणीक स्थान है। यहा गीताभवन दर्शनीय स्थान है। यहा प्रतिवर्ष चैत्र मे आषाढ़ तक 'सतसग' का आयोजन होता है। यहा 'परमार्थ निकेतन' है, जहा बहुत से साधु-सत रहा करते हैं तथा कीर्तन-सत्संग चलता है। इसके अतिरिक्त अन्य साधुओं के स्थान भी देखने योग्य हैं। गगा पार करने के लिए नौकाओ का समुचित प्रबध है।

मुनि की रेती से ढाई किलोमीटर पर लक्ष्मण-झूला है। यहा लक्ष्मणजी का मंदिर तथा अन्य कई मंदिर हैं। यह अत्यत पवित्र भूमि है। यहां स्नान-दान और उपवास का बडा महत्त्व है।

कहते हैं कि राक्षसो के उत्पात से पीडित ऋषियों की प्रार्थना से भगवान ने द्रवित होकर राक्षसो का नाश करके ऋषियों को यह साधन-भूमि प्रदान की । इसी से इसका नाम ऋषिकेश पडा। इसका दूसरा पौराणिक नाम 'कुब्जाम्रक' है। कहा जाता है कि 17वें मन्वन्तर में रैभ्य मुनि को भगवान विष्णु ने आम के
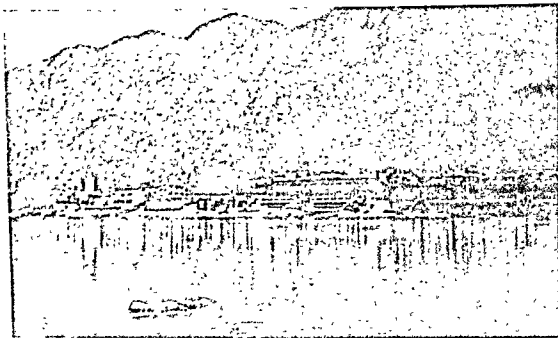
गीता भवन, ऋषिकेश
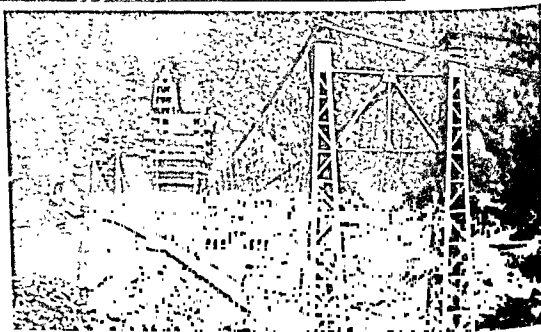
लक्ष्मण झूला, ऋषिकेश

रूप में दर्शन दिये थे। रैभ्य मुनि कुबड़े थे। इसी से इसका नाम कुब्जामक पड़ा।

लक्ष्मण झूला पार करते ही एक विशाल मंदिर है, नवग्रह मंदिर। नवग्रह मंदिर के नीचे ही स्नान घाट है। यहीं से एक पहाड़ी पगडंडी ऊपर चली जाती है। इस पगडंडी पर एक गुफा है, जिसे 'गणेश गुफा' कहते हैं। गणेश गुफा में कोई आराध्य मूर्ति नहीं है।

यात्रा मार्ग

ऋषिकेश हरिद्वार से सिर्फ 24 किलोमीटर दूर है। हरिद्वार से ऋषिकेश के लिए और ऋषिकेश से हरिद्वार के लिए हर समय बसें उपलब्ध रहती हैं। ऋषिकेश हरिद्वार से रेल के जरिए भी जुड़ा है।

ठहरने का स्थान

ठहरने की व्यवस्था हरिद्वार में ही कर के ऋषिकेश घूमने जाया जा सकता है। अधिकतर यात्री ऐसा ही करते हैं। वैसे यहां राज्य सरकार के टूरिस्ट बंगलों के अलावा रेस्ट हाउस व आंध्र आश्रम, बाबा काली कमली। जयराम अन्नक्षेत्र, पंजाब सिंध क्षेत्र, शिवानंद आश्रम, श्री विट्ठल आश्रम, भगवान आश्रम, गोपाल कुटी, गीता भवन, परमार्थ निकेतन स्वर्गाश्रम आदि धर्मशालाएं और भवन भी टिकने के लिए हैं।

2. मथुरा-वृंदावन

धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

कृष्ण की जन्मभूमि होने के कारण मथुरा एकप्रसिद्ध तीर्थस्थान है। वराह पुराण के अनुसार मथुरामंडल 20 योजन का है और यमुना में एक बार का स्नान समस्त पापो को धो देता है। ऐसा कहा जाता है कि अन्य स्थान का किया हुआ पाप तीर्थस्थान पर मिट जाता है, किंतु तीर्थस्थान मे किया हुआ पाप अमिट होता है। यह नियम अन्य तीर्थों के लिए ठीक है, किंतु मथुरा मे किया हुआ पाप मथुरा में ही नष्ट हो जाता है; यह मथुरा तीर्थ की महानता है।

महाभारत की कथा मे कृष्ण सर्वप्रथम द्रौपदी-स्वयवर मे दृष्टिगोचर होते हैं। वे पाडवो के मित्र,पथ-प्रदर्शक और विचारक के रूप मे है। महाभारत-युद्ध मे इन्होने शातिदूत का कार्य किया और बाद मे अर्जुन के सारथी तथा मार्गदर्शक बने। जब कृष्ण ने वन में इस नश्वर शरीर को त्याग दिया, तब अर्जुन ने उनके पौत्र वज्र को मथुरा के सिहासन पर बैठाया।

मथुरा के यादव, सात्वत तथा वृष्णि वश मे आविर्भूत भागवतधर्म उत्तर, पश्चिम तथा दक्षिण की ओर विस्तार से फैला। पाड्य राजाओ की राजधानी मदुरा, मधुरा अथवा मथुरा ही भागवतधर्म का जन्मस्थान है।

बुद्ध के प्रसिद्ध शिष्यो मे एक महाकच्चायन ने मथुरा मे बुद्धधर्म का बहुत अधिक प्रचार किया। जब भगवान बुद्ध 'मथुरा' आए तो महिलाओ को बहुत अधिक सख्या मे पाया। मिलिंद पह मे इसे एक अत्यत प्रसिद्ध स्थान कहा गया है। प्रसिद्ध राजनर्तकी वासवदत्ता, जिसने अत मे बौद्ध-धर्म को स्वीकार कर लिया, मथुरा की रहने वाली थी। फाह्यान ने मथुरा को 'मोरो की नगरी' कहा है।

कुशाण राजाओ के शासन-काल मे मथुरा जैनधर्म का भी मुख्य केंद्र था। यहा ईसा पूर्व पहली सदी के एक जैन मठ के खडहर हैं तथा ईसा की पहली शताब्दी से लेकर आगे तक कुछ

श्रीकृष्ण जन्मस्थली, मथुरा

स्तम्भलेख, मूर्तियां, कुछ पट्टियां तथा मेहराब आदि मिलते हैं। जैन उपदेशकों तथा संरक्षकों का भी उल्लेख मिलता है।

इतिहास और शिलालेखों से यह पता चलता है कि वि. सं. 1207 में मथुरा के शासक महाराज विजयपालदेव के शासन काल में जज्ज (शायद यज्ञ का अपभ्रंश रूप) नामक किसी व्यक्ति ने श्रीकृष्ण के जन्मस्थान पर एक नया मंदिर बनवाया था। लेकिन 16वीं शताब्दी के आरम्भ में सिकंदर लोदी ने इसे ध्वस्त कर दिया। इसके सवा सौ वर्ष पश्चात् ओरछा के महाराजा वीरसिंहदेव ने इसी स्थान पर ढाई सौ फुट ऊंचा एक भव्य मंदिर बनवाया था, जिसके चारों ओर ऊंचा प्राचीर भी बनवाया गया था।

टैवर्नियर नामक एक फ्रांसीसी यात्री ने, जो सन् 1650 के लगभग मथुरा आया था, केशवदेव के मंदिर के विषय में लिखा है: "जगन्नाथ और बनारस के पश्चात् सबसे प्रसिद्ध मंदिर मथुरा का है।"

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

मथुरा का सबसे विशाल मंदिर वर्तमान द्वारकाधीश मंदिर है। इसमें वल्लभ सम्प्रदाय के अनुसार पूजा-सेवा होती है।
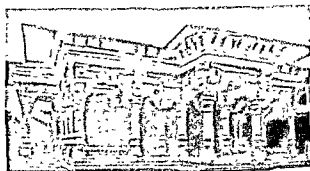
श्रीद्वारिकाधीश मंदिर, मथुरा

विश्रामघाट से पचकोसी परिक्रमा आरम्भ होती है। कार्तिक शुक्ल द्वितीया को, जिसे यम द्वितीया कहते हैं, यमुना-स्नान का बडा महात्म्य है। ऐसा कहा जाता है कि उस दिन यम अपनी बहन यमुना के पास भैयादूज मनाने गये थे और उसके स्वादिष्ट भोजन से संतुष्ट होकर उन्होने यह वचन दिया था कि वर्ष के उस दिन जो व्यक्ति यमुना में स्नान करेगा, वह यमपुरी जाने से बच जाएगा।

पोतरा कुंड वह स्थान है, जहा कृष्ण के कपडे तब धोये गए थे जब वे बच्चे थे।
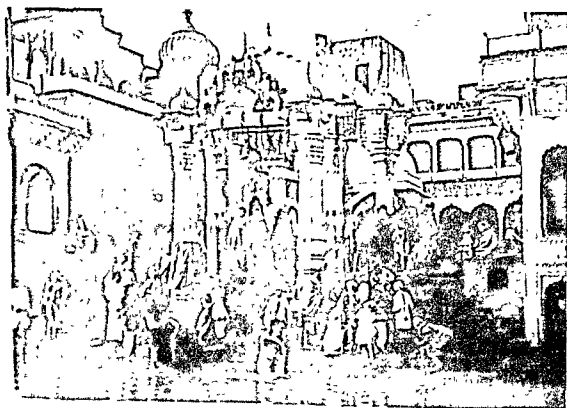
विश्रामघाट, मथुरा

उत्तर दिशा में महाविद्या का मंदिर है।

मथुरा के आसपास बारह वन हैं—मधुवन, तालवन, कुमुदवन, बहुलवन, कामवन, खदिरवन, वृन्दावन, भद्रवन, भांडीरवन, ढोलवन, लोहवन और मोहवन। गोकुल और गोवर्धन की गणना उपवनो में है।

वैशाख-पूर्णिमा को वन-विहार उत्सव मनाया जाता है, जो विश्रामघाट से आरम्भ होता है। श्रावण-शुक्ल-पंचमी से पांच दिनो का पचतीर्थ मेला होता है, जिसमे यात्री मथुरा से वृंदावन जाते हैं। वर्ष मे और भी कई पर्व उत्सव होते हैं।

यमुना का दूसरा प्रसिद्ध घाट ध्रुवघाट है। कथा ऐसी है कि महाराज उत्तानपाद के पुत्र ध्रुव अपने पिता और अपनी सौतेली माता के द्वारा अपमानित होने पर मथुरा के पास मधुवन मे आए और ऋषि नारद के उपदेशानुसार बालक होने पर भी उन्होने कठिन तप किया और अत में विष्णु-दर्शन प्राप्त किया। वे इतने छोटे थे कि प्रभु का दर्शन होने पर कुछ बोल न सके। तब भगवान ने वेदरूप अपने शख से उनके कपोल का स्पर्श करके उन्हे वाणी दी। तब उन्होने भगवान की स्तुति की।

वृंदावन

मथुरा जक्शन से 10 किलोमीटर दूर स्थित वृंदावन को मदिरो की नगरी कहा जा सकता है। यहा की गली-गली मे मदिर बने हुए हैं। वर्तमान वृंदावन मथुरा शहर से 8 किलोमीटर है,जो 16 वी शताब्दी के लगभग बसा था।इसी काल मे बगाल के महान योगी चैतन्य महाप्रभु ने अपनी अन्तिम यात्रा वृंदावन मे की थी। इसके बाद देश के अनेक भागो से भक्तजन आये और यहा बस गये।

मथुरा से वृंदावन जाते हुए मार्ग के दोनो ओर हरियाली ही हरियाली दीखती है। इस मार्ग पर सबसे पहले बिडला

बिहारीजी का मंदिर, मथुरा
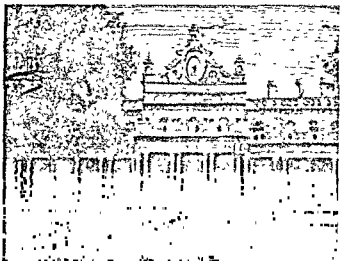
साहजी का मंदिर

मदिर पडता है। इसके पश्चात् इसी मार्ग पर 19 वी शताब्दी मे जयपुर के महाराजा सवाई माधोसिह द्वारा करौली के पत्थर से निर्मित कराया गया राधा-माधो मदिर पडता है, जिसमें सगमरमर मे की गई सुदर पच्चीकारी देखने को मिलती है। इसके बाद जयपुर के महाराजा मानसिंह द्वारा 1590 ई. मे बनवाया गया गोविददेव जी का प्राचीन मंदिर है,जिसका शिल्प सौंदर्य और वास्तुकला देखते ही बनती है।कहा जाता है कि मुगल काल मे इसकी सात मजिले थी, लेकिन औरगजेब ने इसकी ऊपरी मजिले नष्ट करवा दी। अब केवल तीन मजिले शेष हैं।

रासमडल के निकट सन् 1821 मे निर्मित श्रीकृष्ण चैतन्य सम्प्रदाय का गोपीनाथजी का मदिर तथा इसी के निकट वह प्राचीन एव जीर्णशीर्ण मदिर भी है, जो मुगल सम्राट अकबर के एक मनसबदार जयपुर के रायमल कछवाहा ने बनवाया था।

वृंदावन मे श्री राधावल्लभ का दर्शनीय मदिर भी है, जो स्वामी हरिवश जी के इष्टदेव थे। इनके अतिरिक्त 19 वी और 20 वी शताब्दी मे निर्मित अन्य बहुत से विशाल और भव्य मदिर हैं,जिन्हे यात्री देखे बिना नही रह सकते । दक्षिण शैली पर बना विशाल और भव्य रगजी मंदिर इनमे प्रमुख है।

यमुना तट पर स्थित रैतिया बाजार मे साहजी मंदिर लखनऊ के साह कुदनलाल द्वारा दस लाख रुपये की लागत से बनवाया गया था। इस मंदिर मे सगमरमर के बल खाते हुए स्तंभ, पुतलियां और जाली की कौराई का काम बडा सुदर है।

उपरोक्त मंदिरो के अतिरिक्त यहां बाकेबिहारीजी का ऐसा मदिर है,जिस पर भक्तजन अत्यधिक श्रद्धा रखते हैं। इसमे श्रीबिहारीजी की भव्य विशाल प्रतिमा है। यह प्रतिमा इतनी आकर्षक है कि दर्शक की दृष्टि लगने के भय से इसके एक
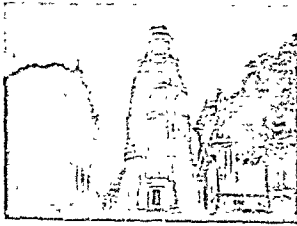
श्रीमदनमोहनजी का मंदिर, वृंदावन

मिनट से अधिक दर्शन नहीं होते। एक-एक मिनट मे पटाक्षेप होता रहता है।

वृंदावन मे नाटियाद के मदनमोहनजी का मंदिर, लोई बाजार मे सवा मन के शालिग्रामजी का मंदिर, शहर के अंदर सैयद बाजार मे स्थित शाहजहांपुर वाली रानी का मंदिर तथा राजा महेन्द्र प्रताप द्वारा स्थापित प्रेम महाविद्यालय अन्य प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं।

अन्य दर्शनीय स्थल

मथुरा से 10 किलोमीटर पर स्थित गोकुल नगरी है। श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं की यह लीलास्थली थी। यहा पर भी अनेक मंदिर हैं।

मथुरा से 30 किलोमीटर दूर ऐतिहासिक गोवर्धन पर्वत है, इसी गोवर्धन को श्रीकृष्ण ने धारण किया था, इसीलिए यह पवित्र पर्वत है।

मथुरा से नंदगांव 55 किलोमीटर पर है। यहां भी यात्री जा
हैं।

यात्रा मार्ग

मथुरा रेलवे जंक्शन है। कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली आ
अनेक शहरों से यह रेलमार्ग से जुड़ा हुआ है। दिल्ली से अने
बसे प्रतिदिन चलती हैं, आगरा, ग्वालियर से भी बसे मथु
आती है। मथुरा से वृंदावन बस तथा अन्य सड़क परिवहन
द्वारा जाया जा सकता है। मथुरा से गोकुल, नंदगांव आदि
लिए भी बसें उपलब्ध हैं।

ठहरने का स्थान

मथुरा मे यात्रियो के ठहरने के लिए अनेक धर्मशालाए हैं
ऐसी कोई गली नही, जिसमे एक न एक धर्मशाला न हो। इ
धर्मशालाओ मे यात्रियो के लिए सभी सुविधाए प्राप्त होती हैं
इनमें से कुछ अपनी उत्तम व्यवस्था और स्वच्छता के कारण
पर्याप्त लोकप्रिय हैं।

मथुरा मे स्थित धर्मशालाओ की सूची लंबी है। अतः यह
स्थानाभाव के कारण देना कठिन है। धर्मशालाओं के
अतिरिक्त यात्रियो के लिए यहा अच्छे होटलो की भी कमी नही
है। यहा निम्न विशेष होटल समस्त सुविधाओ और उत्तम
व्यवस्था से परिपूर्ण हैं :—

1. आगरा होटल, डेम्पीअर नगर, मथुरा।
2. आगरा होटल, बंगाली घाट, मथुरा।
3. मोहन गुजराती होटल, छाता बाजार, मथुरा।
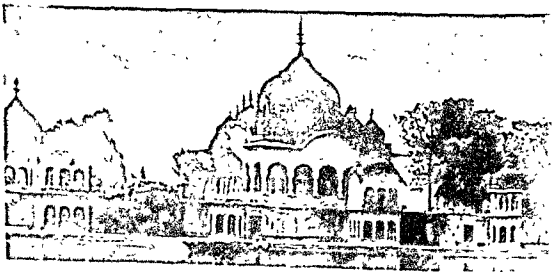
गोवर्धन मन्दिर

3. अयोध्या

भारत की प्राचीन सांस्कृतिक नगरियों में अयोध्या का प्रथम स्थान है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के भी पूर्ववर्ती सूर्यवंशी राजाओं की यह राजधानी रही है। इक्ष्वाकु से श्री रामचंद्र तक सभी चक्रवर्ती नरेशों ने अयोध्या के सिंहासन को भूषित किया है। राम की अवतार-भूमि होकर तो अयोध्या साकेत हो गई। रामचंद्र जी के साथ अयोध्या के पशु-पक्षी तक उनके दिव्यधाम चले गये, जिससे प्रथम बार त्रेतायुग में ही अयोध्या नगरी उजड़ गई। श्री राम के पुत्र कुश ने इसे पुन बसाया।

धार्मिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

मथुरा के समान अयोध्या भी आक्रमणकारियों का बार-बार शिकार होती रही है। अयोध्या में प्राचीनता के नाम पर केवल भूमि तथा सरयू नदी शेष बची है। कहा जाता है कि इस नगरी की स्थापना मनु भगवान ने की थी। अयोध्या, राम-लक्ष्मण की जन्मभूमि होने के अतिरिक्त ऋषभ, अजित, अभिनंदन, सुमतिअनंत और अनन्त की भी जन्मभूमि है।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार अयोध्या, पवित्र नदी सरयू के दक्षिण तटपर बसी हुई है। मनु ने सर्वप्रथम इसे बसाया था :—

"मनुना मानवेंद्रेण या पुरी निर्मिता स्वयम्।"

(वाल्मीकि रामायण, बालकांड 5-6)

'स्कंदपुराण' के अनुसार यह सुदर्शन चक्र पर बसी है। 'अयोध्या' शब्द का निर्वचन करते हुए 'स्कंदपुराण' का कथन है :—'अ' कार ब्रह्मा, 'य' कार विष्णु है तथा 'ध' कार रुद्र का स्वरूप है। अतः 'अयोध्या' ब्रह्मा विष्णु और भगवान शंकर इन तीनों का समन्वित रूप है।

"प्राचीन अयोध्या का विस्तार-क्षेत्र, सहस्रधारा तीर्थ से एक योजन पूर्व, सरयू नदी से एक योजन दक्षिण, समम से एक योजन पश्चिम तथा तमसा नदी से एक योजन उत्तर तक है।"

(स्कंदपुराण, वैष्णव खंड अयो. महा. 1-64-65)

सर्वप्रथम ब्रह्माजी ने अयोध्या की यात्रा की थी और अपने नाम से एक कुंड बनाया था, जो ब्रह्मकुंड नाम से प्रसिद्ध है। भगवती सीता द्वारा निर्मित एक सीताकुंड है, जिसे भगवान श्रीराम ने वर देकर समस्त कामपूरक बनाया। उसमें स्नान करने से मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है। ब्रह्मकुंड से पूर्वोत्तर ऋणमोचन तीर्थ (सरयू) है। यहां लोमशजी ने विधिपूर्वक स्नान किया था।

सरयू में जहां श्रीकृष्ण की पटरानी रुक्मिणीजी ने स्नान किया था, वहां रुक्मिणी कुंड है और उसके ईशानकोण में क्षीरोद कुंड है, जहां महाराज दशरथ ने पुत्रेष्टि-यज्ञ किया था। उसके पश्चिमोत्तर में वशिष्ठ-कुंड है। अन्य उर्वशी-कुंड आदि कई तीर्थ स्कंद-पुराण तथा रुद्रयामलोक्त अयोध्या-महात्म्य में वर्णित हैं। कालक्रम में इनमें से कुछ लुप्त तथा परिवर्तित हो गए।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

अयोध्या में सरयू के किनारे कई सुंदर घाट पक्के बने हुए हैं, किन्तु अब सरयू की धारा घाटों से दूर चली गई है। यदि पश्चिम से पूर्व की ओर चला जाए तो घाटों का यह क्रम मिलेगा—ऋणमोचन घाट, सहस्रधारा, लक्ष्मणघाट, स्वर्गद्वार, गंगामहल, शिवालाघाट, जटाईघाट, अहिल्याबाईघाट, धौरहराघाट, रूपकलाघाट, नयाघाट, जानकीघाट और रामघाट।

लक्ष्मणघाट—यहां के मंदिर में लक्ष्मणजी की पांच फुट ऊंची मूर्ति है। यह मूर्ति सामने कुंड में पायी गई थी। कहा जाता है कि यहीं से श्रीलक्ष्मणजी परमधाम पधारे थे।

स्वर्गद्वार—इस घाट के पास श्री नागेश्वरनाथ महादेव का मंदिर है। कहते हैं कि यह मूर्ति कुश द्वारा स्थापित की गई है और इसी मंदिर को पाकर महाराज विक्रमादित्य ने अयोध्या का जीर्णोद्धार किया। नागेश्वरनाथ के पास ही एक गली में श्री रामचंद्रजी का मंदिर है। एक ही काले पत्थर मे
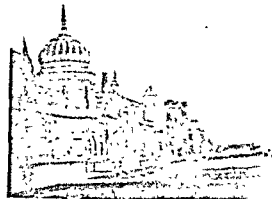
स्वर्गद्वार घाट

राम-पचायतन की मूर्तिया हैं। बाबर ने जब जन्म-स्थान के मंदिर को तोडा, तब पुजारियों ने वहा से यह मूर्ति उठाकर यहा स्थापित कर दी। स्वर्गद्वारघाट पर ही यात्री पिंडदान करते हैं।

अहिल्याबाईघाट—इस घाट से थोडी दूर पर त्रेतानाथजी का मंदिर है। कहते हैं कि भगवान श्रीराम ने यहा यज्ञ किया था। इसमे श्रीरामजानकी की मूर्ति है।

रामकोट—अयोध्या मे अब रामकोट (श्रीराम का दुर्ग) नाम का कोई स्थान नही रहा है। कभी यह दुर्ग था और बहुत विस्तृत था। कहा जाता है कि उसमे बीस द्वार थे,किन्तु अब तो चार स्थान ही उसके अवशेष माने जाते हैं—हनुमानगढ़ी, *सुग्रीवटीला, अगदटीला और मत्तगजेंद्र।*

हनुमानगढ़ी—यह स्थान सरयू तट से लगभग सवा किलोमीटर पर नगर मे है। यह एक ऊचे टीले पर चार कोट का छोटा-सा दुर्ग है। 60 सीढ़िया चढ़ने पर श्रीहनुमानजी का मंदिर मिलता है। इस मंदिर मे हनुमानजी की बैठी हुई मूर्ति है। एक दूसरी हनुमानजी की छह इच की मूर्ति वहा है, जो सदा पुष्पों से ढकी रहती है। मंदिर के चारो ओर मकान बने हुए हैं। इनमे साधु रहते हैं।
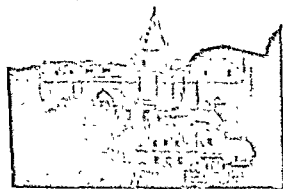
हनुमानगढ़ी

हनुमानगढी के दक्षिण मे सुग्रीवटीला और अगदटीला हैं। कुछ लोग सुग्रीव टीले का स्थान मणि पर्वत के दक्षिण-पश्चिम, जहा बौद्ध मठ था,बतलाते हैं।

कनकभवन—यह अयोध्या का मुख्य मंदिर है, जो ओरछा-नरेश का बनवाया हुआ है। यह सब मे विशाल और भव्य है। इसे श्रीराम का अत पुर या सीताजी का महल कहते हैं। इसमे मुख्य मूर्तिया श्रीसीताराम की हैं। सिंहासन पर जो बडी मूर्तिया हैं ,उनके आगे श्रीसीताराम की छोटी मूर्तिया हैं। छोटी मूर्तिया ही प्राचीन कही जाती हैं।

दर्शनेश्वर—हनुमानगढ़ी से थोडी दूर पर अयोध्या-नरेश का महल है। इस महल की वाटिका मे महादेव का सुदर मंदिर है।

कनकभवन

जन्म-स्थान—कनकभवन से आगे श्रीराम जन्म-भूमि है। यहा के प्राचीन मंदिर को बाबर ने तुडवाकर मस्जिद बनवा दी थी , किन्तु अब यहा फिर श्रीराम की मूर्ति आसीन है। इस प्राचीन मंदिर के घेरे मे जन्म-भूमि का एक छोटा मंदिर और है।

जन्म-स्थान के पास कई मंदिर हैं—सीतारसोई, चौबीस अवतार, कोपभवन, रत्नसिंहासन,आनदभवन, रगमहल और सारी गोपाल आदि।

अयोध्या मे बहुत अधिक मंदिर हैं। यहा केवल प्राचीन स्थानो का उल्लेख किया गया है। नवीन मंदिर तथा तीर्थो के स्थान तो अयोध्या मे बहुत अधिक हैं।

अन्य दर्शनीय स्थल

सोनखर—कहा जाता है कि यहा महाराज रघु का कोषागार था। कुबेर ने यहा स्वर्ण-वर्षा की थी।

सूर्य-कुंड—रामघाट से यह लगभग आठ किलोमीटर दूर है। पक्की सडक का मार्ग है। बडा सरोवर है, जिसके चारो ओर घाट बने हैं। पश्चिम किनारे पर सूर्य नारायण का मंदिर है।

नदिग्राम—फैजाबाद से लगभग पन्द्रह किलोमीटर और अयोध्या से लगभग पच्चीस किलोमीटर दक्षिण मे यह स्थान है, जहा श्रीराम वनवास के समय चौदह वर्ष भरतजी ने तपस्या करते हुए व्यतीत किये थे। यहा भरतकुड सरोवर और भरतजी का मंदिर है।

दशरथ तीर्थ—रामघाट से बारह किलोमीटर दूर पूर्व मे सरयू-तट पर यह स्थान है। यहा महाराज दशरथ का अंतिम सस्कार हुआ था।

गुप्तारघाट (गोप्रतार-तीर्थ)—अयोध्या से लगभग पद्रह किलोमीटर पश्चिम मे सरयू किनारे पर यह स्थान है। फैजाबाद छावनी होकर सडक जाती है। यहा सरयू-स्नान का बड़ा

महात्म्य माना जाता है। घाट के पास गुप्तहरि का मंदिर है।

गुप्तारघाट से लगभग ढाई किलोमीटर पर निर्मलकुड है। उसके पास निर्मलनाथ महादेव का मंदिर है।

जनौरा (जनकौरा)—महाराज जनक जब अयोध्या पधारते थे, तब यही उनका शिविर रहता था। अयोध्या से लगभग 17 किलोमीटर दूर फैजाबाद-सुलतानपुर सडक पर यह स्थान है। यहां गिरजाकुंड नामक सरोवर है, जिसके पास एक शिव-मंदिर है।

अयोध्या के मेले

अयोध्या मे श्रीरामनवमी पर सबसे बडा मेला लगता है। दूसरा मेला 8-9 दिन तक श्रावण शुक्ल पक्ष मे झूले का होता है। कार्तिक पूर्णिमा पर भी सरयू-स्नान करने यात्री आते हैं।

यात्रा मार्ग

अयोध्या लखनऊ से 135 किलोमीटर और वाराणसी से 324 किलोमीटर है। यह नगर सरयू (घाघरा) के दक्षिण तट पर बसा है। उत्तर रेलवे का अयोध्या स्टेशन है। मुगल सराय, वाराणसी और लखनऊ से यहां सीधी गाडिया आती हैं। स्टेशन से सरयूजी लगभग पाच किलोमीटर दूर हैं और मुख्य मंदिर कनकभवन तीन किलोमीटर दूर है। वर्षाऋतु मे सरयू पर स्टीमर चलता है और अन्य ऋतुओ मे पीपों का पुल रहता है।सरयू पार होकर अयोध्या आया जा सकता है।

लखनऊ, वाराणसी, प्रयाग और गोरखपुर आदि नगरो से अयोध्या पक्की सडको से सबन्धित है।

ठहरने का स्थान

अयोध्या मे यात्री साधुओं के मठो मे भी ठहरते हैं। प्राय सभी साधु-स्थानो मे यात्रियो के ठहरने की व्यवस्था है। नगर मे अनेक धर्मशालाए है। कुछ के नाम यहा दिये जा रहे हैं :

1 हरनारायण की धर्मशाला, रायगज, अयोध्या।
2. कन्हैयालाल की धर्मशाला, रायगज, अयोध्या।
3 महतसुखराम दास की धर्मशाला, नयाघाट अयोध्या।
4. लाला पन्नालाल गोंडे वाले की धर्मशाला, वासुदेवघाट।
5. करमसीदास बम्बई वाले की धर्मशाला, वासुदेवघाट।
6. छगामल कानपुर वाले की धर्मशाला, रायगज अयोध्या।
7 महादेव प्रसाद की धर्मशाला, रायगज, अयोध्या।
8 हरिसिंह की धर्मशाला अयोध्या बाजार मे।
9. रूसी वाली रानी की धर्मशाला, रायगज, अयोध्या।
10. विंदुवासिनी की धर्मशाला, नागेश्वरनाथ के पास।
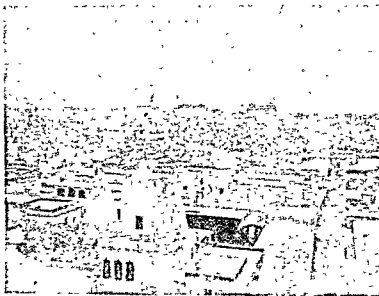
अयोध्या नगरी का दृश्य

4. कांची

मोक्षदायिनी सप्तपुरियो में अयोध्या मथुरा द्वारपुरी (द्वारिका), माया (हरिद्वार), काशी, कांची और अवंतिका (उज्जैन) की गणना है। इनमें कांची हरिहरात्मकपुरी है। इसके शिवकांची और विष्णुकांची ये दो भाग हैं।

धार्मिक पृष्ठभूमि

कांची 51 शक्तिपीठों में से एक पीठ है। यहां सती का कंकाल (अस्थिपंजर) गिरा था। संभवतः कामाक्षी मंदिर ही यहां का शक्तिपीठ है। दक्षिण के पंचतत्त्व-लिंगों में से भूतत्त्व-लिंग के संबंध में कुछ मतभेद हैं। कुछ लोग कांची के एकाम्रेश्वरलिंग को भूतत्त्व-लिंग मानते हैं और कुछ लोग तिरुवारूर की त्यागराज लिंगमूर्ति को भूतत्त्व-लिंग मानते हैं।

एक ही नगर के दो भाग माने जाते हैं। शिवकांची और विष्णुकांची। ये भाग अलग-अलग नहीं हैं। इनमें शिवकांची नगर का बड़ा भाग है। स्टेशन के पास यही भाग है। विष्णुकांची नगर का छोटा भाग है। यह स्टेशन से लगभग पांच किलोमीटर दूर है।

कांची में गर्मी के दिनों में बहुत-से कुएं सूखे रहते हैं। यहां पीने के लिए पानी की कमी रहती है। वैसे नगर में नल लगे हैं।

शिवकांची—स्टेशन से लगभग दो किलोमीटर दूर नगर के इस भाग में सर्वतीर्थ सरोवर है। यही स्नान का मुख्य स्थान है। सरोवर के मध्य एक छोटा मंदिर है। सरोवर पर लोग मुंडन तथा श्राद्ध भी करते हैं। सरोवर के चारों ओर कई मंदिर हैं। उनमें काशी-विश्वनाथ मंदिर मुख्य है।

विष्णुकांची—स्टेशन से लगभग पांच किलोमीटर दूर है। यहां 18 विष्णु-मंदिर कहे जाते हैं। किन्तु मुख्य मंदिर श्रीवरदराज मंदिर ही है।

श्रीवरदराज-मंदिर विशाल है। भीतर कोटि तीर्थ सरोवर है। यह पक्का है। इसके पश्चिम तट पर वराह-मंदिर तथा सुदर्शन-मंदिर है, जिसमें योग नृसिंह की मूर्ति सुदर्शन के पीछे है।

एकाम्रेश्वर—शिवकांची का यही मुख्य मंदिर है। सर्वतीर्थ-सरोवर से यह पास ही (लगभग एक फर्लांग दूर) पड़ता है। यह मंदिर बहुत विशाल है। मंदिर के दक्षिण द्वार वाले गोपुर के सामने एक मंडप है। इसके स्तंभों में सुंदर मूर्तियां बनी हैं।

मंदिर में दो बड़े-बड़े घेरे हैं। पूर्व के घेरे में दो कक्षाएं हैं, जिनमें पहली कक्षा में प्रधान गोपुर, जो दस मंजिल ऊंचा है, मिलता है। यहां द्वार के दोनों ओर क्रमशः सुब्रह्मण्यम तथा गणेश जी के मंदिर हैं। दूसरी कक्षा में शिवगंगा सरोवर है। इसमें ज्येष्ठ में महोत्सव के समय उत्सवमूर्तियों का जल-विहार होता है। उस समय यहां बड़ा मेला लगता है। इस सरोवर के दक्षिण एक मंडप में सहस्रलिंगेश्वर शिवलिंग है। इस घेरे से मिला मुख्य मंदिर का द्वार है।
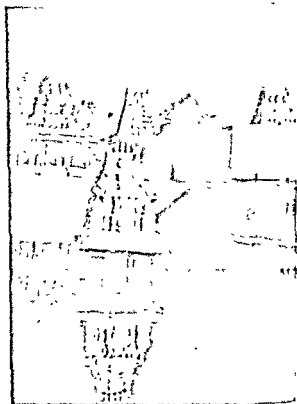
वरदराज मंदिर व सरोवर

मुख्य मंदिर में तीन द्वारों के भीतर श्री एकाम्रेश्वर शिवलिंग स्थित है। लिंगमूर्ति श्याम है। कहा जाता है, यह बालुका-निर्मित है। लिंगमूर्ति के पीछे श्री गौरीशंकर की युगल-मूर्ति है। यहां एकाम्रेश्वर पर जल नहीं चढ़ता। चमेली के सुगंधित तेल से अभिषेक किया जा है। प्रति सोमवार को भगवान की सवारी निकलती है।
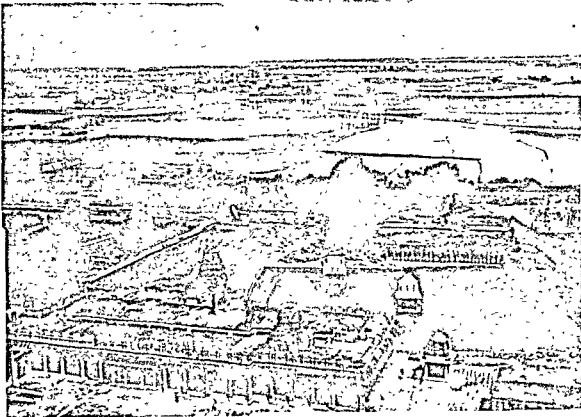
एकाम्रेश्वर मंदिर

मुख्य मंदिर की दो परिक्रमाए है। पहली परिक्रमा मे क्रमशः शिवभक्तगण, गणेश जी, 108 शिवलिंग, नंदीश्वर लिंग, चंडिकेश्वर लिंग तथा चंद्रकठवालाजी की मूर्तियां हैं। दूसरी परिक्रमा मे कालिकादेवी, कोटिलिंग तथा कैलास-मंदिर है। कैलास-मंदिर एक छोटा-सा मंदिर है। जिसमें शिव-पार्वती की स्वर्णमयी उत्सव मूर्तियुगल विराजमान है।

जगमोहन मे 64 योगिनियो की मूर्तियां हैं। एक अलग मंदिर मे श्री पार्वतीजी का विग्रह है। उसके पश्चात् एक मंदिर में स्वर्ण कामाक्षी देवी हैं। दूसरे मंदिर मे अपनी दोनों पत्नियो सहित सुब्रह्मण्यस्वामी की मूर्ति है।

एकाम्रेश्वर मंदिर के प्रांगण मे एक वहुत पुराना आम का वृक्ष है। यात्री इसकी परिक्रमा करते हैं। इसके नीचे चबूतरे पर एक छोटे मंदिर मे तपस्या में लगी कामाक्षी पार्वती की मूर्ति है।

कहा जाता है, एक बार पार्वतीजी ने महान् अंधकार उत्पन्न करके त्रिलोकों को त्रस्त कर दिया। इससे रुष्ट होकर भगवान शंकर ने उन्हे शाप दिया। यहा इस आम्र वृक्ष के नीचे तपस्या करके पार्वतीजी उस शाप से मुक्त हुई और भगवान शंकर ने प्रकट होकर उन्हे अपनाया। एकाम्रेश्वरलिंग पार्वतीजी द्वारा निर्मित बालुकालिंग है, जिसकी वे पूजा करती थीं।

दूसरी परिक्रमा के पूर्ववाले गोपुर के पास श्रीनटराज तथा नंदी की सुनहरी मूर्तिया हैं। उस घेरे मे नवग्रहादि अन्य अनेक देव-विग्रह भी हैं।

कामाक्षी—एकाम्रेश्वर मंदिर से लगभग दो फर्लांग पर (स्टेशन की ओर) कामाक्षी देवी का मंदिर है। यह दक्षिण भारत का सर्वप्रधान शक्तिपीठ है। कामाक्षी देवी आद्याशक्ति भगवती त्रिपुर सुंदरी की प्रतिमूर्ति हैं। इन्हे कामकोटि भी कहते हैं।

कामाक्षी मंदिर भी विशाल है। इसके मुख्य मंदिर मे कामाक्षी देवी की सुंदर प्रतिमा है। इसी मंदिर मे अन्नपूर्णा तथा शारदा के भी मंदिर हैं। एक स्थान पर आद्यशंकराचार्य की मूर्ति है। कामाक्षी मंदिर के निजद्वार पर कामकोटि यंत्र में आद्यालक्ष्मी विद्यालक्ष्मी, संतानलक्ष्मी, सौभाग्यलक्ष्मी, धनलक्ष्मी, धान्य लक्ष्मी, वीर्यलक्ष्मी तथा विजयलक्ष्मी का न्यास किया हुआ है। इस मंदिर के घेरे में सरोवर भी है।

कामाक्षी देवी का मंदिर श्री आदि शंकराचार्य का बनवाया हुआ कहा जाता है। मंदिर की दीवार पर श्रीरूपलक्ष्मी सहित श्रीचोरमहाविष्णु (जिसकी दस वैष्णव दिव्य देशो मे गणना है) तथा मंदिर के अधिदेवता श्रीमहाशास्ता के विग्रह हैं, जिनकी संख्या एक सौ के लगभग होगी। शिवकांची के समस्त शैव एवं वैष्णव मंदिर इस ढंग से बने हैं, कि उन सबका मुख

कामकोटि पीठ की ओर ही है और उन देवविग्रहों की शोभायात्रा जब-जब होती है, वे सभी इस पीठ की प्रदक्षिणा करते हुए ही घुमाये जाते हैं। इस प्रकार इस क्षेत्र में कामकोटि पीठ की प्रधानता सिद्ध होती है।

वामन-मंदिर—कामाक्षी मंदिर से दक्षिण-पूर्व थोड़ी ही दूर पर भगवान वामन का मंदिर है। इसमें वामन भगवान की विशाल त्रिविक्रम-मूर्ति है। यह मूर्ति लगभग दस हाथ ऊंची है। भगवान का एक चरण ऊपर के लोकों को नापने ऊपर उठा है। चरण के नीचे राजा बलि का मस्तक है। इस मूर्ति के दर्शन एक लम्बे बांस में मशाल लगाकर पुजारी कराता है। मशाल के बिना भगवान के श्रीमुख का दर्शन नहीं हो पाता।

सुब्रह्मण्य-मंदिर—वामन भगवान के मंदिर के सामने ही थोड़ी दूर पर सुब्रह्मण्यस्वामी का मंदिर है। इसमें स्वामिकार्तिक की भव्यमूर्ति है। इस मंदिर को यहां बहुत मान्यता प्राप्त है। इनके अतिरिक्त शिवकांची में और बहुत से मंदिर हैं। कहा जाता है, शिवकांची में 108 से भी अधिक शिव मंदिर हैं।

अप्रैल माह में यहां का प्रधान धार्मिकोत्सव होता है। यह धार्मिक समारोह पन्द्रह दिन तक चलता है।

यहां ज्वरहरेश्वर, कैलाशनाथ आदि के मंदिर भी अपनी भव्यता के कारण दर्शनीय हैं। इस तीर्थस्थान की गणना सप्त मोक्षदा पुरियों में की जाती है।

यहां के मुख्य मंदिर के 'गोपुरम्' पर हैदरअली की तोपों के गोलों के निशान अब तक मौजूद हैं।

यात्रा मार्ग

चेंगलपेट जंक्शन से अरक्कोनम लाइन पर 35 किलोमीटर दूर कांचीपुरम स्टेशन है। मद्रास, चेंगलपेट, तिरुत्तनी, तिरुवन्नमलै आदि से बसें भी यहां आती हैं।

ठहरने का स्थान

शिवकांची और विष्णुकांची में ठहरने के लिए कई धर्मशालाएं हैं। यहां पर्यटन विभाग का एक लॉज है, जो काफी महंगा पड़ता है। नगर में सस्ते लॉज भी हैं, जहां ठहरा जा सकता है। मुख्यरूप से हैं, राजा लॉज, रमा लॉज और टाउन लॉज।

कैलाश मंदिर, कांची

अन्य पुरियों का उल्लेख खंड एक और दो में देखें।

खंड 4

त्रिस्थली :

गया, प्रयाग और काशी

पंच सरोवर :

मान सरोवर, पुष्कर सरोवर, बिंदु सरोवर, नारायण सरोवर और पम्पा सरोवर

नोट : काशी का उल्लेख द्वादश ज्योतिर्लिंगों में किया जा चुका है—खंड दो देखें।

त्रिस्थली

1. गया

हिंदूशास्त्र मे तीन सर्वश्रेष्ठ तीर्थस्थलों को 'त्रिस्थली' कहते हैं। परलोक मे मुक्ति और मोक्ष-प्राप्ति के लिए 'त्रिस्थली' मे पिंडदान का विधान है। ये तीर्थस्थल है—प्रयागराज, काशीधाम और गया। गया को इन तीनों तीर्थस्थलों मे सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। गया प्रमुख पितृमुक्ति तीर्थ है।

धार्मिक पृष्ठभूमि

महाभारत के वनपर्व मे कहा गया है कि व्यक्ति को पुत्र प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए ताकि वह गया जाए और पूर्वजो का उद्धार करे। गया की महानता का उल्लेख नारदिया पुराण, पद्म पुराण, कूर्मपुराण, वराह पुराण, गरुड पुराण और वायु पुराण मे मिलता है। इन पुराणो मे मुक्ति के लिए चार उपाय हैं—1. ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति, 2 गया मे श्राद्ध, 3. गोहत्या निवारण करते हुए खुद ही मर जाना और 4. कुरुक्षेत्र मे रहकर।

वायु पुराण के अनुसार गयासुर ने अपनी तपस्या से यहां ऐसी सिद्धि प्राप्त की कि उसे स्पर्श करने वाला ही स्वर्गलोक जाने लगा। इससे यमराज तथा देवताओ को बडी चिंता हुई। विष्णु के समझाने पर गया प्राणोत्सर्ग करने को तैयार हुआ। गया को उत्तर की ओर सिर और दक्षिण की ओर पैर करके लिटाया गया। लेकिन उसका सिर कांपता रहा। ब्रह्मा ने उसके सिर पर धर्मशिला को रखा,लेकिन उसका कांपना बंद नहीं हुआ। तब सभी देवी-देवता उस शिला पर खडे हुए ओर बलि हो सकी। भगवान विष्णु ने वरदान दिया कि यह स्थान संसार मे

दामोदर मंदिर, गया
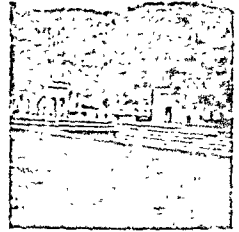
प्रेतशिला, ब्रह्मकुंड, गया

पवित्रतम होगा। देवता लोग यहा विश्राम करेंगे तथा यह भ
गया क्षेत्र नाम से जाना जाएगा और जो भी यहां दान-क्रिय
पिंडदान करेगा, अपने पूर्वजो सहित ब्रह्मलोक मे जाए

तीर्थस्थल का महत्त्व

प्रतिवर्ष हजारो हिंदूधर्मी मोक्ष-प्राप्ति के निमित्त अपने पूर्व
का श्राद्ध करने विष्णुपद मंदिर आते हैं। विष्णुपद
गयासिर है। इसकी पवित्रता इसलिए सर्वाधिक है कि यहीं
समस्त देवी-देवता खडे हुए थे। यहीं पर मंदिर का निर्मा
इंदौर के होल्कर की पत्नी अहिल्याबाई ने कराया है।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

नदी, कुंड और पहाडियों से घिरे इस नगर के दो भाग हैं। अ
गया या पुराना गया और गया रेलवे स्टेशन या साहिबगं
गया फल्गु नदी के किनारे है। कहा जाता है कि फल्गु न
विष्णु के शरीर की सुगंध से ओतप्रोत है और इसीलिए इ
नदी मे स्नान का भी महत्त्व है। पूजा श्राद्ध आदि के लि
विभिन्न क्षेत्र है—अक्षयवट पर पिंडदान करने से पितरो क
भोजन की कभी कमी नहीं होती है। धर्मशिला लगभग चा
किलोमीटर तक फैली है और अन्य पवित्र स्थल हैं—रामशिल
प्रेतशिला, वैतरणी, और वागेश्वरी।

गया में पिंडदान

गया मे पितरो के श्राद्ध के अलावा स्वयं का भी श्राद्ध किय
जाता है लेकिन अपने श्राद्ध के नियम कुछ भिन्न है। स्वयं के
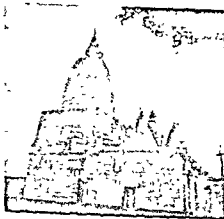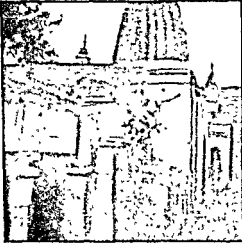
रामशिला के नीचे का मंदिर, गया

श्राद्ध के पिंड में तिल नहीं होते है और पिंडदान स्वय जनार्दन की मूर्ति के हाथो मे करते हैं।

पितरों के श्राद्ध के लिए व्यक्ति गया पहुंचकर पितरों का आह्वान करे, आसन दे और कुश पर जल छिडककर ब्राह्मणो को दक्षिणा देकर श्राद्ध की घोषणा करे। गया में श्राद्ध के लिए सभी स्थान उपयुक्त हैं।सही फल-प्राप्ति के लिए गया में सादा जीवन व्यतीत करे। एक समय खाना खाए, जमीन पर सोएं झूठ न बोलें और भूमण्डल पर रहने वाले सभी जीवों की अच्छाई के बारे मे सोचे।

श्राद्ध में तर्पण और पिंडदान के विधान है। तर्पण करने मे लगभग पांच घंटे का समय लगता है, और इसके चार भाग है देव तर्पण मे देवताओ की पूजा, ऋषितर्पण मे 10 प्रसिद्ध ऋषियो की पूजा, यमतर्पण मे यम एवं चित्रगुप्त का तर्पण और सबसे अत मे पितृतर्पण।

समय से पहले मृत्यु को प्राप्त हुए सबंधियो एव प्रेतबाधाग्रस्त पडोसी आदि के लिए विशेष तर्पण की व्यवस्था है।

पिंडदान का कार्यक्रम अगले दिन होता है, जिसका आरम्भ गयासिर मे (विष्णुपद मदिर के पास) किया जाता है। पिंडदान के मुख्य भाग है—सकल्प, गायत्री, स्थापितकरन और पिंड पूजन।

पिंडदान के लिए यात्री को विभिन्न क्षेत्रो के विभिन्न मंदिरो, कुंड, वृक्ष आदि के पास जाना होता है।

सर्वप्रथम विष्णुपद मंदिर से एक किलोमीटर पर स्थित रामशिला पर यम एव उसके दोनो कुत्तो का पिंडदान। रामशिला से पूर्व उत्तरमानस सरोवर मे स्नान।

रामशिला से आठ किलोमीटर दूर प्रेतशिला पर प्रेतो को पिंडदान एवं ब्रह्मकुंड में स्नान।

रामशिला से दक्षिण जाकर काकबलि का स्थान है। यहा काकबलि के बाद अक्षयवट पर पिंडदान।

अत मे ब्राह्मण दक्षिणा देकर 'सुफलकामना' करे।

श्राद्ध का समय

सर्वाधिक उचित समय पितृपक्ष का है, अश्विन कृष्णपक्ष मे या बाद मे चैत्र और पूस के महीने मे भी श्राद्ध करने के विधान हैं।

अन्य दर्शनीय स्थल

वैतरणी-कुंड—गया के समस्त कुडो मे अत्यधिक महत्त्व इसी का है,क्योंकि इसे स्वर्ग और मर्त्य के बीच बहने वाली नदी कहते हैं। गया के दक्षिणी फाटक के बाहर यह सरोवर है।

मुंडपृष्ठादेवी—गयासिर के पास मंदिर है। 12 भुजा वाली मुडपृष्ठा देवी हैं दक्षिण-पश्चिम मे आदिगया शिला है और पास ही दक्षिण फाटक के पूर्वी बरामदे मे 'धौतपाप' नामक सफेद शिला है।

विष्णु मंदिर—गया मे मुख्य मंदिर विष्णुजी का है,जो गया स्टेशन से 3 किलोमीटर पर है। सूर्य मदिर और ब्रह्मयोनिहिल भी लगभग 3-4 किलोमीटर पर है।

बोधगया—गया से लगभग 14 किलोमीटर दूर बोधगया नामक बौद्ध तीर्थ है, जहा भगवान बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था। यहा सम्राट अशोक द्वारा बनवाया गया महाबोधि मंदिर है, जिसमे बुद्ध भगवान की विराट मूर्ति है।
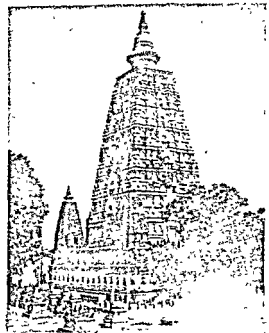
बोधगया मंदिर

पटना से लगभग 261 किलोमीटर दूर बौद्ध तीर्थ वैशाली है। यहा बुद्ध अनेक बार आए थे। वैशाली जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर की जन्मस्थली भी है। यहा अनेक जैन मंदिर व बौद्ध स्तूप हैं। ठहरने के लिए धर्मशालाए तथा होटल आदि हैं।

पटना से लगभग 90 किलोमीटर पर नालंदा विश्वविद्यालय के प्राचीन अवशेष है।नालदा से करीब 14 किलोमीटर पर बिहार शरीफ है। बिहार शरीफ से लगभग 24 किलोमीटर दूर राजगिर नामक स्थान है, जहा जैन मंदिर है, साथ ही अन्य दर्शनीय स्थल भी हैं। पटना गया आदि से भी यहा के लिए बसे मिल जाती हैं। यहा ब्रह्मकुड केदारकुड, सीताकुड आदि पवित्र स्थान हैं। राजगिर में पाच पवित्र पर्वत हैं—वैभार, विपुलाचल, रत्नगिरि, उदयगिरि और स्वर्णगिरि। इन पर्वतों पर अनेक जैन मंदिर स्थित हैं।

यात्रामार्ग

बिहार प्रदेश में गया वाराणसी से 203 किलोमीटर और कलकत्ते से 307 किलोमीटर पर है। गया उत्तर रेलवे का प्रमुख स्टेशन है। बिहार की राजधानी पटना से 151 किलोमीटर और राजगिर से 68 किलोमीटर दूर है। गया के लिए पटना राजगिर आदि स्थानों से बसें भी उपलब्ध हैं।

ठहरने का स्थान

गया में ठहरने के लिए अनेक धर्मशालाएं, होटल तथा रेस्टहाउस हैं। गया स्टेशन पर रिटायरिंग रूम भी है। गया बस स्टैंड के पास भी रेस्टहाउस तथा धर्मशालाएं हैं।

मुख्य होटल– होटल उर्वशी, होटल नीता, आनद होटल तथा नारायण रेस्ट-हाउस।

धर्मशालाएं– *जैन धर्मशाला, मारवाड़ी धर्मशाला,* पंचायती धर्मशाला तथा तिल्हा धर्मशाला आदि ।
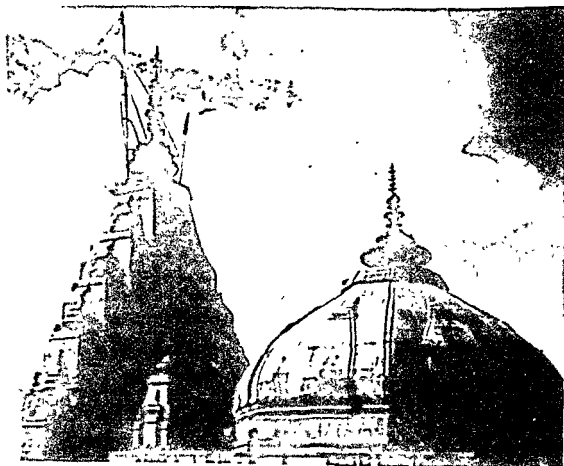
विष्णु मंदिर, गया

2. प्रयागराज

प्रयागराज की गणना, भारत के प्राचीनतम तीर्थस्थानो मे की जाती है। त्रिस्थली मे प्रयाग एक तीर्थस्थल है। प्रयाग नामकरण के विषय में कहा गया है कि इस स्थान पर अनगिनत यज्ञों का आयोजन हुआ था। इसलिए इसे 'प्रयाग' कहा गया।

धार्मिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

महाभारत के आदिपर्व मे प्रयाग को सोम, वरुण और प्रजापति का जन्म-स्थान कहा गया है। तीर्थराज प्रयाग ही वह पवित्र स्थान है, जिसे समुद्र-मथन के पश्चात् कुंभ-कलश से अमृत सुधा-रस की बूदे सर्वप्रथम प्राप्त हुई थी।

कुंभ के परम पवित्र पर्व का उल्लेख वेदों मे मिलता है। अमृत और कुंभ—दोनों का वैदिक परंपरा मे एक ही अर्थ मिलता है, परन्तु पौराणिक परंपरा मे इसका अर्थ दूसरा भी है।

> "देव-दामव सवादे मथ्यमाने महोदधौ,
> उत्पन्नोसि तदा कुभ विधृतो विष्णुना स्वयम्।"

"दैत्यो के कलह के समय समुद्र के मथने पर हे कलश ! तू उत्पन्न हुआ था। फिर तुझे विष्णु भगवान ने स्वय धारण किया था।"

कुंभ अर्थात् कलश, हमको ससार की उत्पत्ति,पालन और सहार का ज्ञान कराता हुआ यह सिद्ध करता है कि मनुष्यो की मुक्ति के लिए इस स्थूल ब्रह्माड की उत्पत्ति, पालन और प्रलय एक शुद्ध चैतन्य परमात्मा ही करता है, जो कि प्राकृतिक रज तत्त्व और तम गुणों से संयुक्त होकर जगत् की उत्पत्ति करने से ब्रह्मा कहलाता है।पालन करने से विष्णु और प्रलय करने से महादेव आदि नामों से शास्त्रो मे प्रसिद्ध है।

कुभ-कलश प्रार्थना भगवान का विराट रूप समझकर लक्ष्य बनाकर की जाती है। सम्पूर्ण तीर्थ, देवता, प्राणी और प्राण—इसी कुंभ मे प्रतिष्ठित हैं। शिव, विष्णु और ब्रह्मा इसमे विराजमान हैं। 12 आदित्य, 12 मास, 12 राशियां इसी कुंभ में स्थित हैं और स्वयं विष्णु भगवान् इसके धारणकर्ता हैं, रक्षक है।एकादश रुद्र, पांच ज्ञानेंद्रिया, पाच कर्मेंद्रिया और 11 वा मन। आठ वसु—पृथ्वी, अग्नि, अतरिक्ष-द्वय, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र तथा विश्वदेव और मरुद्गण इसके भीतर निवास करते है।

मत्स्यपुराण एव स्कदपुराण मे कुंभ की सविस्तार कथा है। रोग, शोक से छुटकारा पाने के लिए ही देव और दानवो ने अमृत प्राप्ति हेतु समुद्र-मथन किया था। वास्तव में यही कथा का सार है।

गगा, यमुना और सरस्वती के सगम-स्थल पर बसा होने के कारण इसे और भी प्रसिद्धि प्राप्त हुई। प्रयाग का धार्मिक महत्त्व के साथ-साथ ऐतिहासिक और राजनीतिक महत्त्व भी है। आधुनिक भारत के नव-निर्माण मे भी इसका भारी योगदान रहा है।

त्रिवेणी-सगम पर स्नान करने का विशेष महत्त्व और फल माना जाता है। अपनी परम पवित्रता के कारण यह स्थान विशेष महत्त्वपूर्ण है और इसी के कारण प्रयाग को तीर्थो का राजा कहा गया है। अनेक नदियो, कुओ, तालाबो का जल मिला देने पर उनको अलग कर पाना सभव नही है, किन्तु गगा का समुद्र में घुल-मिल जाना इसकी महत्ता को प्रकट करता है। गंगा-यमुना सगम अपनी लोकोत्तर प्रतिभा से अपनी ही धाराओ को अलग-अलग करके, इस दैवी चमत्कार को दिखाकर आज भी समस्त ससार को चकित कर देता है।

प्रयागराज, जिसकी राजधानी प्रतिष्ठानपुर (झूसी) थी, पर पुरुरवा, दुष्यत, नहुष, ययाति,पुरु और भरत आदि का सपर्क इधर से ही अधिक रहा था। इस ती र्थराज पर ही बडे-बडे सम्मेलन, यज्ञ आदि होते थे। शकाओ के समाधान होते थे और अतुल ज्ञान की प्राप्ति होती थी।

चद्रगुप्त, अशोक एव हर्षवर्धन आदि के समय मे भी इस स्थान का विशेष महत्त्व रहा। सम्राट हर्षवर्धन प्रति बारह वर्ष पर लगने वाले कुभ के मेले मे सम्मिलित होते थे और अपना सब कुछ दान कर देते थे।

प्रयाग नगर को अनेक राजवशो की राजधानी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। परिहार, गहरवार, गुप्त आदि राजाओ ने इस स्थान के गौरव को समझा था।

मुस्लिम काल मे अनेक मुस्लिम शासकों ने प्रयाग को अपना मत्य केद्र बनाया और सम्राट अकबर ने इसका नाम 'अल्लाहाबाद' रखा। सगम पर स्थित वर्तमान किला, सम्राट अकबर का ही बनवाया हुआ बताया जाता है। अंग्रेजो ने भी इस नगर की स्थिति को यथावत बनाये रखा। बहुत समय तक यह उत्तर प्रदेश की राजधानी भी रहा। यहा हाईकोर्ट तथा

विश्वविद्यालय की स्थापना की गई, किन्तु इलाहाबाद का सांस्कृतिक महत्त्व प्रयाग के रूप में ही है।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

अक्षयवट—यह प्रयाग के तीर्थों में मुख्य है। त्रिवेणी-संगम से थोड़ी दूर पर किले के भीतर अक्षयवट है। पहले किले की पातालपुरी गुफा में एक सूखी डाल गाड़कर उसमें कपड़ा लपेटकर रखा जाता था और उसी को अक्षयवट कहकर दर्शन कराया जाता था, किन्तु अब किले के यमुना किनारे वाले भाग में अक्षयवट का पता लग गया है और उस वटवृक्ष का दर्शन सप्ताह में दो दिन सबके लिए खुला रहता है। यमुना किनारे के फाटक से वहां तक जाया जा सकता है।

किले के भीतर एक स्थान को पातालपुरी मंदिर कहा जाता है, क्योंकि यह भूमि के नीचे है। इस स्थान में जिन देवताओं की मूर्तियां हैं, उनके नाम ये हैं—धर्मराज, अन्नपूर्णा, संकटमोचन, महालक्ष्मी, गौरी-गणेश, आदि गणेश, बालमुकुंद ब्रह्मचारी, प्रयागराजेश्वर शिव, शूलटंकेश्वर महादेव, गौरी-शंकर, सत्यनारायण, यमदंड महादेव, दंडपाणि भैरव, ललिता देवी, गंगाजी, स्वामिकार्तिक, नृसिंह, सरस्वती, विष्णु, यमुना, दत्तात्रेय, गोरखनाथ, जाम्बवान्, सूर्य, अनसूया, वेदव्यास, वरुण, पवन, मार्कंडेय, सिद्धनाथ, बिंदुमाधव, कुबेर, अग्नि, दक्षनाथ, पार्वती, सोम, दुर्वासा, राम-लक्ष्मण, शेष, यमराज, अनन्तमाधव, साक्षी विनायक और हनुमानजी। किले के भीतर वटस्तम्भ है, जिस पर अशोक ने बाद में शिलालेख खुदवा दिया और इसी से अशोक-स्तम्भ कहा जाने लगा। बिना विशेष अनुमति के उसके दर्शन नहीं किये जा सकते।

हनुमानजी—किले के पास हनुमानजी का मंदिर है। यहां भूमि पर लेटी हनुमानजी की विशाल मूर्ति है। वर्षा काल में बाढ़ आने पर यह स्थान जलमग्न हो जाता है।

भरद्वाज आश्रम—यह स्थान नगर के कर्नलगंज में है। यहां भरद्वाजेश्वर शिवलिंग है तथा एक मंदिर में हजार फणों वाले

भरद्वाज आश्रम, प्रयाग

नाग वासुकि
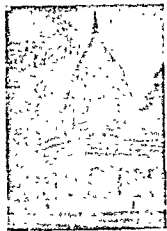
शेषनाग की मूर्ति है।

झूसी (प्रतिष्ठानपुर)—कहा जाता है कि यह चंद्रवंशी राजा पुरूरवा की राजधानी थी। ठीक त्रिवेणी-संगम के सामने गंगापार पुराना किला है, जो अब एक टीला मात्र रह गया है। उस पर समुद्र कूप नामक कुआ है, जो बड़ा पवित्र माना जाता है। वहां से उत्तर की ओर चलने पर पुरानी झूसी तथा नई झूसी के मध्य में हंसकूप नामक कुआ है। इसके पास

संध्यावट,
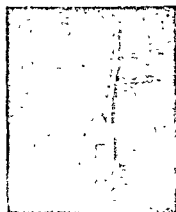
हंसतीर्थ नामक कुंडलिनीयोग के आधार पर बना मंदिर है, जिसके पूर्वद्वार के पास संध्यावट तथा संकटहर माधव की भग्न मूर्तियां हैं। आगे नई झूसी में निवार्ग का शिवालय अच्छा मंदिर है। झूसी में श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी का प्रसिद्ध संकीर्तन भवन है, जहां नित्य कथा-कीर्तन होते रहते हैं।

प्रयाग के आस-पास के तीर्थों में दुर्वासा आश्रम, लाक्षागृह, सीतामढ़ी, इर्मिलियनदेवी, शृंगयन, राजापुर, शृंगवेरपुर और कड़ा हैं।

आधुनिक प्रयाग में देखने-सुनने के योग्य अनेक धार्मिक, शिक्षण एवं समाजसेवी संस्थाएं हैं, जिन पर किसी भी प्रगतिशील नगर को गर्व हो सकता है।
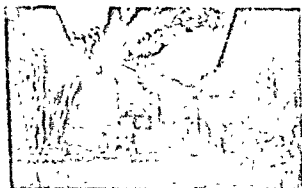
यात्रा मार्ग

प्रयाग सभी ओर से केंद्र में है। यहा के स्टेशन हैं—इलाहाबाद, नैनी, प्रयाग, इलाहाबाद सिटी और झूसी। इनमे इलाहाबाद स्टेशन जंक्शन है। यहा उत्तर और मध्य रेलवे की लाइने मिलती हैं। अधिकाश यात्री यही उतरते है। जो यात्री मध्य रेलवे से बम्बई-जबलपुर की दिशा से आते है, वे नैनी भी उतर सकते हैं। इलाहाबाद स्टेशन से सात किलोमीटर दूर यह स्टेशन यमुना-पार है। यहा से सगम पाच किलोमीटर दूर है किन्तु सगम तक जाने का मार्ग कच्चा है।

इलाहाबाद स्टेशन से त्रिवेणी सगम लगभग सात किलोमीटर के फासले पर है।

इलाहाबाद शहर मे घूमने के लिए सिटी बस, रिक्शा आदि परिवहन उपलब्ध हैं।

ठहरने का स्थान

प्रयाग मे ठहरने के अनेक स्थान हैं। नैनी और झूसी मे भी धर्मशालाए है। इनके अतिरिक्त अनेक मठ और सस्थाए है। नगर मे ठहरने वालो के लिए पर्याप्त होटल है। कुछ धर्मशालाओं के नाम नीचे दिये जा रहे है—

1 बिहारीलाल कजीलाल सिहानिया की, इलाहाबाद जक्शन के पास।
2 तेजपाल गोकुलदास की, यमुना पुल के पास।
3 गोमती बीबी रानी फूलपुर की मुट्ठी गज।
4 बाबू वशीधर गोपाल रस्तोगी की, दारागज।
5 चमेली देवी की, दारागज।
6 बद्रसेन की, दारागज।
7 दुलारी देवी की, घटाघर के पास।

उक्त मुख्य धर्मशालाओं के अतिरिक्त नगर मे जगह-जगह और भी अनेक धर्मशालाए हैं। इनके अलावा अनेक होटल और लॉज है, जहा विश्राम के लिए उत्तम व्यवस्था है—

1 रायल होटल, साउथ रोड।
2 कैलाम्स होटल, लीडर रोड।
3. प्रभात होटल, करनल गज।
4 प्रयाग होटल, सिटी साइड।
5 होटल राज, जानसन गज।

सकीर्तन भवन, झूसी

शिवालय, झूसी

3. काशी

'काशी' के लिए देखें खंड दो में विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग।

पंच सरोवर

1. मानसरोवर–कैलास यात्रा

हिमालय के पर्वतीय तीर्थों की यात्राओं में मानसरोवर-कैलास की यात्रा ही सबसे कठिन है। इसकी कठिनाई की तुलना केवल बदरीनाथ से आगे स्वर्गारोहण की या सतोपंथ की यात्रा से ही की जा सकती है। स्वर्गारोहण या सतोपंथ की यात्रा जबकि गिने-चुने दिनों की है।

मानसरोवर-कैलास की यात्रा में यात्री को लगभग तीन सप्ताह तिब्बत में ही रहना पड़ता है। केवल यही एक यात्रा है, जिसमें यात्री हिमालय को पूरा पार करता है। दूसरी यात्राओं में तो वह हिमालय के केवल एक पृष्ठांश के ही दर्शन कर पाता है।

मानसरोवर-कैलास, अमरनाथ, गंगोत्री, स्वर्गारोहण जैसे क्षेत्रों की यात्रा में, जहां यात्री को समुद्र-स्तर से बारह हजार फुट ऊपर या उससे अधिक ऊंचाई पर जाना पड़ता है, यात्री यदि आक्सीजन मास्क साथ ले जाए तो हवा पतली होने एवं हवा में आक्सीजन की कमी से होने वाले श्वासकष्ट से वह बच जाएगा।

धार्मिक पृष्ठभूमि

हिमालय के तिब्बत प्रदेश में स्थित एक तीर्थ, जिसे गण पर्वत और रजतगिरि भी कहते हैं। कैलास के बर्फ से आच्छादित 22,028 फुट ऊंचे शिखर और उससे लगे मानसरोवर का यह तीर्थ मानस खंड भी कहलाता है। माना जाता है कि प्राचीन साहित्य में वर्णित 'मेरु' भी यही है। पौराणिक अनुश्रुतियों के अनुसार शिव और ब्रह्मा आदि देवगण, मरीचि आदि ऋषि एवं रावण, भस्मासुर आदि ने यहां तप किया था। पांडवों के दिग्विजय प्रयास के समय अर्जुन ने इस प्रदेश पर विजय प्राप्त की थी। इस प्रदेश की यात्रा व्यास, भीम, कृष्ण, दत्तात्रेय आदि ने भी की थी। आदि शंकराचार्य ने इसी के आसपास कहीं अपना शरीर त्याग किया था।

जैन धर्म में भी इस स्थान का माहात्म्य है—वे कैलास को अष्टापद कहते हैं। कहा जाता है कि प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव ने यहीं निर्वाण प्राप्त किया था। बौद्ध धर्मशास्त्र में मानसरोवर का उल्लेख 'अनवतप्त' के रूप में हुआ है। उसे पृथ्वी स्थित स्वर्ग

कैलास

कहा गया है। बौद्ध अनुश्रुति है कि कैलास पृथ्वी के मध्यभाग में स्थित है—उसकी उपत्यका मे रत्नखचित कल्पवृक्ष हैं। डेमचोक (धर्मपाल) वहा के अधिष्ठाता देव है—वे व्याघ्रचर्म धारण करते है, मुडमाल पहनते हैं, उनके हाथ मे डमरू और त्रिशूल है। वज्र उनकी शक्ति है।

कैलास पर्वतमाला कश्मीर से लेकर भूटान तक फैली हुई है, जिसके उत्तरी शिखर का नाम कैलास है। इस शिखर की आकृति विराट शिवलिंग की तरह है—पर्वतो से वनेषोडशदल कमल के मध्य यह स्थित है। यह सदैव बर्फ से आच्छादित रहता है।

तीर्थस्थल का महत्त्व

मानसरोवर की परिक्रमा का महत्त्व कहा गया है। तिब्वती लोग तीन या तेरह परिक्रमा का महत्त्व मानते हैं और अनेक यात्री दंडप्रणिपात करके परिक्रमा पूरी करते हैं। धारणा है कि एक परिक्रमा करने से एक जन्म का, दस परिक्रमाएं करने से एक कल्प का पाप नष्ट हो जाता है। जो 108 परिक्रमाएं पूरी करते हैं,उन्हे जन्म-मरण से मुक्ति मिल जाती है।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

पूरे हिमालय को पार करके, तिब्वती पठार में लगभग 50 कि मी. जाने पर पर्वतो से घिरे दो पावन सरोवर मिलते हैं।

मानसरोवर—इसका जल अत्यत स्वच्छ और अद्भुत नीलाभ है। इसका आकार लगभग गोल या अडाकार है और इसका बाहरी घेरा लगभग 40 कि मी. का है। मानसरोवर 51 शक्तिपीठो मे से एक पीठ भी है। सती की दाहिनी हथेली इसी मे गिरी थी।

मानसरोवर मे हस बहुत है—राजहस भी है और सामान्य हंस भी। सामान्य हसो की दो जातिया हैं—एक मटमैले सफेद रग की और दूसरे बादामी रग की। ये आकार मे बत्तखों से बहुत मिलते हैं, किन्तु इनकी चोच बत्तखों से पतली होती है। पेट का भाग भी पतला है और ये पर्याप्त ऊंचाई पर दूर तक उड सकते हैं।

मानसरोवर मे मोती हैं या नही, पता नही। किन्तु तट पर उनके होने का कोई चिन्ह नही। कमल उसमे बिल्कुल नही हैं, एक जाति की सिवार अवश्य है। किसी समय मानसरोवर का जल राक्षस-ताल मे जाता था। जलधारा का वह स्थान तो अब भी है, किन्तु वह भाग अब ऊंचा हो गया है। प्रत्यक्ष मे मानसरोवर से कोई नदी या छोटा झरना भी नही निकलता, किन्तु मानसरोवर पर्याप्त उच्च प्रदेश मे है।

मानसरोवर के आसपास कही कोई वृक्ष नही, कोई पुष्प नही। इस क्षेत्र मे छोटी घास और अधिक से अधिक सवा फुट तक ऊची उठने वाली एक कटीली झाडी को छोडकर और कोई पौधा नही होता।

कैलाम पर्वत मार्ग

मानसरोवर का जल सामान्य शीतल है। उसमें मजे से स्नान किया जा सकता है। उसके तट पर रंग-बिरंगे पत्थर और कभी-कभी स्फटिक के छोटे टुकड़े भी पाये जाते हैं।

राक्षस ताल—राक्षस ताल विस्तार में बहुत बड़ा है। वह गोल या चौकोर नहीं है। उसकी कई भुजाएं मीलों दूर तक टेढ़ी-मेढ़ी होकर पर्वतों में चली गई हैं। कहा जाता है कि किसी समय राक्षसराज रावण ने यहीं खड़े होकर देवाधिदेव भगवान शंकर की आराधना की थी।

कैलास—मानसरोवर से कैलास लगभग 35 किलोमीटर दूर है। वैसे उसके दर्शन मानसरोवर पहुंचने से बहुत पहले ही होने लगते हैं। तिब्बत के लोगों में कैलास के प्रति अपार श्रद्धा है। अनेक तिब्बतीय श्रद्धालु पूरे कैलास की परिक्रमा दण्डवत् प्रणिपात करते हुए पूरी करते हैं।

शिवलिंगाकार कैलास पर्वत आसपास के समस्त शिखरों से अधिक ऊंचा है। वह कसौटी के ठोस काले पत्थर का है और ऊपर से नीचे तक दुग्धोज्ज्वल बर्फ से ढका रहता है, किन्तु उससे लगे हुए वे पर्वत, जिनके शिखर कमलाकार हो रहे हैं, कच्चे लाल मटमैले पत्थर के हैं। आसपास के सभी पर्वत इस प्रकार कच्चे पत्थरों के हैं। कैलास अकेला ही वहां ठोस काले पत्थर का शिखर है। कमलाकार शिखर क्योंकि कच्चे पत्थर के हैं, उनके शिखर गिरते रहते हैं। एक ओर के चार पखंडियों जैसे शिखर इतने गिर गये हैं कि अब उनके शिखरों के भाग कदाचित् कुछ वर्षों में बराबर हो जाएं।

एक बात और ध्यान देने योग्य है कि कैलास के शिखर के चारों कोनों में ऐसी मंदिराकृति प्राकृतिक रूप में बनी है, जैसी बहुत से मंदिरों के शिखरों पर चारों ओर बनी होती है।

कैलास के दर्शन करते ही यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वह असामान्य पर्वत है—देखे हुए समस्त हिम शिखरों से सर्वथा भिन्न और दिव्य।

परिक्रमा

कैलास की परिक्रमा लगभग 50 किलोमीटर की है, जिसे यात्री प्रायः तीन दिनों में पूरा करते हैं। यह परिक्रमा कैलास शिखर की उसके चारों ओर के कमलाकार शिखरों के साथ होती है क्योंकि कैलास शिखर तो अस्पृश्य है और उसका स्पर्श यात्रामार्ग से लगभग ढाई किलोमीटर सीधी चढ़ाई पार करके ही किया जा सकता है। और यह चढ़ाई पर्वतारोहण की विशिष्ट तैयारी के बिना संभव नहीं है।

कैलास शिखर की ऊंचाई समुद्र स्तर से 22 हजार फुट कही जाती है। कैलास के दर्शन एवं परिक्रमा करने पर अद्भुत शांति एवं पवित्रता का अनुभव होता है।

परिक्रमा मार्ग

1 तारचिन से नन्दीफू (नन्दी गुफा)—6 कि. मी. मार्ग में पहले भाग में दो किलोमीटर और सीधी चढ़ाई करके ऊपर आना पड़ता है।
2 डेराफू 14 कि. मी.—मार्ग में सिन्धु नदी का उद्गम ... कि. मी. और उतार है।
3 गौरी कुण्ड पास कि. मी.—कड़ी चढ़ाई, बर्फ, समुद्र-स्तर से 19 हजार फुट ऊपर।
4 जुतुलफू—20 कि. मी., दो कि. मी. कड़ी उतराई।
5 तारचिन—10 कि. मी.।

आवश्यक सामग्री

हिमालय-क्षेत्र की ऊंची सभी यात्राओं में प्रायः एक-सी सामग्री आवश्यक होती है—

1 पूरे सूती और ऊनी (गर्म) कपड़े।
2 सिर पर ऊनी टोपी (बन्दर कैप)।
3. गुलूबंद, जिससे सिर और कान बांधे जा सकें।
4 ऊनी मोजे, और यदि मोजे पहनने का अभ्यास हो तो सूती मोजे भी।
5 ऊनी दस्ताने।
6 छाता।
7. बरसाती कोट और टोपी।
8. ऐसे जूते जो बर्फ और पत्थरों पर भी काम दे सकें। रबड़ के मोटे तल्ले वाले 'स्नो-शू' सबसे अच्छे रहते हैं।
9. बल्लम के समान नीचे लोहे से जड़ी सिर तक के ऊंचाई की लाठी, जिसके सहारे आवश्यकता होने पर चढ़ा जा सके।
10. दो अच्छे मोटे कम्बल।
11. एक कोई ऐसा कपड़ा, जिसमें सब सामान लपेटा जा सके और जो वर्षा होने पर भीगे नहीं।
12. थोड़ी खटाई, इमली या सूखे आलूबुखारे, जो चढ़ाई में जी मिचलाने पर खाये जा सकें।
13. कुछ दवाएं जिनकी आपको आवश्यकता पड़ सकती है और चोट पर लगाने का मरहम।
14. वैसलिन तथा धूप का चश्मा।
15. मोमबत्ती, टार्च, अतिरिक्त सेल और लालटेन।
16. भोजन बनाने के हल्के बर्तन। स्टोव रखना अधिक सुविधाजनक है।

नोट—(क) जहां तक बने, इन यात्राओं में रुई के गद्दे, रुई की बंडी, रजाई आदि नहीं ले जाना चाहिए। इन कपड़ों के भीग जाने पर सूखना कठिन होता है। ट्रंक भी नहीं ले जाना चाहिए और धक्के तथा गिरने से टूटने-फूटने वाली चीजें भी नहीं ले जानी चाहिए। साथ में कुछ सूखे मेवे तथा पेड़े या इसी प्रकार की कोई और सूखी मिठाई जलपान के लिए रखना अधिक

सुविधाजनक होता है। किन्तु छाता, बरसाती, कुछ खटाई, जलपान का थोडा सामान और एक हल्का पानी पीने का वर्तन अपने ही पास रखना चाहिए। कुली या सामान ढोने वाले पशु कई बार मीलों दूर रह जाते है और आवश्यकता होने पर इन वस्तुओ के पास न रहने से कष्ट होता है।

(ख) किसी अपरिचित फल, पुष्प या पत्ते को खाना, सूघना और छूना कष्ट दे सकता है। उनमे अनेक विषैले जतु होते हैं, जो सूंघने या छूने मात्र से कष्ट देते है।

(ग) इन यात्राओ में चलते हुए पर्वतीय जल को पीना हानिकारक होता है। जल को किसी वर्तन मे लेकर एक-दो मिनट स्थिर होने देना चाहिए, जिसमे उसमे जो पत्थर के छोटे-छोटे कण मिले होते है, वे बैठ जाए। इसके बाद कुछ खाकर(एक-दो दाने किशमिश या थोडी मिश्री)जल पीना उत्तम रहता है। प्रात काल बिना कुछ खाये यात्रा करना कष्ट देता है। कुछ जलपान करके ही यात्रा करनी चाहिए। जल को झरने से वर्तन मे लेकर स्थिर किये बिना सीधे झरने से पीने से पतले शौच लगने का भय रहता है।

यात्रा मार्ग

1962 मे जब चीन ने भारत पर आक्रमण किया था तभी से कैलास मानसरोवर की यात्रा बंद हो गई थी। चीन-भारत सबंध सुधरने पर, 4 सितम्बर 1981 से यह यात्रा फिर से आरम्भ हुई है, लेकिन यात्रा का समय और स्थान चीन सरकार निश्चित करती है। यात्रा करने से पहले चीन सरकार से अनुमति लेकर अपना नाम प्रेषित करना होता है और अनेक लोग होने पर चीन सरकार एक पूरे दल को यात्रा पर जाने की अनुमति देती है। चीन सरकार यात्रियो की सुविधाओ का भी ध्यान रखती है।

यात्रा आरम्भ करने के लिए टनकपुर रेलवे स्टेशन पहुंचकर बस द्वारा पिथौरागढ पहुचते है, जो लगभग 180 किलोमीटर दूर है। यहा से आस्ककोट तक भी सडकमार्ग है। अल्मोडा से अगर यात्रा आरम्भ करे तो अल्मोडा से अस्ककोट तक की दूरी 135 किलोमीटर है।

अस्ककोट से अगला पडाव बलवाकोट 22 किलोमीटर है। 18 किलोमीटर आगे धारचूला नामक स्थान है। यहा पर एक डाक बंगला है—यहीं पर कुली-सवारी आदि भी बदलनी पडती है।

धारचूला से 22 किलोमीटर पर खेला नामक स्थान आता है। यहां से पाच हजार फुट तक सीधी चढाई है। काफी कठिनाई आती है। इस चढाई के बाद टिथीला नामक स्थान है।

टिथीला से आठ हजार फुट की ऊंचाई पर गालाघर पडाव आता है।गालाघर से निरपानी नामक स्थान अत्यंत दुर्गम है। इस मार्ग पर दो पडाव आते हैं—मालपा और बुधी। यहां पर यात्री कुछ अधिक विश्राम करते हैं। इसके बाद का पडाव गरब्याग है, जो कि भारत में अतिम पडाव है। यहा पर यात्री विश्राम करें और यात्रा के लिए आवश्यक सभी खरीदारिया यही कर ले।

गरब्याग से कालापानी, सगचुम होते हुए 50 किलोमीटर पर तकलाकोट, तिब्बत का पहला गाव है। यहा प्रतिवर्ष ज्येष्ठ से कार्तिक तक बडा बाजार लगता था। चीन गणराज्य ने यह बाजार बद करवा दिया है। सामान्य बाजार अब भी है, लेकिन भारतीय सिक्के यहां नही चलते हैं। तकलाकोट से
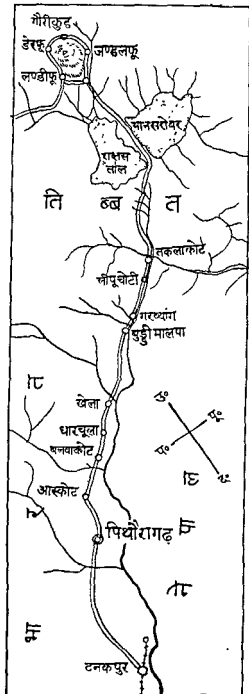
कैलास मार्ग का मानचित्र

16 किलोमीटर दूर एक और रास्ते में सोजर नाथ तीर्थ है।

गरब्याग से चढ़ाई शुरू होती है, लिपुलेख दर्रे तक, लिपुलेख तक ऊंचाई 1670 फुट है। यहां से हिमालय और तिब्बत के ऊंचे प्रदेशों का दृश्य बड़ा ही मनोहारी है।

तकलाकोट से लगभग 15000 फुट ऊंचाई चढ़ने के बाद बालढाक नामक पड़ाव आता है। यहां से दो रास्ते हैं—एक रक्षताल को जाता है और दूसरा गुरला दर्रे को पार करके सीधा मानसरोवर तक जाता है।

मानसरोवर झील की परिक्रमा का मार्ग लगभग अस्सी किलोमीटर है। दूसरी ओर रक्षताल है। इन दोनों सरोवरों का जल जमता नहीं है, क्योंकि इनके नीचे गर्म पानी के सोते हैं।

मानसरोवर झील से लगभग 18 किलोमीटर तीस उतरकर तार्रचन नामक स्थान है। यहीं से कैलाश पर्वत की परिक्रमा आरम्भ होती है। कैलाश की परिक्रमा में लगभग तीन दिन का समय लगता है।

मानसरोवर तीन बड़ी नदियों सतलुज, सरयू तथा ब्रह्मपुत्र का उद्गम स्थल है।

ठहरने का स्थान

हर पड़ाव पर अपने साथ लाए गए तंबुओं में ठहरना होता है। आजकल मानसरोवर के पास ही ठहरने के लिए धर्मशाला बन रही है और अन्य जगहों पर जल्दी ही ठहरने खाने-पीने की सुविधाएं होने की आशा है।

अन्य आवश्यकताएं

1. मार्ग में भारतीय सीमा का जो अंतिम बाजार है, वहां से तिब्बती भाषा का जानकार एक मार्ग-दर्शक (गाइड) अवश्य साथ ले लेना पड़ता है, क्योंकि तिब्बत में कोई हिंदी या अंग्रेजी जानने वाला मिलना कठिन है। तिब्बत में पूरे समय तंबू में ही रहना होता है। इसलिये किराये का तंबू भी उसी स्थान से लेना पड़ेगा और तिब्बती सर्दी से बचने के लिए तिब्बत के गद्दे (भारी कम्बल) तथा भोजन के बर्तन भी वहीं से मिल जाते हैं।

2. तिब्बत में दाल नहीं पकती, कोई साग नहीं मिलेगा। चावल या आटा मिलेगा भी तो अत्यंत महंगा और बड़े कष्ट से। नमक को छोड़कर और कोई मसाला नहीं मिलता। कहीं-कहीं दूध, मक्खन, दही और छाछ मिलेंगी, परन्तु सब्जी नहीं। अतः तिब्बत में जितने दिन रहना हो, उतने दिनों के लिए भोजन की पूरी आवश्यक सामग्री भारतीय अंतिम बाजार से ही साथ ले लेनी चाहिए। चावल, आटा, आलू, चीनी-चाय, डब्बे का जमा दूध, मिट्टी का तेल, मसाले, मोमबत्ती आदि जो वस्तु आवश्यक हों, सब उसी बाजार से ले लिया जाना चाहिए। तिब्बती क्षेत्र में कुछ भी पाने की आशा नहीं करनी चाहिए।

3. मानसरोवर-कैलाश यात्रा में जब आप तिब्बत की सीमा पर पहुंचेंगे, तब कम्युनिस्ट चीन के सैनिक आपकी तलाशी लेंगे। पूजा-पाठ की पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य कोई भी पुस्तक, नक्शे, समाचार-पत्र, दूरबीन, कैमरा, बंदूक और ट्रांजिस्टर जैसे शस्त्र वे साथ नहीं ले जाने देंगे। अतः यदि आपके पास ऐसी सामग्री हो तो भारतीय सीमा में ही छोड़ दें या अंतिम डाकघर से उसे अपने घर पार्सल द्वारा भेज देना चाहिए।

4. जहां से बर्फ मिलना आरंभ होता है, वहां से भारतीय सीमा में लौटने तक प्रातः-सायं—दोनों समय चेहरे पर और हाथों में—विशेषतः हथेली के पृष्ठ भाग में वैसलीन अच्छी प्रकार लगाते रहिए। ऐसा नहीं करने से हाथ फट सकते हैं और मुख—विशेषतः नाक पर हिमदंश के घाव हो सकते हैं।

5. घाटी पार करने के दिन प्रातः सूर्योदय से जितना पहले चल सकें, चल देना चाहिए। सूर्य की धूप तेज होने पर बर्फ नरम हो जाएगी और उसमें पैर गड़ने लगेंगे। बर्फ पर धूप पड़ने से जो चमक होती है, उससे नेत्रों को बड़ी पीड़ा होती है। ऐसे समय धूप का चश्मा लगाने से यह कष्ट नहीं होगा।

2. पुष्कर

पुलस्त्य ऋषि ने भीष्म पितामह को विभिन्न तीर्थों का वर्णन करते हुए पुष्कर तीर्थ को सबसे अधिक पवित्र बताया है। तीर्थों का सामान्य परिचय देने के बाद उन्होंने एक-एक कर उनका वर्णन किया है। पुलस्त्य ऋषि की इस तीर्थ-सूची में पुष्कर तीर्थ सर्वप्रथम और सबसे अधिक महत्त्व का है।

पुष्कर का पवित्र सरोवर अजमेर से ग्यारह किलोमीटर पश्चिम की ओर है। पुष्कर और अजमेर के बीच में नाग पर्वत है। यहां पहाडी चट्टानों की संकीर्ण घाटी मे भारत की यह झील अवस्थित है,जहा अनतकाल से प्रतिवर्ष लाखों हिंदू यात्रा के लिए आते हैं। इस स्थान का नाम पुष्करराज है,जिसका अर्थ यह हुआ कि यह तीर्थ समस्त तीर्थों का राजा है। अन्य तीर्थस्थान—बदरी, पुरी, रामेश्वर और द्वारका के दर्शनों का फल तब तक अपूर्ण ही रहता है जब तक कि पुष्कर मे स्नान न कर लिया जाय। समूची सृष्टि के रचयिताब्रह्मा यहा सदा वास करते हैं। कार्तिक मास में पुष्कर-यात्रा करने से ब्रह्मपुरी मे वास करने का फल प्राप्त होता है। जन्म के पश्चात् मनुष्य से जो भी पाप हो जाते है,वे सभी यहा एक बार स्नान कर लेने से दूर हो जाते हैं।

धार्मिक पृष्ठभूमि

पद्मपुराण (सृष्टि, 15-19) मे पुष्कर तीर्थ का वर्णन विस्तार के साथ किया गया है। एक बार ब्रह्मा भूलोक का भ्रमण कर रहे थे। उन्होंने पुष्कर के निकट एक वन देखा। वह नंदनवन के समान सुंदर था और हरे-भरे वृक्षों, सुगधमय पुष्पों और मधुर फलो से भरा था। ब्रह्मा के हाथ मे एक कमल था और वे उस स्थान में उपस्थित होकर बहुत प्रसन्न हो रहे थे। वृक्षों ने पुष्पवर्षा करके उनका स्वागत किया। पितामह ब्रह्मा ने उनकी अभ्यर्थना स्वीकार की और उन वृक्षों से कहा कि वे जो वर चाहे माग ले। वृक्षों ने पितामह से अनुरोध किया कि वे सदा पुष्कर वन में निवास करें। ब्रह्मा ने वरदान दिया और वे वहां सहस्र वर्षों तक रहे।
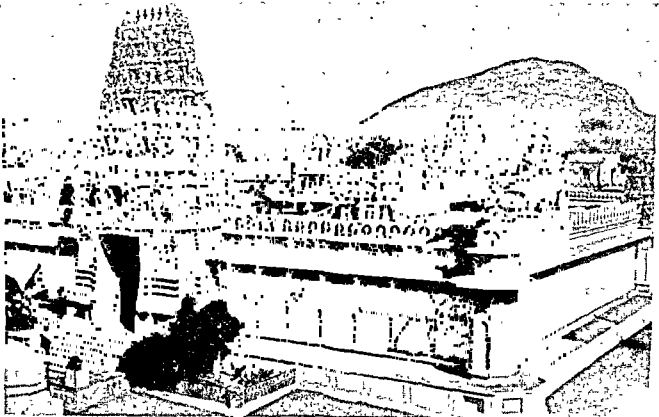
लक्ष्मी मंदिर, पुष्कर अजमेर
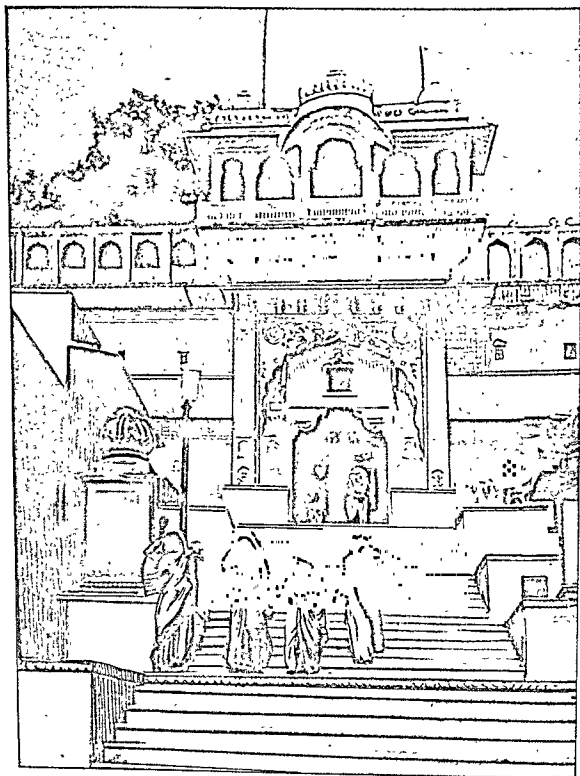
ब्रह्मा मंदिर पुष्कर

वराह मंदिर अंदर का दृश्य

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

पुष्कर की स्थापना ब्रह्माजी द्वारा हुई है।अत.यहां ब्रह्माजी के मंदिर का विशेष महत्त्व है। यह मंदिर सरोवर से कुछ दूर जाकर एक ऊंचे पहाडी स्थान पर बना हुआ है। इसमें प्रवेश करने के लिए संगमरमर निर्मित लगभग 50-60 सीढिया चढनी पडती है। मंदिर के प्रागण मे दाहिनी ओर तथा बाई ओर संगमरमर के दो सुदर गजराजो पर इद्र और कुबेर की प्रतिमाए बनी हुई है।

मंदिर के प्रागण मे दो-तीन और सीढिया चढने पर संगमरमर से निर्मित एक कलापूर्ण मडप है जिसके चौदह स्तंभ है। मंदिर मे अदर बहुमूल्य आभूषणों से युक्त ब्रह्माजी की चतुर्मुखी प्रतिमा है तथा निकट ही उनकी द्वितीय पत्नी गायत्री की भी सुदर प्रतिमा विद्यमान है।

मंदिर के पृष्ठ भाग मे एक ऊंची पहाडी पर ब्रह्माजी की प्रथम पत्नी सावित्री का मंदिर है। कहा जाता है कि सावित्री यज्ञ के अवसर पर ब्रह्माजी से रूठकर यहा चली आई थी। उन्होंने ब्रह्माजी को शाप दिया कि उनकी पूजा पुष्कर के अतिरिक्त ससार मे कही भी न होगी। अत. आज भी ब्रह्माजी की पूजा केवल पुष्कर मे ही होती है। बताया जाता है, श्री शकराचार्य ने यहा ब्रह्माजी की प्रतिमा स्थापित की थी। प्राचीन मंदिर औरंगजेब द्वारा नष्ट करवा दिया गया था। वर्तमान मंदिर ई सन् 1809 मे बना था।

पुष्कर को मंदिरो की नगरी कहा जा सकता है। यहा छोटे-बडे लगभग चार सौ मंदिर है। इनमें ब्रह्मामंदिर के अतिरिक्त डेढ सौ फुट ऊचा वराहजी का मंदिर है, जिसे सन् 1223-50 के बीच अजमेर के चौहान राजा आना (अर्णोराज) ने बनवाया था तथा बाद मे महाराणा प्रताप के भाई राणा सागर ने लाखो रुपये खर्च कर इसकी मरम्मत कराई थी। लेकिन औरंगजेब के जमाने मे इसे फिर तोड दिया गया। बहुत दिनों तक इस मंदिर का निर्माण न हो सका। आज जो मंदिर है उसका निर्माण राजा सवाई जयसिंह ने किया और नए विग्रह की स्थापना सन् 1727 मे हुई।

पुष्कर के मंदिरो मे ब्रह्माजी का मंदिर, राम मंदिर, वराहजी, आत्मतेश्वर महादेवजी, रंगजी और राम वैकुठ मंदिर, लक्ष्मी मंदिर प्रमुख है।

यहा आत्मतेश्वर महादेव का मंदिर प्राचीन नदी मंदिर भूगर्भ मे है। यह मंदिर किसी ने नही बनवाया। कहते हैं, स्वय महादेव जी यहा प्रकट हुए है। किन्तु इस प्राचीन मंदिर के ऊपर बना नया मंदिर अजमेर के मराठा शासक गुमानजी राव (1816 ई) द्वारा बनवाया गया है।

अन्य दर्शनीय स्थल

रामवैकुंठनाथ मंदिर—पुष्कर शहर मे यह सबसे विशाल मंदिर है। वैष्णव सम्प्रदाय के रामानुजाचार्य सता के भक्तों का यह प्रधान मंदिर है। इस मंदिर का विमान और गोपुरम,

3. विंदुसरोवर (सिद्धपुर)

भारत में जैसे पितृश्राद्ध के लिए गया प्रसिद्ध है, वैसे ही मातृश्राद्ध के लिए सिद्धपुर प्रसिद्ध है। इसे मातृगया-क्षेत्र कहा जाता है। इसका प्राचीन नाम श्रीस्थल है, किन्तु पाटन-नरेश सिद्धराज जयसिंह ने अपने पिता गुर्जरेश्वर मूलराज सोलंकी द्वारा प्रारंभ किये गये रुद्रमहालय को पूरा किया। तभी से इस स्थान का नाम सिद्धराज के नाम पर सिद्धपुर हो गया। यह सिद्धपुर प्राचीन काम्यकवन में पड़ता है। महर्षि कर्दम का यहीं आश्रम था और यहीं भगवान कपिल का अवतार हुआ।

यहां शुद्ध हृदय से जो भी कर्म किया जाता है, वह तत्काल सिद्ध होता है। औदीच्य ब्राह्मणों की उत्पत्ति यहीं से मानी जाती है। उनके कुल-देवता भगवान गोविन्दमाधव हैं।

धार्मिक पृष्ठभूमि

कहा जाता है किसी कल्प में यहीं देवता तथा असुरों ने समुद्र-मंथन किया था और यहीं लक्ष्मीजी का प्रादुर्भाव हुआ था। भगवान नारायण, लक्ष्मी के साथ यहां स्थित हुए, इससे इसे श्रीस्थल कहा गया।

सरस्वती के तट के पास ही प्रथम सतयुग में महर्षि कर्दम का आश्रम था। कर्दम ने दीर्घकाल तक तपस्या की। उस तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान नारायण प्रकट हुए। महर्षि कर्दम पर अत्यंत कृपा के कारण भगवान के नेत्रों से कुछ अश्रु-बिंदु गिरे, इससे यह स्थान बिंदु-सरोवर तीर्थ हो गया।

स्वयम्भुव मनु ने इसी आश्रम में आकर अपनी कन्या देवहूति को महर्षि कर्दम को अर्पित किया। यहीं देवहूति से भगवान कपिल का अवतार हुआ। कपिल ने यहीं माता देवहूति को ज्ञानोपदेश दिया और यहीं परमसिद्धि प्राप्त माता देवहूति की देह द्रवित होकर जलरूप हो गयी।

कहा जाता है, ब्रह्मा की अल्पा नाम की एक पुत्री माता देवहूति की सेवा करती थी। उसने भी माता के साथ कपिल का ज्ञानोपदेश सुना था, जिसका शरीर द्रवित होकर अल्पासरोवर बन गया।

पिता की आज्ञा से परशुरामजी ने माता का वध किया। यद्यपि पिता से वरदान मांगकर उन्होंने माता को जीवित करा दिया,

सिद्धेश्वर भगवान (लक्ष्मी देवी सहित)

सिद्धेश्वर जी

5. पंपा सरोवर (हासपेट, किष्किंधा)

पच सरोवरो में प्रसिद्ध पपा सरोवर दक्षिण मे है। पपा सरोवर के अलावा भी हासपेट मे अनेक प्रसिद्ध मंदिर एव दर्शनीय स्थल हैं।

पंपा सरोवर हासपेट स्टेशन से लगभग 36 किलोमीटर दूर तुंगभद्रा नदी के पार है। विजय नगर राज्य की प्राचीन राजधानी हम्पी के अवशेषो में सबसे दूर यही है। हासपेट स्टेशन से बस द्वारा तुगभद्रा नदी तक पहुचा जा सकता है। उसके बाद तुंगभद्रा नदी पार कर पपा सरोवर में स्नान किया जा सकता है।

हासपेट स्टेशन से सबसे नजदीक पडता है विरूपाक्ष मंदिर जो कि 16 किलोमीटर दूर है। तीर्थस्थली की यात्रा यही से शुरू की जाती है।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

हासपेट से लाकर बस यात्रियों को जहां उतारती है वही से लगभग एक किलोमीटर चलकर हम्पीश्वर या विरूपाक्ष का मंदिर पडता है।

चैत्र-पूर्णिमा को इस सडक पर भगवान विरूपाक्ष का रथ निकलता है। सडक के दोनों ओर कुछ दुकाने हैं। यात्री यहा मंदिर के घेरे मे ठहर सकते हैं। इसी सडक के पास काष्ठ-निर्मित दो ऊंचे रथ खडे रहते है।

पूर्व के गोपुर से मंदिर में जाने पर दो बडे-बडे आगन मिलते हैं। पहले आगन के चारो ओर मकान बने है, जिनमें यात्री ठहरते है। आंगन मे से ही तुगभद्रा की नहर बहती है। आगन के पश्चिम ओर गणेशजी और देवी के मदिर है।

इस आगन से आगे छोटे गोपुर से भीतर जाने पर बडा आगन मिलता है। इसके चारो ओर बरामदे तथा भवन बने है। इन मडपो एव भवनो मे विभिन्न देवताओ की मूर्तिया है। आंगन के मध्य में सुविस्तृत सभामडप है और उसमे लगा हुआ विरूपाक्ष-मंदिर है। मंदिर पर स्वर्ण-कलश चढ़ा है। यहां दो द्वार पार करने पर विरूपाक्ष शिवलिंग के दर्शन होते हैं। पूजा के समय शिवलिंग पर स्वर्ण की शृंगार मूर्ति स्थापित की जाती है।

विरूपाक्ष के निज मंदिर के उत्तरवाले मडप मे भुवनेश्वरी देवी की मूर्ति है और उससे पश्चिम मे पार्वतीजी की प्रतिमा है। उनके समीप ही गणेशजी तथा नवग्रह है।

मदिर के पिछले भाग से एक द्वार बाहर जाने का है। बाहर जाने पर एक सरोवर मिलता है, जिसके चारो ओर पक्के घाट है। वहा एक शिव-मंदिर है।

विरूपाक्ष मदिर के उत्तर भाग मे हेमकूट नामक एक पहाडी है, उस पर कई देवमंदिर है। मंदिर से अग्निकोण मे पास ही ऊची भूमि पर एक मडप मे लगभग बारह हाथ ऊची गणेशजी की मूर्ति है। इसकी सूड का कुछ भाग भग्न है। एक ही पत्थर की गणेशजी की इतनी बडी मूर्ति अन्यत्र कदाचित ही मिले।

पूरे हम्पी क्षेत्र मे स्थान-स्थान पर पहाडिया है और उनमे अधिकाश इसी प्रकार की बडी चट्टानों का ढेर मात्र है। उन चट्टानो के भीतर अनेक गुफाए हैं। इन हजारो मन की चट्टानो को इतने व्यवस्थित ढंग से रखना आश्चर्य की ही बात है। कहा जाता है कि श्री हनुमानजी तथा वानरो ने भगवान श्रीराम के निवास-विश्राम आदि के लिए इस प्रकार चट्टाने रखकर गुफाए बनाई थी।

बडे गणेशजी से थोडी दूर दक्षिण-पश्चिम मे एक छोटे गणेशजी की भग्न मूर्ति है। यह स्मरण रखने की बात है कि यह हम्पी नगर दक्षिण के वैभवशाली राज्य विजयनगर की राजधानी था। दक्षिण के मुस्लिम राज्यो के सम्मिलित आक्रमण मे यह राज्य ध्वस्त हुआ। आक्रमणकारियो ने उसी समय और पीछे भी यहा के मंदिरो तथा मूर्तियो को नष्ट-भ्रष्ट किया।

छोटे गणेश से दक्षिण-पूर्व लगभग पचास मीटर दूर श्रीकृष्ण मंदिर है। यहा से एक मार्ग विजयनगर राजभवन को जाता है। यह मदिर बहुत बडे घेरे मे है, किन्तु इसमे अब कोई मूर्ति नही है। इसके विशाल प्राकार, गोपुर आदि की कला यात्री को मुग्ध कर लेती है। इस मदिर के सामने मैदान है, जिसे किले का मैदान कहते है।

यहा से दक्षिण-पश्चिम खेतो के किनारे थोडी दूर जाने पर, एक घेरे के भीतर नृसिंह-मंदिर मिलता है। इसमे भगवान नृसिंह की विशाल मूर्ति है। नृसिंह भगवान के मस्तक पर शेषनाग के फण का छत्र लगा है। शेष के फण तक मूर्ति लगभग पंद्रह हाथ ऊची है। यह मूर्ति अपने सिंहासन तथा शेषनाग सहित एक ही पत्थर में बनी है।

माल्यवान पर्वत (स्फटिक शिला)—विरूपाक्ष मदिर से सात किलोमीटर पूर्वोत्तर में माल्यवान पर्वत है। इसके एक भाग का नाम प्रवर्षण गिरि है। इसी पर स्फटिक शिला मंदिर है। हासपेट से यहा तक सीधी सडक आती है। बस द्वारा सीधे स्फटिक शिला आ सकते है। श्रीराम-लक्ष्मण ने वर्षा के मास यहा व्यतीत किये थे।

सडक के पास ही पहाडी पर जाने का मार्ग है। वहा गोपुर से भीतर जाने पर एक परकोटे के भीतर, सुविस्तृत आगन के मध्य में सभा-मडप दिखाई देता है। सभा-मडप से लगा श्रीराम-मंदिर है। मंदिर मे श्रीराम-लक्ष्मण तथा सीताजी की बडी-बडी मूर्तिया हैं। सप्तर्षियो की भी मूर्तिया है। यह मंदिर एक शिला मे गुफा बनाकर बनाया गया है और शिला के ऊपर शिखर बना दिया गया है। शिखर के नीचे शिला का भाग स्पष्ट दीखता है।

मंदिर के दक्षिण-पश्चिम कोण पर 'रामकचहरी' नामक एक सुदर मडप है। पास मे एक जल का कुड है। कहते है, इसे श्रीराम ने बाण मारकर प्रकट किया था।

स्फटिक शिला के इस मंदिर के सामने की पक्की सडक से ही दो किलोमीटर आगे जाने पर सुग्रीव का मधुवन मिलता है।

ऋष्यमूक पर्वत—विरूपाक्ष मंदिर के सामने जो सडक है, उससे सीधे चले जाए तो वह मार्ग आगे कुछ ऊचा-नीचा अवश्य मिलता है, किन्तु ऋष्यमूक पर्वत के पास तक ले जाता है। यहा तुगभद्रा नदी धनुषाकार बहती है। अत वहा नदी मे चक्रतीर्थ माना जाता है। यहा नदी की गहराई अधिक है।

चक्रतीर्थ के पास पहाडी के नीचे श्रीराम-मंदिर है। इस मंदिर मे श्रीराम, लक्ष्मण तथा सीताजी की बडी-बडी मूर्तिया है।

श्रीराम मंदिर के पास की पहाडी को मातग पर्वत कहते हैं। यह ऋष्यमूक का ही भाग है। इस पर एक मंदिर है। कहा जाता है कि इसी शिखर पर मातग ऋषि का आश्रम था। इसके पास ही चित्रकूट और नालेद्र नाम के शिखर है। यहीं तुगभद्रा के उस पार दुदुभि पर्वत दीख पड़ता है।

चक्रतीर्थ से आगे जाने पर गधमादन के नीचे एक मडप दिखाई देता है। उसकी एक भित्ति मे भगवान विष्णु की मूर्ति खुदी है। उसके पास से गधमादन शिखर पर जाने का मार्ग है। कुछ ऊपर एक गुफा मे श्रीरगजी (भगवान विष्णु) की शेषशायी मूर्ति है।

वहा से नीचे उतरकर आगे जाने पर सीता कुड मिलता है। उसके तट पर श्रीसीताजी के चरण-चिन्ह है। कहते है, लका से लौटकर सीताजी ने यहा स्नान किया था। कुड के पश्चिम तट पर गुफा के पास तक शिला पर सीताजी की साडी का चिन्ह है। गुफा मे श्रीराम-लक्ष्मण और जानकी की मूर्तिया हैं।

विट्ठल मंदिर—सीता कुड से आगे कुछ दूर तुगभद्रा के दक्षिण तट पर कुछ ऊचाई पर भगवान विट्ठल के चरण चिन्ह है। दोनो चरणो के अग्रभाग परस्पर विपरीत है। कहते है कि भगवान विट्ठल यहा से एक डग में पढरपुर गये और वहा से फिर लौटे।

इस स्थान से कुछ पूर्व मे हम्पी क्षेत्र का सबसे विशाल एव कलापूर्ण विट्ठल स्वामी मंदिर है। इस मंदिर का घेरा बहुत बडा है। इसमे कोई मूर्ति नही है। इसके कल्याण-मडप की निर्माण-कला अद्भुत है। मंदिर के घेरे मे अनेक मडप तथा मंदिर है। उनकी कारीगरी दर्शक को चकित कर देती है। मंदिर के आगन मे पत्थर का बना सुंदर ऊचा गजरथ खडा है। उसमे बारीक खुदाई का शिल्प-सौंदर्य देखने योग्य है।

किष्किंधा—विट्ठल स्वामी मंदिर से लगभग डेढ किलोमीटर पूर्व आकर मार्ग उत्तर की ओर मुडता है। स्फटिक शिला से सीधे आनेवाला मार्ग यहा विट्ठल स्वामी मंदिर जाने वाले मार्ग से मिलता है। इस मार्ग से कुछ ही दूरी पर सामने तुगभद्रा नदी है।

तुगभद्रा की धारा यहा तीव्र है। नदी को पार करने के लिए यहा नौकाए नही चलती। नाविक लोग चमडे से मढ़ा एक गोल टोकरा रखते है। छोटे टोकरे में पांच आदमी बैठ सकते हैं और

श्री विट्ठल भगवान पढरपुर

बड़े टोकरे में लगभग बीस आदमी बैठ जाते हैं। इस टोकरे से ही नदी पार करनी पड़ती है।

तुंगभद्रा पार लगभग एक किलोमीटर पर अनेगुंदी ग्राम है। इसी को प्राचीन किष्किंधा कहा जाता है। इस गांव के दक्षिण-पूर्व में तुंगभद्रा के तट पर कुछ मंदिर हैं। उनमें बाली की कचहरी, लक्ष्मी-नृसिंह मंदिर तथा निर्माणाधीन पंपा मंदिर मुख्य हैं।

कुछ आगे सप्तताल बेध नामक स्थान है। यहां एक शिला पर भगवान राम के बाण रखने का चिन्ह है। इस स्थान के सामने तुंगभद्रा के पार बालि-वध का स्थान कहा जाता है। वहां सफेद शिलाएं हैं, जिन्हें बालि की हड्डियां कहते हैं। तुंगभद्रा के उसी पार तारा, अंगद और सुग्रीव नामक तीन पर्वत शिखर हैं।

सप्तताल बेध से पश्चिम में एक गुफा है। कहते हैं कि भगवान श्रीराम ने वहां बालि-वध के पश्चात् विश्राम किया था। गुफा के पीछे हनुमान पहाड़ी है।

पंपा सरोवर

तुंगभद्रा पार होने पर अनेगुंदी ग्राम जाते समय गांव के बाहर ही एक सड़क बाईं ओर पश्चिम में जाती है। उस सड़क से लगभग तीन किलोमीटर दूर पंपासरोवर है। मार्ग में पहले सड़क से कुछ दूर पश्चिम पहाड़ के ऊपर, पर्वत के मध्य भाग में गुफा के भीतर श्रीरंगजी तथा सप्तर्षियों की मूर्तियां हैं। आगे पूर्वोत्तर पहाड़ के पास ही पंपा सरोवर है।

यह एक छोटा सरोवर है। उसके पास मानसरोवर नामक एक और छोटा सरोवर है। पंपा सरोवर के पास पश्चिम में एक पर्वत पर कई जीर्ण मंदिर हैं।

अन्य दर्शनीय स्थल

पंपा सरोवर से डेढ़ किलोमीटर दूर अंजनी पर्वत है। यह पर्वत पर्याप्त ऊंचा है और ऊपर चढ़ने का मार्ग अच्छा नहीं है। पर्वत पर एक गुफा मंदिर है। उसमें माता अंजनी तथा हनुमानजी की मूर्तियां हैं। कहते हैं, माता अंजनी का यही निवास था।

हम्पी के परे 40 किलोमीटर के विस्तार में कहीं सुविस्तृत सरोवर, कहीं महल, कहीं राज भवन, कहीं गुफाएं और कहीं अद्भुत शिल्प मंदिर हैं। भवन तथा मंदिर अब सुनसान पड़े हैं। प्राय भग्न दशा में हैं, किन्तु वे अपने महान् गौरव के जीवंत प्रतीक हैं।

हासपेट से लगभग 5-6 किलोमीटर दूरी पर तुंगभद्रा नदी पर बना विशाल बांध है,जो दर्शनीय है। हासपेट के लिए यहां तक बसें चलती हैं

यात्रा मार्ग

बंगलौर से हासपेट के लिए बसें चलती हैं। हम्पी और हासपेट के मध्य 12-13 किलोमीटर का फासला है।
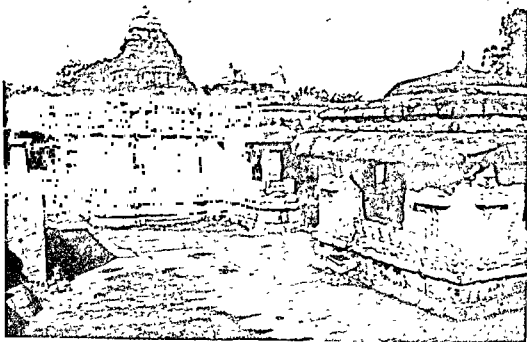
विरूपाक्ष मंदिर

खंड 5
शक्तिपीठ
एवं
कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण तीर्थ

शक्तिपीठ

धार्मिक पृष्ठभूमि—एक प्रसिद्ध पौराणिक कथा के अनुसार प्रजापति दक्ष ने अपने 'बृहस्पति-सक' नामक यज्ञ के आयोजन मे समस्त देवताओ को निमंत्रित किया, किंतु अपने दामाद शंकरजी को नही बुलाया। पिता के यहा यज्ञ का समाचार पाकर सती जाना चाहती थी, लेकिन शकरजी नही चाहते थे कि वह जाए। शकरजी के विरोध के बावजूद वह मायके चली गई। अपने पिता प्रजापति दक्ष के यज्ञ में अपने पति शिव का भाग न देखकर और पिता द्वारा शिव को बुरा-भला कहने पर सती ने वही प्राण त्याग दिए।

भगवान शंकर के गणो ने दक्ष पर हमला बोल दिया और शिव को भी वही बुला लाए। गुस्से मे शिवजी ने दक्ष का गला काट दिया और सती की प्राणहीन देह को कंधे पर रखकर भयंकर ताडव नृत्य करते हुए तीनों लोको में घूमते रहे। सारी सृष्टि के ध्वंस हो जाने की आशका से समस्त देवता विष्णु के पास पहुंचे और विष्णु ने सती की देह को काट-काट कर गिरा देने के लिए अपने सुदर्शन चक्र को भेजा। सती के शरीर के खंड तथा आभूषण 52 स्थानो पर गिरे। यही भारत के प्रसिद्ध शक्तिपीठ हैं। हर स्थान पर एक-एक शक्ति और एक-एक भैरव अपने-अपने स्वरूपो मे स्थित हुए। देश के इन सभी पीठों को 'महापीठ' कहा जाता है।

'तंत्र चूडामणि' मे वैसे तो 53 स्थान गिनाए गए हैं, लेकिन वामगड के गिरने के स्थानों का दो जगह उल्लेख है। पुनरुक्ति छोड देने पर 52 स्थान ही रहते हैं। 'शिव चरित्र' और 'दक्षियणी तंत्र' आदि पुस्तकों में 51 शक्तिपीठ गिनाए गए हैं। यहा पर हम 'तंत्र चूडामणि' के अनुसार 52 स्थानो का उल्लेख कर रहे हैं।

1. भैरवी देवी शक्तिपीठ—सती का ब्रह्मरंध्र यहां गिरा था और देवी भैरवी भीमलोचन भैरव के साथ यहां प्रतिष्ठित है।

खतरनाक मरुभूमि को पार कर यहा पहुचा जा सकता है। भैरवी के स्थान से बाहर एक उबलते हुए पानी का कुआ है। किसी भी पाप का सत्य उल्लेख कर नारीयल चढाया जाता है। पाप का निरामेय होने पर नारीयल वापस नही लौटता है। झूठ बोलने पर नारीयल कुए मे से वापस बाहर आ जाता है।

कुए के पास गुफा मे देवी भैरवी ज्योति रूप मे प्रतिष्ठित हैं। सत्य मानस से सकल्प करने से ज्योति प्रसाद ग्रहण करती है।

यात्रा मार्ग—पाकिस्तान जाने का परमिट लेकर विलोचिस्तान पहुचकर ऊटो के काफिले लास बेला तक जाते हैं—वही पर हिंगोम नदी के तट पर स्थित गुफा मे शक्ति हैं।

आवश्यकताएं—जगह का नाम है, 'मरुतीर्थ हिंगलाज'। ठहरने खाने-पीने के लिए कोई स्थान नही है। टेंट और खाने-पीने का सामान साथ ले जाना होता है। कोई कीमती चीज या अधिक पैसे साथ न रखें। रास्ते मे कभी-कभी कबीले वाले लूट लेते है।

2. विमलादेवी शक्तिपीठ—सती का किरीट यहां पर गिरा था और देवी विमला रूप मे किरीट भैरव के साथ गगा तट पर स्थित है।

अति प्राचीन एक मंदिर है। अनेक तांत्रिक सतो की यह साधना भूमि रही है।

यात्रा मार्ग—कलकत्ते के हावडा स्टेशन से बरहरवा लाइन पर खटारा घाट स्टेशन तक अनेक गाडिया उपलब्ध हैं। वहा से 8 किलोमीटर पर लालबाग कोर्ट नामक जगह तक एक दो गाडिया और कुछेक बसे उपलब्ध रहती हैं। तीन-चार किलोमीटर पैदल या रिक्शे से गगा तट पर पहुचने पर वट नगर मे देवी प्रतिष्ठित हैं। लालबाग से भी रिक्शे मंदिर तक ले जाते है।

3. उमाशक्ति देवी—यहा पर सती के केश गिरे थे। उमा नाम से देवी भूतेश भैरव के साथ प्रतिष्ठित है। भूतेश्वर महादेव का मंदिर प्रसिद्ध शक्तिपीठ है।

यात्रा मार्ग—मथुरा से वृंदावन जाते हुए लगभग दो किलोमीटर पहले ही यह मंदिर पडता है। भूतेश्वर महादेव का मंदिर जाने वाले यात्री यहा उतर सकते हैं। वृंदावन से रिक्शा या तागे मे भी आया जा सकता है।

4. महिषमर्दिनी देवी—यहा पर सती के तीनो नेत्र गिरे थे। देवी जाग्रत है और क्रोधीश भैरव के साथ प्रतिष्ठित हैं।

नगर मे महालक्ष्मी मंदिर एव अबाजी का मंदिर नाम से प्रसिद्ध है।

यात्रा मार्ग—मध्यप्रदेश के कोल्हापुर नगर मे मंदिर है। कोल्हापुर रेलवे स्टेशन पर उतरकर मंदिर पास ही है।

5. उग्रतारा शक्तिपीठ—यहा पर सती की नाक सुनदा देवी रूप मे त्र्यम्बक भैरव के साथ प्रतिष्ठित है। अति प्राचीन

अन्य दर्शनीय स्थल—ज्वालामुखी मंदिर क्षेत्र में गोरख डिब्बी, राधाकृष्ण मंदिर, शिवशक्ति मंदिर, लालशिवाला, वीरकुंड, कालीभैरव मंदिर, विल्वेकेश्वर मंदिर, सिद्ध-नागार्जुन, अंबिकेश्वर, तारादेवी, अष्टभुजा देवी, सेजा भवन तथा अकबर द्वारा चढ़ाया गया छत्र आदि दर्शनीय स्थल हैं।

14वीं शताब्दी मे मुहम्मद फिरोज तुगलक ने यात्रियो पर सवा रु. कर लगाया था। मंदिर को नष्ट करने के लिए जब उसने दत्तात्रेय की मूर्ति पर प्रहार किया तो उसमें से मधुमक्खियों ने प्रगट होकर उसे भगा दिया। 15वी शताब्दी मे अकबर ने नहर लाकर इन ज्वालाओ को बुझाने की चेष्टा की लेकिन असफल रहा,तो उसने श्रद्धा व नत होकर सवामन (20 किलो) सोने का छत्र चढाया। कहते हैं,अहकारी होने के कारण अकबर की यह भेंट किसी अज्ञात धातु में बदल गई।

कागड़ा से करीब 16 किलोमीटर दूरी पर कोटा स्टेशन है, जहा से 7 किलोमीटर दूरी पर पर्वत पर चामुण्डा देवी का मदिर स्थित है। इस पहाड़ी की दूसरी तरफ एक शिवमदिर है।

कांगड़ा मे महामाया वज्रेश्वरी (विद्येश्वरी का प्रसिद्ध मंदिर है। कहा जाता है कि यहा सती का मुण्ड गिरा था। मंदिर मे सती के मुण्ड (सिर) की ही मूर्ति विराजमान है।

यात्रा मार्ग—पठानकोट से 120 किलोमीटर दूर कांगड़ा स्टेशन है। यहा से लगभग 2 किलोमीटर दूर कांगडा मंदिर का स्टेशन आता है। यहां से ज्वालामुखी मंदिर करीब 2 किलोमीटर दूर पडता है।

यदि बस से पठानकोट से यात्रा की जाए तो बस स्टैण्ड से केवल एक किलोमीटर पर यह मदिर पडता है।

पठानकोट से वैद्यनाथ पपरोला जाने वाली रेलवे लाइन पर ज्वालामुखी रेलवे स्टेशन है। कागडा से यहा के लिए बसे चलती है। यह स्थान स्टेशन से 25 किलोमीटर दूर है।अत. अधिकतर यात्री बस से जाना ही पसद करते है।

ठहरने का स्थान—कांगडा से लेकर ज्वालामुखी तक अनेक धर्मशालाएं हैं जहा सर्दी मे कंबल आदि भी उपलब्ध होते हैं। नगर मे होटल और लॉज आदि भी हैं।

14. अवंती देवी—यहां पर सती का उर्ध्व ओष्ठ गिरा था। भैरव पर्वत पर देवी अवती लंबकर्ण भैरव के साथ अवस्थित हैं।

क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित भैरव पर्वत पर देवी का स्थान है।

यात्रा मार्ग—उज्जैन शहर में ही क्षिप्रा नदी तट पर भैरव पर्वत पर देवी मदिर है।

15. फुल्लरा देवी—सती का अधरोष्ठ यहां गिरा था। मां फुल्लरा विश्वेश भैरव के साथ अवस्थित है। फुल्लरा मंदिर भी प्राचीन है और नित्य पूजा होती है।

यात्रा मार्ग—दिल्ली कलकत्ता लाइन के बर्द्धमान स्टेशन पर उतर कर बस द्वारा लाभपुर जाया जा सकता है। दिल्ली कलकत्ता मेन लाइन पर अहमदपुर नामक स्टेशन पर उतरकर वहां से कटवा लाइन पर लाभपुर स्टेशन है। वहीं पास फुल्लरा मंदिर है। स्थान का नाम अट्टहास है।

16. भ्रामरी भद्रकाली—यहा पर चिबुक गिरने के कारण देवी भ्रामरी भद्रकाली रूप मे स्थित है, विकृताक्ष भैरव के साथ।

यात्रा मार्ग—नासिक पचवटी में भद्रकाली मंदिर ही शक्तिपीठ है।

(विवरण के लिए देखें नासिक पंचवटी)

17. महामाया देवी—सती का कंठ यहां गिरा था। महामाया, त्रिसंध्येश्वर भैरव के साथ अमरनाथ गुफा में ही प्रतिष्ठित है।

(विवरण के लिए देखें इसी खंड में अमरनाथ यात्रा)

18. नंदिनी देवी—कठहार गिरने से देवी नंदिनी रूप में प्रतिष्ठित हैं नदिकेश्वर भैरव के साथ।

यहां कोई मंदिर नही है। एक प्राचीन वट वृक्ष के नीचे शक्तिपीठ है।

यात्रा मार्ग—दिल्ली-हावडा लाइन पर वर्द्धमान स्टेशन से सैथिया स्टेशन जाकर या बर्द्धमान से सैथिया बस द्वारा जाकर। हावडा-क्यूल लाइन पर सैथिया स्टेशन है। सैथिया उतरकर लाइन के किनारे ही एक वटवृक्ष के नीचे देवी का स्थान है। स्थान का नाम है नदीपुर।

19. महालक्ष्मी भ्रमरांबा देवी—यहा पर ग्रीवा गिरने से देवी महालक्ष्मी रूप मे शम्बरानंद भैरव साथ अवस्थित हैं। श्री शैल पर मल्लिकार्जुन पर्वत पर भ्रमराबा मंदिर है।

(विवरण के लिए देखें खंड दो में मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग)

20. महाकाली—नला (आंत) गिरने से यहां पर नलादेवी महाकाली योगेश भैरव के साथ अवस्थित हैं।

मंदिर नही है। एक टीले पर आत जैसी शक्ल बनी है। उसी की पूजा होती है।

यात्रा मार्ग—हावडा-क्यूल लाइन पर नलहाटी स्टेशन पर उतरकर 3 किलोमीटर दूर एक प्रसिद्ध टीला है।

प्राचीन मंदिर का पता नही चलता है। प्रयाग शहर मे मुख्यतः अलोपी देवी के स्थान को ही शक्तिपीठ मानते है। वैसे नगर मे अक्षयवट के पास एक ललिता मंदिर है और शहर के मध्य भी एक और ललिता मंदिर है।

(प्रयाग यात्रा के लिए देखें खंड चार)

36. विमला—उत्कल विरजा क्षेत्र नाम से प्रसिद्ध यह पीठ जगन्नाथ पुरी मे है। सती की देह से नाभि गिरने से देवी विमला रूप में जगन्नाथ भैरव के साथ प्रतिष्ठित हैं।

(विस्तृत विवरण के लिए देखें खंड एक)

37. देवगर्भा काली—सती का कंकाल यहां गिरा। देवी काली रूप मे रुरु भैरव के साथ अवस्थित है।

शिव कांची मे काली मंदिर प्रसिद्ध पीठ है।

(विस्तृत विवरण के लिए देखें खंड तीन में कांचीपुरम्)

38. महाकाली—सती का वाम नितंब कालमाधव नामक स्थान पर गिरा, देवी काली रूप में असितांग भैरव के साथ प्रतिष्ठित हुई। प्राचीन स्थान कहा था, पता नहीं लगता। कालमाधव नामक स्थान भी भारत मे नही है।

39. देवी नर्मदा—सती का दक्षिण नितंब शोण नामक स्थान पर गिरा, देवी शोणाक्षी, भद्रसेन भैरव के साथ प्रतिष्ठित हैं।

अमरकटक प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। यही पर सोन नदी के उद्गम के पास प्रसिद्ध शक्तिपीठ है।

40. कामरूप कामाख्या—कामगिरि नाम से प्रसिद्ध कामाख्या मंदिर असम मे प्रसिद्ध शक्तिपीठ है। यहा पर सती की योनि गिरी थी। कामाख्या का एक और नाम नीलगिरि स्थित योनिपीठ भी है।

यात्रा मार्ग—गोहाटी से बस द्वारा कामगिरि पर जाया जाता है। पहाडी पर मंदिर है और रहने-ठहरने के स्थान भी। मंदिर मे मूर्ति नही है, गुह्याकार कुंड है। पुराना मंदिर सन् 1564 ई. मे मुस्लिम आक्रमणकारी 'कालापहाड़' ने ध्वस्त कर डाला था। वर्तमान मंदिर कूचविहार के राजा द्वारा बनवाया हुआ है। कामाख्या मे माघ, भादो व आश्विन मासो मे विशेषोत्सव का आयोजन होता है। यहीं पर लोहित कुंड, मानसकुंड आदि तीर्थ भी है।

कामाख्या मंदिर, गोहाटी (आसाम)

प्राचीन मंदिर का पता नही चलता है। प्रयाग शहर में मुख्यतः अलोपी देवी के स्थान को ही शक्तिपीठ मानते है। वैसे नगर में अक्षयवट के पास एक ललिता मंदिर है और शहर के मध्य भी एक और ललिता मंदिर है।

(प्रयाग यात्रा के लिए देखें खंड चार)

36. विमला—उत्कल विरजा क्षेत्र नाम से प्रसिद्ध यह पीठ जगन्नाथ पुरी में है। सतीकी देह से नाभि गिरने से देवी विमला रूप में जगन्नाथ भैरव के साथ प्रतिष्ठित है।

(विस्तृत विवरण के लिए देखें खंड एक)

37. देवगर्भा काली—सती का कंकाल यहा गिरा। देवी काली रूप में रुरु भैरव के साथ अवस्थित है।

शिव कांची मे काली मंदिर प्रसिद्ध पीठ है।

(विस्तृत विवरण के लिए देखें खंड तीन में कांचीपुरम्)

38. महाकाली—सती का वाम नितब कालमाधव नामक स्थान पर गिरा, देवी काली रूप मे असिताग भैरव के साथ प्रतिष्ठित हुई। प्राचीन स्थान कहां था, पता नही लगता। कालमाधव नामक स्थान भी भारत मे नही है।

39. देवी नर्मदा—सती का दक्षिण नितब शोण नामक स्थान पर गिरा, देवी शोणाक्षी, भद्रसेन भैरव के साथ प्रतिष्ठित हैं।

अमरकटक प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। यही पर सोन नदी के उद्गम के पास प्रसिद्ध शक्तिपीठ है।

40. कामरूप कामाख्या—कामगिरि नाम से प्रसिद्ध कामाख्या मंदिर असम मे प्रसिद्ध शक्तिपीठ है। यहां पर सती की योनि गिरी थी। कामाख्या का एक और नाम नीलगिरि स्थित योनिपीठ भी है।

यात्रा मार्ग—गोहाटी से बस द्वारा कामगिरि पर जाया जाता है। पहाडी पर मंदिर है और रहने-ठहरने के स्थान भी। मंदिर मे मूर्ति नही है, गुह्याकार कुड है। पुराना मंदिर सन् 1564 ई. मे मुस्लिम आक्रमणकारी 'कालापहाड' ने ध्वस्त कर डाला था। वर्तमान मंदिर कूचविहार के राजा द्वारा बनवाया हुआ है। कामाख्या मे माघ, भादों व आश्विन मासो मे विशेषोत्सव का आयोजन होता है। यही पर लोहित कुंड, मानसकुड आदि तीर्थ भी है।

कामाख्या मंदिर, गोहाटी (आसाम)

पहाडी से उतरने पर गोहाटी नगर में ब्रह्मपुत्र नदी के बीच एक चट्टान पर उमानद शिव मंदिर है—यही यहा के भैरव हैं और इनके दर्शन के बिना कामाख्या यात्रा अधूरी है। मंदिर मे जाने के लिए नौकाए उपलब्ध है।

कामाख्या मदिर के आसपास, असम मे और भी कुछ शक्तिपीठ,है जिनका नाम है—सौभार पीठ, श्रीपीठ, रत्नपीठ, विष्णुपीठ, रुद्रपीठ आदि।

41. गुह्येश्वरी महामाया—सती के दोनो घुटने नेपाल मे गिरे। देवी महामाया कपाल भैरव के साथ वागमति नदी के तट पर प्रतिष्ठित हुई।

नेपाल मे पशुपतिनाथ मंदिर के पास वागमति नदी के तट पर गुह्येश्वरी देवी का मदिर है।

(विस्तृत विवरण के लिए देखें पशुपतिनाथ यात्रा विवरण)

42. जयंती देवी—सती की वामजघा असम मे जयतिया पहाडी पर गिरी। देवी जयती, क्रमदीश्वर भैरव के साथ प्रतिष्ठित हुई।

यात्रा मार्ग—गोहाटी से शिलाग के लिए बस या टैक्सी द्वारा यात्रा की जाती है। शिलाग से 50 किलोमीटर पर जयंतिया पहाडी पर बाडरभाग ग्राम मे जयती देवी का मंदिर है।

43. सर्वानंदकरी पटनेश्वरी—सती की देह से दक्षिण जंघा मगध मे गिरी। देवी सर्वानदकरी, व्योमकेश भैरव के साथ प्रतिष्ठित है।

बिहार राज्य की राजधानी पटना मे पटनेश्वरी का मंदिर प्रसिद्ध शक्तिपीठ है।

44. भ्रामरी देवी—सती का बाया पैर त्रिस्रोता के किनारे गिरा और देवी भ्रामरी ईश्वर भैरव के साथ प्रतिष्ठित हुई।

पश्चिम बंगाल का शहर जलपाईगुडि, शिलिगुड़ी के पास है। जलपाईगुडि से शाल बाडी ग्राम के लिए रास्ता जाता है,यही तिस्ता (त्रिस्रोता) नदी के किनारे भ्रामरी पीठ है।

45. त्रिपुरसुंदरी—सती का दाया पैर त्रिपुरा में गिरा। देवी त्रिपुरसुदरी रूप मे त्रिपुरेश भैरव के साथ अवस्थित है।

असम राज्य के शिलचर स्टेशन पर उतरकर त्रिपुरा के लिए रवाना होना होता है। त्रिपुरा राज्य मे राधाकिशोरपुर ग्राम मे स्थित पर्वत पर त्रिपुरसुदरी का प्रसिद्ध मदिर है।

46. काली कपालिनी—सती का बायां टखना विभाष क्षेत्र मे गिरा। देवी कपालिनी, सर्वानद भैरव के साथ प्रतिष्ठित हैं।

पश्चिम बगाल मे तमलुक मे प्रसिद्ध काली मदिर शक्तिपीठ है।

यात्रा मार्ग—असनसोल से बस द्वारा तमलुक जा सकते हैं। असनसोल से मिदनापुर जिले में पंचकुड़ा स्टेशन जाकर वहा से भी बस द्वारा तमलुक जा सकते हैं।

47. सावित्री—सती का दायां टखना कुरुक्षेत्र में गिरा। देवी सावित्री, स्थाणुभैरव के साथ प्रतिष्ठित हैं।

कुरुक्षेत्र मे द्वैपायन सरोवर के पास शक्तिपीठ है।

(विस्तृत विवरण कुरुक्षेत्र में देखें)

कालीघाट कलकत्ता

48. इंद्राक्षी—सती का नूपुर लंका में गिरा, देवी इंद्राक्षी भैरव राक्षसेश्वर के साथ प्रतिष्ठित हुईं।

प्राचीन लंका का विवरण नही मिल पाता है। शास्त्रो मे श्रीलका का उल्लेख सिहल द्वीप के रूप मे है। कुछ विद्वानों का मत है, प्राचीन लका गुजरात में कही थी।

49. भूतधात्री युगाद्या—दाएं पैर का अंगूठा गिरने से देवी युगाद्या क्षीरकटक भैरव के साथ प्रसिद्ध हुईं।

बर्द्धवान स्टेशन से 35 किलोमीटर उत्तर की ओर क्षीरग्राम मे यह पीठ है।

50. अंबिका—दाएं पैर की उंगली गिरने से देवी अंबिका अमृत भैरव के साथ अवस्थित हैं।

जयपुर से 70 किलोमीटर उत्तर मे वैराट नामक ग्राम में शक्तिपीठ है।

51. कालिका देवी—सती के दाहिने पैर की चार अगुलियां यहां गिरी थी। देवी महाकाली के रूप मे नकुलीश भैरव के साथ प्रसिद्ध हैं—काली घाट मे।

कलकत्ते मे कालीघाट प्रसिद्ध प्राचीन मंदिर है। यही पर महाकाली शक्ति के रूप में अवस्थित है।

52. जयदुर्गा—सती के दोनों कान गिरने से यह स्थान कर्णाट प्रदेश के नाम से विख्यात हुआ। अब कर्नाटक बस जाने के बाद प्राचीन शक्तिपीठ का ठीक से पता नहीं चलता है।
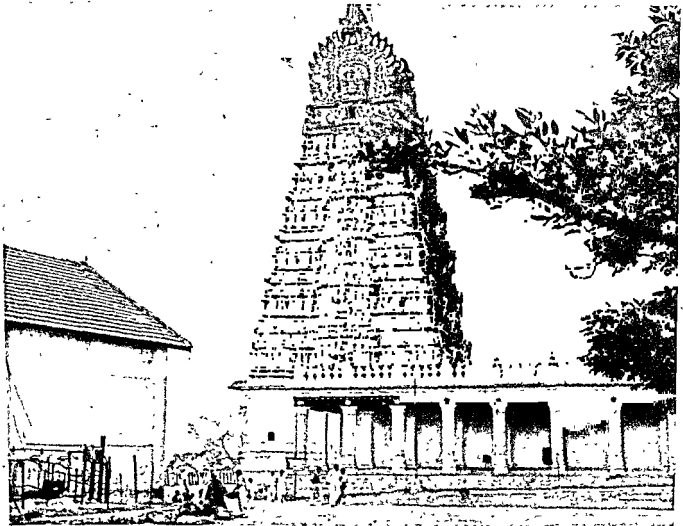
चामुण्डा पर्वत मंदिर का दृश्य

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण तीर्थ

1. गंगासागर

हिदुओ मे एक कहावत मशहूर है कि 'सारे तीर्थ बारबार गगासागर एक बार' जिससे यह साबित होता है कि गगासागर का महत्त्व तीर्थ स्थलो मे सर्वाधिक है।

धार्मिक पृष्ठभूमि

गगासागर या सागर सगम वह बिंदु है, जहा पावन गगा सागर से मिलती है, जिसका उल्लेख महाकवि कालिदास के 'रघुवश' में मिलता है। ईसा पश्चात् द्वितीय शतक के यूनानी इतिहासकार क्लॉडियस टोलेमी ने गगासागर का जिक्र अपने विश्व भूगोल की पुस्तक 'जिओग्राफिका हाएफा गासिस' मे किया है। उन्हे बगला राज्य के भूगोल के बारे मे पता था, जो आज के गगासागर के करीब के किसी इलाके मे स्थित था। मुसलमान इतिहासकार और दार्शनिक अलबेरुनि ने अपनी प्रसिद्ध रचना 'किताब-उल-हिद' मे भी गगासागर का उल्लेख किया है।

इतिहासकारो का विश्वास है कि सागरद्वीप और उसके आसपास के सुदरबन के इलाके को सत्रहवी शताब्दी के प्रारभिक काल मे अराकान से आने वाले मार्गो और पुर्तगालियो के हमलो के कारण जनशून्य होना पडा। 1584, 1688, 1822, 1876 मे आने वाले चक्रवातो के कारण भी यहा काफी प्राणहानि हुई।

हिदू मिथक के अनुसार देवताओ के राजा इंद्रदेव ने एक बार सागर राजा द्वारा अश्वमेध यज्ञ के लिए लाया गया घोडा कपिल मुनि के मंदिर के पास छुपा दिया। राजा के साठ हजार बेटो ने मुनि को इस चोरी के लिए जिम्मेदार ठहराया। इससे मुनि को क्रोध आया और उन्होंने राजा के पुत्रों को राख मे बदल डाला। बाद मे वह इस बात के लिए राजी हुए कि राज का कोई वशज यदि पावन गगा को यहा तक ले आए तो राजकुमार जीवित हो जाएगे। कई पीढियो के बाद इसी वश के राजा भागीरथ ने अपने तपोबल से गगा से यह आश्वासन प्राप्त किया कि वह सागरद्वीप पर जाएगी, लेकिन वह जब स्वर्गलोक से मृत्युलोक पर अवतरित हो तो उनके धारा प्रवाह को प्रतिबंधित करने के लिए कोई वहा उपस्थित हो। भगवान शिव ने हिमालय मे गंगा को अपनी जटा मे धारण किया। भागीरथ जब गगा को बगाल का रास्ता दिखा रहे थे, वह जाह्नन् मुनि के आश्रम के ऊपर से बह गई। मुनि ने गगा को पी लिया और भागीरथ के अनुनय विनय करने पर जानु से निकाल दिया, इसलिए बगाल मे गगा को जाह्नवी भी कहते है।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण तथा यात्रा मार्ग

सागरद्वीप मे केवल थोडे से साधु ही रहते हैं। यह द्वीप लगभग 150 वर्ग मील के लगभग है। आजकल यह वन मे आच्छादित और जनशून्य है।

इस सागरद्वीप मे जहा गंगासागर का मेला लगता है, वहा से दो-एक किलोमीटर उत्तर वामनखल नामक स्थान मे एक प्राचीन मंदिर है। उसके पास चंदनपीड़िवन मे एक जीर्ण मंदिर है और बुड़बुड़ी नदी के तट पर विशालाक्षी का मंदिर है।

इस समय जहा गगासागर पर मेला लगता है, पहले वहां गगाजी समुद्र में मिलती थी, किंतु अब गगा का मुहाना पीछे हट आया है। अब गगासागर (सागरद्वीप) के पास गगाजी की एक छोटी धारा समुद्र मे मिलती है।

गगासागर का मेला मकर-सक्रांति पर लगता है और प्राय पाच दिन रहता है। इसमे स्नान तीन दिन होता है। गगासागर मे कोई मंदिर नही है। मेले के कुछ दिन पूर्व एक मील जगल काटकर मेले के लिए स्थान बनाया जाता है। यहां कभी कपिल मुनि का मंदिर था, किन्तु उसे समुद्र बहा ले गया। अब तो कपिल मुनि की मूर्ति कलकत्ते मे रखी रहती है और मेले के एक दो सप्ताह पूर्व पुरोहितो को दे दी जाती है। यह मूर्ति लाल रग की है। रेत में चार फुट उचे चबूतरे पर, एक अस्थायी मंदिर बनाकर उसमे पुजारी कपिल मुनि की मूर्ति स्थापित कर देते हैं।

गगासागर मे यात्री प्राय रेत पर ही पडे रहते हैं। सक्रांति के दिन समुद्र से प्रार्थना की जाती है और प्रसाद चढाया जाता है तथा समुद्र-स्नान किया जाता है।दोपहर को फिर स्नान तथा मुडन होता है। यहा पर लोग श्राद्ध, पिंडदान भी करते हैं। इसके पश्चात् कपिल मुनि के दर्शन करते है। तीन दिन समुद्र-स्नान तथा दर्शन किया जाता है। इसके बाद लोग लौटने लगते है। पाचवे दिन मेला समाप्त हो जाता है।

गगासागर मे मीठे जल का अभाव है। मेले के समय यात्रियों के लिए जल की सामान्य व्यवस्था होती है। मीठे जल का एक कच्चा सरोवर है। उसमे मेले के समय कोई स्नान नही कर सकता है। घडे मे वहां का पानी ले जा सकते है। खारे पानी के दो-तीन सरोवर आसपास है।

गगासागर के लिए यात्री कलकत्ता से प्रायः जहाज द्वारा जाते हैं। कलकत्ता से लगभग 65 कि. मी. दूर 'डायमंड हारबर' स्टेशन है। वहां से नावे और जहाज़ भी गंगा सागर जाते है।

2. यमुनोत्री

सूर्य भगवान की पुत्री यमुना भी गगा की तरह हिमालय से जन्मी हैं। यमुना भी गगा की तरह ही बहुत पवित्र मानी जाती है। यमुना का स्मरण मात्र से ही पापो का नाश हो कर मन पवित्र हो जाता है।

उत्तराखड की यात्रा मे ऋषिकेश, बदरीनाथ, गगोत्री तथा यमुनोत्री आदि तीर्थो के दर्शन हो जाते हैं। यमुनोत्री का यह स्थान समुद्र-स्तर से दस हजार फुट की ऊचाई पर है।यहा कई गर्म पानी के कुड है, जिनका जल खौलता रहता है। यात्री लोग कपडे मे चावल आदि बाधकर इसमे डुबो देते है और वे पक जाते है। इस प्रकार यहा भोजन बनाने के लिए चूल्हा नही जलाना पडता। इन कुंडो मे स्नान करना सम्भव नही है और यमुना का जल इतना शीतल है कि उसमे स्नान करना भी मुश्किल है। इसलिए गर्म तथा शीतल जल मिलाकर स्नान करने के कुड बने है।

यमुनोत्री

धार्मिक पृष्ठभूमि

बहुत ऊंचाई पर कालिदगिरि से हिम पिघल कर कई धाराओ मे गिरता है। कालिद पर्वत से निकलने के कारण यमुनाजी कालिद-नंदिनी या 'कालिंदी' कही जाती हैं। वहा इतना अधिक शीत है कि बार-बार झरनो का जल जमता-पिघलता है। ऐसे शीतल स्थानो मे गरम पानी के भी झरने हैं तथा कुड है, जिनका पानी उबलता हुआ है, जिसमे हाथ डालने से ही फफोले पड जाते है।

कहा जाता है कि महर्षि असित का यहा आश्रम था। वे नित्य स्नान करने गगाजी जाते और निवास यही करते। वृद्धावस्था मे दुर्गम पर्वतीय मार्ग नित्य पार करना कठिन हो गया। तब गगाजी ने अपना एक छोटा-सा झरना ऋषि के आश्रम पर प्रकट कर दिया। वह उज्ज्वल जल का झरना आज भी बहा है। हिमालय मे गगा और यमुना की धाराए एक हो गई होती, यदि मध्य मे दड पर्वत न आ जाता। देहरादून के समीप भी दोनो धाराए बहुत पास आ जाती है।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

सूर्य-पुत्री यमराज-सहोदरा कृष्ण-प्रिया कालिदी का यह उद्गमस्थान अत्यन्त भव्य तथा आकर्षक है। इस स्थान की शोभा और ऊर्जस्विता अद्भुत है।

यहा मदिर मे यमुना की छोटी प्रतिमा है। यही पर पंडे धार्मिक कृत्य, तर्पण आदि कराते है।

यात्रा मार्ग

यमुनोत्री के लिए ऋषिकेश के टिहरी, धरासु बस का मार्ग है। इसके बाद लगभग 10 किलोमीटर खरस्याली होकर यमुनोत्री तक अत्यत दुर्गम पगडडी का रास्ता है।

यहा से एक सडक उत्तरकाशी को गई है, किन्तु वह पथरीली, खराब और जगल के बीच मे होकर जाती है। पहले यह मार्ग बहुत दुर्गम था, किन्तु अब राज्यसरकार की ओर से सडक बनवा दी गई है, जिससे बहुत सुगमता हो गई है।

यमुनोत्री से उत्तरकाशी जाने वाली सडक पर निम्न चट्टिया पड़ती है। यमुनोत्री से 18 किलोमीटर पर 'राणागाव' बारह किलोमीटर दूर 'कुयनरि,' 18 किलोमीटर पर 'उपरिकोट' और दस-बारह किलोमीटर के फासले पर उत्तरकाशी है।

विशेष जानकारी

1. यमुनोत्री, गगोत्री, बद्रीनाथ और केदारनाथ की पूरी यात्रा करनी हो तो यमुनोत्री से प्रारम्भ करे।

2 इन मे से एक या दो स्थान ही जाना हो तो भी यात्रा ऋषिकेश मे प्रारम्भ होती है।

3 मोटर-बस रोड बन रही है। मार्ग ऐसा है कि पहाड मे

यमुना के मंदिर का छोटा सा शिखर

पत्थर गिरने के कारण सडक बद हो जाती है। अत. मोटर-बस कहा तक के लिए मिलेगी, इसका पता ऋषिकेश मे ही चल सकता है।

4. जहा से पैदल जाना होता है, कुली मिलते है। एक कुली एक मन भार ले जाता है। कार्यालय में उनका नाम लिखवा कर ले जाना चाहिए। उनकी मजदूरी का रेट कार्यालय से पूछ ले।

5 इस उत्तरखड की पूरी यात्रा मे रबड के जूते चाहिए, जो फिसलने वाले न हो। साथ में एक मजबूत छडी सहारे के लिए और बरसाती रखना अच्छा है। छाता काम नहीं देता।

6. कोई अनजान फल, शाक, पत्ती को छुये नही, वे विषैले हो सकते है। बिच्छु, बूटी इधर बहुत है, जो छू जाय तो पीडा देती है।

7. प्यास लगने पर झरने का पानी सीधे न पीएं। अन्यथा 'हिल डायरिया' होने का भय है। मिश्री, किशमिश आदि कुछ अपने पास रखे और एक हल्का गिलास भी, थोडा बहुत खाकर पानी पीएं। पानी पहले लोटे या गिलास मे भर ले। एक मिनट पडा रहने दे, जिससे उसमें जो धूलकण हैं, नीचे बैठ जाए। नीचे का एक घूंट जल फेंक दे। फिर गिलास भरना हो तो ऐसा ही करे।

8. यमुनोत्री और केदारनाथ के मार्ग मे कहीं-कही जहरीली मक्खी होती है। काटने पर फोडे हो जाते हैं। अत. शरीर ढका रखे। काटने पर डिटोल, टिंचर आदि लगाए।

9 सर्दी बहुत पडती है। गरम कपडे साथ लेकर जाएं।

यात्रा का समय

यह यात्रा प्राय 15 अप्रैल से प्रारम्भ होती है और दीपावली तक चलती है।

3. गंगोत्री

गंगाजी तीर्थों का प्राण मानी जाती हैं। गगाजी यमुना की तरह हिमालय से उत्पन्न हुई हैं। जिस स्थान से गगाजी का प्रादुर्भाव हुआ है, उसे गंगोत्री कहते है।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

गगोत्री का मुख्य मदिर गगा मंदिर है। इस मदिर मे आदि शकराचार्य द्वारा प्रतिष्ठित गगाजी की मूर्ति है। राजा भगीरथ, यमुना, सरस्वती एव शकराचार्य जी की मूर्तिया भी हैं। मंदिर मे सुवर्णखचित गगाजी की मूर्ति है और छत्रमुकुट भी सोने का ही है। यात्रीगण मूर्ति को स्पर्श नही कर सकते। दूर से ही पूजा करते हैं। छुआछूत नही है। अछूत और सवर्ण सबके साथ एक ही प्रकार का व्यवहार होता है।

गगाजी के मंदिर के पास एक भैरवनाथ मदिर भी है। गगोत्री मे सूर्यकुंड, विष्णुकुड और ब्रह्मकुड आदि तीर्थ हैं। यही विशाल भगीरथशिला है। इस पर राजा भगीरथ ने तपस्या की थी। इस शिला पर पिडदान किया जाता है। यहां गगाजी को विष्णुतुलसी चढाई जाती है।

शीतकाल मे यह स्थान बर्फ से ढक जाता है। इसलिए पंडे चलमूर्तियो को 'मुखबा' ग्राम से एक मील दूर मार्कंडेय क्षेत्र मे ले आते है। वहीं शीतकाल मे उनकी पूजा होती है। कहा जाता है कि मार्कंडेय क्षेत्र मार्कंडेय ऋषि की तपःस्थली है।

गगोत्री स्थान समुद्रस्तर से लगभग दस हजार फुट की ऊचाई पर स्थित है। यह गगाजी के दक्षिणतट पर है। यहा कई

गगा मंदिर

धर्मशालाए है। यात्रियो को यहा सदावर्त भी मिलता है। गगाजी यहा केवल 44 फुट चौडी है और गहराई लगभग तीन फुट है।

गगोत्री से लगभग दो किलोमीटर नीचे गौरीकुड है। वहा जाने के लिए गगाजी को पुल से पार करना पडता है। इस कुड मे होती हुई केदार गंगा, भागीरथी मे मिलती है। गगाजी मे मिलने वाली यह पहली नदी है। केदार गगा के पानी का रग भूरा है।

गगोत्री से तीन किलोमीटर पर 'पातगनी' नामक स्थान है। कहा जाता है, पंच पाडवो ने बारह वर्ष तक यहा तप किया था। यह समस्त स्थान शीतकाल मे बर्फ से ढक जाता है।

अन्य दर्शनीय स्थल

गगोत्री से पच्चीस किलोमीटर आगे गोमुखी धारा है। यही गगाजी की उत्पत्ति का स्थान है। गोमुख द्वारा गगाजी की धारा पर्वत से बाहर निकली है, किन्तु यहा बर्फ इतनी अधिक रहती है और मार्ग इतना दुर्गम है कि प्रत्येक यात्री का वहा जाना सुगम नही है। कार्तिक से आषाढ़ तक नौ मास तक तो कोई जा ही नही सकता। श्रावण से आश्विन, इन्हीं तीन महीनो मे अपार सकट झेलकर कदाचित् कोई यात्री इस विकट मार्ग मे गमन करने में समर्थ हो सकता है।

गगोत्री के आसपास जगल भी खूब घना है, किन्तु गोमुखी स्थान वृक्षो से हीन है। गोमुख मे ही हिमधारा (ग्लेशियर) के नीचे से गंगाजी की धारा प्रकट होती है। इस स्थान की शोभा अनुपमेय है। यहा भगवती भागीरथी के दर्शन करके लगता है कि जीवन धन्य हो गया। यात्रा की थकान मिट जाती है। पावनी गगा के इस उद्गम में स्नान कर पाना मनुष्य का अहोभाग्य है।

गोमुख से लौटने में शीघ्रता करनी चाहिए। धूप निकलते ही हिमशिखरों से मनों भारी हिम-चट्टानें टूट-टूटकर गिरने लगती है। अत. धूप चढ़े इससे पूर्व चीडोवास के पडाव पर पहुच जाना चाहिए। गंगोत्री से गोमुख की यात्रा मे तीन दिन लगते हैं।

यात्रा मार्ग

यमुनोत्री से वापस गंगाजी तक लौट आना चाहिए। यहा से बसें आदि मिल जाती हैं। उत्तर प्रदेश सरकार ने इस क्षेत्र मे अनेक सडक मार्गों से तीर्थ-स्थानों को जोड दिया है। अत. अब पैदल यात्रा बहुत ही कम करनी पडती है। यमुनोत्री से 10 किलोमीटर लौट आने पर उत्तरकाशी के लिए मोटर-बसें आसानी से मिल जाती है। गगोत्री के लिए ऋषिकेश से भी बसें चलती है।

ठहरने का स्थान

गगोत्री के पास अनेक धर्मशालाए एवं आश्रम आदि हैं, जहा तीर्थ-यात्री ठहर सकते है। खाने-पीने का सामान भी उपलब्ध हो जाता है। उत्तरकाशी मे भी धर्मशालाए हैं।

5. वैष्णव देवी

जम्मू-कश्मीर क्षेत्र में स्थित 'वैष्णोदेवी' के परम पवित्र मंदिर का महत्त्व और प्रसिद्धि बहुत अधिक है। विशेषकर दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश से प्रति वर्ष लाखो यात्री यहा की तीर्थयात्रा करते हैं।

यहा महासरस्वती, महालक्ष्मी तथा महाकाली—ये तीनो महादेविया 'वैष्णवदेवी' के संयुक्त नाम से प्रतिष्ठित हैं। यहा की क्षेत्रीय भाषा में इन्हे 'वैष्णो देवी' कहा जाता है।

धार्मिक पृष्ठभूमि

ये तीनों देविया ही सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति, पालन तथा सहार की मुख्य आधार हैं। यथार्थ में ये सब अलग-अलग होते हुए भी एक हैं। इन पराशक्तियों को सहस्रो नामो से सबोधित किया जाता है। इनके सहस्रो स्वरूप है और ये विभिन्न प्रकार की लीलाए करने के लिए सहस्रो रूपो मे अवतरित होती रही हैं।

भगवती वैष्णव देवी का दरबार

वैष्णव देवी का एक रूप

श्रद्धालु भक्तजनो ने अपनी-अपनी भक्तिभावना प्रदर्शित करने के लिए विभिन्न स्थानों पर उनकी मूर्तियो एवं मदिरों की स्थापना की है। कई स्थानों पर इस पराशक्ति की मूर्तिया प्राकृतिक रूप मे प्रकट हुई हैं। भगवती 'वैष्णवदेवी' जिन्हे क्षेत्रीय भाषा मे 'वैष्णो देवी' के नाम से पुकारते है, इसी महिमामयी आदिशक्ति का एक स्वरूप है और त्रिकूट पर्वत की गुफा में प्राकृतिक रूप मे निर्मित तीन पिंडो के रूप मे प्रतिष्ठित हैं। वे अनेक नाम, रूप धारण करके विश्व, ब्रह्माड के प्रत्येक अणु तथा कण-कण मे प्रतिष्ठित हैं।

प्राचीन किंवदंती के अनुसार दक्ष के घर मे उत्पन्न वैष्णवदेवी का प्रारंभिक नाम सती था। यौवनावस्था मे पदार्पण करने पर उनका विवाह शंकर भगवान से हुआ। कालांतर में यही सती सीता का छद्म वेश धारण कर भगवान श्रीराम की परीक्षा लेने पहुची। फलस्वरूप शकर जी सती से रुष्ट हो गए। सती ने शकर भगवान को पुनः प्राप्त करने के लिए घोर तपस्या की और अपने उद्देश्य मे सफल हुई। कालातर मे सती पार्वती बनकर हिमालय में वास करने लगी। कहा जाता है कि यही पर सिद्ध, तपस्वी, किन्नर, देवता आदि पुण्यात्माएं आनंदकद महादेवजी की सेवा करते है। इन्हीं मान्यताओ के आधार पर भक्त लोग वैष्णवदेवी की यात्रा करते है।

कहा जाता है कि वैष्णवदेवी का स्थान अत्यत प्राचीन है, किन्तु वर्तमान समय मे इसकी प्रसिद्धि जम्मू के डोगराई नरेश रणजीत देव के कार्यकाल से हुई। डोगराई वशजो ने इस स्थान को अपनी आराध्य स्थली माना। जम्मू-कश्मीर के डोगराई राजा गुलाबसिंह ने मार्ग का नवीनीकरण कराकर स्वय वैष्णवदेवी के दर्शन किये। धीरे-धीरे आवागमन की सुविधाओ के बढ़ने से दर्शनार्थियो की सख्या बढ़ती गई।

वैसे तो वर्ष भर दर्शनार्थी वैष्णवदेवी की यात्रा करते रहते हैं, किन्तु नवरात्रि (आश्विन और चैत्र) मे यह यात्रा स्वयं मे महत्त्वपूर्ण बन जाती है। विशेषकर अक्तूबर और मार्च मास मे दर्शनार्थी जहां आध्यात्मिक सुख का अनुभव करते हैं, वहां वे प्राकृतिक सौन्दर्य से भी लाभान्वित होते हैं।

6. अमरनाथ

अमरनाथ की यात्रा बड़ी ही पुण्यप्रद, भक्ति और मुक्तिदायिनी है। सारे भारत के लोग इस यात्रा के लिए उसी चाव से आते हैं, जैसे काशी, विश्वेश्वर, बद्रीनाथ और केदारनाथ आदि तीर्थों को जाते हैं। इस स्थान की यात्रा कठिन अवश्य है। परपरा के अनुसार यहा प्राचीनकाल मे कितने ही ऋषि, मुनि और साधु-सत निवास करते थे।

अमरनाथ गुफा मे बर्फ से बने शिवलिंग की पूजा होती है। कुछ लोगो का विश्वास है कि अमरनाथ द्वादश ज्योतिर्लिंगो मे से एक है। इस गुफा की पहाडिया लगभग पाच हजार फुट ऊची हैं। कुछ चोटिया ऐसी हैं, जो गर्मियो मे भी सदा बर्फ से ढकी रहती हैं। अमरनाथ की पवित्र गुफा मे कोई मानव-निर्मित मंदिर नही है। न यह गुफा ही मनुष्य ने पहाडी काटकर बनाई है। यह एक खुली द्वारहीन खुरदरी ऊबड-खाबड गुफा है, जिसका निर्माण स्वय प्रकृति ने किया है।

अमरनाथ मंदिर मे बर्फ का शिवलिंग

किवदती है कि चातुर्मास की प्रतिपदा को हिम के लिंग का निर्माण अपने आप आरभ होता है और वह धीरे-धीरे शिवलिंग के आकार का बन जाता है तथा पूर्णिमा को परिपूर्ण होकर दूसरे पक्ष मे घटने लगता है। अमावस्या या शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को यह लिंग पूर्णत: अदृश्य हो जाता है। दूसरे मास मे फिर वही वृद्धि और लय का कार्यक्रम चलता है। कहा जाता है कि भगवान शिव इस गुफा मे पहले-पहल श्रावण की पूर्णिमा को आये थे। इसलिए उस दिन अमरनाथ की यात्रा का विशेष महत्त्व है। इस महीने तक अमरनाथ के मार्ग मे बर्फ छाई रहती है। किन्तु यह यात्रा कठिन अवश्य है, श्रावण के बाद तो शीघ्र ही वहां ठडा मौसम प्रारभ हो जाता है। इसलिए यात्रा के लिए सुविधाजनक श्रावण (अगस्त) का महीना ही है।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण एवं यात्रा मार्ग

दर्शनार्थियो का एक बडा जुलूस प्रतिवर्ष श्रीनगर से श्रावण-सुदी पचमी को रवाना होता है। इसका नेतृत्व कश्मीर शारदा पीठाधीश्वर श्रीशकराचार्यजी महाराज करते है। जुलूस के साथ एक रौप्य-निर्मित दड शिवजी के झडे के साथ भी आगे चलता है। साधु, नागा, महत, सत, वैरागी, सन्यासी और गृहस्थ आदि सभी तरह के लोग श्रद्धापूर्वक भारत के सभी भागो से श्रीनगर मे एकत्रित होने के बाद इस दिन प्रस्थान करते है। अमरनाथ के लिए इस वार्षिक सघ को सभी प्रकार की सहायता कश्मीर राज्य के धर्मार्थ विभाग की ओर से मिलती है। राज्य के सरकारी कर्मचारी—पुलिस आदि का प्रबध भी अच्छा खासा होता है। कपडे, छोलदारी, दवाखाना आदि यात्रीदल के साथ रहता है।

सघ श्रीनगर से, जो 5260 फुट की ऊंचाई पर है, रवाना होता है और पहले दिन दक्षिण-पूर्व दिशा मे स्थित पामपुर (पद्मपुर) पहुचता है, जो 15 किलोमीटर के अतर पर है। पामपुर केसर की क्यारियों के लिए प्रसिद्ध है। आश्विन पूर्णिमा (अक्तूबर) में यहां केसर फूलता है। दूसरे दिन ... का जुलूस अवतीपुर पहुंचता है, जो दक्षिण-पूर्व ... आगे चलकर आता है। तीसरा पड़ाव ... यहा से यात्री अनंतनाग होकर गुजरते हैं ... ऊंचाई पर स्थित है। फिर ... (मार्तंड...) पहुचते हैं। ...

7. पशुपतिनाथ

शिवजी की अष्टमूर्तियों में नेपाल में स्थित पशुपतिनाथ महादेव की मूर्ति का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

पशुपतिनाथ का मंदिर नेपाल राज्य की राजधानी काठमाडू मे है। काठमाडू नगर विष्णुमती और बागमती नामक नदियों के सगम पर बसा है। इनमें से बागमती नदी के तट पर नेपाल के रक्षक मछदरनाथ (मत्स्येन्द्रनाथ) का मंदिर है। पशुपतिनाथ का मंदिर विष्णुमती नदी के तट पर है। यात्री विष्णुमती मे स्नान करके दर्शन करने जाते हैं।

नेपाल के पशुपतिनाथ महादेव यजमान मूर्ति के तीर्थ—पशुपतिनाथ लिगरूप में नही, मानुषी विग्रह के रूप मे विराजमान हैं। विग्रह कटिप्रदेश के ऊपर के भाग का ही है। मदिर चीनी औरजापानी ढग का बना हुआ है और नेपाल राज्य की राजधानी काठमाडू मे बागमती नदी के दक्षिण तट पर आर्याघाट के समीप अवस्थित है। इसके आसपास चादी का जगलाहै, जिसमे पुजारी को छोडकर और किसी का भी प्रवेश नहीं हो सकता है। नेपाल राज्य में बिना पासपोर्ट के भारत के लोगो का प्रवेश सम्भव है। नेपाल-नरेश अपने को पशुपतिनाथ का दीवान कहते हैं।

लोगो मे यह बात प्रसिद्ध है कि पशुपतिनाथ की मूर्ति पारस की है, किन्तु यह भ्रम मात्र है। यह पचमुख शिवलिग है, जो भगवान शकर की अष्टतत्त्व-मूर्तियो में एक माना जाता है। महिषरूप धारी भगवान शिव का यह शिरोभाग है। पास ही एक मडप में नदी की मूर्ति है। पशुपतिनाथ के मंदिर के समीप ही देवी का विशाल मंदिर है।

पशुपतिनाथ-मदिर से थोडी ही दूर पर गुह्येश्वरी देवी का मदिर है। यह मदिर विशाल और भव्य है।यह 51 शक्तिपीठो मे से एक है। सती के दोनो जानु यहा गिरे थे।
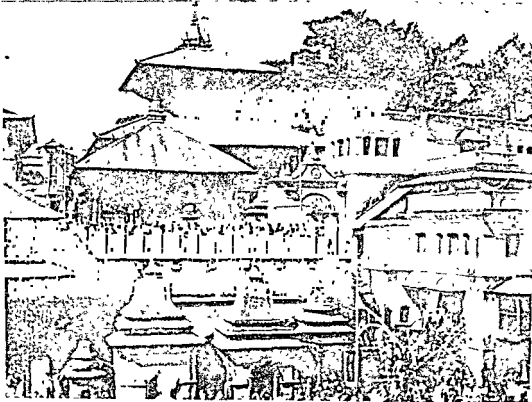
पशुपतिनाथ मंदिर, काठमाडू (नेपाल)

अन्य दर्शनीय स्थल

मुक्तिनाथ काठमाडू से लगभग 280 किलोमीटर दूर है। यहा आने के लिए गोरखपुर से भी एक मार्ग है। काठमाडू से हवाई जहाज द्वारा पोखरा आना पडता है। यदि गोरखपुर से आना हो तो गोरखपुर से नौतनवा ट्रेन से और नौतनवा से भैरवहा मोटर से आकर भैरवहा से पोखरा हवाई जहाज से जा सकते हैं। गोरखपुर से सीधे भैरवहा तक मोटर बसें भी आती हैं। यदि हवाई जहाज से यात्रा न करनी हो तो गोरखपुर से भैरवहा मोटर से, भैरवहा से बुटवल मोटर से और वहा से पैदल यात्रा पालपा, बागलुग होकर करनी पडती है। इस मार्ग से मुक्तिनाथ तक पैदल लगभग सौ किलोमीटर चलना पडता है। मुक्तिनाथ मे धर्मशाला है,जोकि मुक्तिनाथ मंदिर से डेढ़ किलोमीटर पहले ही मिल जाती है।

नेपाल यात्रा मार्ग और आवश्यकताएं

काठमाडू तक भारत के मुख्य शहरों से हवाई यात्रा की जा सकती है। बिहार राज्य में पूर्वोत्तर रेल सेवा का स्टेशन 'रक्सौल' है। रक्सौल पहुचकर काठमाडू जाने के लिए बस में सीट रिजर्व करवा ले और यात्रा के दिन तक रक्सौल में ठहरें। यहा धर्मशाला और गेस्ट हाउस हैं। यात्रा के दिन बस प्राप्त करने के लिए रिक्शे से बार्डर पार कर 'बीरगंज' बस स्टैंड पहुचें। बसें सुबह चलती हैं। शाम तक बस काठमाडू पहुचा देती है। रास्ता घुमावदार और पहाड़ी है। सिर चकराता है। सुबह यात्रा आरंभ करने से पहले अधिक खाएं नहीं। नाश्ते का सामान साथ रख लें और नींबू, संतरा आदि साथ रख लें। उल्टी आने पर नींबू चूसें और तबीयत ठीक हो जाने पर हल्का भोजन करें। रास्ते में भोजन आदि की सुविधा उपलब्ध है। काठमाडू में ठहरने के लिए अनेक होटल, लॉज, गेस्ट-हाउस और धर्मशालाएं हैं।

यहा पर अधिकतर भारतीय पैसा नहीं चलता है। नेपाली करन्सी जगह-जगह पर बैंक द्वारा उपलब्ध है। यात्रा के दौरान खर्चे के लिए पैसा बदल लें।

काठमाडू में यातायात के लिए रिक्शा और टैक्सी उपलब्ध है। जहा तक सभव हो टैक्सी से यात्रा करें, क्योंकि रास्ता चढ़ाई-उतराई का है, रिक्शे से कष्ट होता है।

पशुपतिनाथ का मंदिर काठमांडू शहर से चार किलोमीटर दूर है और रास्ते में दोनों ओर सैकड़ों दर्शनीय मंदिर हैं। सभी मंदिर देखने हों तो पैदल यात्रा करें।
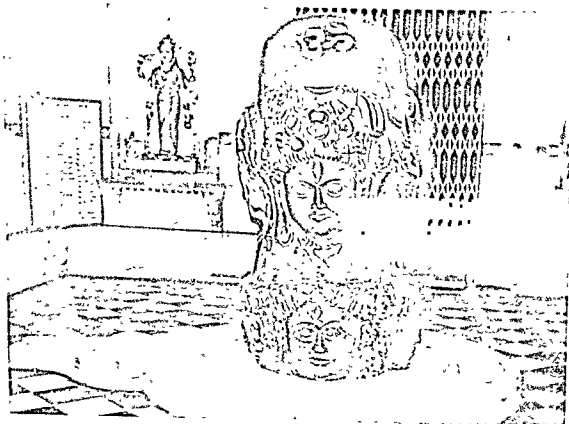
पशुपतिनाथ की भव्य प्रतिमा

8. कुरुक्षेत्र

एक दूसरे के साथ युद्ध करने के लिए जहा पर कौरवो और पाडवो की सेनाए इकट्ठी हुई थी, उस धर्मक्षेत्ररूपी कुरुक्षेत्र के वर्णन से 'श्रीमद्भगवद्गीता' की शुरूआत होती है। धर्मक्षेत्र का अर्थ है पुण्यभूमि। यह वह धरती है, जहा भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को भगवद्गीता का उपदेश देकर विश्व को चिरकालीन साहित्य प्रदान किया।

धार्मिक पृष्ठभूमि

इस पवित्र स्थान का इतिहास अत्यत पुराना है। ऋग्वेद में 'कुरुश्रवण' नाम के राजा का उल्लेख है। ब्राह्मण-ग्रथो के काल मे एक पुण्यभूमि के रूप मे कुरुक्षेत्र का बडा महत्त्व था। उस समय यह स्थान वैदिक सस्कृति का केद्रस्थल गिना जाता था। देवता लोग यहा पर बड़े-बडे यज्ञ करते थे। और कुरुक्षेत्र यज्ञो की वेदी के रूप मे विख्यात था।

सरस्वती नदी का महत्त्व प्राचीन काल से ही है। विशेषकर, जहा वह कुरुक्षेत्र मे लुप्त हुई थी, उस जगह को तीर्थस्थल की तरह का महत्त्व महाभारत के समय से भी पहले से मिलता चला आ रहा है। ऋग्वेद मे इस नदी को 'पतितपावन' तथा उच्च विचार तथा सत्यमुक्त मधुर भाषण की प्रेरणादायिनी जननी के रूप मे वर्णित किया गया है।

पुराण के अनुसार, जो जगह सात कोस तक सवरा के पुत्र कुरु ने सोने के हल से जोती थी, उसे कुरुक्षेत्र के नाम से जाना जाता है। कुरु ने यहा पर उग्र तप किया और भूमि को जोता, जिससे इस भूमि पर देह छोडकर उसे स्वर्ग मे वास मिला। उसके इन

श्रीभगवद्गीता मंदिर, कुरुक्षेत्र

प्रयासो को इंद्र ने पहले तो हसी मे उडा दिया, लेकिन बाद मे उसके महत्त्व को स्वीकार किया। लेकिन दूसरे देवताओं ने बिना यज्ञ किये स्वर्ग प्राप्ति के विषय मे शंका दिखाई। अत मे इद्र और कुरु के बीच ऐसा समझौता हुआ कि कुरुक्षेत्र मे जो व्यक्ति तप करते हो, या युद्ध करते हुए मृत्यु को प्राप्त हो, उसे स्वर्ग मे स्थान मिलेगा। इस प्रकार यह स्थल युद्ध और तप की भूमि बना और तब से कुरुक्षेत्र का पर्याय धर्मक्षेत्र बना।

भगवद्गीता का उपदेश स्थल
ज्योति सर, कुरुक्षेत्र
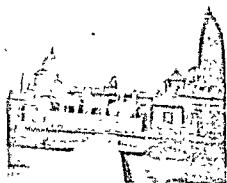
महाभारत के वनपर्व के 83वे अध्याय में, विषादयुक्त युधिष्ठिर ने कुरुक्षेत्र को एक अत्यत पवित्र स्थान बताया है। इस विधान के अनुसार सरस्वती नदी के दक्षिण और उत्तर मे फैले विस्तार को 'कुरुक्षेत्र' कहा जाता है। वहा बसे हुए लोगो को स्वर्ग मे वास करने के समान मानकर उन्हे भाग्यशाली माना जाता था।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

कुरुक्षेत्र के आसपास सात पवित्र वन होने का पुराणो मे उल्लेख है—काम्यकवन, अदितिवन, व्यासवन, फलकीवन, सूर्यवन, मधुवन और सीतावन।

कुरुक्षेत्र को 'सनिहति' के रूप मे भी पह ज
अमावस्या के दिन सारे तीर्थ यहा पर एकत्र .

कुरुक्षेत्र प्रदेश में और उसके आस-पास सबसे अधिक उपतीर्थ हैं। महाभारत के अनुसार 'कुरुक्षेत्र जाने के संकल्प मात्र से या वायु द्वारा उड़ती हुई कुरुक्षेत्र की धूल के स्पर्श से भी मनुष्य पापमुक्त हो जाता है।''

वराह अवतार के समय वराह के रूप में भगवान विष्णु जहां खड़े हुए थे, वह 'वराहतीर्थ' भी यहीं पर है।

श्रीशुकदेव मंदिर, शुक्रताल

थोड़ी दूरी पर 'व्यासस्थली' है, जहां शुकदेव के विरह दुःख में व्यास ने मरने का निर्णय लिया था, लेकिन देवताओं ने बीच में पड़कर किसी तरह से उनकी जिंदगी बचाई थी।

उसके बाद 'सरस्वतारण्यवन' नामक स्थल आता है। तत्पश्चात् वहां 'ब्रह्मसर' है, जहां पर महाराज कुरु ने तपस्या की थी।

एक 'चक्रतीर्थ' नामक स्थल भी वहां पर है। फिर उसके बाद 'अस्थिपुर' नामक स्थल है, जहां पर महाभारत के युद्ध में मारे गये योद्धाओं के शवों की दाह-क्रिया की गई थी।

उसके बाद प्रसिद्ध 'पृथूदक' तीर्थ भी वहां पर है। कुरुक्षेत्र को पवित्र कहा जाता है, लेकिन उससे भी पवित्र सरस्वती नदी कहलाती है और उससे भी पवित्र वहां के तीर्थ कहलाते हैं। लेकिन सबसे अधिक पवित्र तो 'पृथूदक' तीर्थ है। इसी को आज करनाल जिले के 'पेहोआ' के नाम से जाना जाता है।

इस स्थान पर 'तैजस' नामक तीर्थ है, जिसमें वरुण का मंदिर है। इसमें ब्रह्मा आदि देवताओं ने देवों के सेनापति कार्तिकेय की प्रतिष्ठा की थी।

सूर्यग्रहण के समय सन्निहित तीर्थ में स्नान तथा दान करने वाले को अश्वमेध यज्ञ करने का पुण्य मिलता है। यह तीर्थ 'रुद्राद' भी कहा जाता है। यहां पर एक छोटा कुंड है और कुंड के किनारे लक्ष्मी नारायण का मंदिर।

9. मणिकर्ण

यह प्रसिद्ध तीर्थ हिमालय के चरणों में हारिंद्र नामक सुरम्य पर्वतशृंखला (कुल्लू घाटी) में पार्वती और व्यास नदियों की धाराओं के बीच है। इसके पश्चिम में शीतल एवं गरम जल के सरोवर और पूर्व में ब्रह्मगंगा है।

धार्मिक पृष्ठभूमि

एक पौराणिक कथा के अनुसार कभी शिव-पार्वती ने यहां के शीतल एवं उष्ण सरोवर में जलक्रीडा की थी। जलक्रीडा के समय पार्वती के कर्णफूल की मणि जल में गिर गई। शिव ने अपने गणों को मणि ढूंढने का आदेश दिया, किंतु गणों को वह न मिली। शिव ने क्रुद्ध हो कर अपना तीसरा नेत्र खोला तो शेषनाग भयभीत हो गये। तभी इस स्थान पर ऊर्ध्व धारा में से मणि प्राप्त हो गई।

इसी कारण इस स्थान का नाम मणिकर्ण हो गया।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण एवं सुविधाएं

प्राकृतिक संपदा से भरपूर इस क्षेत्र में होकर मणिकर्ण गांव और तीर्थ तक जाते-जाते यात्रियों को यह भी ध्यान नहीं रहता कि वे इतना लंबा मार्ग पार कर आये हैं। मणिकर्ण तीर्थ की छटा देख कर यात्रियों का मन खिल उठता है।

व्यास नदी का एक दृश्य

यहा पहुचने पर यात्री गरम जल के कुडो मे स्नान करते है। स्त्रियो के स्नान के लिए अलग कुड है। स्नान के पश्चात् यात्रियो को सुगधित चाय पिलायी जाती है। फिर आधे घटे बाद भोजन कराया जाता ह। यह सब व्यवस्था तीर्थ की ओर से है। भोजन बडा स्वादिष्ट होता है। रात्रि मे यात्रियो के ठहरने की समुचित व्यवस्था है। उन्हे गद्दे, कबल, तकिये आदि उपलब्ध होते हैं। यात्रियो को किसी प्रकार की कठिनाई नही होती। यदि किसी यात्री को सर्दी, जुकाम या बुखार हो जाये तो यहा पर ऐसे गरम कमरे है, जिनमे थोडी देर रहने पर सर्दी, जुकाम आदि तत्काल दूर हो जाता है।

मणिकर्ण अग्नितीर्थ भी कहलाता है ,क्योंकि मठ मे अग्नि रहती है।गरम पानी के सरोवरो मे हर समय पानी जमीन से अपने आप ऊपर निकलता और उबलता रहता है। गरम पानी की भाप बादलो के रूप मे ऊपर उठती रहती है। इस से ऐसा लगता है जैसे चारो ओर कोहरा छाया हआ है। यहा गरम जल के अनेक स्रोत ह। जमीन भी इतनी गरम रहती है कि खडाऊ पहन कर चलना पडता है। गरम जल के स्रोत मे ही भोजन बनाया जाता है। तीर्थ की ओर से यात्रियो का भोजन भी इन्ही गरम स्रोतो मे तैयार होता है। यहा के सत बाबा हरिजी का कथन है कि जर्मन वैज्ञानिको ने इन गरम जल स्रोतो को विचित्र बताया है,क्योकि गधक के चश्मो मे भोजन नही पक सकता है। अत यहा के जल स्रोतो मे रेडियम हो सकता है। गरम स्रोत के अलावा यहा अत्यत शीतल जल के सरोवर भी है। यहा की वन सपदा मे चीड, फल वाले वृक्ष तथा भोज-पत्र के अतिरिक्त स्वादिष्ट जगली बादाम, जगली जामुन, गुच्छी, ढीगरी, जगली गोभी, बनफशा तथा अनेक प्रकार की जडी-बूटिया पाई जाती है।

इस पावन तीर्थ के मध्य पार्वती नदी के तट पर भगवान शकर का प्रसिद्ध मदिर है। गांव मे मनोकामना देवी का मदिर है, जहा यात्री अपनी मनोकामनाओ की पूर्ति की प्रार्थना करते है।

मणिकर्ण के निकट ही अन्य तीर्थ रूद्रनाग है, जहा से जल नागफन की तरह बहता है। एक अन्य स्थान ब्रह्मगगा है, जहा ब्रह्मा ने तपस्या की थी।

यात्रा मार्ग

मणिकर्ण पहुचने के लिए पठानकोट से जोगिंद्र, मडी और भूअतर होते हुए जाना पडता है। दूसरा मार्ग कुल्लू से छह मील दूर है। भुअतर से दायी ओर व्यास-पार्वती सगम पर बने काठ के पुल पर से होकर पहाडी की तलहटी मे पार्वती नदी के किनारे-किनारे लगभग तीस किलोमीटर लबा मार्ग है। इस मार्ग से घोडो पर बैठ कर मणिकर्ण तक पहुचा जा सकता है। अब यहा सडक भी बन गई है और कोई दो फर्लांग ही पैदल चलना पडता है।
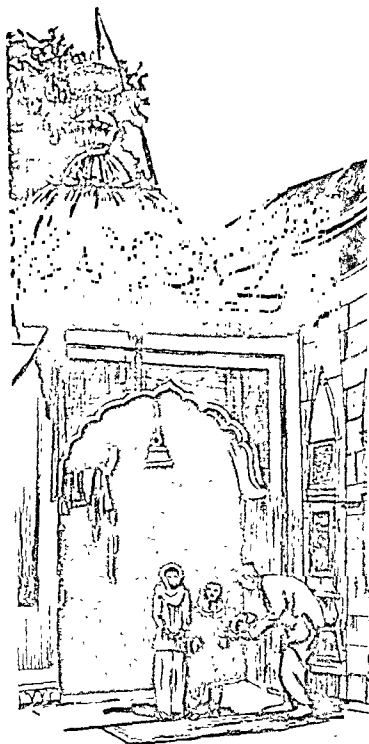
ज्वालामुखी मदिर

10. चित्रकूट

चित्रकूट, मदाकिनी नदी के किनारे भगवान रामचद्रजी से सम्बन्धित रमणीक तीर्थ-स्थान है। चित्रकूट, इलाहाबाद (प्रयागराज) के निकट है, परन्तु इसका रेलवे स्टेशन नहीं है। यहा तक पहुचने के लिए कर्वी नामक एक छोटे रेलवे स्टेशन पर उतर जाना पडता है। कर्वी से चित्रकूट आठ किलोमीटर दूर है। वहा पहुचाने के लिए बस और तागे मिलते हैं।
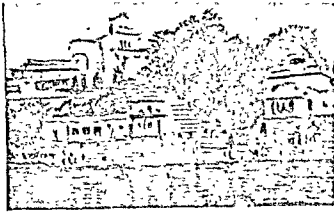
रामघाट

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

चित्रकूट नाम की एक टेकरी है। जब रामचद्र वनवास को जा रहे थे, तब वे सीता और लक्ष्मण के साथ कुछ दिनो तक यही रहे थे। इसी स्थान पर संत तुलसीदासजी को भगवान रामचद्र के दर्शन हुए थे।
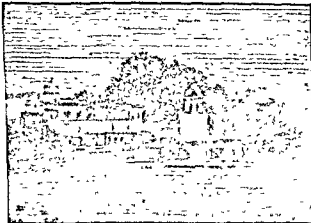
मदाकिनी घाट

चित्रकूट के निकट मदाकिनी नदी बहती है। यहा से सीतापुर थोडे फासले पर बसा एक कस्बा है। यहा सैकडो साधु-सन्यासी रहते हैं। रामनवमी, दीपावली और चद्र-ग्रहण के अवसर पर यहा मेलो मे भारी भीड होती है।

मदाकिनी नदी के किनारे पर लगभग तीस छोटे-छोटे तीर्थ-स्थल हैं। इनमे विशेषकर कोटितीर्थ, हनुमान धारा,
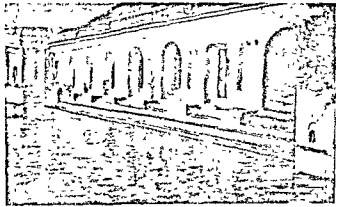
कुशघाट

देवागना, स्फटिकशिला, गुप्त गोदावरी और भरतकूप आदि दर्शनीय है। इन सबका अपना अलग-अलग धार्मिक महत्त्व है।

चित्रकूट पहाडी के चारो तरफ दर्शनार्थी प्रदक्षिणा करते है। इसके लिए आसपास मार्ग बनाया गया है। इस स्थान पर बंदर बहुत पाये जाते है।

चित्रकूट मे 'भरतकूप' नाम का एक कुआ है। इस कुए मे भगवान रामचद्रजी ने अनेक तीर्थ स्थलो से एकत्रित किया गया पवित्र जल डाला था।

चित्रकूट के घाट पर बडी-बडी सीढियो वाला एक सुदर मदिर है। यह मदिर यज्ञवेदी मदिर के नाम से जाना जाता है। कहा जाता है कि इस स्थान पर ब्रह्माजी ने सबसे पहले एक बडा यज्ञ किया था। श्री रामचद्रजी और भरतजी का मिलाप भी इसी स्थान पर हुआ था। इसलिए यहा भरत-मिलाप की मूर्ति भी बनी हुई है।

यहा से निकटस्थ बस्ती सीतापुर से लगभग तीन
दूर जानकी कुड है। यह बहुत मनोरम स्थान है

पत्थरों के पीछे मे एक नदी बहती है। ऐसा कहा जाता है कि इस नदी मे सीताजी स्नान करती थी।

सीतापुर से लगभग पांच किलोमीटर के फासले पर 'हनुमान धारा' नामक एक स्थान है। यह जगह बहुत ऊंचाई पर है। ऊपर तक पहुचने के लिए 360 सीढ़िया चढनी पडती हैं। यहा हनुमानजी का मंदिर है। इसका प्राकृतिक दृश्य अत्यत सुदर है।

सीतापुर से ही लगभग तीस किलोमीटर दूर एक अन्य कुड है। इसे विराट कुड कहा जाता है। यह कुड घने जगल मे है। इसलिए यहा तक कम यात्री आते है।

ठहरने के स्थान

यहा निम्नलिखित मुख्य धर्मशालाए हैं:–

1. श्री मनुलाल की धर्मशाला, रेलवे स्टेशन के सामने, बादा।
2. जैन धर्मशाला, चोटी बाजार।
3. सेठ हरप्रसाद पूर्णकिशोर धर्मशाला, सीतापुर।
4. श्रीराम धर्मशाला, सीतापुर।
5. सेठ साधुराम तुलाराम गोयनका धर्मशाला, सीतापुर।
6. अतिथिशाला, सीतापुर।
7. भाई रामप्रसाद अग्रवाल धर्मशाला, करवी।

भरतकूप मंदिर के श्रीविग्रह

स्फटिक शिला

हनुमान धारा

भरतकूप
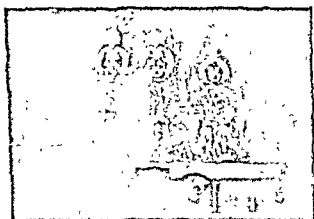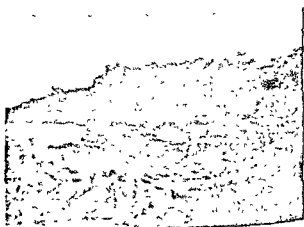
11. नाथद्वारा

वैष्णव धर्म के वल्लभ सम्प्रदाय के प्रमुख तीर्थ-स्थानों में नाथद्वारा का स्थान सर्वोपरि माना जाता है। उदयपुर की सुरम्य झीलों की नगरी से कोई 48 किलोमीटर दूर बनास नदी के तट पर नाथद्वारा का पुण्यधाम स्थित है। यहां पर भगवान श्रीकृष्ण के स्वरूप श्रीनाथजी का भव्य व भारत प्रसिद्ध मंदिर है, जहां देश के सभी भागों से भारी संख्या में श्रद्धालु भक्त दर्शनार्थ जाते हैं।

धार्मिक पृष्ठभूमि

श्रीनाथ जी की मूर्ति पहले मथुरा के निकट गोकुल में थी, किंतु जब मुगल सम्राट औरंगजेब ने इसे तोड़ना चाहा तो वल्लभ गोस्वामी इसे राजपूताना(अब राजस्थान)ले गए और जिस जगह पर विग्रह की पुनः प्रतिष्ठा हुई उसे नाथद्वारा कहा जाने लगा। करीब चार सौ साल पहले कुछ वैष्णव भक्तों की एक शोभा-यात्रा मेवाड़ की सीमा से होती हुई 'सिहाड़' नामक ग्राम के पास रुकी। यह स्थान भी बीहड़ जंगलों से घिरा था। कहते हैं कि भगवान श्रीनाथजी ने स्वयं अपने भक्तों को प्रेरणा दी कि बस यही वह स्थान है, जहां मैं बसना चाहता हूं। फिर क्या था, डेरे और तम्बू गाड़ दिये गये। राजमाता की प्रेरणा से उदयपुर के महाराणा राजसिंह ने एक लाख सैनिक श्रीनाथजी की सेवा में सुरक्षा के लिए तैनात कर दिये। महाराणा का आश्रय पाकर नाथ-नगरी भी बस गई। इसी से इसका नाम 'नाथद्वारा' पड़ा है।
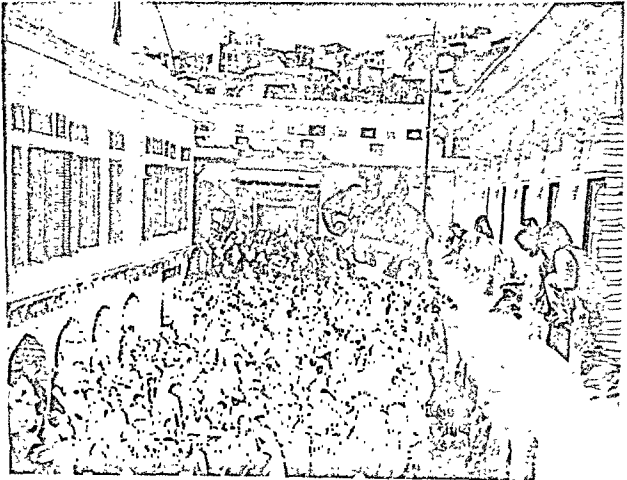
नाथद्वारा, राजस्थान

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

श्रीनाथजी के मंदिर का घेरा काफी बड़ा है, परन्तु मंदिर में किसी विशिष्ट स्थापत्य कला आदि के दर्शन नहीं होते। वल्लभ सम्प्रदाय वाले अपने मंदिरों को नंदराय जी का घर मानते हैं। मंदिर पर कोई शिखर नहीं रहता। श्रीनाथजी के मंदिर में भी कोई शिखर नहीं है, जिस स्थल पर श्रीनाथजी विराजमान हैं, उसकी तो छत भी साधारण खपरैलों की बनी हुई है। इसी छावनी के बीच में एक छोटा-सा सुदर्शन चक्र है, जिस पर सात ध्वजाएं फहराती रहती हैं। मंदिर का प्रत्येक स्थल गोलोक के किसी न किसी स्थल का प्रतीक माना जाता है। मंदिर की व्यवस्था बहुत संतोषजनक है।

श्रीनाथजी के मंदिर में, दर्शन करने का स्थान अत्यधिक संकरा है, इसलिए दर्शनार्थियों को पारी-पारी से दर्शन कराया जाता है।

श्रीनाथजी एक ही प्रकार के वस्त्र धारण नहीं करते। मुकुट, कुंडल, हार इत्यादि भी एक प्रकार के नहीं होते। ऋतुओं के अनुसार इनका निर्माण पृथक-पृथक रूपों में पृथक-पृथक सामग्री द्वारा किया जाता है। भोग की सामग्री भी इसी प्रकार ऋतुओं के अनुसार होती है। यही नियम कीर्तनों के सम्बन्ध में भी है।

श्रीनाथजी के यों तो आठ दर्शन होते हैं। परन्तु कभी-कभी उत्सवों में एकाध बढ़ जाते हैं और ऋतुओं के अनुसार दर्शन घट जाते हैं। इन आठ दर्शनों के नाम हैं—मंगला, शृंगार, ग्वाल, राजभोग, उत्थान, भोग, संध्याआरती और शयन। श्रीनाथजी की भोग-सामग्री में केशर, कस्तूरी, अम्बर, बरास आदि सुगंधित द्रव्यों का खूब प्रयोग किया जाता है। केशर और कस्तूरी का तो इतना अधिक कि केशर पीसने के लिए चांदी की और कस्तूरी पीसने के लिए सोने की एक-एक चक्की है। श्रीनाथजी का प्रचुर वैभव, हीरे-मोती के तथा अन्य रत्नों के आभूषणों, सोने-चांदी के भूलों, पालनों, अटारियों, बंगलों, बरतनों, बहुमूल्य वस्त्रों आदि से ज्ञात होता है। श्रीनाथजी की मूर्ति श्यामल है, अतः श्रीनाथजी के समीप मदनमोहनजी की एक श्वेत प्रतिमा है, जो हिंडोलों में तथा अन्य उत्सवों पर पधारती है।

श्रीनाथजी के दर्शन के अतिरिक्त मंदिर में कुछ ऐसे स्थल भी हैं, जिनमें कोई मूर्ति विशेष न होने पर भी वे यात्रियों के आकर्षण और दर्शनों का केंद्र बने रहते हैं और इस मंदिर की प्रमुख विशेषताओं में गिने जाते हैं। उदाहरण के लिए ये स्थल हैं—फूलघर, पानघर, शाकघर, घीघर, दूधघर, मेवाघर आदि। भंडार में वस्तुओं की इतनी अधिकता रहती है कि हर [illegible] के ढेर-के-ढेर भंडार में बन जाते हैं। यहीं साग, [illegible] आदि का संग्रह भी रहता है। इसी प्रकार [illegible] दूध और घी भरे भाजन के [illegible] को [illegible] मंदिर की सम्पन्नता और समृद्ध अवस्था का सम अनुमान हो जाता है। फिर इन सभी वस्तुओं और खाद्य-सामग्री की स्वच्छता, पवित्रता पर बड़ी सतर्कता से पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है और प्रभुसेवा में कोई अपवित्र, दूषित अथवा निकृष्ट वस्तु न पहुंच जाए, इसकी पूरी-पूरी जांच और निगरानी के लिए कर्मचारी इन संग्रह-स्थलों में नियुक्त रहते हैं। उनकी स्वयं की साफ-सफाई और स्वच्छता पर कड़ा नियंत्रण रखा जाता है।

श्रीनाथद्वारे में श्रीनाथजी के मंदिर के अतिरिक्त श्री नवनीतप्रियजी और श्रीविट्ठलनाथजी के दो मंदिर और प्रसिद्ध हैं। इनके अतिरिक्त श्रीनाथजी की एक अत्यंत विशाल गोशाला यहां यात्रियों के आकर्षण का केंद्र बनी रहती है। गोशाला में लगभग बारह सौ पशु हैं। जिसमें अच्छी नस्ल के सांड और सुंदर दुधारू गायें हैं। यह गोशाला भारतवर्ष की सबसे बड़ी गोशालाओं में से एक है।

अन्य विशेषताएं

यहां कुछ कलाओं का अच्छा विकास हुआ है। इन कलाओं में प्रमुख हैं, पाक-कला और चित्रकला। श्रीनाथजी के भोग के छप्पन प्रकार के व्यंजन यहां बनते हैं। यहां की चित्रकला भी सारे देश में प्रसिद्ध हो गई है। अन्य कलाओं में सोने-चांदी आदि पर मीनाकारी और कपड़ों की रंगाई भी बहुत अच्छी होती है। यहां गुलाब का इत्र, गुलाबजल और गुलकंद भी अच्छा बनता है।

अन्य दर्शनीय स्थल

कांकरोली—कांकरोली का मुख्य मंदिर श्री द्वारिकाधीशजी का है। कहा जाता है कि महाराज अम्बरीष इसी मूर्ति की आराधना करते थे। मंदिर में भी यात्री ठहर सकते हैं।

कांकरोली वैष्णव सम्प्रदाय का एक महत्त्वपूर्ण यात्राधाम है। यह स्थान प्राकृतिक सौंदर्य से सुशोभित होने के कारण एक पर्यटन-स्थल भी बन गया है।

इसकी गणना वैष्णवों के सात यात्राधामों में होती है।

यात्रियों के भोजन की व्यवस्था भी यहां मुख्य मंदिर में ही है। यात्री लोग मंदिर में भोजन करते हैं और धर्मादा में पैसे देते हैं।

मंदिर के अगले भाग में एक विशाल सरोवर है। इस सरोवर का नाम राजसमंद है। सरोवर के आगे नौ छतरियां बनी हुई हैं। प्रत्येक छतरी विश्राम-स्थल है। यहां यात्री आराम कर सकते हैं।

नाथद्वारे की भांति यहां भी एक विद्या-विभाग है, जहां पुष्टिमार्ग के प्राचीन ग्रन्थों की महत्त्वपूर्ण खोज एवं प्रकाशन का कार्य होता है।

यहां आसपास श्रीबालकृष्णलाल, व्रजभूषणलालजी और लालबाबा आदि के मंदिर हैं। मेवाड़ के राणा यहां के आचार्यों के शिष्य होते आये हैं।

काकरोली से लगभग 10 किलोमीटर दूर चारभुजाजी का मंदिर है।

यात्रा मार्ग

पश्चिम रेलवे की अहमदाबाद-दिल्ली लाइन पर मारवाड जंक्शन है। मारवाड से एक लाइन मावली तक जाती है। मावली से 15 किलोमीटर पहले नाथद्वारा है और नाथद्वारा से 12 किलोमीटर पर काकरोली स्टेशन है। नाथद्वारा स्टेशन से नगर लगभग 6 किलोमीटर दूर है। स्टेशन से नगर तक बसे चलती हैं। उदयपुर से मोटर, बसें, टैक्सी नाथद्वारा जाती हैं। वर्ष भर यहां तीर्थ यात्रियों का तांता लगा रहता है।

नाथद्वारा से मोटर के मार्ग से काकरोली 18 किलोमीटर दूर है। नाथद्वारा स्टेशन से काकरोली स्टेशन 12 किलोमीटर पर है। वहां स्टेशन से नगर लगभग 5 किलोमीटर दूर है। आने-जाने के लिए सवारियां उपलब्ध रहती हैं। काकरोली से चारभुजाजी के लिए भी बसे चलती हैं।

ठहरने का स्थान

यात्रीनिवास के लिए यहां सुंदर और सुप्रबंध वाली बडी-बडी धर्मशालाए हैं जिनमे दिल्ली वाली धर्मशाला, लक्ष्मीविलास, डाया भवन, पोरबंदर वाली धर्मशाला और कृष्ण धर्मशाला प्रमुख हैं। कुछ मंदिरों मे भी यात्रियों के ठहरने का स्थान है। सबसे अधिक यात्री जन्माष्टमी, अन्नकूट, होली और श्रावण के उत्सवों पर आते है।
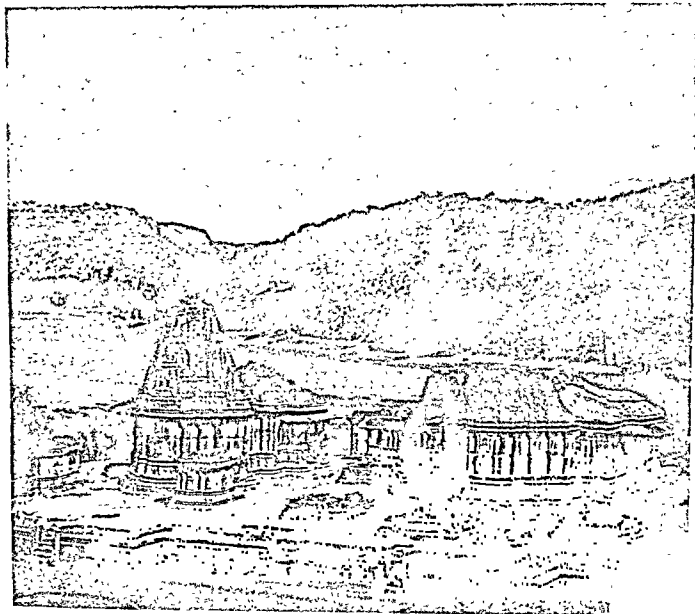
सास-बहू मंदिर, उदयपुर (राजस्थान)

निराश हो लौट गये। दस महीने बाद उन्होंने सावित्री कूप में मिली मूर्ति को द्वारका के मंदिर में प्रतिष्ठा की। श्रद्धालुओं का विश्वास है कि रणछोड भगवान दिन में सात पहर डाकोर में और एक पहर द्वारका में रहते हैं।

इस सारी अनुश्रुति से पता चलता है कि डाकोर के रणछोडजी की मूर्ति द्वारका से लाई गई थी। मूर्ति लाने की तिथि के विषय में 'बंबई गजेटीयर-खेडा जिला' में लिखा है कि यह घटना 1155 ई. में घटी होगी। कवि गोपालदास ने लिखा है कि बृहस्पतिवार, कार्तिक पूर्णिमा संवत् 1212 को बोडाणों रणछोडजी को डाकोर लाया। इस विषय में और कोई ऐतिहासिक उल्लेख नहीं मिलता।

डाकोर का वर्तमान रणछोड मंदिर 1772 ई. में पेशवाओं के कोषाध्यक्ष सतारा निवासी गोपाल जगन्नाथ तंबेकर ने एक लाख रुपये की लागत से बनवाया। इस मंदिर का एक कानूनी विवाद 1887 में बंबई हाईकोर्ट में आया था। उस मुकदमे के कागजों में (आई. एल. आर. 12 बम्बई, पृष्ठ 247) लिखा गया है कि रणछोड जी के मंदिर का, जो सात सौ वर्ष पुराना है, सारे पश्चिम भारत में बडा मान था। राजा-महाराजाओं से अनेक ग्राम उस मंदिर को दान के रूप में मिले हुए थे, जिसकी आय से मंदिर का खर्च चलता था। इन गांवों में डाकोर और कांजरी प्रमुख थे।

जब से गोपाल जगन्नाथ तंबेकर ने वर्तमान मंदिर का निर्माण कराया, तब से उसका प्रबंध तंबेकर-परिवार के हाथ में रहा। प्रबंधकों तथा कुलक्रमागत अर्चकों के बीच विवाद उठने से यह मामला हाईकोर्ट में आया और बाद में प्रीवी काउन्सिल तक गया। अंत में एक प्रकार का समझौता हो गया।

रणछोडजी का मंदिर विशाल है और उसमें अच्छी शिल्पकला भी देखने को मिलती है। मंदिर के दो द्वार हैं, एक उत्तर की ओर और दूसरा पश्चिम की ओर। मंदिर के सामने एक विशाल चौक है।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

डाकोर के रणछोडजी की मूर्ति द्वारकाधीश की मूर्ति जैसी ही है। उनके निचले बाएं हाथ में शंख और ऊपर के बाए हाथ में चक्र है। ऊपर के दाएं हाथ में गदा है। मूर्ति काले पत्थर की है और वह खडी हुई मुद्रा में है।

मंदिर के साथ ही लगा गोमती तालाब है। तालाब के एक तट पर डंकनाथ महादेव का मंदिर है। पश्चिम की ओर भीकमजी का वैष्णव मंदिर है।एक छोटा-सा मंदिर भक्त बोडाणों का भी है।

यात्रा मार्ग

पश्चिम रेलवे की आनंद-गोधरा लाइन पर आनंद से तीस किलोमीटर दूर डाकोर नगर का स्टेशन है। स्टेशन से डाकोर नगर लगभग डेढ़ किलोमीटर दूर पडता है। वहा पहुंचने के लिए सब प्रकार के वाहन उपलब्ध रहते हैं।

ठहरने का स्थान

डाकोर नगर में अनेक होटल व धर्मशालाएं हैं। स्टेशन से शहर के अंतिम छोर तक धर्मशालाए फैली हुई हैं। रणछोड मंदिर के आस-पास सोगर भवन, गायकवाड की धर्मशाला, दामोदर भवन तथा वल्लभ निवास आदि ठहरने के स्थान हैं।

13. आरासुर की अंबिका

अंबिका का प्रसिद्ध मंदिर अर्बुदाचल (माउंट आबू) के निकट आरासुर नामक पहाड़ी पर स्थित है। यह पहाड़ी अरावली पर्वतमाला के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है और गुजरात के उत्तर में पड़ती है। यह स्थान सरस्वती नदी के उद्गम के निकट है। सरस्वती नदी यहां से बहती हुई सिद्धपुर जाती है और वहां से कच्छ के मरुस्थल में अदृश्य हो जाती है। सरस्वती के इस उद्गम-स्थान के निकट कोटेश्वर महादेव का मंदिर है। यह प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान है और यहां प्रतिवर्ष हजारों यात्री आते हैं।

धार्मिक पृष्ठभूमि

पुराणों के अनुसार सरस्वती का प्रवाह तीन भागों में होता है—एक धारा तो हिमालय की शिवालिक पर्वत-श्रेणी के उस खंड के उद्गम से निकलती है, जिसको 'प्लक्ष प्रस्रवण' कहते हैं और कुरुक्षेत्र के निकट विनशन में अदृश्य हो जाती है।

दूसरी अर्बुदाचल के निकट आरासुर पहाड़ी पर कोटेश्वर महादेव के मंदिर के पास से निकल कर सिद्धपुर से होती हुई कच्छ के मरुस्थल में समाप्त हो जाती है।

तीसरी वह है, जो सौराष्ट्र में गिर के जंगलों से निकल कर प्रभास पाटन के निकट समुद्र में मिलती है।

ऋग्वेद में इस नदी को शक्तिशाली बताया गया है और इसको हिमालय से निकलने वाली और पश्चिमी समुद्र में गिरने वाली कहा गया है, किन्तु ब्राह्मणग्रंथों के अनुसार सरस्वती का विनशन में अदृश्य होना लिखा गया है। पुराणों में भी ऊपर कहे अनुसार इसकी तीन धाराएं बताई गई हैं। यह चमत्कार इसीलिए हुआ बताते हैं कि ज्वालामुखी के विस्फोट से ऐसी स्थिति बन गई।

अरावली पर्वतमाला को, जिसका अर्बुद या आबू एक भाग है, बहुत पुराना माना जाता है। यहां तक कि हिमालय से भी अधिक प्राचीन। पशुपति और देवी माता की पूजा, सिन्धु घाटी की सभ्यता से भी अधिक प्राचीन है। देवी माता की पूजा भारत में अनन्तकाल से चली आ रही है और प्रत्येक ग्रामवासी उनकी पूजा, माता अंबा, ग्रामदेवी काली और कितने ही अन्य नामों से करता है। ऋग्वेद में भी उन्हें उषा, पृथ्वी, सविता, श्रद्धा, अदिति, और वाक् आदि नामों से स्मरण किया गया है। 'केन उपनिषद्' में उमा हैमावती का वर्णन विशेष रूप से किया गया है।

आबू पहाड़ या अर्बुद वशिष्ठ मुनि के आश्रम के कारण प्रसिद्ध तीर्थ माना जाता है। कहा जाता है कि वशिष्ठ मुनि की नंदिनी गौ यहीं के एक खड्ड में गिरी थी। उसके बाद मुनि ने सरस्वती नदी की पूजा की। सरस्वती नदी प्रसन्न होकर इस लोक में आई और उन्होंने अपने जल से उस खड्ड को भर दिया, जिससे नंदिनी खड्ड में से बाहर आ गई।

आबू पर्वत और उसके आस-पास स्कंद पुराण (अर्बुद खंड) में अनेक तीर्थों का वर्णन है, जिनमें वशिष्ठाश्रम, सरस्वती-संगम, कात्यायनी, अचलेश्वरा, कोटेश्वरा और कोटितीर्थ आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। चूंकि इनमें से अधिकांश का वर्णन बहुत ही अस्पष्ट है। इसीलिए उन सब की पहचान कठिन है।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

अंबिका मंदिर—आरासुर के अंबिका मंदिर में भगवती की कोई मूर्ति नहीं है, केवल एक यंत्र है और वस्त्रों तथा अन्य सरंजामों की सहायता से दर्शन के लिए उस यंत्र को मूर्ति का रूप दिया गया है। भगवती दुर्गा हिमालय और मैना की पुत्री तथा शिव की पत्नी है। उत्तर गुजरात के चुनवाल स्थान में वह बाल रूप कन्या है, आरासुर में वह शिव-पत्नी है और स्नेहमयी माता है तथा चंपानेर के निकट स्थित पावागढ़ में वह उद्धारकर्त्री भद्रकाली है।

आरासुर मंदिर में ईसा की सोलहवीं शताब्दी के अनेक शिलालेख हैं, जिनमें से एक राव भारमल की रानी का दानपत्र संबंधी अभिलेख है। मानसरोवर में एक शिलालेख महाराणा मालदेव (1359 ई.) का है। कुंभारिया में संगमरमर निर्मित जैनमंदिर के पास ही है। इन अभिलेखों से यह सिद्ध हो जाता है कि आरासुर का अंबिका मंदिर ईसा की आठवीं शताब्दी से भी पूर्व का है। 746 ई. में जब वलभीनगर का पतन हुआ तो वहां के राजा शिलादित्य की रानी पुष्पावती अंबिका की तीर्थयात्रा पर गई थी।

'देवी भागवत (7-30 ई.) में इस आख्यायिका का उल्लेख है कि एक बार दक्ष ने यज्ञ किया, जिसमें सभी देवताओं और ऋषियों को तो आमंत्रित किया, किन्तु स्वयं अपनी पुत्री सती और दामाद भगवान शंकर को निमंत्रण नहीं भेजा। दक्ष की पुत्री शंकर-पत्नी सती, फिर भी उस यज्ञ में आई और अपमान के कारण यज्ञाग्नि में अपना तन भस्म कर दिया। शंकर को यह

मालूम हुआ तो वे घबराकर विक्षिप्त हो उठे और उसी मनोदशा मे उन्होंने सती का अधजला मृत शरीर कंधे पर रखकर विध्वसक ताडव नृत्य आरंभ कर दिया। इससे सभी भयभीत हो गए। सृष्टि की रक्षा करने और शकर के निश्चय को बदलने के लिए भगवान विष्णु ने अपने धनुष के छोर या चक्र द्वारा सती के मृत शरीर के टुकडे-टुकडे कर दिए और वे टुकडे विभिन्न जगहो पर गिर पडे और प्रस्तर-खंड बन गए। जब शकर का क्रोध शात हुआ तो ये सभी स्थान शक्ति के पवित्र पीठ बन गए। कल्कि पुराण (अ 18) मे भी इसी प्रकार की आख्यायिका का वर्णन है। ये शक्तिपीठ सख्या मे 108 बताए गए हैं और जहा-जहां सती के अग-खड गिरे थे, उनका वर्णन भी देवी गीता, देवी भागवत, कल्कि पुराण, तंत्र-चूडामणि आदि ग्रथो मे किया गया है।

शक्ति की पूजा का शिवपूजा से घनिष्ठ सबध होता है। गुजरात मे शिवपूजा का मुख्य स्थल सोमनाथ मे तथा नर्मदा के तटो पर है।

'सोम' का अर्थ है—"स+उमा" अर्थात शिव अपनी पत्नी के साथ। गुजरात, लाकुलिस पाशुपत-पंथ का जन्मस्थान माना जाता है, क्योकि इसके संस्थापक का जन्म लाट प्रदेश के कायावरीह (करवान) में लगभग ईसा की दूसरी शताब्दी मे हुआ था। उन्होने पाशुपतमठ की स्थापना सोमनाथ मे की थी। ईसा की 10वीं से 14वीं शताब्दी तक गुजरात शैव और पाशुपतपथ का गढ रहा है। इस अवधि में वहां कितने ही विद्वान् आचार्य हो गए हैं। क्षत्रप, वल्लभी और सोलंकी शासक शैव थे।

गुजरात मे शक्ति को जिन मुख्य रूपों मे पूजा जाता है, वे हैं—श्रीकुला-अंबिका, ललिता, बाला और तुलजा आदि। गुजराती मे काली दक्षिण आचार्य की है और वह भयानक काली नहीं, बल्कि भद्र काली है। जब शकराचार्य ने द्वारका, बदरीनाथ, पुरी जगन्नाथ और शृंगेरी मे—चार मठ स्थापित किए तो वहां चार मुख्याधिष्ठात्री देवी—भद्रकाली, पूर्णागिरि, विशाला और शारदा रहने लगी। भद्रकाली का भीषण या वामाचारी आचरण से संबध नही है।

विमल शाह मंदिर

सप्रदाय की मान्यताओ को दर्शाते चित्र और मूर्तिया हैं।

देवस्थान के अलावा इस मदिर की 'हस्तिशाला' का उल्लेख करना आवश्यक है,क्योंकि इस विराट क्षेत्र में दस विभाग हैं और हर एक में सगमरमर के बने हाथी हैं।

पीतल हार मंदिर—यह भी आदिनाथजी का मंदिर है और शायद इसका नाम पीतल की मूर्ति के कारण है। यह मूर्ति 108 मन की है और मदिर मे चारो ओर दूसरे तीर्थकरो की मूर्तिया भी है।

चौमुखा मंदिर—इस मंदिर को खरतारा वशाही मदिर भी कहते हैं। इस मदिर मे आराध्य देव है पार्श्वनाथजी। यह दिलवाडा मे सबसे ऊचा मदिर है। तीन मजिले हैं। इस मदिर मे जैन सप्रदाय की अनेक मूर्तिया है और सबसे नीचे देवी अंबिका की भी एक मूर्ति है।

अन्य मंदिर—दिलवाडा के दक्षिण मे अनेक हिदू मंदिरो के भग्नावशेष है। कुमारी कन्या मदिर में भगवान शकर और हनुमान जी है। कहावत है कि ऋषि वाल्मीकि का देहात यहीं पर हुआ था।

दिलवाडा से 9 किलोमीटर पर है अचलगढ़,जहां पर अचलेश्वर प्रतिष्ठित हैं। यहीं पर मेवाड के राणा कुम्भा ने शरण ली थी और रामानंद ने अपना सुधार अभियान चलाने से पहले यहीं पर शंकर और गणपति की आराधना की थी।

वशिष्ठाश्रम—यह आबू के सडक मार्ग पर 750 सीढ़ी नीचे उतरने पर है। यहां वशिष्ठ कुंड में गोमुख से जल गिरता है। मदिर मे वशिष्ठजी तथा अरुंधती की मूर्तियां हैं।

गौतमाश्रम—वशिष्ठाश्रम से 300 सीढ़ी नीचे नागकुड है। यही पर एक मदिर है। मदिर मे महर्षि गौतम ध्यानस्थ मुद्रा मे है। कामधेनु तथा बछडे की मूर्ति और अर्बुदा देवी की मूर्ति है।

नखी तालाब—यह आबू बाजार के पीछे विस्तृत झील है। देवताओं ने अपने नखो से इसे खोदा है। इस तालाब के पास दुलेश्वर मदिर, रघुनाथजी का मदिर, चंपागुफा, रामकुंज, रामगुफा, कपिलातीर्थ और कपालेश्वर मदिर आदि है।

अर्बुदा देवी—नखी तालाब के उत्तर शिखर पर गुफा मे देवी अर्बुदा की मूर्ति है। बाहर शिव मदिर है।

यात्रा मार्ग

माउट आबू पहुचने के लिए, पश्चिम रेलवे की अहमदाबाद लाइन पर आबू रोड नामक स्टेशन है। यहा से मदिर तक अनेक बसे जाती हैं। आबू शहर में आने जाने के लिए दिलवाडा मदिरो के लिए भी सवारिया उपलब्ध है।

ठहरने का स्थान

यहा पहुचने वाले यात्रियो के ठहरने के लिए अनेक धर्मशालाए हैं। कुछ उत्तम व्यवस्था से पूर्ण सुसज्जित लॉज और होटल भी हैं।

14. अमरकंटक

हिन्दुओ के प्रमुख तीर्थों में अमरकटक का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसी पुण्यभूमि मे नर्मदा, सोन, महानदी तथा ज्वालावती जैसी पावन नदियो के उद्गम-स्थान हैं। भारत की सारी नदियो मे नर्मदा सर्वाधिक प्राचीन पुण्यसलिला मानी जाती है। इसके दोनो तटो पर अनेक देवस्थान तथा नगर शोभायमान हैं।

धार्मिक पृष्ठभूमि

पौराणिक कथाओ के अनुसार गगा, यमुना, सरस्वती, कावेरी तथा सरयू आदि पावन सरिताओ मे स्नान करने पर जो फल मिलता है, वह नर्मदा के दर्शन मात्र से ही प्राप्त हो जाता है। नर्मदा को शिव की पुत्री होने के कारण 'शाकरी' भी कहा गया है। धार्मिक ग्रथो मे कथा मिलती है कि जब भगवान शकर अपने तीसरे नेत्र द्वारा ससार को भस्म करते हुए मैकाल पर्वत के इस स्थान पर पहुचे तो उनके शरीर से निकली पसीने की कतिपय बूदे यहां गिरी। इन्ही बूंदो से एक कुड का प्रादुर्भाव हुआ और फिर इस कुंड मे एक बालिका प्रकट हुई, जो शाकरी तथा नर्मदा कहलाई। शिवजी के आदेशानुसार वह जनहित के लिए देश के बहुत बडे भाग मे से प्रवाहित होने लगी। इसका उद्गम मैकाल पर्वत पर है। इसलिए यह मैकालसुता के नाम से भी जानी जाती है। जब यह पर्वतीय क्षेत्र मे बहती है तो 'रव' अर्थात् आवाज करती आगे बढ़ती है। इस कारण भक्तजन इसे 'रेवा' भी कहते हैं।

प्राचीन ग्रथो मे अमरकटक को तपोभूमि कहा गया है। रामायण काल मे यह स्थान ऋषभ के नाम से जाना जाता था। एक कथा के अनुसार लकापति रावण एक बार अपने पुष्पक-विमान द्वारा मैकाल पर्वत के क्षेत्र मे जा रहा था कि उसकी दृष्टि नीचे बिखरी सौंदर्य राशि पर पडी। चारो ओर की प्राकृतिक छटा देखकर उसका मन मुग्ध हो उठा। उसने कुछ दिनो यहां रहकर अपने आराध्य देव शकर की अर्चना की। फिर जावनद मणि का शिवलिग बनाकर उसको वहा स्थापित किया। प्राचीन ग्रंथो के अनुसार भगवान राम के पूर्वज रघुवशी राजाओ का इस क्षेत्र पर राज्य था। दसवी शताब्दी से पूर्व यह क्षेत्र चेदि शासको के आधिपत्य मे था। आज भी चेदिकालीन मंदिर तथा खंडहर इस पर्वतीय क्षेत्र मे देखे जा सकते हैं। अमरकंटक पहाड सतपुडा श्रेणी का ही एक अश है तथा इसका ऊपरी भाग एक विस्तृत पठार सा है। इस पहाड पर कई मंदिर हैं।
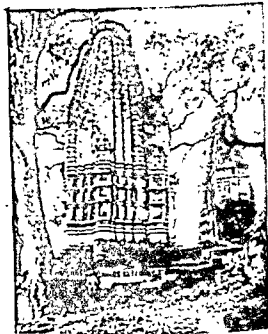
अमर कटक मंदिर, रीवा

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

अमरकटक मे अनेक स्थल हैं, जो यात्रियो को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। मंदिरो तथा कुडो की तो यहां भरमार है। कुछ मंदिरो की शिल्पकला देखने योग्य है। यहां का मुख्य स्थान नर्मदा माता का कुड है। मन मे श्रद्धायुक्त भावनाए सजोये यात्री इसमे स्नान कर दान आदि करते हैं। कई मंदिरो का समूह एक दीवार द्वारा घिरा हुआ है। नर्मदा कुड ही नर्मदा का उद्गम स्थान है। कुंड मे निर्मित मंदिर नर्मदेश्वर महादेव के नाम से जाना जाता है।

मंदिरो के इसी परकोटे मे ओंकारेश्वर महादेव का मंदिर भी दर्शनीय है। कुड के समीप ही काले पत्थर से निर्मित एक हाथी की प्रतिमा है।

कहा जाता है कि जगद्गुरु शकराचार्य ने कुछ समय के लिए यहा निवास किया था। यहा के अनेक देवस्थानो का निर्माण तथा जीर्णोद्धार चेदि तथा कलचुरि राजाओ ने करवाया। केशवनारायण मंदिर मे भगवान केशव की काले पत्थर की प्रतिमा बहुत सुदर है। भगवान विष्णु की चतुर्भुजी मूर्ति भी इस मंदिर मे है। मूर्ति के चारो ओर दस अवतारो की मोहक प्रतिमाए सुशोभित हैं। राजा कर्णदेव द्वारा निर्मित रामेश्वर

महादेव मंदिर में भी अनेक मूर्तिया दर्शनीय है।

नर्मदा के पावन कुड से लगभग तीन-चार किलोमीटर दूर सोन नदी का उद्गम-स्थान है। यह स्थान सोनभूडा के नाम से जाना जाता है। यहा एक सुदर पहाडी पर चट्टानों को काटकर सोन नदी एक पतली-सी धारा के रूप मे प्रवाहित होती है। थोडा आगे जाकर यह धारा एक जल-प्रपात के रूप मे नीचे गिरती है। प्रपात की ऊचाई लगभग 200 किलोमीटर है। उद्गम-स्थान के पास ही साधु-महात्माओ के निवास हेतु दो-तीन कक्ष बने हुए हैं। इस स्थान से चारो ओर की प्राकृतिक छटा देखते ही बनती है। पौराणिक कथा के अनुसार सोन, सम्पूर्ण नदियो की नायक है। अतएव इसे सोननद भी कहा जाता है।

जिस प्रकार नर्मदा नदी के सब पाषाण शिवतुल्य पूजनीय माने जाते हैं, उसी प्रकार सोन नदी के सब पाषाण गणपति की भाँति भक्तो द्वारा सम्मान पाते हैं। पहले यहा पहुचना बहुत कठिन था,किन्तु अब मोटर का मार्ग बन चुका है। अनेक पर्वों पर सैकडो यात्री घने जगल और झाडियो की शोभा देखते हुए यहा पहुचते है। इस स्थान के नीचे अनेक कदराए है, जिनमे सिह,बाघ आदि रहते है।

मैकाल पर्वत के सघन वन मे महानदी का उद्गम स्थान भी अत्यत रमणीय है। यह क्षेत्र बारहों मास हराभरा रहता है। अपने उद्गम-स्थान पर महानदी 'रुद्रगगा' के नाम से जानी जाती है। भगवान रुद्र के शीश मे से निकलने के कारण रुद्रगगा का मूल भी नर्मदा के समान पवित्र तीर्थ के समान है।

अन्य दर्शनीय स्थल

अपने उद्गम से निकलने के बाद नर्मदा मद गति से प्रवाहित होती हुई लगभग छ किलोमीटर की दूरी पर एक विशाल प्रपात के रूप में नीचे गिरती है। इस प्रपात का नाम कपिल धारा है। कहा जाता है कि कपिल मुनि ने इसी स्थान पर घोर तपस्या की थी और यहीं पर उन्हें आत्मज्योति का साक्षात्कार हुआ था। एक धारणा के अनुसार महर्षि कपिल ने इसी स्थान पर साख्यशास्त्र की रचना की थी। इस जलप्रपात से थोडी दूरी पर कपिलेश्वर महादेव का मदिर है। नर्मदा अपनी सैकडो मीलों की यात्रा में अनेक जलप्रपात बनाती है। किन्तु कपिलधारा का सर्वाधिक महत्त्व है। लगभग 200 फुट की ऊंचाई से गिरकर जल संपूर्ण वातावरण मे धुंध-सी बिखेर देता है। असख्य जलकण सूर्य के प्रकाश मे मोतियोंकी तरह तैरते हुए नजर आते हैं। कपिलधारा से कोई एक फर्लांग की दूरी पर नर्मदा फिर एक प्रपात के रूप मे गिरती है। इस स्थान को दूधधारा कहा जाता है। इस प्रपात का जल जब वेग से गिरता है,तो दूध की तरह श्वेत दिखाई पडता है। प्रपात के पास स्नान आदि करने के लिए स्थान बना है। दूधधारा से आगे का मार्ग दुर्गम तथा भयावह है। इसलिए यात्री इस स्थान से आगे जाने का साहस नही जुटा पाते।

यात्रा मार्ग

पूर्वी रेलवे की कटनी-बिलासपुर शाखा मे कटनी से 217 किलोमीटर और बिलासपुर से 101 किलोमीटर के फासले पर पेड़रा रोड स्टेशन है। इस स्टेशन पर उतरने से रीवा से आने वाली मोटर-बस मिल जाती है। स्टेशन के पास गौरेला ग्राम है, जहा कई धर्मशालाए हैं। गौरेला से मोटर-बस कबीर-चौतरा जाती है। वहा से अमरकटक केवल पाच किलोमीटर दूर रहता है।

ठहरने का स्थान

अमरकटक मे अहिल्याबाई की धर्मशाला पर्याप्त बड़ी है। यात्री प्राय इसी धर्मशाला मे ठहरते हैं।
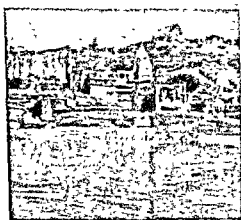
ओंकारेश्वर मंदिर
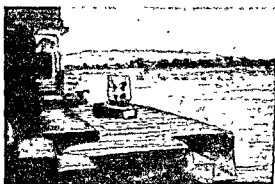
काले महादेव की मूर्ति

15. पंढरपुर

पंढरपुर महाराष्ट्र का प्रधान तीर्थ है। महाराष्ट्र के सर्वस्व आराध्य हैं, श्री पंढरीनाथ। आषाढ़ी और कार्तिकी एकादशी को वारकरी सम्प्रदाय के लोग यहां यात्रा करने आते हैं। इस यात्रा को ही 'वारी' कहा जाता है। इस समय यहां बहुत अधिक भीड़ होती है। भक्त पुंडरीक ने इस धाम की प्रतिष्ठा की है। इनके अतिरिक्त संत तुकारामजी, नामदेव, राका-बाका, नरहरिजी आदि संतों की यह लीलाभूमि रही है। पंढरपुर भीमा नदी के तट पर है, जिसे यहां चन्द्रभागा भी कहते हैं।

धार्मिक पृष्ठभूमि

भक्त पुंडरीक माता-पिता के परम सेवक थे। वे माता-पिता की सेवा में लगे हुए थे। उस समय भगवान श्रीकृष्णचन्द्र उन्हें दर्शन देने पधारे। पुंडरीक ने भगवान को खड़े होने के लिए एक ईंट सरका दी, किन्तु माता-पिता की सेवा छोड़कर वे उठे नहीं, क्योंकि वे जानते थे कि माता-पिता की सेवा से प्रसन्न होकर ही भगवान उन्हें दर्शन देने पधारे थे। इससे भगवान और भी प्रसन्न हुए। माता-पिता की सेवा के पश्चात पुंडरीक भगवान के समीप पहुंचे और वरदान मांगने के लिए प्रेरित किये जाने पर उन्होंने मांगा—"आप सदा यहीं इसी रूप में स्थित रहें।" तब से प्रभु वहां विग्रह रूप में स्थित हैं।

भीमा तट मंदिर, पंढरपुर

पढरपुर से लगभग पाच किलोमीटर दूर एक गाव मे जनाबाई की वह चक्की है, जिसे भगवान ने चलाया था।

अन्य दर्शनीय स्थल

गौरी शंकर—पढरपुर से शिगणापुर जाते समय सडक से डेढ किलोमीटर दूर गौरीशकर महादेव का मंदिर मिलता है। इसमे अर्धनारीश्वर की बडी सुदर मूर्ति है।

नरसिहपुर—यह गाव भीमा और नीरा नदियो के बीच मे है। ये नदिया आगे जाकर मिल गई है। उस सगम स्थान को त्रिवेणी कहते है। इधर के लोग नरसिहपुर को महाराष्ट्र का प्रयाग और पढरपुर को काशी मानते हैं। यहा भगवान नरसिह का विशाल मंदिर है। उसमे प्रहलाद की मूर्ति भी है। इस मंदिर की परिक्रमा में अनेक देवमूर्तिया हैं। कहा जाता है कि यह प्रहलादजी की जन्मभूमि है।

यात्रा मार्ग

मध्य रेलवे की बबई-पूना-रायचूर लाइन पर पूना मे 185 किलोमीटर दूर कुर्दूवाडी स्टेशन है। स्टेशन से पढरपुर लगभग ढाई किलोमीटर दूर है। शोलापुर परली वैद्यनाथ आदि से पढरपुर तक मोटर-बस का भी मार्ग है।

ठहरने का स्थान

पढरपुर मे अनेक धर्मशालाए है। यात्री पडो के यहा भी ठहरते हैं।

आसपास के अन्य तीर्थ

पोरबंदर (सुदामापुरी)—भगवान श्रीकृष्ण के मित्र सुदामा का धाम होने से यह तीर्थस्थान तो है ही, महात्मा गाधी जी की जन्मभूमि होने से अब यह भारत का राष्ट्रीय तीर्थ भी हो गया है।

पोरबदर नगर मे महात्मा गाधी का कीर्ति-मंदिर है। उसमें वह कमरा सुरक्षित है, जिसमे उनका जन्म हुआ था।

सुदामा मंदिर—यह मंदिर नगर से बाहर के भाग मे राणा साहब के बगीचे मे स्थित है। मंदिर मे सुदामा जी और उनकी पत्नी की मूर्तियां है। यह मंदिर एक विस्तृत घेरे मे है। पास मे एक छोटा जगन्नाथ जी का मंदिर है। सुदामा जी के मंदिर के पश्चिम मे भूमि पर चूने की पक्की लकीरों से चक्रव्यूह बना है। यहां आस-पास विल्वेश्वर मंदिर, हिंगलाज भवानी का मंदिर और गिरधरलाल जी का मंदिर है।

सुदामाजी के मंदिर के पास केदारकुड है। यहा केदारेश्वर महादेव का मंदिर है। केदारकुड मे यात्री स्नान करते हैं। नगर मे श्रीराम-मंदिर, श्री राधाकृष्ण-मंदिर, जगन्नाथ-मंदिर, पचमुखी महादेव और अन्नपूर्णा का मंदिर है।

मूलद्वारिका—पोरबदर से 28 किलोमीटर पर बिसवाडा ग्राम है। यहा मूलद्वारिका मानी जाती हैं। यहां रणछोड राय का मंदिर है और उसके आसपास दूसरे छोटे अनेक मंदिर हैं। पोरबदर से यहा तक मोटर जाती तो है, किन्तु मार्ग अच्छा नही है।

हर्षदमाता—मूलद्वारिका से चौदह कि. मी. दूर समुद्र की खाडी के किनारे मिया गाव है। वहा से तीन कि. मी. समुद्री खाडी को पार करके हर्षदमाता (हरसिद्धि) देवी का मंदिर मिलता है। पुराना मंदिर पर्वत पर था। अब मंदिर पर्वत की सीढ़ियो के नीचे है। कहा जाता है, कि पहले मूर्ति पर्वत पर थी, किन्तु जहा समुद्र मे देवी की दृष्टि पडती थी, वहा पहुचते ही जहाज डूब जाते थे। गुजरात के प्रसिद्ध दानवीर झगडूशाह ने अपनी आराधना से सतुष्ट करके देवी को नीचे उतारा। अत मे झगडूशाह जब अपनी बलि देने को उद्यत हुए, तब देवी का उग्र रूप शात हो गया। कहा जाता है कि महाराज विक्रमादित्य यही से आराधना करके देवी को उज्जैन ले गये। उज्जैन के हरसिद्धि-मंदिर मे देवी दिन में और यहा रात्रि मे रहती हैं। दोनो स्थानो मे मुख्य पीठ पर यत्र है और उसके पीछे की दोनो स्थानो की देवी मूर्तियां सर्वथा एक जैसी है। यहां छोटा बाजार है और मंदिर के पास यात्रियों के ठहरने की भी व्यवस्था है, किंतु मूलद्वारिका से यहा तक का मार्ग अच्छा नही है।

माधव-तीर्थ—पोरबदर से 70 कि. मी. दूर समुद्र किनारे माधवपुर नाम का बदरगाह है। यहा मलुमती नदी समुद्र से मिलती है। यहां ब्रह्मकुड है और श्रीकृष्ण तथा रुक्मिणीजी का मंदिर है। यहां के लोग इसी स्थान को रुक्मिणी के पिता भीष्मक की राजधानी कुडिनपुर मानते हैं। श्रीकृष्ण मंदिर के थोडी दूर पर प्राचीन शिव-मंदिर भी है।

श्रीनगर—यह पोरबदर के पास एक छोटा-सा गाव है। गांव मे एक प्राचीन सूर्य-मंदिर है।

ठहरने का स्थान व यात्रा मार्ग

स्टेशन के पास डोगरसी भाटिया की धर्मशाला है। स्टेशन से नगर थोडी ही दूर है।

अहमदाबाद से वीरमगाम होकर या मेहसाना से सीधे सुरेंद्रनगर जाना पड़ता है। पश्चिम रेलवे की एक लाइन सुरेंद्रनगर से भावनगर तक गई है। इस लाइन के धोला स्टेशन से पोरबदर तक एक लाइन और जाती है। पोरबदर समुद्र तट का नगर है। बम्बई, वेरावल या द्वारिका से समुद्र के मार्ग से जहाज द्वारा भी पोरबदर जाया जा सकता है।

16. नासिक-पंचवटी

पाच प्रसिद्ध तीर्थों मे—प्रयाग, गया, पुष्कर और नैमिषारण्य के साथ नासिक की गणना होती है। यहा से गोदावरी दक्षिण दिशा की ओर बहती है और उसे आगे और भी पवित्र माना जाता है। नासिक के पास सात और छोटी स्रोतस्विनिया गोदावरी मे मिलती हैं। ब्रह्म और अस्थिविलय तीर्थ भी यही हैं। राम, लक्ष्मण और सीता ने अपने वनवास के कई वर्ष नासिक के निकट ही व्यतीत किये थे।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

नासिक से लगभग 30 कि. मी. दक्षिण-पश्चिम मे ज्योतिर्लिंग शिव का प्रसिद्ध तीर्थ त्र्यम्बकेश्वर है। कार्तिकी पूर्णिमा को इस मदिर मे मेला लगता है और माघ बदी चतुर्दशी को भी। यहा का वर्तमान मंदिर पेशवा बालाजी बाजीराव ने प्राचीन और अधिक सादे मदिर के स्थान पर बनवाया था। बारह वर्ष पर आने वाले कुम्भ मेले के अवसर पर यहा तेरह महीनो तक मेला लगता है। इस अवसर पर भारत के सभी प्रदेशों से लाखो नर-नारी नासिक और त्र्यम्बक मे कुम्भ यात्रा के लिए एकत्रित होते हैं और पवित्र गोदावरी नदी मे स्नान करते हैं।

गोदावरी-तट के मंदिर, नासिक

नासिक की दूसरी ओर पंचवटी है और दोनो के बीच गोदावरी नदी बहती है। यह नदी त्र्यबक के निकट ब्रह्मगिरी से निकलती है, जो नासिक से लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर है।

नासिक में लगभग साठ मंदिर हैं और यह स्थान इस प्रदेश की काशी के नाम से विख्यात है। इसके अनेक कारण है—गोदावरी की पवित्र धारा, नासिक और पचवटी का राम, सीता और लक्ष्मण से सबध; त्र्यम्बकेश्वर के ज्योतिर्लिंग से इसकी निकटता और यह तथ्य कि पेशवाओं के जमाने मे नासिक दूसरा महत्त्वपूर्ण नगर रह चुका है। ब्रह्मपुराण के 70 से 175 वे अध्याय तक मे गोदावरी और उसके तीर्थों का वर्णन है। गोदावरी को दक्षिण की गंगा भी कहते हैं।
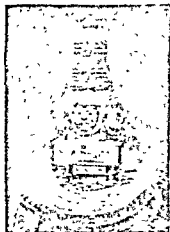
श्री त्र्यम्बकेश्वर, नासिक

प्राचीन साहित्य मे नासिक का नाम 'नासिक्य' लिखा है। पाणिनि के पातजलभाष्य में इस शब्द की उत्पत्ति नासिका (नाक) से बताई गई है। इस सबध मे एक कथा प्रसिद्ध है कि इस जगह का नाम ऐसा इसलिए पडा कि इसी जगह रावण की बहन शूर्पणखा की नासिका (नाक) और कान लक्ष्मणजी ने इसलिए काट लिये थे कि उसने राम या लक्ष्मण से विवाह करने का अनुचित प्रस्ताव किया था।

नासिक का नाम ईसा से कम से कम 200 वर्ष पूर्व से विख्यात रहा है। भरहुत के शिलालेख के अनुसार जो ईसा से दो सौ वर्ष पूर्व का है, यह अंकित है कि नासिक वासुक की पत्नी गोरक्षिता को उपहार मे दिया गया था। टालेमी अधिलेखानुसार—जो 150 ई. का है, नासिक का अस्तित्व प्राचीन काल से ही है। चौदहवी शताब्दी के एक जैन लेखक के अनुसार नासिक उन दिनो एक तीर्थ था।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

सन् 1680 ई. मे औरंगजेब के सर्वोच्च दक्षिणी शासक ने नासिक के 25 मंदिर नष्ट कराए। पेशवा के शासन काल मे
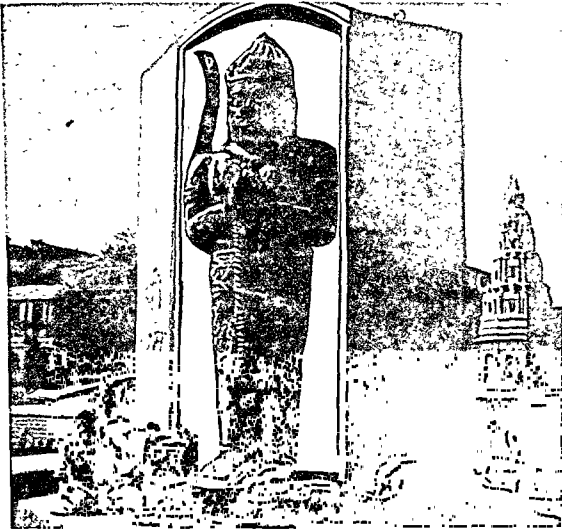
पचवटी-नासिक मे हनुमान प्रतिमा

(1750 ई. से 1818 मे) ही नासिक के वर्तमान दर्शनीय बड़े मंदिरो का निर्माण हो सका।

सुंदर नारायण का मंदिर आदितवार मे स्थित है। इसका मुख्य द्वार पूर्व की तरफ है। मंदिर मे तीन काले पत्थर की प्रतिमाएं हैं। एक तो नारायण की है, जो तीन फुट ऊंची है और बीच में स्थित है। उससे छोटी प्रतिमाए लक्ष्मी की हैं, जो दोनो ही ओर स्थित हैं।

इस मंदिर का निर्माण इस ढंग से हुआ है कि 20 या 21 मार्च को सूर्योदय की किरणें नारायण के चरणों पर पड़ती हैं। लगभग 1750 ई. मे पेशवा बालाजी ने प्राचीन मंदिर के स्थल को साफ कराया और उसका पवित्रीकरण कराया, क्योंकि इस स्थान पर 'कब्रिस्तान' बनाया गया था।

सुदर नारायण मंदिर से लगभग 48 मीटर की दूरी पर सीता गुफा है—यह एक बडे प्राचीन और ऊंचे वटवृक्ष के पास है, जो कि प्रसिद्ध पचवटी के पांच वृक्षो मे से एक से निकला है। इसमें राम, सीता और लक्ष्मण की प्रतिमाए पिछली दीवार की ताक मे स्थित हैं। पूर्व की ओर जो द्वार है, वह महादेवजी के मंदिर की तरफ निकल जाता है। महादेव मंदिर के पीछे एक मार्ग है, जो अब अवरुद्ध कर दिया गया है। यह मार्ग या गुफा यहां से दस कि. मी. उत्तर में स्थित रामसेज पहाडी को जाती है, जहा राम सोया करते थे। इसी गुफा मे सीता को छिपाया गया था और यहीं से रावण ने साधु भेष मे भिक्षा मांगने के बहाने उनका हरण किया था।

कालाराम या श्रीरामजी मंदिर पंचवटी मे स्थित है और यह पश्चिम भारत के सुंदरतम मंदिरों मे गिना जाता है। सारा मंदिर सादा, सुदर और सुपरिष्कृत रूप मे बना है। यह मंदिर 1782 ई. मे सरदार रगराव ओधेकर ने बनवाया था। इस मंदिर मे एक सुदर नक्काशीदार मच सुशोभित है और उसके ऊपर राम, लक्ष्मण और सीता की काले पत्थर की मूर्तिया हैं।

रामनवमी के दिन यहा विशेष उत्सव मनाया जाता है और चैत्र में तेरह दिन तक यहा पर्व मनाया जाता है। इन तेरहों में से ग्यारहवें दिन नगर मे रथयात्रा का जुलूस निकलता है।

नरुशकर का मदिर, जिसे रामेश्वर मंदिर भी कहते हैं, गोदावरी में बाए किनारे पर है और यह स्थापत्यकला का सुदर नमूना तथा नासिक के सुसपन्न मंदिरो मे से है। यह राम-गया कुड के पूर्व मे है। कहा जाता है कि श्रीराम ने अपने पिता दशरथ का श्राद्ध यही किया था। इस मंदिर का द्वार पश्चिम में है और इसमे शिवलिंग है। इसके घटे की परिधि छह फुट है। यह मंदिर 1747 ई मे मालेगाव के नारुशकर राजा बहादुर ने निर्मित कराया था।

गोदावरी के पवित्र कुड सुदर नारायण की सीढ़ियो और मुक्तेश्वर मदिर के बीच में स्थित हैं। नदी का जल सकीर्ण और कृत्रिम नली से होकर बहता है। पहला कुड लगभग 40 फुट पूर्व की ओर है आर इसे लक्ष्मण कुड कहते हैं। इसमे रामकुड मिला हुआ है, जिसकी लम्बाई-चौडाई क्रमश 83 फुट और 80 फुट है। यह नासिक का पवित्रतम स्थल है; क्योकि ऐसा विश्वास किया जाता है कि यहां श्रीराम स्नान किया करते थे। रामकुड मे उत्तर की ओर दस फुट के फासले पर सीताकुंड है।

रामायण मे पचवटी को 'देश' की सज्ञा दी गई है। दंडकारण्य मे जनस्थान था और पचवटी उसका अग। जनस्थान, राम-वनवास का दृश्य-स्थल था।

पंचवटी से डेढ़ कि. मी. पर तपोवन है। यहा एक प्रसिद्ध मंदिर है, जिसमे राम की सुदर प्रतिमा है। प्रसिद्ध है कि राम लक्ष्मण द्वारा वन मे लाये गये फल खाकर रहते थे। ऐसा विश्वास किया जाता है कि यहा स्थित वट और इमली के वृक्ष ऋषियो की तपस्या के समय के हैं।

नासिक से लगभग 9 कि. मी. पश्चिम की ओर गोवर्धन नामक कस्बा है। नासिक के प्रसिद्ध 'उशावदात' शिलालेख मे उसका उल्लेख है। पाडुगुफा मे ईसाई सन् की शुरुआत मे जो शिलालेख अंकित किये गये हैं, उनमे पाच बार यह उल्लेख आया है। दो गुफाए उपर्युक्त गांव से 15 कि. मी दक्षिण-पूर्व मे हैं।

पंचवटी (वन्यक्षेत्र)—रामायण के अनुसार श्रीराम ने अगस्त्य ऋषि से सादर प्रश्न किया—"कृपया मुझे कोई ऐसा समुचित
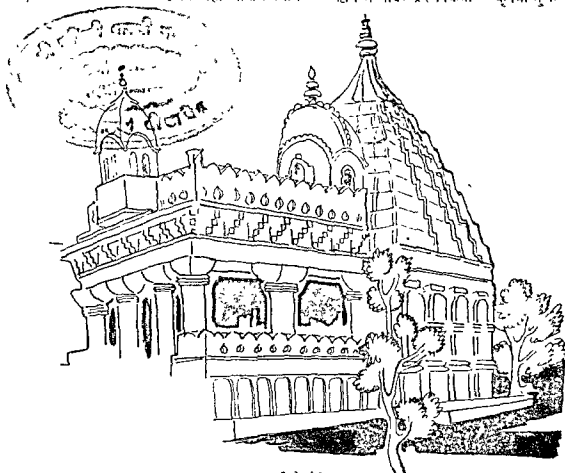
पचवटी मे गौरीशकर मंदिर

स्थान बताइए, जहां वन हो, प्रचुर जल हो, जिससे मैं वहा कुटी बनाकर सुख से रह सकू !"

ऋषि अगस्त्य ने राम का अनुरोध सुना और उस पर सावधानी के साथ विचार करके उत्तर दिया—"मेरे इस आश्रम से दो योजन की दूरी पर 'पचवटी' नामक एक उपयुक्त स्थान है। वहां कद-मूल-फल और जल प्रचुरता मे मिलता है। वन मे हिरण बहुत हैं। वहा जाइये और लक्ष्मण के साथ कुटी बनाकर विराजिए तथा अपने पिता के वचन का उल्लघन किये बिना सुखपूर्वक वनवास का समय पूरा कीजिये।"

पचवटी मे राम ने अपने वनवास के कुछ वर्ष सुखपूर्वक बिताये। इस क्षेत्र का महत्त्व इसी कारण बहुत अधिक है कि यहां राम ने सीता और लक्ष्मण के साथ निवास किया था। इस क्षेत्र के विशाल भाग को दडकारण्य कहते हैं। 'पचवटी' का वनक्षेत्र इसी के अतर्गत है। यह 'दडकारण्य' का विस्तृत क्षेत्र विध्याचल और शैवाल पर्वत के बीच मे स्थित है।

यात्रा मार्ग

नासिक रोड स्टेशन बम्बई-दिल्ली मेन लाइन पर स्थित है। यहा से बम्बई 188 किलोमीटर की दूरी पर है। दिल्ली से नासिक 1354 किलोमीटर के अतर पर है।
स्टेशन से नासिक लगभग 7 किलोमीटर और पचवटी 9 किलोमीटर दूर है।

ठहरने का स्थान

नासिक मे यात्रियो के ठहरने के लिए अनेक धर्मशालाए और विश्राम-गृह हैं, जिनमे उत्तम भोजन और ठहरने की अच्छी सुविधाए हैं।
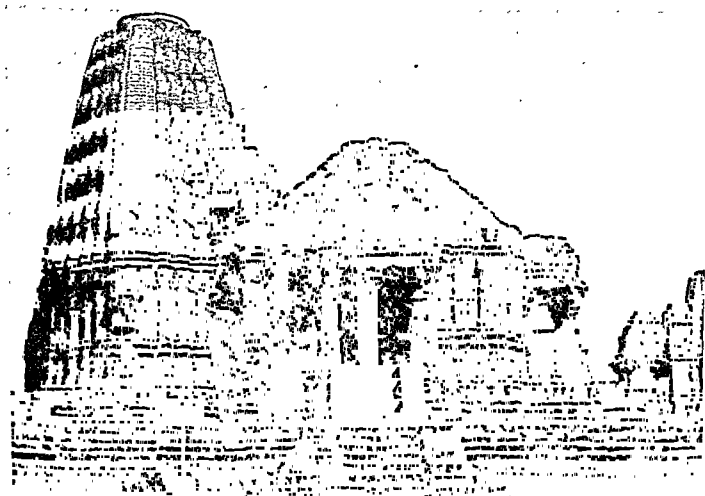
गोडेश्वर मंदिर, नासिक

17. पूरण भक्त (बाबा बिसाह)

हरियाणा प्रदेश, जनपद गुडगावा मे ग्राम कासन के पहाड पर बना हुआ यह प्राचीन मंदिर पूरण भक्त (बाबा बिसाह) के नाम से प्रख्यात है। ग्राम कासन दिल्ली से 50 किलोमीटर दक्षिण में पातली रेलवे स्टेशन से 8 किलोमीटर पूर्व दिशा मे है। गांव पक्की सडक द्वारा भी पहुचा जा सकता है। बम्बई रोड पर, दिल्ली से मनिसर होते हुए इस गांव तक पक्की सडक है। शहर गुड़गावां से ग्राम कासन तक प्रतिदिन सरकारी बस की सुविधा उपलब्ध रहती है।

धार्मिक पृष्ठभूमि

एक किवदती के अनुसार जहा आज मदिर बना हुआ है, प्राचीन समय मे उस स्थान पर गुरू गोरखनाथ के शिष्य• चौरगीनाथ (पूरण भक्त) ने तपस्या की थी।

पूरण भक्त, बाबा चौरगीनाथ का जन्म स्यालकोट (जो अब पाकिस्तान मे है) के राजपूत राजा शालवाहन के घर मे हुआ था। राजकुमार पूरण जब वयस्क हुआ, तो उसकी मौसी ने उस पर झूठे आरोप लगाकर उसे जान से मरवाने का षड्यंत्र रचा, किंतु सौभाग्य से पूरण जल्लादों की नरमी के कारण मरने से बच गया। गुरू गोरखनाथ की कृपा से पूरण पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गया और गोरखनाथ का चेला बन गया। भ्रमण एव विचरण करते हुए पूरण भक्त ने ग्राम कासन मे पदार्पण किया। ग्राम कासन का यह स्थान उसे रमणीय लगा, अत पूरण भक्त ने काफी समय तक ठहर कर यहां तपस्या की। इस दौरान कुछ अद्भुत चमत्कारी घटनाएं घटी। बनजारो की खाड का नमक बनने की घटना उस समय घटी, जब बाबा पूरण भक्त ग्राम कासन स्थित आश्रम मे ठहरे हुए थे। घटना कुछ इस प्रकार बताई जाती है कि बनजारो का एक काफिला खाड की भरती करके गुजरात से देहली जाते हुए इस स्थान से गुजरा। उस काफिले के सरदार ने बाबा जी के दर्शन किए। बातचीत के दौरान बाबा ने उसके व्यापार के सबंध में पूछा तो
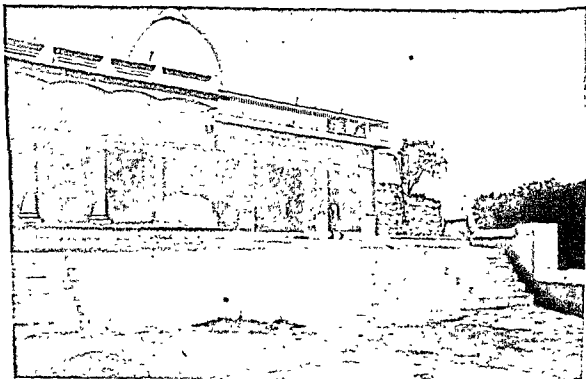
बाबा बिसाह मंदिर का प्रवेश मार्ग

सरदार ने इस भय से कि कहीं बाबा खाड माग न ले, झूठ बोलते हुए कहा कि बाबा नमक की भरती है। बाबा ने सरदार के उत्तर को सुनकर कहा कि नमक है तो नमक ही होगा। इस तरह बात आई-गई हो गयी। लेकिन सफर करते हुए रात हो जाने पर काफिला जब आगे जाकर कही रुका तो देखा कि उनकी सारी खाड नमक बन गई है। बनजारो के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। सरदार को अपनी भूल का अहसास हुआ। वह तुरत बाबा जी से क्षमा याचना के लिए वापस चल दिया। कासन आकर सरदार बाबा जी के पैरो में गिर पडा और अपनी खांड को नमक बताने के झूठ को क्षमा करने की प्रार्थना करने लगा। प्रसन्न होकर बाबा पूरण भक्त ने उसे वरदान दिया कि उसका माल खाड ही रहेगा। वापस आकर बनजारे ने देखा कि नमक खाड में बदल चुका है। इस बात से अभिभूत होकर बनजारो ने पहाड पर मंदिर बनवाया।

इसी प्रकार की एक दूसरी घटना ग्राम कासन के एक श्रद्धालु सज्जन के साथ भी घटी। बात यह हुई कि जाडे की आधी रात को किसी महात्मा ने मंदिर मे आकर शख बजाया। यह शंख-ध्वनि श्रद्धालु भक्त के कान मे पडी तो वह तुरत बिस्तर त्याग कर मंदिर में जा पहुचा। उसने देखा कि एक महात्मा धूनी जमाए बैठे हैं। भक्त ने सादर प्रणाम के साथ निवेदन किया कि महाराज, आधी रात के समय आपने किसलिए शख बजाया है। महात्मा जी ने उत्तर दिया कि यह शख भिक्षा के निमित्त बजाया गया है, क्योकि भूख सता रही है। वह भक्त तुरत अपने घर वापस आया और बजरे की रोटी व सरसो का साग ले जाकर महात्मा जी की सेवा मे हाजिर हो गया। महात्मा जी ने अपनी भूख मिटाई और प्रसन्न होकर भक्त को वरदान दिया कि धूनी के पास झाडी से प्रतिदिन एक पत्ता तोडकर उबाल लेना, पत्ता चादी बन जाएगा, जिसे बेचकर अपनी जरूरत की वस्तुए ले लेना। भक्त ऐसा ही करता रहा, लेकिन एक दिन उसे लालच आ गया कि क्यो न सारे पत्ते तोडकर उबाल लू और चादी बना लूं। उसने ऐसा ही किया। सारे पत्ते तोडकर उबालता रहा, पर अफसोस कि घटो उबालने के बाद भी पत्ते चादी के नही बने। कारण स्पष्ट था कि उसने बाबा के वचनो का उल्लघन किया था। यह महात्मा कोई और नही बल्कि पूरण भक्त ही थे, जो अपने भक्त की परीक्षा लेने के लिए साधु के रूप में आए थे।

इसी प्रकार की एक तीसरी घटना ग्राम कासन मे और घटी। हुआ यूं कि एक किसान ने अपना खेत बिजवाने के लिए अपने पडोसी किसानो से मदद ली। दोपहर हो जाने पर उसने पांच-सात आदमियो के लिए चावल उबाल लिए और उनमे खांड मिला दी। जैसे ही भोजन का समय आया, एक बहुत बडी साधु मडली वहां आ गयी। मडली के सरदार ने किसान से सभी सतो को भोजन कराने के लिए कहा। किसान असमजस मे पड गया कि थोडे से भोजन से इतने अधिक लोगो को कैसे संतुष्ट करे। खैर, उसने अपनी श्रद्धा के अनुसार संतो को भोजन कराने का निश्चय किया। इसी बीच साधु-मडली को देखकर लोग इधर-उधर से आकर वहा जमा हो गए। सतो के सरदार ने कहा कि उपस्थित सभी लोग भोजन करेगे और वह पांच-सात आदमियो के लिए बना हुआ भोजन वैसे का वैसा ही बना रहा, सब लोगो के भोजन करने के बाद भी। उपस्थित सैकडो लोगो के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। यह संतो का सरदार कोई और नही, बल्कि बाबा पूरण भक्त ही थे, जो अपने भक्त-किसान की परीक्षा लेने के लिए आए थे। भोजन के उपरात वह सत मडली लोगों की दृष्टि से अदृश्य हो गई थी।

यहा के लोगो की आम बोलचाल मे पूरण भक्त को ही बाबा बिसाह के नाम से भी जाना जाता है। प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार करते समय खुदाई के दौरान यहा भगवान विष्णु की भांति एक सुंदर तथा खण्डित मूर्ति मिली है। इस के साथ ही अनेक देवी देवताओ की मूर्तिया भी मिली है। जिन्हें हरियाणा सरकार ने यहा से ले जाकर चडीगढ़ शहर मे अपने अजायब
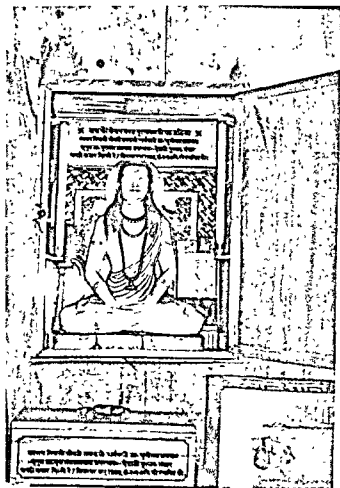
बाबा बिसाह मंदिर मे स्थापित बाबा चौरगीनाथ की भव्य मूर्ति

घर मे रख लिया है। यह सब मूर्तियां कला की दृष्टि से उच्चकोटि की हैं और हजारो वर्ष पुरानी लगती हैं। जिनको मुसलमान शासनकाल मे धर्मांध यवन राजाओ ने तुडवाकर मंदिर को नष्ट कर दिया था, राजस्थान, गुजरात, व मारवाड पर आक्रमणकारी यवन सेनाए इसी गाव से होकर जाया करती थी। अति भव्य एवं प्राचीन मंदिर उनकी कोप-दृष्टि से नहीं बच पाया। मुगल शासन के पतन के पश्चात् उसी स्थान पर एक छोटा सा मंदिर बिना किसी मूर्ति के फिर बनाया गया। वर्ष 1980 मे श्रद्धालु भक्तो ने दानी सज्जनो की सहायता से पुराने मंदिर का विस्तार किया गया। इसमें दूधिया संगमरमर का प्रयोग किया गया है। परिणामत मंदिर के सौंदर्य मे और भी अधिक भव्यता आ गई है। इस भव्य मंदिर मे बाबा चौरंगी नाथ की मूर्ति स्थापित है। इसके अतिरिक्त संकटमोचन हनुमान तथा माता दुर्गा के मंदिरों का भी निर्माण हो गया है। यहा का प्राकृतिक सौंदर्य बावली (पानी का तालाब) के बन जाने से और भी अधिक रमणीय हो गया है। यहा एक बारहमासी प्याऊ भी है। चूंकि मंदिर क्षेत्र 300 फुट की ऊंचाई पर है, अत नीचे से बिजली मोटर द्वारा पानी भी ऊपर ले जाया गया है। कुल मिलाकर यह स्थान हू-ब-हू तीर्थ-स्थल है। यहां अन्य कई चीजें भी देखने योग्य है।

तीर्थ स्थल का दर्शनीय विवरण

इस मंदिर पर हर वर्ष दो बार मेला लगता है। पहला मेला भाद्रपद शुदी चतुर्दशी (अनन्त चौदश) को मुख्य रूप से होता है। एकादशी को ही ध्वजारोहण करके मेले का श्री गणेश कर दिया जाता है। दूसरा मेला माघ शुदी चतुर्दशी को होता है। पहले मेले मे आने वाले यात्रियों की संख्या कई लाख होती है। यहां हर प्रकार की दुकानें, खेल, तमाशे, सर्कस व कुश्ती के दगल भी होते हैं। जीतने वाले पहलवानों को नकद इनाम दिए जाते हैं। मेले में रोशनी, सफाई, पीने के पानी व सुरक्षा की पूरी व्यवस्था की जाती है। मेले मे यात्री लोगों की भारी भीड का कारण बाबा के प्रति उनकी अपार भक्ति भावना है। हजारो निराश दम्पतियो की पुत्र कामना बाबा की कृपा से पूरी हुई है। सच्चे दिल से पूजा करने वाले भक्तों को नौकरी व रोजगार भी मिलता है। भक्तो की सभी कामनाए पूरी होती हैं। यही कारण है कि इस क्षेत्र का प्रत्येक नव विवाहित दम्पति अपने गृहस्थ जीवन का आरम्भ बाबा के मंदिर में पूजा अर्चना के बाद ही करता है। सब लोग अपने पुत्रों का मुंडन संस्कार भी यहीं पर कराते हैं। लोगों का विश्वास है कि बीमार छोटे बच्चों को तालाब के पानी मे स्नान कराने से स्वास्थ्य लाभ मिलता है।

ठहरने की सुविधाएं

तीर्थयात्रियो के ठहरने के लिए यहां सम्पूर्ण सुविधाएं उपलब्ध हैं। ग्राम कामन में दो-तीन धर्मशालाओं की सुविधा तो है ही साथ ही स्थानीय जनों द्वारा तीर्थ यात्रियों के साथ स्नेही व्यवहार यहां की अपनी प्रमुख विशेषता है। तीर्थ स्थल पर पहुचकर तीर्थ यात्रियों को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं उठाना पडता।

बाबा बिसाह ठहरने का स्थान

18. पुण्य भूमि अग्रोहा

अग्रोहा अग्रवाल बधुओं का पुण्य तीर्थ स्थल है। यहा की रजकण को प्रत्येक अग्रवाल अपने मस्तक पर धारण कर धन्य हो जाता है। यही वह स्थल है, जहा से हजारो वर्ष पूर्व अग्रवालो के पूर्वज निकलकर भारतवर्ष के अन्य भागो मे फैल गए और वे पाच सौ से अधिक उपजातियो में बिखर कर अपने मूल स्थान को भूल गए।

धार्मिक पृष्ठभूमि

भारत के हरियाणा प्रदेश मे एक जनपद है, हिसार। इसके उत्तर-पश्चिम में लगभग 20 कि. मी की दूरी पर, देहली सिरसा रोड पर एक रमणीय ग्राम स्थित है—अग्रोहा। निस्संदेह किसी समय यह बड़ा ही समृद्धिशाली नगर था। कहा जाता है कि वैश्य अग्रवाल जाति के सस्थापक राजा अग्रसेन ने इस नगर की नीव रखी थी। यह बात लगभग दो हजार वर्ष से भी अधिक पुरानी है। इस गाव के निकट ही एक पुराना खेडा है। वहां आज भी नष्ट हुए विशाल नगर के भग्नावशेष पड़े हुए है। खेड़ा के ऊपर एक किला बना हुआ है। यह किला देखते ही नानूमल दीवान की स्मृति सजीव हो उठती है, जिन्होने इस किले का निर्माण करवाया था।

एक किवदती के अनुसार अग्रोहा मे ध्रुगनाथ नामक सन्यासी ने अपने शिष्य कीर्तिनाथ के साथ आकर समाधि लगा ली। उनका शिष्य कीर्तिनाथ वही धूनी लगाता रहा तथा भिक्षा मागकर निर्वाह करता रहा। कुछ दिनो के बाद कीर्तिनाथ को घरो से भिक्षा मिलनी बन्द हो गई, अत वह जगल से लकड़िया लाता, धूनी जलाता और भूखा ही सो जाता। एक कुम्हारिन को उस पर दया आ गयी। उसने कीर्तिनाथ को भरपेट भोजन कराया और लकडी काटने के लिए एक कुल्हाडी दी। अब कीर्तिनाथ लकडी काटकर और उसे बेचकर निर्वाह करने लगा। इस प्रकार छ मास का समय बीत गया।

एक दिन बाबा ध्रुगनाथ ने आंखे खोलीं और कीर्तिनाथ से समाचार पूछा। कीर्तिनाथ ने बताया कि यहा के लोग साधु सन्यासियो से अच्छा व्यवहार नही करते। यहा तक कि कोई भिक्षा नही देता, बल्कि ये लोग बुरी तरह धमकाते हैं। यह सुनकर बाबा को अत्यत क्रोध आया और उन्होने श्राप दे दिया कि यह नगर चौबीस घटे मे जलकर राख हो जाएगा। और बाबा अपने शिष्य कीर्तिनाथ को साथ लेकर किसी दूसरे स्थान की ओर चल दिए। चलते समय कीर्तिनाथ ने बाबा से बताया कि यहा एक कुम्हारिन है, जिसने मेरी मदद की थी। बाबा ने आदेश दिया कि उसे सूचित कर दो। बाबा से आदेश लेकर कीर्तिनाथ कुम्हारिन के पास गया और उससे बोला कि हमारे गुरू ने इस नगर को श्राप दिया है कि यह नगर चौबीस घंटे के अदर जलकर नष्ट हो जाएगा। तुम सपरिवार यहां से तुरत
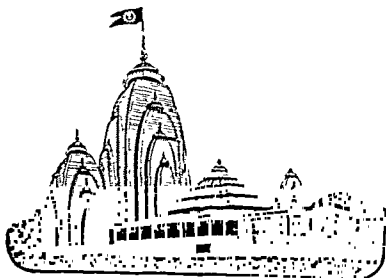
अग्रोहा मंदिर

निकल जाओ। यह कहकर कीर्तिनाथ बाबा के पास वापस लौट आया।

कीर्तिनाथ की बात पर विश्वास करके कुम्हारिन का परिवार नगर छोड़कर निकल पड़ा। लोगो ने पूछा, तो कुम्हारिन ने सारा वृत्तात लोगो को कह सुनाया। जगल की आग की तरह सारे नगर मे यह खबर फैल गई, लेकिन किसी को विश्वास नही हुआ। बल्कि लोगो ने इस बात का मजाक उडाया।

अचानक भयकर आधी चलनी शुरू हो गई। देखते ही देखते बाबा की धूनी की राख से अगारे बन-बनकर उडने लगे और चौबीस घंटे के अदर ही नगर आग की लपटो की चपेट मे आ गया। अग्रोहा जलकर भस्म हो गया। ऐसी ही एक नही बल्कि अनेक किवदतिया अग्रोहा की धार्मिक पृष्ठभूमि के साथ जुडी हुई हैं, तभी तो अग्रोहा तीर्थस्थल बन गया।

वैभवशाली अग्रोहा के खण्डहरो के पास आज भी एक फाल्तानुमा ग्राम है अग्रोहा। यहा की आबादी लगभग दो हजार है। दर्शनीय स्थल के महत्त्व को ध्यान मे रखते हुए, यहां एक धर्मशाला, गौशाला और आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण 22 कमरो की एक और धर्मशाला का निर्माण स्थानीय ट्रस्ट द्वारा कराया जा चुका है, ताकि तीर्थयात्रियो को किसी प्रकार की असुविधा न उठानी पडे।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

अग्रोहा में एक धर्मशाला के अंदर अवघड दानी भोले बाबा का एक सुदर-सा मदिर बना हुआ है। यहां दूर-दूर से भक्त आकर--बम-बम भोले! दानी हो बड़े तुम शिवशकर! का समवेत पाठ तो करते ही हैं, साथ ही—ओ३म् नम. शिवाय! मूल मत्र का जाप भी करते हैं , ताकि शिव प्रसन्न हो। इस शिव मदिर के एक भाग मे महाराजा अग्रसेन की एक सुंदर-सी सगमरमर की प्रतिमा भी स्थापित है। शिव मंदिर के अतिरिक्त शीला की समाधि, रिसालू टिब्बा, लक्खी तालाब एव अन्य सतियो के मदिर दर्शनीय स्थल हैं। इन सभी दर्शनीय स्थलो की अपनी अलग-अलग कहानी है, जिसके कारण इन सबका निर्माण हो सका और अग्रोहा एक तीर्थस्थल बन गया।

यात्रा मार्ग

भारत की राजधानी दिल्ली से रेल द्वारा एवं बस द्वारा अग्रोहा पहुचने की सुविधा उपलब्ध है। करना आपको यह है कि आप दिल्ली से बस अथवा रेल से हिसार पहुंच जाइए। वहा से आप बस द्वारा या अन्य स्थानीय वाहनो द्वारा उत्तर-पश्चिम मे लगभग बीस किलोमीटर दूर देहली-सिरसा रोड पर स्थित अग्रोहा पहुंच सकते हैं।

खंड 6

जैन तीर्थ

(गिरनार, पालीटाणा, रणकपुर, संमेदशिखर, आबू, पावापुरी, श्रवणबेल गोला)

एवं

सिक्ख तीर्थ

(अमृतसर, आनंदपुर साहिब, पंजा-साहिब, शीशगंज, पटना साहिब, ननकाना साहिब, करतारपुर)

निकल जाओ। यह कहकर कीर्तिनाथ बाबा के पास वापस लौट आया।

कीर्तिनाथ की बात पर विश्वास करके कुम्हारिन का परिवार नगर छोड़कर निकल पडा। लोगो ने पूछा, तो कुम्हारिन ने सारा वृत्तात लोगो को कह सुनाया। जगल की आग की तरह सारे नगर मे यह खबर फैल गई, लेकिन किसी को विश्वास नही हुआ। बल्कि लोगो ने इस बात का मजाक उडाया।

अचानक भयकर आधी चलनी शुरू हो गई। देखते ही देखते बाबा की धूनी की राख से अगारे बन-बनकर उडने लगे और चौबीस घटे के अदर ही नगर आग की लपटो की चपेट मे आ गया। अग्रोहा जलकर भस्म हो गया। ऐसी ही एक नही बल्कि अनेक किवदतियां अग्रोहा की धार्मिक पृष्ठभूमि के साथ जुडी हुई हैं, तभी तो अग्रोहा तीर्थस्थल बन गया।

वैभवशाली अग्रोहा के खण्डहरो के पास आज भी एक फाख्तानुमा ग्राम है अग्रोहा। यहा की आबादी लगभग दो हजार है। दर्शनीय स्थल के महत्त्व को ध्यान मे रखते हुए, यहा एक धर्मशाला, गौशाला और आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण 22 कमरो की एक और धर्मशाला का निर्माण स्थानीय ट्रस्ट द्वारा कराया जा चुका है, ताकि तीर्थयात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा न उठानी पडे।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

अग्रोहा मे एक धर्मशाला के अंदर अवधड दानी भोले बाबा का एक सुदर-सा मदिर बना हुआ है। यहां दूर-दूर से भक्त आकर—बम-बम भोले! दानी हो बडे तुम शिवशंकर! का समवेत पाठ तो करते ही हैं, साथ ही—ओं ३मू नम. शिवाय! मूल मत्र का जाप भी करते हैं , ताकि शिव प्रसन्न हो। इस शिव मदिर के एक भाग मे महाराजा अग्रसेन की एक सुंदर-सी सगमरमर की प्रतिमा भी स्थापित है। शिव मदिर के अतिरिक्त शीला की समाधि, रिसालू टिब्बा, लक्खी तालाब एव अन्य सतियो के मदिर दर्शनीय स्थल हैं। इन सभी दर्शनीय स्थलो की अपनी अलग-अलग कहानी है, जिसके कारण इन सबका निर्माण हो सका और अग्रोहा एक तीर्थस्थल बन गया।

यात्रा मार्ग

भारत की राजधानी दिल्ली से रेल द्वारा एव बस द्वारा अग्रोहा पहुचने की सुविधा उपलब्ध है। करना आपको यह है कि आप दिल्ली से बस अथवा रेल से हिसार पहुच जाइए। वहा से आप बस द्वारा या अन्य स्थानीय वाहनो द्वारा उत्तर-पश्चिम मे लगभग बीस किलोमीटर दूर देहली-सिरसा रोड पर स्थित अग्रोहा पहुच सकते हैं।

खंड 6

जैन तीर्थ

(गिरनार, पालीटाणा, रणकपुर, संमेदशिखर, आबू, पावापुरी, श्रवणबेल गोला)

एवं

सिक्ख तीर्थ

(अमृतसर, आनंदपुर साहिब, पंजा-साहिब, शीशगंज, पटना साहिब, ननकाना साहिब, करतारपुर)

भवनाथ शिवालय से गिरनार की चढ़ाई शुरू होती है। ज्यो-ज्यो आगे बढ़ते जाते हैं, देव-देवियों के नए-नए स्थान आते जाते हैं, जो क्रमशः इस तरह हैं—भर्तृहरि की गुफा, सोरठ का महल, जैन स्थानक श्री नेमिनाथ का मंदिर (जैन जन गिरनार को नेमिनाथ का पर्वत कहते हैं)। यहां भीम कुड तथा सूर्य कुंड भी हैं।

यहां से एक रास्ता दूसरी दिशा से पुन नीचे की ओर जाता है, जहा सोपान नही हैं, लेकिन मार्ग सरल है। यह रास्ता भैरव घाटी होते हुए शेषावन (सीतावन) होकर भरतवन को जाता है।

नेमिनाथ से ऊपर बढ़ने पर गोमुखी कुड आता है, जिसमे हमेशा झरने से पानी आता रहता है। यहां भी एक साधारण मंदिर है।

इससे आगे 3330 फुट की ऊंचाई पर अंबाजी का मंदिर है। अंबामाता का मंदिर, अंबामाता चोटी पर है। गोमुखी, हनुमान धारा ओर कमडल नामक तीन कुंड यहां स्थित हैं। प्राचीन काल मे यह पहाडियां अघोरी संतों की भूमि थी। यह गिरनार का प्रथम शिखर माना जाता है। इसके बाद गोरख चोटी है। गोरख चोटी से सोपान नीचे की ओर है। आगे चलकर पुनः ऊपर को चढ़ना पडता है। सीधी चढ़ाई के बाद सबसे ऊपर दत्तात्रेय का शिखर है। दत्तात्रेय पर्वत पर दत्तात्रेय मंदिर और गोमुखी गगा है। यात्री यहां स्नान भी करते हैं।

हर कार्तिक पूर्णिमा को गिरनार की परिक्रमा होती है। इस परिक्रमा में गिर के भव्य जगल के दर्शन होते हैं। परिक्रमा मे कई तीर्थ हैं।

यात्रा मार्ग

गुजरात प्रदेश के प्रसिद्ध नगर जूनागढ़ से 16 किलोमीटर पूर्व में हैं ये पहाडिया। गिरनार जाने के लिए बस और मोटर-गाडिया उपलब्ध हैं।
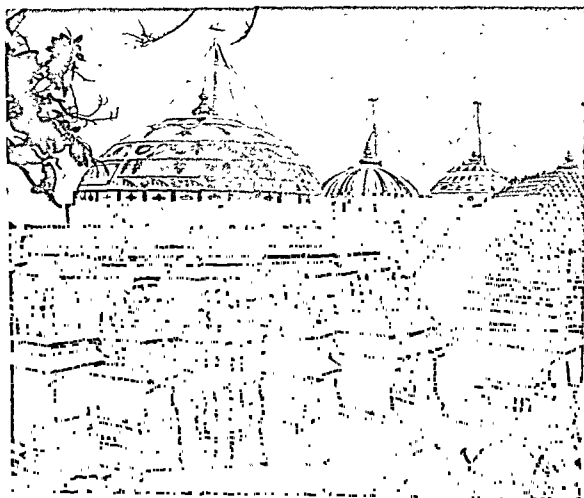
[illegible] मंदिर, (गुजरात)

2. जैन तीर्थ पालीटाणा (शत्रुंजय)

भावनगर के समीप शत्रुजय गिरिमाला के अचल मे पालीटाणा बसा हुआ है। यहा आठ करोड मुनियो को मोक्ष प्राप्त हुआ था। अत यह सिध्याचल जैन लोगों का प्रमुख तीर्थ तथा अत्यत पवित्र स्थान माना जाता है।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

यहा 1977 फुट की ऊचाई पर 863 मदिर बने हुए है। 11वी शताब्दी मे यहा कुछ मदिर बने थे। बाद मे मुस्लिम आक्रमण से उनका विनाश हुआ। पुन 16वी शताब्दी मे ये मदिर रचे गए, किन्तु शिल्पशैली पूर्ववत् रखी गई।

पालीटाणा मे शातिनाथ भगवान का सुदर देरासर है। पर्वत के मंदिरो मे भगवान ऋषभदेव जी का मंदिर है। ऋषभदेव को यही पर केवलज्ञान प्राप्त हुआ था व यही पर निर्वाण प्राप्त हुआ था।

मुख्य मंदिरो मे भगवान आदिनाथजी तथा चौमुखी के मदिर भी हैं। तदुपरान्त कुमारपाल व विमल शाह के बनवाए यहा पर कई मंदिर हैं।

पालीटाणा को मंदिरो का शहर कहा जाता है। सबसे अधिक पवित्र माना जाने वाला, प्रथम तीर्थकर भगवान आदिश्वर का मंदिर भी, यहा विद्यमान है। और मंदिरो की अपेक्षा सादा दिखाई देने वाला यह मंदिर शिल्प कला का अनुपम नमूना बन पडा है।

मूर्तियो मे अमूल्य रत्न जडे हुए हैं।

यहा पर कार्तिक की पूर्णिमा, फागुन सुदी 13, चैत्र पूर्णिमा और वैसाख सुदी 3 अखातीज के दिनों मे देश भर से हजारो भक्त यात्रार्थ आते हैं और दर्शन व प्रदक्षिणा का पुण्य प्राप्त करते हैं।

आसपास के अन्य दर्शनीय स्थल

भावनगर के समीप अब तलाजा नाम का छोटा बदर प्राचीनकाल मे तालध्वजगिरि के नाम से प्रचलित था। यहा गिरि शिखर पर जैन मंदिर बने हुए है। चौमुखी जी सबसे ऊचाई पर है। सदियो से यह स्थान जैन लोगों का तीर्थधाम बना हुआ होने के साथ-साथ यहा पर बौद्धकालीन गुफाए भी विद्यमान है।

सौराष्ट्र के दिलवाडा मे विद्यमान जैन मंदिर अपने शिल्प सौंदर्य के कारण प्रसिद्ध है। यहा से थोडी दूर गुप्तप्रयाग है।

भावनगर के नजदीक सोनगढ मे कहानजीस्वामी का दिगंबर जैन मदिर है। यहा का सगमरमर का कीर्तिस्तभ अति सुदर, आकर्षक व कलापूर्ण है।

(दिलवाड़ा जैन मंदिरों के लिए देखें खंड पांच में आबू का विवरण)
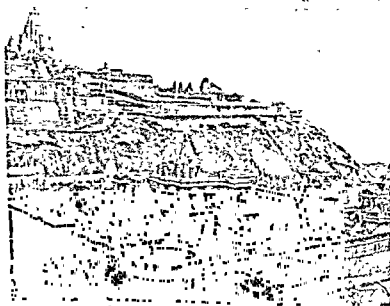
जैन मंदिर पालीटाणा, भावनगर (गुजरात)

3. जैन तीर्थ रणकपुर

रणकपुर, संगमरमर के बने जैन मदिरो का एक अपूर्व क्षेत्र है। अरावली पहाडी के भूदृश्यो के साथ-साथ वास्तुकला के बेहतरीन नमूनो को देखने के लिए यहा पर्यटक भी बहुतायत मे आते हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

कहा जाता है कि एक साधारण व्यक्ति दीपाकारित ने इस भव्य मदिर क्षेत्र की कल्पना की थी और राणा कुभा के कहने पर धरनाशाह ने इस मंदिर क्षेत्र का निर्माण सन् 1439 मे प्रारम्भ किया था। इस सपूर्ण क्षेत्र में प्रमुख मदिर है—चौमुखा मदिर, जिसको पहले 'त्रैलोक्य दीपक' कहा जाता था। इस भव्य मदिर का निर्माण लगभग 60 वर्षो मे पूरा हो सका। मदिर निर्माण का कार्य सन् 1498 मे, प्रथम तीर्थकर की मूर्ति की स्थापना के साथ सम्पन्न हुआ।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

मदिर के भीतरी भाग मे आदिनाथजी की मूर्ति है, जिसको चारो तरफ से देखा जा सकता है। 48000 वर्ग फुट जगह पर निर्मित यह मंदिर तिमजिला है। मदिर के चार भाग हैं, जिनपर करीब 80 गुबद हैं, जिन्हे 400 खभो पर टिकाया गया है। मदिर मे 24 मंडप हैं और 44 शिखर। मदिर मे दाखिल होते ही कोई भी भक्तिभाव से ओतप्रोत हो सकता है।

आदि तीर्थकर ऋषभदेव को समर्पित यह मदिर मोमबत्तियो के प्रकाश मे ही आलोकित रहता है। मदिर मे दो विशाल घंटे
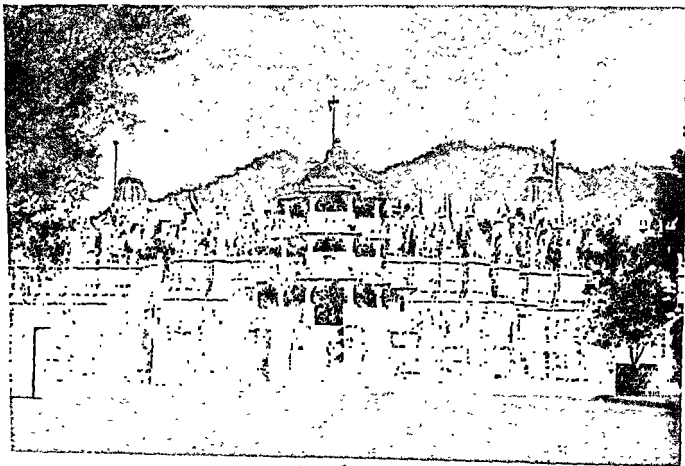
आदिनाथ मंदिर, रणकपुर
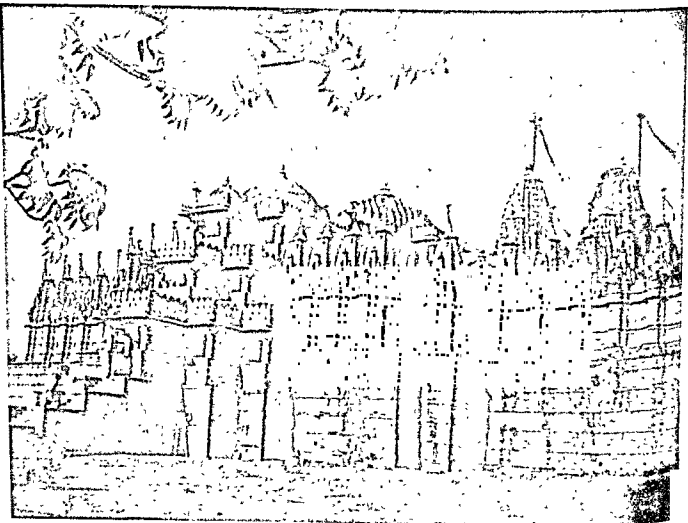
4. जैन तीर्थ संमेद शिखर

जैनियो का यह पवित्र तीर्थ विहार राज्य के हजारीबाग जिले में स्थित है। संमेद शिखर की ऊंचाई लगभग 4,488 फुट है और इसे पारसनाथ का पर्वत भी कहा जाता है। यही पास ब्राकर नदी बहती है, जैनियों की मान्यता है कि उनके पौराणिक साहित्य में वर्णित रिजुपालिका नदी यही है। रिजुपालिका नदी के किनारे के क्षेत्र का धार्मिक महत्त्व है।

धार्मिक पृष्ठभूमि

इस क्षेत्र के विषय मे निम्नलिखित कथा उल्लेखनीय है—

रिजुपालिका नदी के तट-क्षेत्र मे, सामाग नामक एक गृहस्थ रहता था। अनेक वर्षो बाद वहां एक वार अपूर्व योग आया। उत्तरा फाल्गुनी के नक्षत्र मे चद्र का आगमन हुआ। उस समय वहा स्थित एक शाल वृक्ष के नीचे ध्यान लगाये बैठे एक पुरुष को कैवल्य-ज्ञान हुआ। यह व्यक्ति पिछले 13 वर्ष से तप कर रहा था। सूर्य और चद्रमा के ताप और शीतलता के असर से शरीर की रक्षा के लिए पेडो की छाया के अलावा वहा और कुछ न था। कुछ दिनो से तो उसने जल भी ग्रहण नही किया था। प्रणाम करने की मुद्रा मे स्थिर होकर वह ध्यानावस्थित हो गया था। अत मे इस तपस्वी को कैवल्य-ज्ञान हुआ। फलस्वरूप वह जिन बन गया। अर्हत हुआ। फिर 'केवली' के पद पर पहुच गया। यह जैनो के अतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी कहलाये। यह स्थान इसी कारण महत्त्वपूर्ण तीर्थस्थल बन गया।

संमेद शिखर पर जैनियो के 23वे तीर्थंकर पारसनाथ ने सौ वर्ष की आयु में देह त्याग किया था। इसलिए इसे समाधिगिरि भी कहा जाता है। शिखर जी, समेत गिरि, समिद गिरि तथा मल्ल पर्वत आदि नामो से भी इसे जाना जाता है। जैनियों के मतानुसार 24 तीर्थंकरो मे से 20 ने इसी स्थान पर निर्वाण प्राप्त किया। अन्य चार तीर्थंकर आदिनाम, वासुपूज्य स्वामी, नेमिनाथ और महावीर स्वामी है।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

समेद शिखर के लिए यात्रा गिरिडीह से प्रारम्भ की जाती है। यहा पर सुपार्श्वनाथ का मंदिर है। गिरिडीह से मधुवन तक जाते हैं, जहा से समेद शिखर का यात्रापथ आरम्भ होता है। शिखर तक चढ़ने का मार्ग सुगम एवं अच्छा है। मधुवन में ठीक सामने अदर भेमियाजी का मंदिर है। आगे और अदर जाने पर श्वेताबर जैनियो के ग्यारह मंदिर मिलते है।

यात्रा मार्ग एवं ठहरने का स्थान

दिल्ली-हावड़ा लाइन पर गिरिडीह प्रसिद्ध स्टेशन है। मधुवन ईसरी से लगभग 25 किलोमीटर दूर है। मधुवन से संमेद शिखर पैदल चढ़ना होता है। जिनसे ऊपर नही चढा जाता,वे डोली का सहारा लेते हैं। जैन लोग ऊपर चमडे के जूते पहनकर नही चढते—वे या तो प्लास्टिक के जूते अथवा चप्पल पहनते हैं या नगे पैरों ही ऊपर तक जाते हैं। मधुवन मे दिगबर जैनियो की धर्मशाला है।

समेद शिखर मधुवन जैन मंदिर

5. जैनतीर्थ पावापुरी

पावागढ़ नामक पर्वत के नीचे एक समय चापानेर नामक बड़ा नगर था, जिसे पावापुरी कहा जाता था। यह नगर कभी गुजरात की राजधानी था। बारह मील घेरे में बसा यह नगर बहुत प्रसिद्ध था। इस नगर के खंडहरों के पास पावागढ़ का पर्वत है। इस पर्वत के ऊपर महाकाली माता का मंदिर है। पावागढ़ हिंदू और जैन तीर्थों का संगम है।

धार्मिक पृष्ठभूमि

एक पौराणिक कथा के अनुसार इस पर्वत के ऊपर खड़े होकर ऋषि विश्वामित्र उपासना कर रहे थे। एक बार ऋषि की गाय चरती-चरती यहां तक आ पहुंची और तीन खड्ड में गिर गई। इस पर ऋषि ने ईश्वर से प्रार्थना की कि इस दर्रे को भर दो। तब इस तरफ का दर्रा भर गया। इससे यह पवन पावागढ़ कहलाया।

एक दूसरा कारण पर्वत के नामकरण के बारे में यह प्रचलित है कि इसके आसपास के खुले मैदान के बीच में यह पवन चारों तरफ से पवन के झोंकों का मुकाबला करता है। इस कारण यह पर्वत 'पावागढ़' कहा जाता है।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

पावागढ़ पर्वत की लंबी चढ़ाई लगभग 5 किलोमीटर है। मार्ग में सात विशाल द्वार बने हुए हैं। पावागढ़ चढ़ाई पर पांचवें द्वार से ही जैन मंदिर आरंभ हो जाते हैं। छठे दरवाजे के पास ही दूधिया तालाब नामक स्थान है—इस तालाब में तीर्थयात्री स्नान करते हैं। दूधिया तालाब पर जैन मंदिर बने हुए हैं और इनके बाद हिंदू मंदिरों का सिलसिला चलता है। यहीं से महाकाली मंदिर की चढ़ाई के लिए सीढ़ियां हैं। लगभग 150 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। महाकाली की मूर्ति आधी दिखाई देती है।

महाकाली मंदिर से सीढ़ियां उतरकर दूसरी ओर लगभग एक किलोमीटर पर भद्रकाली मंदिर है।

पर्वत पर परकोटा बना हुआ है। यह कोट आजकल अनेक जगह से टूट-फूट गया है, लेकिन माता का मंदिर ठीक हालत में है। नवरात्र के दिनों में यहां मेला लगता है। यह पर्वत 26 मील के घेरे में फैला हुआ है। पावागढ़ की ऊंचाई 2800 फुट है।

यात्रा मार्ग

यह स्थान बड़ोदरा से 48 किलोमीटर दूर है। यहां पहुंचने के लिए चापानेर रोड नाम के रेलवे स्टेशन पर ट्रेन बदलनी पड़ती है। बड़ोदरा और गोधरा से बस द्वारा भी पहुंचा जा सकता है। गोधरा से यह स्थान 40 किलोमीटर पर है।

पावागढ़ पहाड़ पर जैन मंदिरों का दृश्य

6. श्रवण बेल गोला

मैसूर से लगभग सौ किलोमीटर दूर स्थित जैनो का प्रसिद्ध तीर्थ 'श्रवण बेल गोला' इद्रगिरि और चद्रगिरि नामक दो पर्वतो के बीच बसा हुआ है।

श्रवण बेल गोला ही वह स्थान है,जहा जनश्रुति के अनुसार सम्राट चद्रगुप्त मौर्य ने राजपाट त्याग कर जीवन के अंतिम दिन बिताए थे। यद्यपि यहा कई जैन मदिर और मूर्तिया है फिर भी इद्रगिरि पर स्थित गोमतेश्वर की 57 फुट ऊची दिगम्बर मूर्ति ही यहा का मुख्य आकर्षण केंद्र है। इतनी बडी मूर्ति दुनिया में अन्यत्र शायद ही कही देखने को मिलेगी। प्रसिद्ध पुरातत्व-वेत्ता फरगुसन के अनुसार, "मिस्र से बाहर इतनी वृहद आकार और विशाल वस्तु अन्यत्र देखने को हमे नही मिल सकती और वहा भी कोई प्रतिमा ऐसी नही है, जो ऊचाई मे इससे अधिक हो।"

मूर्ति का निर्माण गगवशीय राजा रायमल्ल चतुर्थ के सेनापति चामुडराय द्वारा कराया गया था।

(आबू के लिए देखें खंड पांच में आरासुर की अंबिका)

कुछ अन्य जैन तीर्थ

हस्तिनापुर—दिल्ली से मेरठ 60 किलोमीटर और मेरठ से हस्तिनापुर 37 किलोमीटर है। हस्तिनापुर मे भगवान ऋषभदेव को राजकुमार श्रेयान्स ने सर्वप्रथम आहार दिया था। भगवान शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ और अरनाथ के गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान कल्याणक यहीं पर हुए थे। ये तीर्थंकर भी थे और चक्रवर्ती भी थे। बलि आदि मन्त्रियो ने अकम्पनाचार्य आदि 700 मुनियो पर जब घोर उपसर्ग किये,तब मुनि विष्णुकुमार ने यही पर उन मुनियो की रक्षा की थी।

यहा राजा हरसुखराय का बनवाया हुआ जैन मदिर है। उसके सामने 31 फुट ऊचा मानस्तम्भ है। मदिर मे भगवान शान्तिनाथ की मूलनायक प्रतिमा है। इसके पीछे एक मदिर और है। उसमे लगभग 6 फुट की भगवान शान्तिनाथ की खड्गासन प्रतिमा दर्शनीय है।

क्षेत्र पर ठहरने के लिए कई धर्मशालाए बनी हुई है। दिगम्बर जैन गुरुकुल और मुमुक्षु आश्रम मे यात्रियो को ठहरने की व्यवस्था है।

अहिच्छत्र—बदरीनाथ से बस द्वारा ऋषिकेश लौटकर वहा से रेल द्वारा मुरादाबाद, मुरादाबाद से चन्दौसी और चन्दौसी से आंवला स्टेशन जाना चाहिए। इस स्टेशन से अहिच्छत्र 18 कि मी है। स्टेशन से क्षेत्र तक जाने के लिए तागे मिलते हैं। अहिच्छत्र मे भगवान पार्श्वनाथ की मूलनायक प्रतिमा है,जिसे
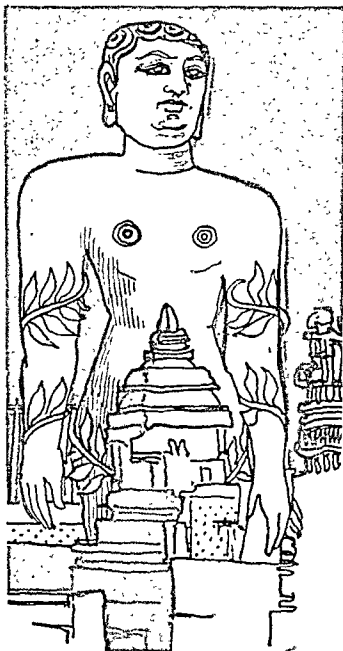
गोमतेश्वर की विशाल मूर्ति

'तिखालवाले बाबा' कहा जाता है। अहिच्छत्र में मिले हुए रामनगर के मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ की भव्य प्रतिमा है। ठहरने के लिए कई धर्मशालाएं हैं।

कौशाम्बी—इलाहाबाद से बस द्वारा कौशाम्बी 60 कि. मी. दूर है। यहां पर भगवान पद्मप्रभु के गर्भ और जन्म कल्याणक हुए थे। चन्दनबाला ने यहां भगवान महावीर को आहार दिया था। यहां एक मंदिर और एक धर्मशाला है। बस कौशाम्बी के रेस्ट हाउस तक जाती है। यहां से लगभग 3 कि. मी. कच्चे मार्ग से क्षेत्र तक पहुंचा जा सकता है।

श्रावस्ती—त्रिलोकपुर से बाराबंकी आकर वहां से रेल या बस द्वारा गौण्डा-बलरामपुर होकर श्रावस्ती आना चाहिए। यहां भगवान सम्भवनाथ के गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान कल्याणक हुए थे।

यहां से मुनि मृगध्वज, मुनि नागदत्त मुक्त हुए थे। जैन नरेश सुदृढध्वज अथवा सुहलदेव ने महमूद गजनवी के भानजे और सिपहसालार सैयद सालार मसऊद गाजी को यहीं परास्त किया था। खिलजी ने यहां के मंदिरों, मूर्तियों, विहारों और स्तूपों को तोड़कर खण्डहर बना दिया। भगवान सम्भवनाथ का प्राचीन मंदिर जीर्णशीर्ण दशा में वहां अब भी खड़ा है। कहा जाता है कि इसके निकट अठारह जैन मंदिर थे, जो अब खण्डहरों के रूप में पड़े हुए हैं।

पार्श्वनाथ जी, अहिच्छत्र

क्षेत्र पर नवीन मंदिर बन गये हैं और ठहरने के लिए धर्मशालाएं उपलब्ध हैं।

वैशाली—गुलजार बाग से गंगा के किनारे महेन्द्र घाट जाना चाहिए। गुलजारबाग से यह लगभग 4 मील है। इस घाट से पहलेजा घाट के लिए स्टीमर जाता है। पहलेजा घाट से लगभग 2 फर्लांग चलकर स्टेशन और बस स्टैण्ड है। वहां से ट्रेन और बस हाजीपुर के लिए मिलती हैं। महेन्द्र घाट से हाजीपुर 58 कि. मी. है। हाजीपुर से वैशाली 36 कि. मी. है। बस और टैक्सी मिलती हैं। पहलेजा घाट से वैशाली के लिए सीधी बस भी जाती है। वैशाली में सड़क के किनारे जैन विहार (धर्मशाला) बना हुआ है। वहीं पर पर्यटक केन्द्र और उसका डाकबंगला बना हुआ है।

राजगृही—वैशाली से पहलेजा घाट होते हुए पटना वापस लौटना चाहिए। पटना से राजगृही के लिए सीधी बस जाती है। पटना से राजगृही कुल 99 कि. मी. है। ट्रेन द्वारा पटना से 46 कि. मी. बख्तियारपुर जाकर वहां से बस, टैक्सी या ट्रेन से 53 कि. मी. राजगृही जा सकते हैं। राजगृही में दिगम्बर जैन धर्मशाला में ठहरने की सुन्दर व्यवस्था है।

यहां पांच अलग-अलग पहाड़ी हैं, जिनकी यात्रा और वन्दना के लिए भक्तजन जाते हैं। यदि एक दिन में पांचों पहाड़ों की वन्दना करने की श्रद्धा, संकल्प और शक्ति हो तो वन्दना एक दिन में ही करनी चाहिए।

सोनागिरि—ग्वालियर से 61 कि. मी. दूर सोनागिरि रेलवे स्टेशन है। वहां से क्षेत्र 5 कि. मी. है। क्षेत्र तक पक्की सड़क है। स्टेशन पर तांगे मिलते हैं। ग्वालियर से सोनागिरि तक सीधी पक्की सड़क है तथा सीधी बस-सेवा भी है।

पर्वत के ऊपर 77 मंदिर, 13 छतरियां हैं तथा तलहटी में 17 मंदिर और 5 छतरियां हैं। मंदिर न. 57 मुख्य मंदिर है। इसमें भगवान चन्द्रप्रभ की साढ़े नौ फुट ऊंची मूलनायक की भव्य प्रतिमा है। इस क्षेत्र पर दो स्थान विशेष आकर्षण के केंद्र हैं—नारियल कुण्ड और बाजनी शिला। क्षेत्र पर कुल 15 धर्मशालाएं हैं। वार्षिक मेला चैत्र कृष्णा 1 से 5 तक भरता है।

शिवपुरी—पनिहार से शिवपुरी रेल और सड़क मार्ग से 96 कि.मी. है। यहां सरकारी संग्रहालय है। इसमें अधिक भाग जैन सामग्री का है। नगर में कई जिनालय हैं।

द्रोणगिरि—खजुराहो से छतरपुर होकर मलहरा जाना चाहिए। खजुराहो से मलहरा छतरपुर-सागर रोड पर 104 कि.मी. है। गांव का नाम सेंधपा है, द्रोणगिरि तो पर्वत का नाम है। सेंधपा के बस-स्टैण्ड से जैन धर्मशाला 100 गज दूर गांव के भीतर है।

पर्वत के ऊपर 28 जिनालय बने हुए हैं। इनमें तिगोड़ावालों का मंदिर सबसे प्राचीन है और बड़ा मंदिर कहलाता है।

वार्षिक मेला फाल्गुन कृष्णा 1 से 5 तक होता है।

विदिशा—सागर से विदिशा जाने वाली सडक पर ग्यारसपुर तीर्थ से विदिशा 38 कि.मी है। पक्की सड़क है। श्रीमन्त सेठ लक्ष्मीचन्द्रजी की जैन धर्मशाला सुविधाजनक है। इसी में ऊपर के भाग मे जिनालय है। इसमे इधर उधर से प्राप्त अनेक जैन मूर्तियां हैं। इसमे 9वी—10वी शताब्दी तक की मूर्तियां हैं।

उदयगिरि—विदिशा से 6 कि. मी. दूर उदयगिरि की प्रसिद्ध गुफाएं हैं। पक्की सड़क है। तागे या स्कूटर द्वारा जा सकते हैं। गुफाओ में गुफा न. 20 और 1 जैन गुफाएं है। गुफा नं. 20 मे गुप्त संवत् 106 का एक अभिलेख तथा गुप्त कालीन जैन मूर्तिया उपलब्ध हैं। गुफा न. 1 मे भी सुपार्श्वनाथ की एक प्राचीन मूर्ति विराजमान है। सांची यहा से 8 कि. मी. है।

श्रीमहावीरजी—यह भारत भर मे प्रसिद्ध दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र है। यहा वर्ष-भर मे लाखों भक्तजन मन मे कामना सजोये आते हैं। उनकी कामना-पूर्ति हो जाती है, श्रद्धालुओं का ऐसा विश्वास है। मूलनायक भगवान महावीर की कत्थई वर्ण की प्राचीन प्रतिमा यहां स्थित है। इस मूर्ति को एक भक्त ग्वाले ने भूमि से निकाला था। इस मंदिर में कुल नौ वेदिया है। मदिर के आगे मानस्तम्भ और चारो ओर धर्मशाला है,जो कटला कहलाता है। इसके अतिरिक्त भी कई और विशाल धर्मशालाएं हैं।

ऋषभदेव—उदयपुर से राजमार्ग से ऋषभदेव (केशरियाजी) 65 कि मी. है। यह एक सुप्रसिद्ध अतिशय क्षेत्र है। यहा भगवान ऋषभदेव की अत्यत चमत्कारी प्रतिमा है। इसके दर्शन करने और मनौती मनाने के लिए केवल दिगम्बर जैन ही नही, बल्कि श्वेताम्बर जैन, भील और हिन्दू भी बहुत बड़ी संख्या में आते है। यहां सभी मूर्तियां दिगम्बर आम्नाय की है। इस मदिर के चारो ओर 52 देहरिया बनी हुई हैं। मदिर का मुख्य द्वार अत्यत विशाल एव कलापूर्ण है। यात्रियो के ठहरने के लिए कई धर्मशालाएं हैं।

अंकलेश्वर—बड़ौदा से रेल द्वारा अंकलेश्वर 79 कि. मी. है। नगर के मध्य में दिगम्बर जैन धर्मशाला है। यहां चिन्तामणि पार्श्वनाथ, नेमिनाथ, आदिनाथ, और महावीर मदिर,ये चार
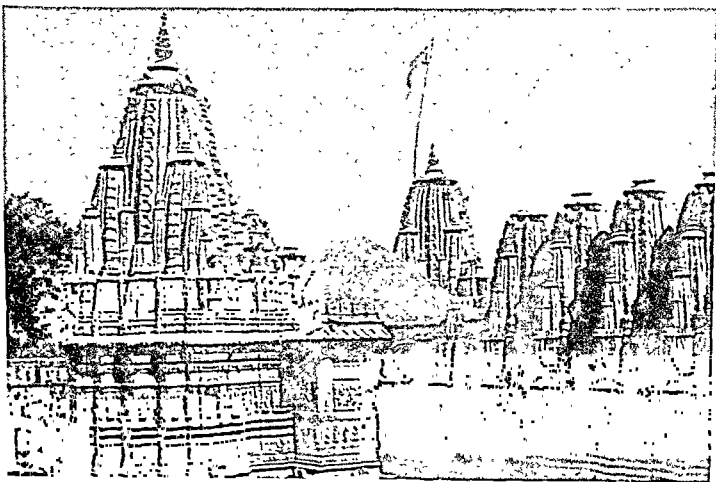
ऋषभदेव : मुख्य मंदिर के शिखरों का मनोरम दृश्य

मदिर हैं। चिन्तामणि पार्श्वनाथ की प्रतिमा राजकुण्ड मे से निकली थी। कहते है पार्श्वनाथ मदिर मे ही भगवत्पुष्पदन्त और भगवत्भूतबलि ने धरसेनाचार्य से सिद्धात ग्रन्थो का अध्ययन करने के बाद प्रथम चातुर्मास किया था। यहा का मुख्य मदिर महावीर मदिर है।

बाहुबली—गिरि पार्श्वनाथ से पुन किर्लोस्कर वाडी आकर वहा से रेल द्वारा हातकलगडे उतरना चाहिए। वहा से 6 कि. मी. बाहुबली क्षेत्र है। नियमित बस-सेवा है। सडक के किनारे विशाल प्रवेश-द्वार बना हुआ है। उसमे प्रवेश करने पर धर्मशालाए तथा गुरुकुल भवन बने हुए हैं। इन भवनो के निकट ही जिनालय का मुख्य प्रवेश द्वार है। प्रवेश करते ही सामने एक उन्नत चबूतरे पर बाहुबली स्वामी की 28 फट ऊची एक प्रतिमा खडी है। मदिरो का पुनर्निर्माण हो रहा है। यहां का बाहुबली ब्रह्मचर्याश्रम प्राचीन और आधुनिक शिक्षण पद्धति का अपूर्व सगम है।

अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ—शिरडशाहपुर से चोंडी 8 कि मी.। चोंडी से वाशिम 114 कि. मी.। वाशिम से मालेगाव 20 कि. मी. तथा मालेगाव से सिरपुर गाव 10 कि. मी. है। बसो की व्यवस्था है। सिरपुर गाव मे ही श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र है। गाव के बाहर श्री अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन पवली मंदिर बना हुआ है। यही मूल मंदिर है। इसे 1000 वर्ष पूर्व ऐल श्रीपाल ने बनवाया था। मुस्लिम काल मे मूर्ति नगर के मंदिर के भूगर्भगृह में स्थापित कर दी गई थी। नगर के मंदिर मे श्वेताम्बर-दिगम्बर दोनो सम्प्रदायो को पूजा का अधिकार है। उसके लिए समय निर्धारित है। नीचे भोयरे में भगवान पार्श्वनाथ की कृष्णवर्ण की अर्धपद्मासन 3 फुट 8 इच ऊची सप्तफण मंडित प्रतिमा विराजमान है। यह अन्तरिक्ष मे अधर ठहरी हुई है। केवल बाईं ओर थोडी सी भूमि से स्पर्श करती है। मंदिर के निकट ही दिगम्बर जैनो की तीन धर्मशालाए हैं।
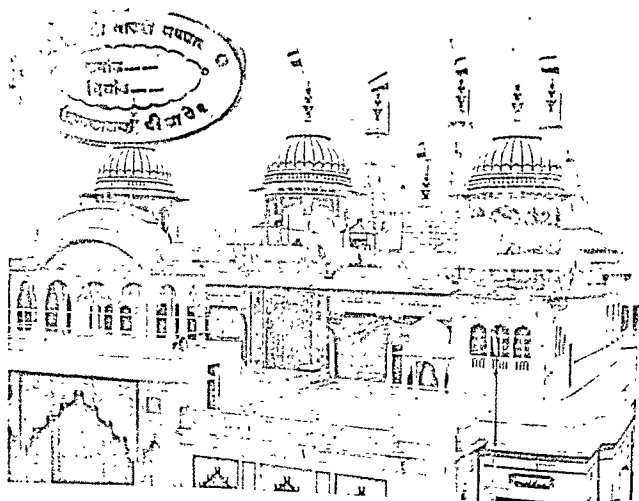
श्रीमहावीरजी - मंदिर का बाह्य दृश्य

मुक्तागिरि—अमरावती से बस द्वारा परतवाडा (अचलगढ़) 52 कि.मी. तथा परतवाड़ा से खरपी होकर मुक्तागिरि 13 कि.मी. है। परतवाडा में स्कूटर या रिक्शे से ही क्षेत्र तक पहुच सक्ते हैं।

यह क्षेत्र प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है। ऊपर पर्वत पर बड़ी ऊंचाई से जलप्रपात गिरता है। कहते हैं यह वही स्थान है,जहां से मेंढ़ा मुनि के पास जा गिरा था। मुनि ने उसे णमोकार मन्त्र सुनाया। मेंढ़ा निर्मल परिणामो मे मरकर स्वर्ग में देव बना। जहां मुनि ध्यान मे लीन थे,उस स्थान पर 1000 वर्ष प्राचीन ऐलनरेश श्रीपाल द्वारा निर्मित गुहा मंदिर बना हुआ है। प्रपात के नाले के दोनो ओर 53 जिनालय बने हुए हैं।

श्री पार्श्वनाथ जैन मंदिर (क्रमाक 26) यहां का बडा मंदिर कहलाता है। इसमें भगवान पार्श्वनाथ की सवा चार फुट ऊची कृष्णवर्ण पद्मासन प्रतिमा मूलनायक है।

तलहटी मे आदिनाथ और महावीर नामक दो मंदिर हैं। मंदिरों के दोनो ओर धर्मशालाएं हैं।
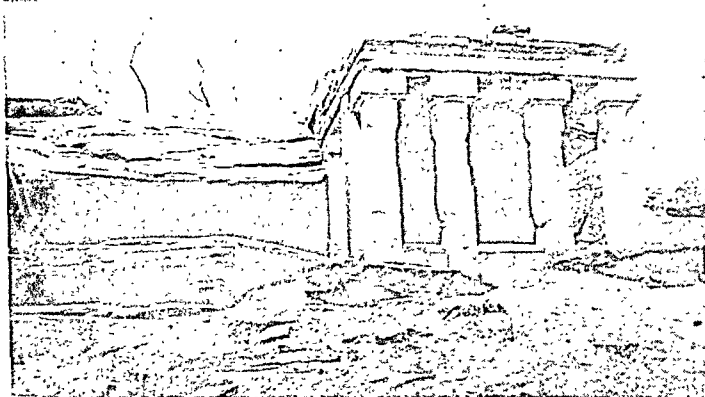
गुप्तकालीन गुहा मंदिर, उदयगिरि (विदिशा)

सिक्ख तीर्थ

1. अमृतसर

भारत की उत्तर-पश्चिम सीमा पर अमृतसर एक प्रमुख नगर है। यह सिक्खों का प्रमुख नगर तथा तीर्थस्थान है। इसकी नीव सिक्खो के चौथे गुरु रामदास ने डाली—उस समय इसका नाम 'गुरु का नगर' था। गुरुजी ने यहा पर मंदिर बनाने से पूर्व एक सरोवर बनवाया जिसका नाम उन्होंने 'अमृत का सर' रखा। इसीलिए बाद मे यह नगर 'अमरतसर' नाम से प्रसिद्ध हुआ।

धार्मिक तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

सन् 1577 मे गुरु रामदास ने इच्छा व्यक्त की कि सिक्ख जाति के लिए एक सुंदर मंदिर का निर्माण किया जाए। मंदिर का निर्माण कार्य आरंभ होने से पूर्व, उसके चारों ओर उन्होंने एक ताल खुदवाना आरंभ किया, परंतु उनकी मृत्यु हो जाने के कारण कार्य अधूरा रह गया। उनके पुत्र तथा पांचवें गुरु अर्जुन देव ने यह अधूरा कार्य, स्वर्ण मंदिर बनवाकर पूरा किया। धीरे-धीरे इस मंदिर के चारो ओर 'अमृतसर' नामक नगर बस गया। महाराजा रणजीत सिंह ने मंदिर की शोभा बढ़ाने में बहुत धन व्यय किया।

दरबार साहिब (स्वर्ण मंदिर) से लगभग दो फर्लांग की दूरी पर ही विख्यात जलियांवाला बाग है, जहा जनरल ओ. डायर ने 13 अप्रैल 1919 को एक सार्वजनिक सभा पर गोलियां चलवाई थी।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

स्वर्ण मंदिर—स्वर्ण मंदिर के द्वार पर विभाजन से पहले एक सुंदर घंटाघर था। जिसके घंटे की आवाज सारे नगर में सुनाई पडती थी,परंतु अब इसे हटाकर, यहां पर बहुत ही सुंदर प्रवेश द्वार बनाया गया है। इस मंदिर को 'दरबार साहिब' भी कहते हैं। पहले पहल इस मंदिर का नाम था 'हरि मंदिर'।
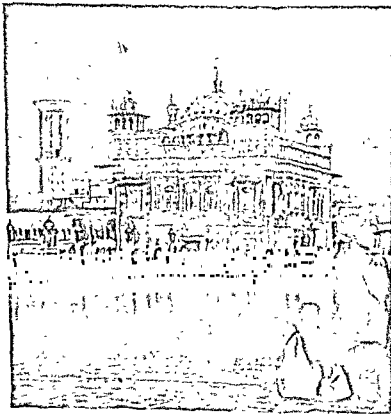
स्वर्ण मंदिर, अमृतसर
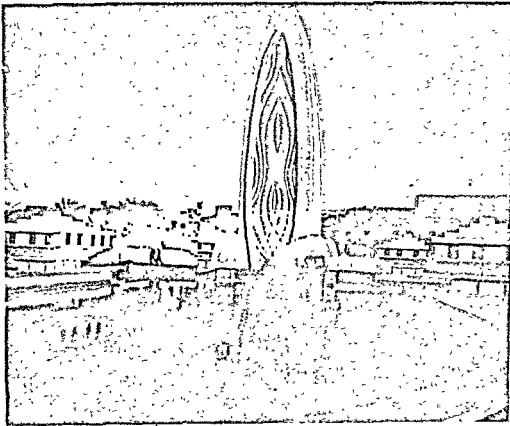
शहीद स्मारक, जलियावाला बाग, अमृतसर

मंदिर सरोवर के बीच मे है और चारो ओर बहुत ही सुंदर और चौड़ी परिक्रमा है। परिक्रमा और सरोवर की सीढ़ियों का निर्माण सुंदर सफेद संगमरमर से किया गया है। रात के समय जब मंदिर पर बिजलियों का प्रकाश किया जाता है,तो दृश्य बहुत ही रमणीय हो जाता है। मंदिर मे सिक्खो की पवित्र पुस्तक 'ग्रंथ साहिब' रखी रहती हैं—प्रत्येक व्यक्ति इस स्थान पर जाकर शीश झुकाता है और उसे प्रसाद दिया जाता है। इस प्रसाद को 'कड़ाह प्रसाद' कहा जाता है।

स्वर्ण मंदिर के भीतर के मुख्यद्वार पर एक 'झंडाकगा' है, जिस पर बहुत बडे-बडे झंडे टंगे हुए हैं। सिक्ख लोग इसे 'निशान साहिब' कह कर पुकारते है।

अकाल तख्त—निशान साहिब के पास ही 'अकाल तख्त' है। यहां पर छठे सिक्ख गुरु हरगोविंद जी ने अत्याचार के विरुद्ध तलवार उठाने की घोषणा की थी। इसी स्थान पर गुरु गोविंद सिंह जी तथा दूसरे सिक्ख वीरो के शस्त्र हैं, जिन्हें प्रतिदिन दिखाया जाता है। सिक्ख संप्रदाय मे चार अकाल तख्त प्रसिद्ध हैं—अमृतसर, आनंदपुर, पटना और नानदेड।

दरबार साहिब की परिक्रमा मे एक 'दुखभंजनी बेरी' है। इसके संबंध मे अनेक कथाए प्रचलित हैं। कहा जाता है कि इस बेरी के नीचे सरोवर मे स्नान करने से कई जन्मो के दुख दर्द दूर हो जाते है। दूर-दूर से लोग यहा स्नान करने के लिए आते है।

परिक्रमा मे दक्षिण की ओर से एक मार्ग 'बाबा अटल राय के गुरुद्वारे' की ओर जाता है—यह नौ मंजिला गुरुद्वारा गुरु हर गोविंद ने अपने बेटे की याद मे बनवाया था और कहा था कि इससे ऊंची इमारत अमृतसर में नही बन सकेगी। पुराने विचारो के सिक्खों का अभी भी यही विचार है कि गुरु के कथन के कारण यहा नौ मंजिल से अधिक ऊंचा मकान बन ही नही सकता है। इस गुरुद्वारे की सबसे ऊपर वाली मंजिल पर हर समय दीपक जलता रहता है।

कैलिसर—पास ही एक सरोवर 'कैलिसर' है। इसे गुरु साहिब ने अपनी एक शिष्या 'कैला' की याद मे बनवाया था।

आसपास के अन्य दर्शनीय स्थल

कैलिसर से कुछ दूर उत्तर की ओर तीन गुरुद्वारे हैं—जिन्हें रामसर, विवेकसर आदि कहते हैं।

रामसर वह स्थान है,जहा पर पंचम गुरु अर्जुन देव जी ने अपने संप्रदाय की पवित्र पुस्तक 'ग्रंथ साहिब' की रचना की थी। सामने ही विवेकसर है,जहा पर बैठकर छठे गुरु धर्म चर्चा किया करते थे।

इनसे बाई ओर कुछ दूरी पर बाबा दीपसिंह शहीद का गुरुद्वारा है। इस स्थान पर अमर शहीद दीपसिंह ने अपना शीश हथेली पर लेकर आततायियों से युद्ध किया था।

फूलासिंह का गुरुद्वारा—शहर से एकदम पूर्व की ओर अकाली फूलासिंह का गुरुद्वारा है। अकाली फूलासिंह सरदार हरिसिंह नलवा के साथी थे और सिक्ख सम्प्रदाय की सजीव मूर्ति समझे जाते थे। होली के अवसर पर यहा बहुत बड़ा मेला लगता है।

यात्रा मार्ग—अमृतसर भारत की उत्तर-पश्चिम सीमा पर प्रमुख नगर है। रेलवे स्टेशन भी इसी नाम से है। यह नगर रेल द्वारा कलकत्ता से 1980 कि मी , बबई से 2020 कि मी और दिल्ली से 445 कि मी पर है।

आसपास के सभी शहरो से रेल और बस की सुविधा उपलब्ध है। नगर मे घूमने के लिए, नगर बस सेवा, स्कूटर, टैक्सी सभी उपलब्ध है।

ठहरने का स्थान—नगर मे आधुनिक सुख सुविधाओं से युक्त होटल हैं, लॉज एव गेस्ट हाउस है एव अनेक धर्मशालाए भी है। स्वर्ण मदिर के निकट भी ठहरने की व्यवस्था है।

अन्य सिक्ख तीर्थ

ननकाना साहिब—सिक्ख तीर्थो मे प्रथम स्थान पर है अमृतसर का हरिमंदिर और दूसरे स्थान पर है ननकाना साहिब यहा सिक्ख सप्रदाय के प्रवर्तक गुरु नानक देव का जन्म हुआ था।

गुरु नानक देव जी का जन्म तलवडी नामक स्थान पर हुआ था और जन्मस्थली के पास ही है,ननकाना साहिब गुरुद्वारा। यह आजकल पाकिस्तान मे है। वर्ष मे एक बार ननकाना साहिब की यात्रा के लिए पाकिस्तान सरकार प्रबध करती है। उसी समय पासपोर्ट आदि के साथ अनुमति के लिए प्रार्थना-पत्र दिया जा सकता है।

पटना साहिब—सिक्ख तीर्थों मे पटना साहिब का महत्त्व अन्यतम है—सिक्खो के अतिम गुरु गोविंद सिंह जी का जन्म यहा हुआ था और आज भी उनके चरण चिन्हों को पूजा जाता है।

पटना जक्शन रेलवे स्टेशन से लगभग 10 किलोमीटर दूर है गुरु गोविंद सिंह की जन्मस्थली पटना साहिब। यहा एक विशाल गुरुद्वारा में गुरु गोविंद सिंह जी की चरण पादुकाए हैं।

आनन्दपुर साहिब—आनन्दपुर साहिब भी मुख्य पर्यटक केन्द्र है। आनन्दपुर साहिब एक ऐतिहासिक व धार्मिक नगर है। इसकी स्थापना सिक्खों के नवें गुरु, गुरु तेगबहादुर ने 17वी सदी मे की थी। यहा प्रसिद्ध गुरुद्वारे हैं—श्री केशगढ़ साहिब, आनन्दगढ़ साहिब, शीशगज साहिब और लौहगढ़ साहिब। केशगढ़ साहिब गुरुद्वारे के स्थान पर गुरु गोविंद सिंह ने अपने अनुयायियो को दीक्षा दी थी और उन्हें सैनिक बाना पहनने को कहा था। मार्च के महीने मे यहा एक विशाल मेला लगता है।

बैसाखी के दिन गुरु गोविंद सिंह ने खालसा पंथ का निर्माण किया था। बैसाखी के दिन ही आनन्दपुर साहिब के केशगढ़ गुरुद्वारा में पच प्यारे चुने गए थे।

नैना देवी का मंदिर आनन्दपुर साहिब से केवल 8 मील की दूरी पर है। आनन्दपुर साहिब आने वाले पर्यटक नैना देवी का मंदिर अवश्य देखकर जाते हैं।

पंजा साहिब—यह सिक्ख तीर्थ पाकिस्तान के क्षेत्र मे है। यह लाहौर पेशावर लाइन पर हसनअब्दाल स्टेशन से 3 किलोमीटर दूर है।

यहा पर गुरु नानक देव ने जलधारा प्रकट की थी। एक शिला खण्ड पर गुरुदेव के पजे का चिन्ह है। थोड़ी दूर पर ही एक विशाल गुरुद्वारा है। पजे के चिन्ह को पूजा जाता है। इसे सोने-चादी के पत्र पर अंकित कर ग्रंथ साहिब के पास रखा जाता है।

शीशगंज—दिल्ली मे शीशगज, रकाबगज गुरुद्वारा बगला साहिब आदि कई पवित्र गुरुद्वारे है। पर्यटकों के लिए यहा दर्शनीय स्थलो की कमी नही है।

करतारपुर—सभी धर्मो के तीर्थो पर भ्रमण करके व लोगो को सम-धर्म का उपदेश देते हुए 70 वर्ष की उम्र मे गुरु नानक देव करतारपुर मे आकर बस गए। यहा के लोगों को लगर के रूप मे अन्न वितरित करते और उपदेश देते। सन् 1539 मे वे यही से स्वर्ग सिधार गए। अत यह स्थान सिक्खो का प्रमुख तीर्थ है।

खंड 7

दक्षिण भारत के कुछ महत्त्वपूर्ण तीर्थ

1. तिरुमलै तिरुपति (बालाजी)

तिरुपति भारतवर्ष के प्रसिद्ध तीर्थस्थानों में से एक है। यह आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में स्थित है। तिरुपति तमिल भाषा का शब्द है। तिरु का अर्थ श्री एव पति का अर्थ प्रभु है,अत तिरुपति का तात्पर्य श्रीपति यानी कि श्रीविष्णु हुआ। इसी प्रकार तिरुमलै का अर्थ श्रीपर्वत है। तिरुमलै वह पर्वत है, जिस पर लक्ष्मी के साथ स्वय विष्णु विराजमान हैं। तिरुपति इसी पर्वत के नीचे बसा हुआ नगर है।

धार्मिक पृष्ठभूमि

तिरुपति में वेंकटेश्वर का मंदिर दक्षिण मे पवित्रतम माना जाता है। कहा जाता है कि यह मेरु पर्वत के सप्त शिखरों पर बना हुआ है। हिंदुओ की धारणा है कि ये शिखर भगवान आदिशेष शेषनाग का प्रतिनिधित्व करते हैं। वेंकटेश्वर की मूर्ति कब स्थापित की गई थी, यह बताना कठिन है। परपरा मे जनश्रुति है कि मूर्ति जमीन से प्रकट हुई थी, तब से संत,भक्त और धर्म-प्रेमी यहा की यात्रा करते हैं। मंदिर में की गई प्रतिज्ञा का पालन अवश्य किया जाता है। यात्री मूर्ति की जो भेंट चढ़ाने की प्रतिज्ञा करते हैं, वह जरूर अर्पित करते हैं। यदि वे स्वयं जीवित नही रहते तो उनके उत्तराधिकारी उसको पूरा करना अपना कर्तव्य समझते हैं। मूर्ति एक सात फुट के सीधे पत्थर से निर्मित है। मूर्ति के चार हाथ हैं, जो महाविष्णु का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस भयोत्पादक मूर्ति को देखकर साहसी-से-साहसी पुरुष भी डर जाता है। दर्शक पर इसकी अमिट छाप पडती है।

भगवान वेंकटेश्वर को ही उत्तर भारतीय बालाजी कहते हैं। भगवान के मुख्य दर्शन तीन बार होते हैं। पहला दर्शन विश्वरूप-दर्शन कहलाता है। यह प्रभातकाल में होता है। दूसरा दर्शन मध्यान्ह मे तथा तीसरा दर्शन रात मे होता है। इन सामूहिक दर्शनो के अतिरिक्त अन्य दर्शन भी हो सकते हैं, जिनके लिए विभिन्न शुल्क निश्चित है। इन तीन मुख्य दर्शनों में कोई शुल्क नही लगता, किन्तु इनमे भीड अधिक होती है। वैसे पक्ति बनाकर मंदिर के अधिकारी दर्शन कराने की व्यवस्था करते हैं।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

श्री वेंकटेश्वर का मंदिर तीन परकोटों से घिरा है। इन परकोटो पर गोपुर बने है। जिन पर स्वर्णकलश स्थापित हैं। स्वर्ण-द्वार के सामने 'तिरुमहामडपम्' नामक मडप है। एक

वेंकटेश्वर भगवान की मूर्ति (बालाजी), आंध्र प्रदेश

सहस्र-स्तभ मडप भी है। मंदिर के सिंहद्वार को 'पडिकावलि' कहते हैं। इस द्वार के भीतर वेंकटेश्वर स्वामी (बालाजी) के भक्त नरेशों एव रानियो की मूर्तिया बनी हैं।

प्रथम द्वार तथा द्वितीय द्वार के मध्य की प्रदक्षिणा को 'सपंगि प्रदक्षिणा' कहते हैं। इसमे 'विरज' नामक एक कुआ है। कहा जाता है कि श्रीबालाजी के चरणो के नीचे विरजा नदी है, उसी की धारा इस कूप मे आती है। इसी प्रदक्षिणा में 'पुष्पकूप' है। बालाजी को जो तुलसी-पुष्प चढता है, वह किसी को दिया नही जाता है। वह इसी कूप में डाला जाता है। केवल वसत-पचमी

पर तिरुचानूर मे पद्मावती जी को भगवान के चढ़े पुष्प अर्पित किये जाते है।

द्वितीय द्वार को पार करने पर जो प्रदक्षिणा है, उसे विमान-प्रदक्षिणा कहते है। उसमे योगनृसिंह, श्रीवरदराज स्वामी (*भगवान विष्णु*), *श्रीरामानुजाचार्य*, *सेनापति निलय*, गरुड तथा रसोईघर में बकुल मालिका के मंदिर हैं।

तीसरे द्वार के भीतर, भगवान के निज-मंदिर (गर्भ-गृह) के चारों ओर एक प्रदक्षिणा है। उसे वैकुण्ठ प्रदक्षिणा कहते हैं। यह केवल पौष शुक्ला एकादशी को खुलती है। अन्य समय यह मार्ग बद रखा जाता है।

भगवान मंदिर के सामने स्वर्णमडित स्तभ है। उसके आगे तिरुमहमडपम् नामक सभामडप है। द्वार पर जय-विजय की मूर्तिया हैं। इसी मडप मे एक ओर हुडी नामक बद हौज है, जिसमें यात्री बालाजी को अर्पित करने के लिए लाए गए द्रव्य एव आभूषणादि डालते हैं।

जगमोहन से मंदिर के भीतर चार द्वार पार करने पर पाचवे के भीतर श्री बालाजी (वेकटेश्वर स्वामी) की पूर्वाभिमुख मूर्ति है। भगवान की श्रीमूर्ति श्यामवर्ण है। वे शख, चक्र, गदा, पद्म लिए खडे हैं। यह मूर्ति लगभग सात फुट ऊची है। भगवान के दोनो ओर श्रीदेवी तथा भूदेवी की मूर्तिया हैं। भगवान को कपूर का तिलक लगता है। भगवान के तिलक से उतरा यह कपूर यहा प्रसाद रूप मे बिकता है। यात्री उसे (मदिर से) अजन के काम मे लेने के लिए ले जाते हैं।

श्रीबालाजी की मूर्ति मे एक स्थान पर चोट का चिन्ह है। उस स्थान पर दवा लगायी जाती है। कहते हैं कि एक भक्त प्रतिदिन नीचे से भगवान के लिए दूध ले आता था। वृद्ध होने पर जब उसे आने मे कष्ट होने लगा, तब भगवान स्वय जाकर चुपचाप उसकी गाय का दूध पी जाते थे। गाय को दूध न देते देख उस भक्त ने एक दिन छिपकर देखने का निश्चय किया और जब सामान्य-मानव भेष मे आकर भगवान दूध पीने लगे, तब उन्हे चोर समझ कर भक्त ने डंडा मारा। उसी समय भगवान ने प्रकट होकर दर्शन दिए और आश्वासन दिया। वही डडा लगने का चिन्ह मूर्ति पर है।

आजकल यहां के मंदिर सरकारी समिति 'देवस्थानम् समिति' के अधीन हैं। देवस्थानम् द्वारा प्रमुख रूप से पांच मदिरों का निर्वहण किया जाता है—ये पांच मंदिर इस प्रकार हैं:—

1. तिरुमलै का सबसे प्रमुख मदिर श्री वेकटेश्वर का मदिर।
2. तिरुपति के तीन मंदिर —
   गोविंदराज का मंदिर।
   कोदड राम स्वामी का मदिर।
   कपिल तीर्थ मे श्री कपिलेश्वर का मदिर।
3. तिरुचानूर मे पद्मावती का मंदिर।

यहा पर मदिरो के दर्शन एव पूजा का नियम यह है कि तिरुपति शहर में, कपिलतीर्थ मे स्नान करके सबसे पहले श्री कपिलेश्वर का दर्शन करे, फिर तिरुमलै पर्वत पर वेकटाचलम् जाकर वेकटेश्वर का दर्शन करे, तथा ऊपर के अन्य तीर्थो का दर्शन कर नीचे आकर तिरुपति मे गोविंदराज एव कोदड रामस्वामी (धनुर्धारी राम) का दर्शन करे और फिर अत मे तिरुचानूर जाकर पद्मावती देवी का दर्शन करे।

यात्रा मार्ग

तिरुपति दक्षिण मे प्रसिद्ध नगर है। मद्रास से बबई जाने वाली लाइन पर रेणगुटा स्टेशन से लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर इसी नाम का स्टेशन है। हैदराबाद, मद्रास, काची, चित्तुर, विजयवाडा आदि स्थान मे तिरुपति के लिए बस सेवाएं उपलब्ध है।

तिरुपति से तिरुमलै पर्वत पर जाने के लिए दो मार्ग हैं—एक पैदल और दूसरा बस द्वारा। पैदल मार्ग 11 किलोमीटर का है और बस का मार्ग 22 किलोमीटर का। देवस्थानम् समिति की बसे तिरुमलै जाती रहती हैं।

ठहरने का स्थान

इन मंदिरो मे आने वाले यात्रियो की सख्या बहुत अधिक है और देवस्थानम् की ओर से यात्रियो की सुविधाओ का प्रबंध किया जाता है। तिरुपति स्टेशन के पास ही देवस्थानम् की बडी विस्तृत धर्मशाला है। यहा पर यात्रियो के लिए जो व्यवस्था उपलब्ध है,वैसी व्यवस्था दूसरे किसी तीर्थ मे नही है। देवस्थानम् की ही एक और धर्मशाला तिरुमलै पर्वत के नीचे है और पर्वत पर मंदिर के पास तो कई धर्मशालाए हैं।

3. मीनाक्षी मंदिर, मदुरै

दक्षिण भारत तीर्थस्थानो से भरा पडा है। इसी कारण कभी-कभी साउथ इडिया की रेलवे को तीर्थयात्रा की रेलवे कहा जाता है। यहां के सैकडो स्थानो मे रामेश्वरम् और मदुरै का स्थान सर्वोच्च है। यहा के मंदिर अत्यत प्राचीन काल के बने हुए हैं और इनका इतिहास भी सदियो पुराना है। ये इतने विशाल और कला की दृष्टि से उच्चकोटि के हैं कि मनुष्य इन्हे देखकर ठगा-सा रह जाता है। उत्तरी भारत मे ऐसा कोई प्राचीन मंदिर नही है, जिससे इन मंदिरो की तुलना की जा सके।

तिरुचुरापल्ली-तूतीकोरिन लाइन पर तिरुचुरापल्ली से लगभग 165 किलामीटर के फासले पर मदुरै (मधुरै) नगर है। जो यात्री रामेश्वर यात्रा करके मदुरै आते हैं, उन्हे रामेश्वर-रामबाद से आगे मानामदुरै जंक्शन पर ट्रेन बदलनी पडती है। मानामदुरै से मदुरै तक रेल आती है। मानामदुरै से मदुरै की दूरी 50 किलोमीटर है। यह नगर बेगा नदी के किनारे है। सस्कृत ग्रंथो मे इसका नाम 'मधुरा' मिलता है। इसे 'दक्षिण मथुरा' भी कहा गया है।

धार्मिक पृष्ठभूमि

कहा जाता है कि पहले यहा कदब का वन था। कदंब के एक वृक्ष के नीचे भगवान संुदरेश्वर का स्वयभूलिग था। देवता उसकी पूजा कर जाते थे। श्रद्धालु पांड्य-नरेश मलयध्वज को इसका पता लगा। उन्होने उस लिगमूर्ति के स्थान पर मदिर बनवाने तथा वही नगर बसाने का सकल्प किया। स्वप्न मे भगवान शंकर ने राजा के सकल्प की प्रशंसा की और दिन मे एक सर्प के रूप मे स्वय आकर नगर की सीमा का निर्देश कर गये।

पाड्य-नरेश के कोई सतान नही थी। राजा मलयध्वज ने अपनी पत्नी कांचनमाला के साथ संतान प्राप्ति के लिए दीर्घकाल तक तपस्या की। राजा की तपस्या तथा आराधना से प्रसन्न होकर भगवान शकर ने उन्हे प्रत्यक्ष दर्शन दिए और आश्वासन दिया कि उनके एक कन्या होगी।

साक्षात् भगवती पार्वती ही अपने अश से राजा मलयध्वज के यहाँ कन्या के रूप मे अवतीर्ण हुई। उनके विशाल सुंदर नेत्रो के कारण माता-पिता ने उनका नाम मीनाक्षी रखा। राजा मलयध्वज कुछ काल पश्चात् कैलासवासी हो गये। राज्य का भार रानी कांचनमाला ने सभाला।

मीनाक्षी के युवती होने पर साक्षात् भगवान सुदरेश्वर ने उनसे विवाह करने की इच्छा व्यक्त की। रानी कांचनमाला ने बडे समारोह से मीनाक्षी का विवाह सुदरेश्वर शिव से कर दिया।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

स्टेशन से पूर्व दिशा मे लगभग डेढ़ किलोमीटर पर मदुरै नगर के मध्य भाग मे मीनाक्षी का मदिर है। यह मंदिर अपनी निर्माण-कला की भव्यता के लिए सर्वत्र प्रसिद्ध है। मंदिर लगभग 22 बीघे भूमि पर बना हुआ है। इसमे चारो ओर चार मुख्य गोपुर हैं। वैसे सब छोटे-बडे मिलाकर 27 गोपुर मदिर मे हैं। सबसे अधिक ऊचा दक्षिण का गोपुर है और सबसे सुंदर पश्चिम का गोपुर है। बडे गोपुर ग्यारह मंजिल ऊंचे हैं।

गोपुर में प्रवेश करने पर पहले एक मडप मिलता है, जिसमें फल-फूल की दूकाने रहती हैं। उसे 'नगार मडप' कहते है। उसके आगे अष्ट-शक्ति मडप है। इसमें स्तभो के स्थान पर आठ लक्ष्मियो की मूर्तिया छत का आधार बनी हैं। यहां द्वार के दाहिने सुब्रह्मण्यम् तथा बाए गणेशजी की मूर्ति है। इससे आगे मीनाक्षी नायकम् मडप है। इस मडप में दूकाने रहती हैं। इस मडप के पीछे एक 'अंधेरा मडप' मिलता है। उसमें भगवान विष्णु के मोहिनी रूप, शिव, ब्रह्मा, विष्णु तथा अनसूयाजी की कलापूर्ण मूर्तियां है।

अंधेरे मंडप के आगे 'स्वर्ण-पुष्करिणी' सरोवर है। कहा जाता है, ब्रह्म हत्या लगने पर इद्र इसी सरोवर मे छिपे थे। तमिल भाषा मे इसे 'पोत्तामरैकुलम्' कहते हैं। सरोवर के चारो ओर मडप हैं। इन मडपो में तीन ओर भित्तियो पर भगवान शकर की 64 लीलाओ के चित्र बने हुए हैं।

मदिर के सामने के मंडप के स्तभो में पांचो पांडवों की मूर्तिया (एक-एक स्तंभ में एक-एक की) और शेष सात स्तभो में सिह की मूर्तिया हैं। सरोवर के पश्चिम भाग का मडप 'किलिकुडुमडप' कहा जाता है। इसमे पिजडो मे कुछ पक्षी पाले गए हैं। यहां एक अद्भुत सिह मूर्ति है। सिह के मुख मे एक गोला बनाया गया है। सिह के जबडे मे अगुली डालकर घुमाने मे वह गोला घूमता है। पत्थर मे इस प्रकार का शिल्पनैपुण्य देखकर चकित रह जाना पडता है।

पांडव-मूर्तियो वाले मडप को 'पुरुषमृगमडप' कहते हैं; क्योंकि उसमे एक मूर्ति ऐसी बनी है, जिसका आधा भाग पुरुष का और आधा मृग का है। इस मडप के सामने ही मीनाक्षी देवी
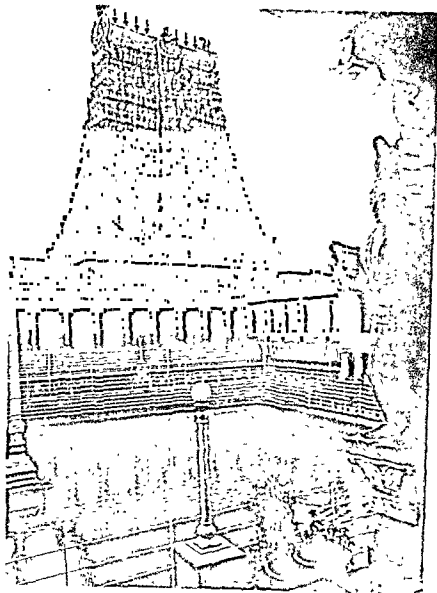
मीनाक्षी मंदिर, मदुरै

के निजमंदिर का द्वार है। द्वार के दक्षिण,छोटा-सा सुब्रह्मण्य मंदिर है, जिसमे स्वामि-कार्तिक तथा उनकी दोनो पत्नियों की मूर्तिया हैं। द्वार पर दोनो ओर पीतल की द्वारपाल-मूर्ति है।

कई ड्योढ़ियो के भीतर श्रीमीनाक्षी देवी की भव्य मूर्ति है। बहुमूल्य वस्त्राभरणो से देवी का श्यामविग्रह आभूषित रहता है। मंदिर के महामंडप की दाहिनी ओर देवी का शयन मंदिर है। मीनाक्षी मंदिर का शिखर स्वर्णमंडित हैं। मंदिर के समुख बाहर स्वर्णमंडित स्तभ है। मीनाक्षी मंदिर की भीतरी परिक्रमा में अनेक देव-मूर्तियो के दर्शन होते हैं। निज मंदिर के परिक्रमा मार्ग मे ज्ञानशक्ति, बलशक्ति की मूर्तियां बनी हैं। परिक्रमा मे सुब्रह्मण्यमुमंदिर के एक भाग के निर्माता नरेश तिरुमल तथा उनकी दो रानियों की मूर्तिया है।

इस मंदिर के दो भाग हैं। दक्षिणी भाग में भगवान शिव की पत्नी मीनाक्षी का मंदिर है और उत्तरी भाग में सुंदरेश्वर की मूर्ति है। शिवजी की यहा इसी नाम से आराधना की जाती है।

मदुरै का जनप्रिय धार्मिक उत्सव चैत्र का मेला है, जिसमें मीनाक्षी और सुंदरेश्वर का रहस्यपूर्ण विवाह दिखाया जाता है। सुंदरेश्वर शिव है और मीनाक्षी पार्वती की अवतार हैं। मलयध्वज नामक पाड्य नरेश के यहा मीनाक्षी का जन्म हुआ था। मलयध्वज के बाद सिंहासन पर मीनाक्षी ही बैठी थी। जन्म के समय मीनाक्षी के तीन छातिया थी। इस विषय में भविष्यवाणी की गई थी कि जिसके प्रथम चाक्षुस-दर्शन में इसकी अतिरिक्त छाती अदृश्य हो जाएगी, वही इसका पति होगा। भगवान शिव संन्यासी के वेश में इस अद्भुत बालिका

इस मडप मे भगवान शकर के ऊर्ध्वनृत्य की अद्भुत कलापूर्ण विशाल मूर्ति है। ताडवनृत्य करते हुए शकरजी का एक चरण ऊपर कान के समीप तक पहुच गया है। पास ही उतनी ही विशाल काली-मूर्ति है।

इसी मडप मे एक ओर 'कौरक्कालअम्मा' नामक शिवभक्ता की मूर्ति है। नवग्रह-मडप मे नवग्रहो की मूर्तियां हैं। निज मंदिर की परिक्रमा मे गणपति, हनुमानजी, दडपाणि, सरस्वती, दक्षिणा मूर्ति, सुब्रह्मण्यम् आदि अनेक देवताओ के दर्शन होते हैं। परिक्रमा मे प्राचीन कदब वृक्ष का अवशेष सुरक्षित है। उसके समीप ही दुर्गाजी का छोटा मंदिर है। यही कदब वृक्ष के मूल मे भगवान सुदरेश्वर (शिव) ने मीनाक्षी का पाणिग्रहण किया था।

मदिर के दक्षिण-पश्चिम उत्सव मडप मे मीनाक्षी-सुदरेश्वर, गगा और पार्वती की स्वर्ण-मूर्तिया हैं। परिक्रमा मे पश्चिम की ओर एक चंदनमय महालिंग है।

मंदिर के सम्मुख एक मडप मे नंदी की मूर्ति है। वहां से सहस्र-स्तंभ मडप मे जाते हैं। यह नटराज का सभा मडप है। इस सहस्र-स्तभ मडप मे मनुष्याकार से भी ऊंची शिव-भक्तों तथा देव-देवियो की मूर्तियां है। इनमें से वीणाधारिणी सरस्वती की मूर्ति बहुत कलापूर्ण एव आकर्षक है। इस मडप मे श्रीनटराज का श्यामविग्रह प्रतिष्ठित है। इसी मडप में शिवभक्त 'कण्णप्प' की भी खड़ी मूर्ति है।

बड़े मंदिर के पूर्व एक शतस्तभ मडप है। इसमें 120 स्तभ हैं। प्रत्येक स्तभ मे नायक-वश के राजाओं तथा रानियों की मूर्तियां बनी हैं। द्वार के पास शिकारियों तथा पशुओं की मूर्तियां हैं।

समीप ही मीनाक्षी-कल्याण मडप है। चैत्र मास मे इसमें मीनाक्षी-सुदरेश्वर का विवाह महोत्सव होता है। इस उत्सव
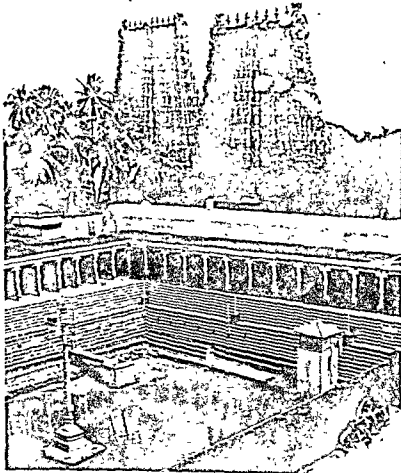
सुदरेश्वर मदिर, मदुरै

के समय मीनाक्षी-सुंदरेश्वर विवाह हो जाने पर यही अनेक वर-वधुएं बहुत अल्प-व्यय में अपना विवाह संपन्न करा जाते हैं।

मंदिर के पूर्व गोपुर के सामने 'पुदुमंडप' है, जिसे 'वसंतमंडप' भी कहते हैं। इसमें प्रवेश द्वार पर घुड़सवारों तथा सेवकों की मूर्तियां हैं। भीतर शिव-पार्वती की पाणिग्रहण की पूरे आकार की मूर्ति है। पास में भगवान विष्णु की मूर्ति है। नटराज की भी इसमें मनोहर मूर्ति है।

पूर्व-गोपुर के पूर्वोत्तर सप्त-समुद्र नामक सरोवर है। कहा जाता है, मीनाक्षी की माता कांचनमाला की समुद्रस्नान की इच्छा होने पर भगवान शंकर ने इस सरोवर में सात धाराओं में सातों समुद्रों का जल प्रकट कर दिया था।

प्रधान उत्सव—मदुरै को 'उत्सवनगरी' कहा जाता है। यहां बराबर उत्सव चलते ही रहते हैं। चैत्र मास में मीनाक्षी सुंदरेश्वर-विवाहोत्सव होता है, जो दस दिन तक चलता है। इस समय रथयात्रा होती है। वैशाख में शुक्लपक्ष की पंचमी से आठ दिन तक वसंतोत्सव होता है। आषाढ़-श्रावण के पूरे महीने उत्सव के हैं। आषाढ़ में मीनाक्षी देवी की विशेष पूजा होती है। श्रावण में भगवान शंकर की 64 लीलाओं के स्मरणोत्सव होते हैं। ये लीलाएं भगवान शंकर ने मीनाक्षी के साथ मदुरै में प्रत्यक्ष की थी, ऐसा माना जाता है। भाद्रपद में तथा आश्विन में नवरात्रि-महोत्सव एवं अमावस्या-पूर्णिमा के विशेष उत्सव होते हैं। मार्गशीर्ष में, आर्द्रा नक्षत्र में, नटराज का अभिषेक होता है और अष्टमी को वे कालभैरव ग्राम की रथयात्रा करते हैं। पौष-पूर्णिमा को मीनाक्षी देवी की रथ-यात्रा होती है। माघ में शिव-भक्तों के स्मरणोत्सव तथा फाल्गुन में मदन-दहनोत्सव होता है। फाल्गुन में ही सुब्रह्मण्यम् की विवाह-यात्रा मनायी जाती है।

आसपास के अन्य दर्शनीय स्थल

यह विष्णु-मंदिर नगर के पश्चिमी भाग में मीनाक्षी मंदिर से लगभग एक किलोमीटर पर (स्टेशन से भी इतनी ही दूर) है। इसे 'कूडलअवगर' भी कहते हैं। मंदिर में रामायण के कथा-प्रसंगों के सुंदर रंगीन चित्र दीवारों पर बने हैं। यहां भगवान का नाम 'सुंदरबाहु' होने से इस मंदिर को 'सुंदरबाहु मंदिर' भी कहा जाता है। भगवान विष्णु मीनाक्षी का सुंदरेश्वर के साथ विवाह कराने यहां पधारे थे और तभी से विग्रह रूप में विराजमान हैं।

मंदिर के भीतर निजमंदिर में भगवान विष्णु की चतुर्भुज मूर्ति है। भगवान के दोनों ओर श्रीदेवी तथा भूदेवी सिंहासन पर बैठी हैं। इस मंदिर के ऊपर सब ऊंचा स्वर्णकलश है। मंदिर के शिखर के भाग में ऊपर जाने के लिए सीढ़ियां बनी हैं। ऊपर सूर्यनारायण की मूर्ति है। इसी मंदिर में भगवान नृसिंह की भी मूर्ति है।

इस मंदिर के घेरे में ही एक अलग लक्ष्मी मंदिर है। श्रीलक्ष्मीजी का पूरा मंदिर कसौटी के चमकीले काले पत्थर का बना है। इसमें लक्ष्मीजी की बड़ी भव्य मूर्तियां हैं। श्रीलक्ष्मीजी को यहां 'मधुवल्ली' कहते हैं।

श्रीकृष्ण मंदिर—मीनाक्षी मंदिर से सुंदरराज पेरुमल मंदिर जाते हुए थोड़े ही पहले श्रीकृष्ण मंदिर मिलता है। इसमें श्रीकृष्ण की बड़ी सुंदर मूर्ति है।

यात्रा मार्ग

मद्रास से मदुरै के लिए बसें प्रतिदिन चलती हैं। हर महीने के दूसरे शनिवार को 9 दिन की तीर्थ-भ्रमण बसें भी चलती हैं, जो मदुरै के अलावा पांडिचेरी, चिदंबरम्, तंजावुर, कन्याकुमारी, त्रिवेंद्रम, कोडाइकनाल, तिरुचिरापल्ली आदि पवित्र स्थानों पर ले जाती हैं। ठहरने-खाने की व्यवस्था भी ये बसें स्वयं ही करती हैं।

मद्रास भारत के सभी प्रमुख शहरों से सीधे रेल और सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। अतः कहीं से भी मद्रास आसानी से पहुंचा जा सकता है।

4. बेलूर

दक्षिण भारत के तीर्थों में बेलूर का विशिष्ट स्थान है। चेन्नकेशव का मंदिर ही यहां का मुख्य मंदिर है। विष्णुवर्धन होयसल ने इस मंदिर की प्रतिष्ठा की थी। मंदिर नक्षत्र की आकृति का है। प्रवेश द्वार का मुख पूर्व दिशा की ओर है। मुख्य द्वार से प्रवेश करने पर एक चतुष्कोण मंडप आता है। यह मंडप खुला हुआ है। भगवान की मूर्ति, लगभग 7 फुट ऊंची चतुर्भुज मूर्ति है। उनके साथ उनके दाहिने भूदेवी और बायें लक्ष्मीदेवी श्रीदेवी है। शंख, चक्र, गदा और पद्म उनके हाथों में हैं।

कप्पेचेनिगराय का मंदिर—इसका निर्माण विष्णुवर्धन की महारानी ने कराया था। इसमें पांच मूर्तियां हैं—श्री गणेश, सरस्वती, लक्ष्मीनारायण, लक्ष्मी-श्रीधर और महिषासुरमर्दिनी दुर्गा। इनके अतिरिक्त एक मूर्ति श्रीवेणुगोपाल की भी है।

यह मंदिर एक ऊंची दीवार के घेरे में चबूतरे पर स्थित है। इसकी मूर्तिकला अद्भुत है। मंदिर की पिछली तथा बगल की भित्तियों पर जो मूर्तियां अंकित हैं, वे सजीव-सी लगती हैं। इतनी सुंदर मूर्तियां अन्यत्र कठिनाई से मिलती हैं। मंदिर के जगमोहन में भी बहुत बारीक खुदाई का काम है। पूरा मंदिर निपुणकला का एक श्रेष्ठ प्रतीक है।

इस मंदिर के घेरे में ही कई मंदिर और हैं। एक लक्ष्मीजी का मंदिर है और एक शिव मंदिर है, जिसमें सात फुट से भी ऊंचा शिवलिंग प्रतिष्ठित है। बेलूर का प्राचीन नाम वेलापुर है।

यात्रा मार्ग

बेलूर, मैसूर आरसीकेरे दक्षिण रेलवे की लाइन के हासन रेलवे स्टेशन से 37 किलोमीटर दूर है। बंगलोर, हरिहर, पूना लाइन के बाणावर स्टेशन से यह 28 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में है। बाबाबूदन पहाड़ी से निकली मार्गदी नदी बेलूर को छूती हुई बहती है। हालेबिद से मोटर-बस के रास्ते से 15 किलोमीटर दूर है। ठहरने के लिए यहां एक डाक-बंगला है। यह स्थान मोटर-बसों का केन्द्र है।
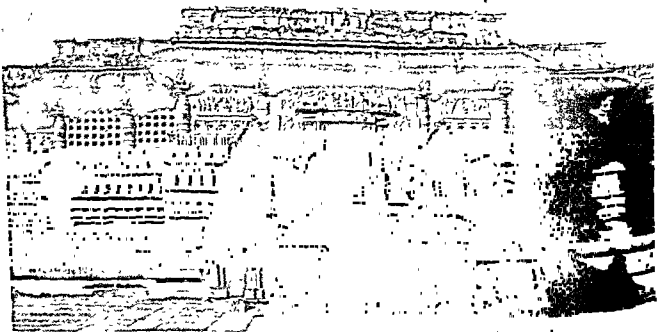
चेन्नकेशव मंदिर, बेलूर

5. चिदंबरम्

भारत के तीर्थधामो और पुण्य क्षेत्रों मे प्राचीन और पवित्र चिदबरम् का स्थान अति महत्त्वपूर्ण है। चिदंबरम् सब 'कोइलो' (मदिरो) का 'कोइल' समझा जाता है। यहा का मदिर आकाशलिगम् का है। अन्य चार भूर्तलिगो के मदिर इस प्रकार हैं—पृथ्वीलिंगम् का काचीपुरम् मे, अप्लिगम् का जबुकेश्वर मे, तेजोलिगम् का तिरुवण्णमलै मे और वायुलिगम् का कालहस्ती मे।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

इस नगर के प्रमुख देवता नटराज शिव हैं। यहा नटराज शिव का मदिर ही प्रधान है। इस मदिर का घेरा लगभग सौ बीघे का है। इस घेरे के भीतर ही सब दर्शनीय मदिर हैं। पहले घेरे के पश्चात् ऊचे गोपुर दूसरे घेरे मे मिलते हैं। पहले घेरे मे छोटे गोपुर हैं। दूसरे घेरे मे गोपुर नौमजिले हैं। उन पर नाट्यशास्त्र के अनुसार विभिन्न नृत्य-मुद्राओ की मूर्तिया बनी हैं।

इन गोपुरो मे प्रवेश करने पर एक और घेरा मिलता है। दक्षिण के गोपुर से भीतर प्रवेश करे तो तीसरे घेरे के द्वार के पास गणेशजी का मदिर मिलता है। गोपुर के सामने उत्तर मे एक छोटे मंदिर मे नदी की विशाल मूर्ति है। इसके आगे नटराज के निजमंदिर का घेरा है। यह निजमंदिर भी दो घेरो के भीतर है। घेरे की भित्तियों पर नदी की मूर्तिया थोडी दूरी पर हैं। इस चौथे घेरे मे अनेक छोटे मदिर हैं। नटराज का निजमंदिर चौथे घेरे को पार करके पाचवें घेरे में है।

सामने नटराज का सभा मंडप है। आगे एक स्वर्णमंडित स्तंभ है। नटराजसभा के स्तंभों मे सुदर मूर्तियां बनी हैं। आगे एक आगन के मध्य मे कसौटी के काले पत्थर का श्रीनटराज का
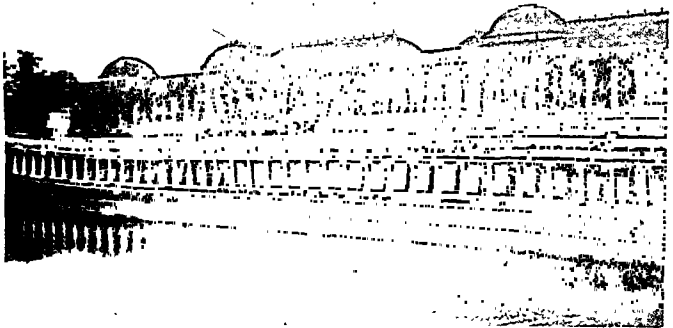
एक हजार स्तभो वाला शिव मंदिर, चिदंबरम्
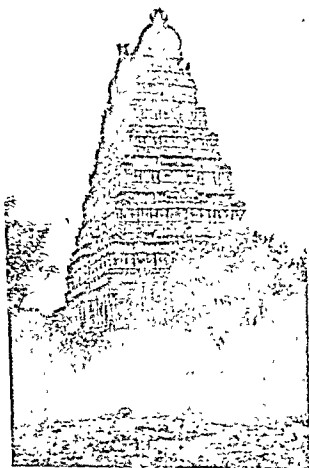
गोपुर शिव मंदिर,चिदंबरम्

निजमंदिर है। इसके शिखर पर स्वर्णपत्र चढ़ा है। मंदिर का द्वार दक्षिण दिशा मे है। मंदिर में नृत्य करते हुए भगवान शकर की बडी सुदर मूर्ति है। यह मूर्ति स्वर्ण की है। नटराज की झांकी बहुत ही भव्य है। पास मे ही पार्वती, तुबरु, नारदजी आदि की कई छोटी स्वर्ण मूर्तियां हैं।

श्रीनटराज की दाहिनी ओर काली भित्ति मे एक यंत्र खुदा है। वहा सोने की मालाएं लटकती रहती हैं। यह नीला शून्याकार ही आकाश तत्त्वलिंग माना जाता है। इस स्थान पर प्राय पर्दा पड़ा रहता है। लगभग ग्यारह बजे दिन को अभिषेक के समय तथा रात मे अभिषेक के समय इसके दर्शन होते है। यहा सपुट मे रखे दो शिवलिंग हैं। एक स्फटिक का और दूसरा नीलमणि का। इनके अतिरिक्त एक बडा-सा दक्षिणावर्त शख है। स्फटिकमणि की मूर्ति को चन्द्रमौलीश्वर तथा नीलम की मूर्ति को रत्न सभापति कहते हैं।

श्रीनटराज मंदिर के सामने के मडप मे जहा नीचे से खडे होकर नटराज के दर्शन करते हैं, वहा बायी ओर श्रीगोविंदराज का मंदिर है। मंदिर में भगवान नारायण की सुदर शेषशायी मूर्ति है। वहा लक्ष्मीजी का तथा अन्य कई दूसरे छोटे उत्सव-विग्रह भी हैं। श्री गोविंदराज-मंदिर के बगल मे (नटराजसभा के पास पश्चिम भाग मे) भगवती लक्ष्मी का मंदिर है। इसमें 'पुंडरीकवल्ली' नामक लक्ष्मी जी की मनोहर मूर्ति है।

नटराज-मंदिर के चौथे घेरे मे ही एक मूर्ति भगवान शंकर की है। शकर जी के बायी ओर गोद मे पार्वती विराजमान हैं। एक हनुमानजी की चादी की मूर्ति है। एक घेरे मे नवग्रह स्थापित हैं और एक स्थान पर 64 योगिनियों की मूर्तियां है। यहां चौथे घेरे मे दक्षिण-पश्चिम के कोने पर पार्वतीजी का मंदिर है। उसके दक्षिण में नाट्येश्वरी की मूर्ति है। नरेश का मंदिर मध्य भाग मे है। इस घेरे में अन्य कई मंदिर और मडप हैं।

नटराज-मंदिर के निजी घेरे के बाहर (चौथे घेरे मे) उत्तर में एक मंदिर है। इस मंदिर मे सामने सभा मडप है। कई ड्योढ़ी भीतर भगवान शकर का लिंगमय विग्रह है। यही चिदंबरम् का मूल विग्रह है। महर्षि व्याघ्रपाद तथा पतजंलि ने इसी मूर्ति की अर्चना की थी। उनकी आराधना से प्रसन्न होकर भगवान शंकर प्रकट हुए थे। उन्होंने तांडव नृत्य किया। उस नृत्य के स्मारक रूप में नटराज-मूर्ति की स्थापना हुई। आदिमूर्ति तो यह लिंगमूर्ति ही है। यहा इस मंदिर मे एक ओर पार्वती-मूर्ति है।

नटराज-मंदिर के दो घेरो के बाहर पूर्वद्वार से निकले तो उत्तर की ओर एक बहुत बड़ा शिव-गंगा-सरोवर मिलता है। इसे हेमपुष्करिणी भी कहते हैं। शिव-गंगा सरोवर के पश्चिम में पार्वती-मंदिर है। पार्वतीजी को यहा शिवकामसुंदरी कहते हैं। यह मंदिर नटराज के निजमंदिर से सर्वथा पृथक् और विशाल है। तीन ड्योढ़ी भीतर जाने पर भगवती पार्वती के दर्शन होते हैं। मूर्ति मनोहर है। इस मंदिर का सभामडप सुदर है।

पार्वती-मंदिर के समीप ही सुब्रह्मण्यम् का मंदिर है। इस मंदिर के बाहर एक मयूर की मूर्ति बनी है। सभा मडप मे भगवान सुब्रह्मण्यम् की लीलाओ के अनेक सुदर चित्र दीवालों पर ऊपर की ओर अंकित हैं। मंदिर में स्वामिकार्तिक की भव्य मूर्ति है।

शिवगगा सरोवर के पूर्व में एक पुराना सभामडप है। इसे 'सहस्रमडप' कहते हैं। यह अब जीर्ण अवस्था मे है। चिदंबरम् मंदिर के घेरे मे एक ओर एक धोबी, एक चाडाल तथा दो शूद्रों की मूर्तियां हैं। ये शिव-भक्त हो गए हैं, जिन्हें भगवान शंकर ने दर्शन दिए थे।

आसपास के अन्य दर्शनीय स्थल

तिरुवेट्कलम्—चिदंबरम् स्टेशन के पूर्व विश्वविद्यालय के पास यह स्थान है। यहा भगवान शकर का मंदिर है। कहा जाता है कि अर्जुन ने यहीं भगवान शकर से पाशुपतास्त्र प्राप्त किया था।

काट्टुमन्नोरगुडी–चिदंबरम् से 25 किलोमीटर दक्षिण मे यह स्थान है। यहां भगवान वीरनारायण का मंदिर है। भगवान नारायण के साथ श्रीदेवी तथा भूदेवी विराजमान हैं। मंदिर में राजगोपाल (श्रीकृष्ण) रुक्मिणी, सत्यभामा आदि की भी मूर्तियां हैं। कहा जाता है कि यहां मातंग ऋषि ने तपस्या की थी।

वेदनारायण मंदिर–चिदबरम् से 25 किलोमीटर पर वरेमा देवी स्थान में वेदनारायण मंदिर है। इसमें जो पृथक लक्ष्मी मंदिर है, उसमे लक्ष्मीजी को वरेमा देवी कहते हैं।

वृद्धाचलम्– वरेमा देवी से 20 किलोमीटर दूर पश्चिम में है। इसी नाम का स्टेशन भी है। यहा शिवमंदिर है। मंदिर मे पार्वती मूर्ति के अलावा सात काली की और 21 ऋषियों की मूर्तियां हैं।

श्रीमुखम्–कहा जाता है कि वराह अवतार यही पर अवतरित हुए थे। श्रीमुखम् वराह अवतार का मंदिर है। यहां बालकृष्ण मंदिर, अंबुजवल्ली (लक्ष्मी) तथा कात्यायनी मंदिर है।

सिलायी–चिदबरम् से 25 किलोमीटर पर इसी नाम का स्टेशन है। स्टेशन के पास "ताडारम्" विष्णु मंदिर है। वहा से 2 किलोमीटर पर ब्रह्मपुरीश्वर शिवमंदिर है। इसमे पार्वती की सुंदर मूर्ति है। यह तिरुज्ञान सबधी शैवाचार्य की जन्मभूमि है, जो कार्तिकेय के अवतार माने जाते हैं। माता पार्वती ने उन्हें स्तनपान कराया था। उनका जन्म घर शहर में सुरक्षित है।

वैद्यीश्वरनकोइल–चिदबरम् से 25 किलोमीटर पर स्टेशन है। स्टेशन से 1। किलोमीटर दूर बडा वैद्येश्वर शिवमदिर है। पार्वती जी की मूर्ति भीतर ही है। अलग सुब्रह्मण्य मदिर है।

तिरुवेंकाडु–यह श्वेतारण्य है। चिदबरम् से 22 किलोमीटर दूर यह मंदिर भगवान शिव की अघोर (रुद्र) रूप की मूर्ति से सुप्रतिष्ठित है।

यात्रा मार्ग

चिदबरम्, विल्लुपुरम् से 80 किलोमीटर दूर स्थित स्टेशन है। मदिर स्टेशन से 2 किलोमीटर दूर है। रहने, ठहरने एव यात्रा के लिए यहा पर सभी कुछ उपलब्ध है। दूर-दूर से बसे यहा नित्यप्रति आती हैं।

श्रीमुख मंदिर
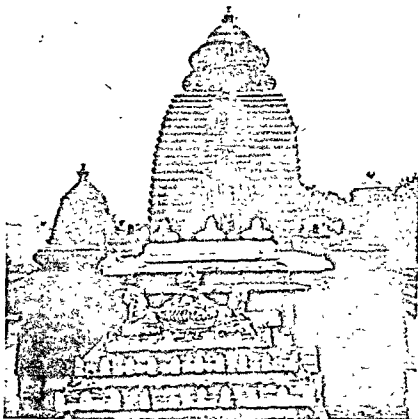
6. गोकर्ण (महावलेश्वर)

गोकर्ण मे भगवान शकर का आत्मतत्त्वलिग है। मदिर वहुत सुदर है। मदिर के भीतर पीठ-स्थान पर यात्री को केवल अरघा दिखाई देता है। अरघे के भीतर आत्मतत्त्वलिग के मस्तक का अग्रभाग दृष्टि मे आता है और उसी की पूजा होती है।

प्रति बीस वर्ष बाद यहा अष्टवध-महोत्सव होता है। उस समय इस महाबल (आत्मतत्त्वलिग) के सप्तपीठों और अष्टवधों को निकालकर नवीन अष्टवध बैठाए जाते हैं। इस अष्टवध-महोत्सव के समय आत्मलिग का स्पष्ट दर्शन होता है। यह मूर्ति मृगशृग के समान है। किन्तु अष्टवधों मे वह आच्छादित है। इस आत्मतत्त्वलिग का नाम महावलेश्वर है। इसी से लोग गोकर्ण को महावलेश्वर भी कहते हैं।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

ब्रह्मा, विष्णु और शिवजी ने यहा तप किया था। ब्रह्मा ने जब यहा यज्ञ किया तो अतिवल और महावल नामक असुरो ने उनके यज्ञ में बाधा पहुचाई। अतिवल को विष्णुजी ने मारा तथा महावल को देवी ने मारा,क्योंकि महाबल को यह वरदान था कि वह किसी पुरुष-योनि से मृत्यु को प्राप्त नही होगा।

यहा के मंदिर मे महाबलेश्वर के रूप मे शिवजी, अतिबलेश्वर के रूप मे विष्णुजी तथा कोटीश्वर के रूप मे ब्रह्माजी विद्यमान हैं। यहा पाच नदियो का सगम स्थल है,जो पचगनी के नाम से जाना जाता है। ये नदियां हैं—1 सावित्री, 2. गायत्री, 3 कृष्णा, 4. वेण्या और 5. ककुद्मती।

महावलेश्वर मदिर मे लिग मूर्ति पर रुद्राक्ष के समान छिद्र जैसे दिखाई पडते हैं, जिनमे जल भरा रहता है और लगातार बाहर निकलता रहता है। पाचो उपर्युक्त नदियो का उद्गम यही से है, ऐसा कहा जाता है। शिवजी की मूर्ति पर आवरण चढ़ाकर ही उनका शृगार किया जाता है,ताकि वे भीग न जाए। मंदिर के बाहर कालभैरव की मूर्ति विराजमान है।

महाबलेश्वर-मंदिर मे आत्मतत्त्वलिग के दर्शन करने गर्भगृह से बाहर आने पर सभामडप मे गणेश तथा पार्वती की मूर्तिया मिलती हैं। उनके मध्य मे नदी की मूर्ति है। महावलेश्वर तथा चद्रशाला के मध्य मे शास्त्रेश्वर लिगमूर्ति है। उसके पूर्व मे वीरभद्र की मूर्तिहै। महावलेश्वर मंदिर के पास 40 पद पर सिद्धगणपति की मूर्ति है। इसमें गणेशजी के मस्तक पर रावण द्वारा आघात करने का चिन्ह है। इनका दर्शन-पूजन करके ही आत्मतत्त्वलिग का दर्शन-पूजन करना चाहिए।

महावलेश्वर मंदिर के अग्निकोण में कोटितीर्थ है। यहा सप्तकोटीश्वर लिग तथा नंदी मूर्ति है। कोटितीर्थ के पश्चिम मे काल भैरव मंदिर है। कोटितीर्थ के पास ही एक शंकर नारायण की मूर्ति छोटे मदिर मे है। इस मूर्ति का आधा भाग शिव का तथा आधा विष्णु का है। समीप ही वैतरणीतीर्थ है।

कोटितीर्थ के दक्षिण मे अगस्त्य मुनि की गुफा है। आगे भीमगदातीर्थ ब्रह्मतीर्थ तथा विश्वामित्रेश्वर लिगमूर्ति और विश्वामित्रतीर्थ हैं।

यहां ताम्राचल नामक एक पहाडी से ताम्र पर्णी नदी निकली है। नदी के पास ताम्र गौरी का छोटा सा मंदिर है। उसके उत्तर मे रुद्रभूमि नामक श्मशान स्थली है। कहते हैं कि पाताल से निकलकर भगवान रुद्र इसी स्थान पर खडे हुए थे।

श्री वेंकटरमण का मंदिर—गोकर्ण ग्राम के मध्य में श्रीवेंकटरमण नामक विष्णु का मंदिर है। यह भगवान नारायण चक्रपाणि होकर इस पुरी के भक्तो के रक्षार्थ स्थित हैं, ऐसा माना जाता है। गोकर्ण-क्षेत्र की रक्षिका देवी भद्रकाली हैं। इनका मंदिर गोकर्ण के द्वार देश पर दक्षिणाभिमुख है। आसपास दुर्गाकुंड, काली ह्रद तथा संगतीर्थ आदि दर्शनीय स्थान भी हैं।

यहां समुद्रतट पर शतशृंग पर्वत है। वहा कमडलुतीर्थ, गरुडतीर्थ, अगस्त्यतीर्थ तथा गरुडमडप और अगस्त्य-मडप हैं। वही समुद्रतट पर एक कोटितीर्थ भी है। पास मे विद्यूत पापस्थली (पितृ-स्थली) तीर्थ है।

परिक्रमा—इस क्षेत्र की परिक्रमा की जाती है। परिक्रमा मे क्षेत्र के भीतर के सब स्थान आ जाते हैं। उन स्थानो की नामावली यहा दी जा रही है—रुद्रपाद, हरिहरपुर (शकरनारायण), पट्टविनायक, उमावन, उमाहृद, उमामहेश्वर, ब्रह्मकुड, ब्रह्मेश्वर, कालभैरव, श्रीनृसिह, श्रीकृष्णक्षेत्र, केतकी विनायक, सिद्धेश्वर, मणिभद्र, भूतनाथ, कुमारेश्वर, सुब्रह्मण्य, गुहातीर्थ, नागेश्वरतीर्थ, गोगर्भ, अघनाशिनी, कामेश्वर, दत्तात्रेयपादुका, कुबेरेश्वर, इद्रेश्वर, मणिनाग

शाल्मली और गंगावली नदियां, रामतीर्थ, रामेश्वर, भीमकुड, कपिलतीर्थ, अशोकतीर्थ, अशोकेश्वर, मार्कंडेय तीर्थ, मार्कंडेश्वर, योगेश्वर, चक्र खडेश्वर, चक्रतीर्थ, महोमज्जनीतीर्थ, वैतरणी, वनदुर्गा, गायत्री-सावित्री-सरस्वतीकुंड, सुमित्रेश्वर, गगाधर, सोमतीर्थ, चन्द्रतीर्थ और सूर्यतीर्थ आदि।

आसपास के अन्य दर्शनीय स्थल

पंचगनी—पंचगनी लगभग एक हजार मीटर की ऊचाई पर बना बहुत ही सुंदर स्थल है। यहा वैसे तो हमेशा ही काफी भीड रहती है, परन्तु वर्षा के दिनों मे यहा विशेपतौर पर भीड रहती है ,क्योंकि उन दिनों प्राकृतिक सौंदर्य अपने यौवन पर होता है।

यात्रा मार्ग

महाबलेश्वर, पुणे से करीब 120 किलोमीटर दूर है। पचगनी का पास का स्टेशन वथार है। पचगनी और महाबलेश्वर के लिए बबई, पुणे तथा सतारा से निरतंर बसें चलती हैं।

ठहरने का स्थान

महाबलेश्वर में धर्मशाला और होटल, लॉज आदि बहुतायत मे हैं। पंचगनी मे ठहरने के लिए, गुजराती, हिंदू, वोहरे आदि समाज सस्थाओ की धर्मशालाए है। अनेक होटल, लॉज आदि भी हैं,जहां ठहरने व भोजन की उत्तम व्यवस्था है।
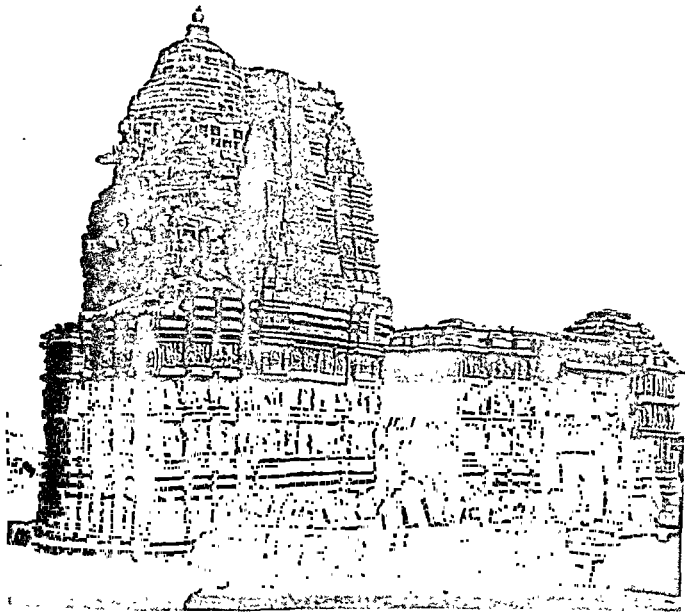
महादेव मंदिर, महाराष्ट्र

7. कुंभकोणम्

'कुभकोणम् का सस्कृत नाम कुभघोणम् है। कहते हैं,ब्रह्माजी ने एक घडा (कुभ) अमृत से भरकर रखा था। उस कुभ की नासिका (घोणा) अर्थात् मुख के समीप एक छिद्र मे से अमृत रिसकर बाहर निकल गया और उससे यहा की पाच कोस तक की भूमि भीग गई। इसी से इसका नाम कुभघोण (कुभकोण) पड गया।

प्रति बारहवे वर्ष यहा कुभ का मेला लगता है। कई लाख यात्री उसमे एकत्र होते हैं। यह नगर कावेरी के तट पर स्थित है। यह स्मरण रखना चाहिए कि कावेरी से नहर निकाल लिए जाने के कारण गर्मियो मे कावेरी पूर्णत: सूखी रहती है। यहा मंदिर तो अनेक है, किन्तु मुख्य मंदिर पाच हैं–(1) कुभेश्वर (यह तीर्थ का सबसे प्रमुख मंदिर है), (2) शार्गपाणि, (3) नागेश्वर, (4) राम-स्वामी, (5) चक्रपाणि। यहा का मुख्य तीर्थ 'महामघम्' सरोवर है। कुभकोणम् मे स्टेशन के पास चोल्ट्री है। उसमे किराये पर कमरे ठहरने को मिल जाते हैं।

स्टेशन से लगभग ढाई कि मी पर नगर के उत्तर मे कावेरी नदी है। यदि उसमे जल हो तो वहा स्नान किया जा सकता है। कावेरी के तट पर पक्का घाट है। तट पर महाकालेश्वर महादेव तथा दूसरे अनेक देवमंदिर हैं। यहा से पूर्व भाग में कुछ दूरी पर एक छोटा शिवमंदिर है। उसमे सुदरेश्वर शिवलिंग तथा मीनाक्षी (पार्वती) की मूर्ति है। कामकोटि-मठ से दक्षिण जाने वाली सडक पर कुछ आगे जाकर दाहिनी ओर इंद्र का और बाई ओर महामाया का मंदिर है। महामाया-मंदिर मे जो महाकाली की मूर्ति है, कहा जाता है, वह स्वयं प्रकट हुई है। समयपुरम् नामक ग्राम के देवीमंदिर मे एक दिन पुजारी ने देखा कि एक ओर भूमि फटी है और उससे एक मूर्ति का मस्तक दीख पड रहा है। धीरे-धीरे पूरी मूर्ति स्वय ऊपर आ गई। वही मूर्ति वहा से लाकर यहा महामाया-मंदिर मे स्थापित कर दी गई।

पुराण-प्रसिद्ध कामकोष्णीपुरी कुभकोणम् ही है। कहते हैं, प्रलय-काल मे ब्रह्माजी ने सृष्टि की उपादानभूता मूलप्रकृति को एक घट मे रखकर यही स्थापित कर दिया था तथा सृष्टि के प्रारम्भ में यहा से उस घट को लेकर सृष्टि-रचना की। एक मत यह भी है कि ब्रह्माजी के यज्ञ मे यहा भगवान शंकर अमृत-कुभ लेकर प्रकट हुए थे।

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

महामघम्–यदि कावेरी मे जल न हो तो यात्री महामघम् सरोवर मे स्नान करते हैं। वैसे भी स्नान के लिए यही पुण्यतीर्थ माना जाता है। कई बार सफाई न होने के कारण उसके जल में कीडे पड़ जाते हैं। सरोवर बहुत बडा है। कुंभ पर्व के समय यात्री इसी मे स्नान करते हैं। सरोवर चारों ओर से पूरा पक्का बना है। कहते हैं कि कुभ पर्व के समय इस सरोवर में गंगाजी का प्रादुर्भाव होता है। नीचे से स्वय जलधारा निकलती है। सरोवर के चारों ओर, घाटो पर मंदिर हैं। इनकी संख्या 16 है। मुख्य मंदिर सरोवर के उत्तर मे है। उसमें काशी विश्वनाथ तथा पार्वती की मूर्ति है। कहते हैं कि इस सरोवर में कुभ पर्व पर गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, गोदावरी, कावेरी, महानदी, पयोष्णी और सरयू ये नौ नदियां, नौ गंगा कही जाती हैं–स्नान करने आती हैं। वे अपने जल में अवगाहन करने वालो की अनत पापराशि को, जो उनके अंदर संचित हो जाती है, यहां आकर प्रति बारह वर्ष पर धोती हैं। इसीलिए इसका नाम 'नवगंगाकुंड' भी है। यहां स्वयं भगवान महाविष्णु, शिव तथा अन्यान्य देवता उस समय पधार कर निवास करते हैं।

नागेश्वर–महामघम् सरोवर से कुंभेश्वर-मंदिर की ओर जाते समय यह मंदिर सबसे पहले मिलता है। इस मंदिर में भगवान शंकर की लिंगमूर्ति है। पार्वती का मंदिर भीतर ही है।
[illegible] भी
[illegible] दी
[illegible] में
किसी-किसी दिन सूर्य-रश्मियां गिरती देखी जाती हैं। नागेश्वर-मंदिर मे एक उच्छिष्ट गणपति की भी मूर्ति है।

कुंभेश्वर–नागेश्वर मंदिर से थोडी ही दूरी पर कुंभेश्वर मंदिर है। यही इस तीर्थ का मुख्य मंदिर है। इसका गोपुर बहुत ऊंचा है और मंदिर का घेरा बहुत बड़ा है। इसमें कुभेश्वर लिंगमूर्ति मुख्यपीठ पर है। यह मूर्ति घडे के आकार की है। मंदिर मे ही पार्वती का मंदिर है। पार्वती जी को 'मंगलांबिका' कहते हैं। यहा भी गणेश जी, सुब्रह्मण्यम् आदि की मूर्तियां परिक्रमा मे हैं।

राधास्वामी-कुभेश्वर मंदिर से थोडी दूरी पर यह मंदिर है। इसमे श्रीराम, लक्ष्मण, सीता की बडी सुंदर झांकी है। कहते है, ये मूर्तियां दारासुरम् ग्राम के एक तालाब से निकली थी। इस
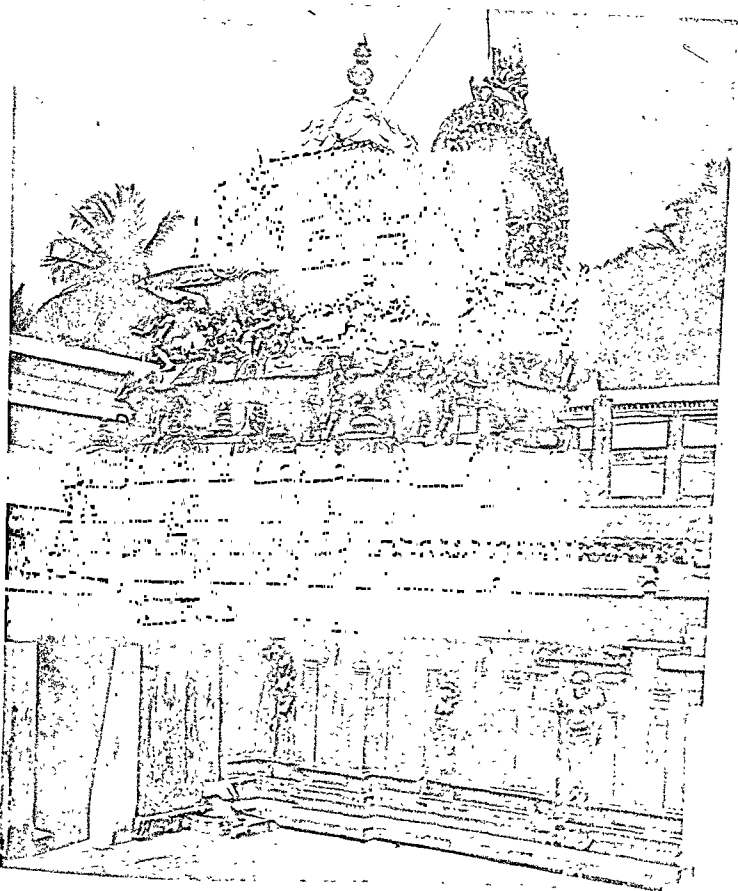
नागेश्वर स्वामी मंदिर, कुंभकोणम्

मंदिर में श्रीराम जन्म से लेकर राज्याभिषेक काल तक की सपूर्ण लीलाओं के तिरगे चित्र दीवारों पर बने हैं। सभी में विविध लीलाओं को व्यक्त करने वाली बहुत ही सुंदर एवं कलापूर्ण मूर्तियां खुदी हैं। यह मंदिर अपनी कला के लिए प्रसिद्ध है।

शार्गपाणि—मार्ग ऐसा है कि पहले महामघम् सरोवर से शार्गपाणि मंदिर के दर्शन करके तब कुंभेश्वर के दर्शनार्थ जा सकते हैं या कुंभेश्वर के दर्शन करके इस मंदिर में आ सकते हैं। नागेश्वर मंदिर पहले मिलता है, किंतु शार्गपाणि, कुंभेश्वर, रामस्वामी—ये मंदिर एक-दूसरे के निकट हैं। शार्गपाणि मंदिर के पीछे थोड़ी ही दूर पर कुंभेश्वर मंदिर है।

शार्गपाणि मंदिर भी विशाल है। भीतर स्वर्णमंडित गरुड़-स्तंभ है। मंदिर के घेरे में अनेकों छोटे मंदिर तथा मंडप हैं। निजमंदिर में भगवान शार्गपाणि की मनोहर चतुर्भुज मूर्ति है। यह शेषशायी भगवान नारायण की मूर्ति है। श्रीदेवी और भूदेवी भगवान की चरण-सेवा कर रही हैं। परिक्रमा में श्री लक्ष्मीजी का मंदिर है। यहां का मुख्य मंदिर जो घेरे के बीच में है, एक रथ के आकार का है। जिसमें घोड़े और हाथी जुते हुए हैं। मंदिर की रथाकृति इस बात को घोषित करती है कि भगवान शार्गपाणि इसी रथ में आसीन होकर वैकुंठ धाम से यहां उतरे थे।

यहां से संबंधित कथा के अनुसार भृगु ने जब भगवान के वक्ष स्थल पर चरण-प्रहार किया और उसके लिए भगवान ने भृगु को कोई दंड तो दिया ही नहीं, उल्टे उनसे क्षमा मांगी, तब लक्ष्मीजी भगवान नारायण से रूठ गईं। वे रूठ कर यहां आईं।

यहां हेम नामक ऋषि के यहां कन्या के रूप में अवतीर्ण हुईं। भगवान नारायण भी अपनी नित्यप्रिया लक्ष्मीजी का वियोग नहीं सह सके। वे भी यहां पधारे और ऋषिकन्या से उन्होंने विवाह कर लिया। तभी से शार्गपाणि और लक्ष्मीजी यहां श्रीविग्रह रूप में स्थित हैं।

शार्गपाणि मंदिर के पास एक सुंदर सरोवर है। उसे हेम पुष्करिणी कहते हैं।

सोमेश्वर—शार्गपाणि-मंदिर के समीप ही यह छोटा-सा मंदिर है। इसमें दो भिन्न-भिन्न मंदिरों में सोमेश्वर शिवलिंग तथा पार्वती की मूर्तियां हैं।

चक्रपाणि—यह मंदिर बाजार के दूसरे सिरे पर है। इसमें भगवान विष्णु की मूर्ति है। श्री लक्ष्मीजी का मंदिर एक पृथक् चबूतरे पर है।

वेदनारायण—यह मंदिर कुंभकोणम् के समीप ही है। कहा जाता है कि सृष्टि के प्रारंभ में यहीं ब्रह्मा ने नारायण का यज्ञ किया था। उस यज्ञ में वेदनारायण प्रकट हुए थे। भगवान ने वहां अमृत स्नान के लिए कावेरी नदी को बुला लिया था। वह अब भी वहां हरिहर नदी के रूप में है।

भगवान शंकराचार्य का कामकोटि पीठ यवन काल में कां यहां आ गया था और अब भी यहीं है। वर्तमान पीठाधि आजकल कांची में निवास करते हैं।

इनके अतिरिक्त कुंभकोणम् में विनायक, आभिवृद्धेश्वर कालहस्तीश्वर, बाणेश्वर, गौतमेश्वर आदि मंदिर हैं।

8. पक्षितीर्थ

पक्षितीर्थ, वेदगिरि नामक पर्वत है। यह पर्वत ही तीर्थस्वरूप माना जाता है। वेदगिरि की परिक्रमा होती है। पर्वत के नीचे पक्षितीर्थ बाजार है। यहा यात्रियो के ठहरने के लिए धर्मशाला है।

बाजार के एक ओर शखतीर्थ नामक सरोवर है। कहते है, बारह वर्ष मे जब गुरु कन्याराशि मे आते हैं, तब इस सरोवर मे एक शख उत्पन्न होता है। उस समय यहा पुष्कर महोत्सव मनाया जाता है। बडी भारी भीड एकत्र होती है।

शखतीर्थ सरोवर से कुछ दूरी पर बाजार के दूसरे सिरे पर एक प्राचीन शिव मदिर है। मदिर विशाल है। इसे रुद्रकोटिक्षेत्र कहा जाता है। मदिर मे भगवान शकर का लिग विग्रह है, उसे रुद्रकोटिलिग कहते है। मदिर मे ही पृथक् पार्वतीजी का मदिर है। यहा पार्वतीजी को 'अभिरामनायकी' कहते है। मदिर के पास ही रुद्रकोटितीर्थ नामक सरोवर है।

पक्षितीर्थ बाजार के पास से ही वेदगिरि पर्वत पर जाने की सीढिया बनी है। लगभग 500 सीढिया चढ़नी पडती है। पर्वत के शिखर पर भगवान शकर का मदिर है। यहा मदिर का मार्ग सकीर्ण है। सीढियो से ऊपर जाकर परिक्रमा करते हुए मदिर मे जाना पडता है। मदिर मे भगवान शकर का लिगविग्रह है। इसे यहा दक्षिणा मूर्तिलिग (आचार्य विग्रह) मानते हैं। यह लिग मूर्ति कदली स्तभ की भाति है। इसे 'स्वयभूलिग' कहा जाता

पक्षितीर्थ मे पक्षियो को पडित जी खाना खिलाते हुए
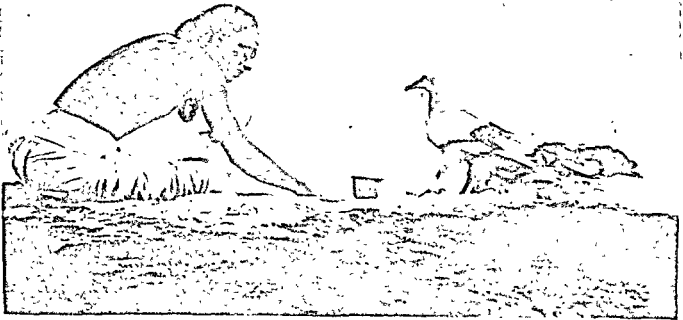
है। वहा सोमास्कद आदि देवता [illegible] मुख्य मंदिर के दर्शन करके परिक्रमा करके लौटने पर मकीर्ण गली में ही और एक छोटा द्वार है। उसमे होकर [illegible] नीचे गुफा मे पार्वतीजी की मूर्ति है।

मंदिर के दर्शन करके नीचे उतरने [illegible] और थोडी सीढिया जाती हैं। वहीं लोग पक्षियों के दर्शन [illegible] है। पर्वत की समतल भूमि के पास एक लंबी ऊंची शिला है। उसमे एक किनारे पर एक कुंड है, जिसे 'गृध्रतीर्थ' कहते है। एक पुजारी वहा दस बजे दोपहर के बाद आ जाता है। वह कटोरी-तश्तरी पटक कर बार-बार संकेत करता है। थोडी देर मे दो काक पक्षी आते है। वे कटोरी मे और पुजारी के हाथ से भी भोजन ग्रहण करते हैं और पानी पीकर उड जाते हैं।

यह काक पक्षी मटमैले रंग का, चील से कुछ बडा होता है और उत्तर भारत राजस्थान मे प्राय दीखता है। यह गंदगी और कीडे खाने वाला गंदा पक्षी है। इसको चमरगिद्धा, मलगीधा आदि भी कहते है। यहा इन पक्षियो को दर स्थान पर पालकर रखा गया है। कहा जाता है कि अलग-अलग स्थानों पर दो-दो
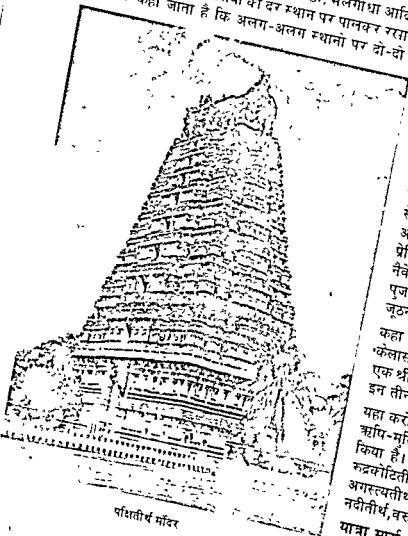
पक्षितीर्थ मंदिर

करके आठ-दस पक्षी पाले गए हैं। पुजारी के तश्तरी पटकने के संकेत पर उन्हे छोड दिया जाता है। एक निश्चित स्थान पर नित्य भोजन पाने के कारण ये वहा आ जाते हैं। उन्हे उनके पालने के स्थान पर मांसादि दिया जाता है। अतः वे वहा पुन लौट जाते हैं।

पक्षियों के आने का समय निश्चित नहीं है। दस बजे से दो बजे तक के मध्य वे किसी भी समय आते हैं; क्योंकि पालने के स्थान मे छूट जाने पर वे कितनी देर मे वहा आएंगे, यह निश्चित नहीं रहता। कभी एक पक्षी आता है, कभी दोनो बारी-बारी से आते हैं और कभी दोनो साथ आते है। प्रायः पर्वत पर पहले एक पक्षी आता है। फिर दोनो साथ आते हैं।

इन पक्षियो के पालने के स्थान बाजार मे दूर पर्वत मे छिपे स्थलो पर हैं। पुजारी इन्हे मुनियों के अवतार बतलाता है। कहा जाता है कि सत्ययुग मे ब्रह्मा के आठ मानस पुत्र शिव के शाप से गीध पक्षी हो गए। उनमे से दो सतयुग के अंत मे, दो त्रेता के अंत मे और दो द्वापर के अंत मे मुक्त हो चुके थे। ये शेष दो कलियुग के अंत मे मुक्त हो जाएंगे। पुजारी बतलाता है कि ये पक्षी चित्रकूट पर तपस्या करते हैं। त्रिवेणी (प्रयाग) मे स्नान करके बद्रीनाथजी के दर्शन करने जाते हैं और वहा से मध्याह्न मे यहा प्रसाद ग्रहण करने आते हैं। यह बात यहा के स्थल पुराण मे भी नहीं है। 'स्थल पुराण' मे सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग के प्रारंभ मे दो-दो मुनियो के शाप से गीध होने की बात तो है और युगांत मे मुक्त हो जाने की बात भी है; किंतु उसमे स्पष्ट वर्णन है कि इस युग मे गीध हुए मुनि अज्ञात रूप से वेदाचल पर तपस्या करते हैं। वे किसी को दर्शन देने नही आते। पुजारी लोगो को इन पक्षियो को नैवेद्य लगाने के लिए प्रेरित करता है और उसके लिए दक्षिणा लेता है। जो लोग नैवेद्य लगाने की दक्षिणा देते हैं, उन्हे पक्षियो के जाने पर पुजारी उनका उच्छिष्ट प्रसाद देता है; किंतु इन गंदे पक्षियो की जूठन लेना कदापि उचित नही कहा जा सकता।

कहा जाता है कि भगवान शंकर की आज्ञा से नंदीश्वर ने कैलास के तीन शिखरों को पृथ्वी पर स्थापित किया। उनमे एक श्रीशैल, दूसरा कालहस्ती मे और तीसरा यह वेदगिरि है। इन तीनो पर्वतों पर भगवान शंकर नित्य निवास करते हैं।

यहा करोडो रुद्रो ने भगवान शिव की पूजा की है तथा अनेक ऋषि-मुनि एवं देवताओ ने तपस्या की है। नंदी ने भी यहा तप किया है। यहा वेदाचल के पूर्व मे इंद्रतीर्थ, अग्निकोण मे रुद्रकोटितीर्थ, दक्षिण मे वशिष्ठतीर्थ, नैऋत्य कोण मे अगस्त्यतीर्थ, मार्कंडेयतीर्थ तथा विश्वामित्रतीर्थ, पश्चिम मे नंदीतीर्थ, वरुणतीर्थ तथा पश्चिमोत्तर मे अकालिका तीर्थ है।

यात्रा मार्ग

मद्रास-धनुषकोटि लाइन पर मद्रास से 54 किलोमीटर दूर

चेंगलपेट स्टेशन है। चेंगलपेट मद्रास प्रदेश का जिला है और अच्छा नगर है। चेंगलपेट से पक्षितीर्थ 15 किलोमीटर दूर है। मद्रास से चेंगलपट होती मोटर बस पक्षितीर्थ—थिरुक्कली-कुंदरम् तक जाती है।

मद्रास को यदि तमिलनाडु के तीर्थ स्थानों को जाने का प्रमुख प्रवेश द्वार या केन्द्र,मान लिया जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। मद्रास से अनेक तीर्थ स्थानो के लिए तीर्थभ्रमण बसे चलती हैं, जो सारे तीर्थो को ले जाती हैं और ठहरने खाने की व्यवस्था भी ये स्वय करती हैं।

कांचीपुरम्, थिरुक्कलीकुदरम् तथा महाबलीपुरम् के लिए प्रतिदिन नियमित बसे चलती हैं। महीने मे एक बार हर दूसरे शनिवार को मद्रास से परिभ्रमण बसे चलती हैं, जो पांडिचेरी, चिदंबरम्, तंजावुर, रामेश्वरम्, पचालम्, मदुराई, कन्याकुमारी, त्रिवेद्रम्, कोडाइकनाल, तिरुचिरापल्ली आदि स्थानो पर ले जाती हैं। यह नौ-दस दिन की यात्रा होती है।

इसी प्रकार महीने के पहले शनिवार को सुबह एक दूसरी परिभ्रमण बस-यात्रा आरभ होती है, जो तिरुवन्नमलाई, येराकुड, ऊटी, मुडकलाई, वृदावन गार्डन, मैसूर, श्रीरगपट्टनम्, बगलौर, तिरुपति आदि पवित्र स्थानों की यात्रा कराती हैं। यह भ्रमण सात-आठ दिन मे पूर्ण हो जाता है।

इनमे पहली और दूसरी यात्रा के लिए किराया क्रमश लगभग 290 और 260 रुपये है। इन भ्रमण बसो का रिजर्वेशन पहले से कराना पडता है। इनका रिजर्वेशन मद्रास शहर के माउंट रोड पर बने आफिस मे होता है।

ठहरने का स्थान

चेंगलपेट स्टेशन से थोडी दूरीपर म्युनिसिपल डाक बंगला है। यहा किराये पर ठहरा जा सकता है।

नटराज शिव की एक दिव्य प्रतिमा

बहती है। नदी के किनारे पर ही श्रीकालहस्ती मंदिर स्थित है। पास ही कैलासगिरि पर्वत है। नदीश्वर ने कैलास पर्वत के तीन शिखर पृथ्वी पर स्थित किए थे, कैलासगिरि उनमे से एक है।

कालहस्ती मंदिर का परिक्रमा घेरा काफी फैला हुआ है। कालहस्ती मंदिर मे दर्शन तथा पूजन के लिए शुल्क देना पडता है। मंदिर में शिवजी की लिंगमूर्ति है,जो वायुतत्त्व लिंग है। इस मूर्ति का स्पर्श पुजारी भी नही करते। मूर्ति के सामने स्वर्णपट रखा है,जिसपर फूल-मालाए, प्रसाद आदि चढ़ाए जाते हैं। पूजा भी इसी पट पर सामग्री रखकर की जाती है।

इस मंदिर का कालहस्ती नाम इसलिए पडा कि इसी मूर्ति मे मकडी, सर्पफण तथा हाथी के दातो के चिन्ह साफ दिखाई पडते हैं। कहते हैं कि इस मूर्ति की सबसे पहले आराधना करने वालो मे मकडी, सर्प तथा हाथी ही थे,अत: श्री = मकडी, काल = सर्प, हस्ती = हाथी अर्थात् श्रीकालहस्ती नाम इस प्रकार पडा।

मंदिर की परिक्रमा मे अनेक देवी-देवताओ की मूर्तिया है। मंदिर मे पार्वतीजी की मूर्ति विद्यमान है। पहाडी पर चढ़ने के लिए सीढ़िया नही हैं,फिर भी चढने मे कोई विशेष कठिनाई नही होती।

यात्रा मार्ग

कालहस्ती के लिए मद्रास, तिरुपति तथा चेंगलपेट से थोडी-थोडी देर मे बसे चलती हैं। विल्लुपुरम्-गुंटूर लाइन पर रेणिगुंटा से कालहस्ती 25 किलोमीटर तथा तिरुपति ईस्ट से 38 किलोमीटर दूर पडता है। स्टेशन से कालहस्ती मंदिर लगभग दो किलोमीटर दूर पडता है।

सारंग मंदिर,मद्रास

कौशलयुक्त है।

लगभग पांच सौ वर्ष पूर्व पांड्य देश के राजा को किसी ज्योतिपी ने कहा कि वह एक निश्चित तिथि पर सर्प-दश से मर जाएगा। राजा ने यह सुनकर तीर्थ यात्रा प्रारभ की तथा वह गुरुवायूर पहुंचा। इन दिनों मंदिर अत्यत ध्वस्त स्थिति मे था। राजा ने उसके पुनर्निर्माण का आदेश दिया और मदिर निर्माण के पूर्व ही वह अपनी राजधानी को चला गया। इधर, जब निश्चित तिथि बीत गई और राजा की मृत्यु नही हुई, तब राजा ने ज्योतिपी को बुलवाया और उससे झूठी बात कहने का कारण पूछा। ज्योतिपी ने उत्तर दिया—"महाराज, अपनी मृत्यु के ठीक समय आप एक पवित्र मदिर की पुनर्निर्माण-योजना मे व्यस्त थे। उस समय सर्प ने आपको काटा भी था, किन्तु कार्य मे अत्यत एकाग्र होने के कारण आपको ज्ञात नहीं हो सका। देखिए, यह सर्प के काटे जाने का घाव है। यह तो जिनका मदिर आप निर्माण करा रहे थे, उनकी अपूर्व कृपा का फल है कि आप मृत्यु से बच गए। अब आपको पुनः वहीं जाना चाहिए।"

इसके पश्चात् मदिर मे कई बार कुछ सुधार और परिवर्तन कतिपय स्थानीय भक्तो ने किए।

कहा जाता है कि सर्वप्रथम भगवान विष्णु ने अपनी साक्षात मूर्ति ब्रह्मा को उस समय प्रदान की जब वे सृष्टि-कार्य में सलग्न हुए। जब ब्रह्मा सृष्टि-निर्माण कर चुके, उस समय स्वयंभू मन्वन्तर मे प्रजापति सुतपा और उनकी पत्नी पृश्नि ने पुत्र-प्राप्ति के लिए ब्रह्मा की आराधना की। ब्रह्मा ने उन्हे यह मूर्ति प्रदान की तथा उन्हे उपासना करने का आदेश दिया। बहुत काल की आराधना के बाद भगवान प्रकट हुए तथा स्वय पुत्ररूप में उनके गर्भ से जन्म लेने का वचन देकर अंतर्ध्यान हो गए। तत्पश्चात् भगवान पृश्निगर्भ के रूप मे अवतरित हुए। दूसरे जन्म में सुतपा कश्यप बने और पृश्नि अदिति। तीसरे जन्म मे सुतपा वासुदेव बने और पृश्नि देवकी बनी। तब भी भगवान ने श्रीकृष्ण रूप मे इनकी कोख से जन्म लिया। यह मूर्ति वासुदेव को धौम्य ऋषि ने दी थी तथा उन्होने इसे द्वारिका में प्रतिष्ठित कराकर इसकी पूजा की थी।

सर्प-यज्ञ के पश्चात् जनमेजय को गलित कुष्ठ हो गया। तब उन्होने इन्ही भगवान की आराधना की तथा भगवान की कृपा से रोग के साथ-साथ ही भवरोग से भी मुक्ति पाई।

श्री आद्यशंकराचार्य इस मदिर मे कुछ काल रुके थे। उन्होने यहा की पूजा-पद्धति मे कुछ सशोधन किए थे। अब तक पूजा उस सशोधित विधि से ही होती है।

एक और कथा के अनुसार कहा जाता है कि एक किसान नारियल की खेती की पहली फसल के कुछ नारियलो को लेकर भगवान गुरुवायूरप्पन को चढ़ाने चला। मार्ग मे वह डाकू के चगुल मे फंस गया। उसने डाकू से प्रार्थना की कि वह और सब कुछ ले ले, पर भगवान के निमित्त लाए हुए नारियलो को अलग रहने दे। इस पर डाकू ने ताना मारते हुए कहा—"क्या गुरुवायूरप्पन के नारियलो में सीग लगे हैं।" डाकू का इतना कहना था कि सचमुच उन नारियलो पर सीग उग आए। डाकू इस चमत्कार को देखकर घबरा कर चुपचाप चला गया। ये सीग लगे नारियल मंदिर मे अब भी रखे हुए हैं।

यात्रा मार्ग

त्रिचूर रेलवे स्टेशन से गुरुवायूर लगभग 38 किलोमीटर दूर है। त्रिचूर से बसे भी चलती हैं। कोचीन जाने वाली लाइन पर त्रिचूर पडता है।

13. कन्याकुमारी

कन्याकुमारी जहा पर स्थित है, वह भारत की अंतिम दक्षिणी सीमा है। इसके एक ओर बगाल की खाड़ी, दूसरी ओर अरब सागर तथा सामने हिंद महासागर है। कन्याकुमारी एक अतरीप है। यह भारत की धरती का छोर है और एक ऐसा स्थान है, जहा से लेकर दक्षिणी ध्रुव तक बीच मे कोई टापू भी नही है।

धार्मिक पृष्ठभूमि

यहा की कथा यह है कि भारत के चक्रवर्ती सम्राट भरत के आठ पुत्र और एक पुत्री थी। उन्होंने अपने राज्य का बटवारा कर दिया और दक्षिण का भाग उनकी कुमारी पुत्री को मिला, जिससे इसका नाम 'कुमारी' पड गया। एक बार जब असुरो का जोर बढ़ गया और उनका राजा बाणासुर देवताओं को कष्ट देने लगा तो पृथ्वी माता ने भगवान विष्णु से प्रार्थना की। विष्णु भगवान ने कहा कि देवताओं को चाहिए कि वे पराशक्ति की आराधना करे, वही बाणासुर को नष्ट कर सकती है। देवताओं के यज्ञ करने पर यज्ञकुड की चिद् (ज्ञानमय) अग्नि से दुर्गाजी अपने एक अश से कन्या-रूप मे प्रकट हुई।

देवी प्रकट होने के पश्चात् भगवान शकर को पति रूप मे पाने के लिए दक्षिण-समुद्र के तट पर तपस्या करने लगी। उनकी तपस्या से सतुष्ट होकर शकरजी ने उनका पाणिग्रहण करना स्वीकार कर लिया। देवताओं को चिता हुई कि यह विवाह हो गया तो बाणासुर मरेगा नही। देवताओं की प्रार्थना पर देवर्षि नारद ने, विवाह के लिए आते हुए भगवान शकर को 'शुचीद्रम्' स्थान पर इतनी देर रोक लिया कि सवेरा हो गया। विवाह-मुहूर्त टल जाने से भगवान शकर वही स्थाणुरूप मे स्थित हो गए। विवाह के लिए प्रस्तुत अक्षतादि समुद्र मे विसर्जित हो गए। कहते हैं, वे ही तिल, अक्षत और रोली अब रेत के रूप मे मिलते हैं। देवी फिर तपस्या मे लग गई।

बाणासुर ने देवी के सौंदर्य की प्रशसा अपने अनुचरो से सुनी। वह देवी के पास आया और उनसे विवाह करने का हठ करने लगा। इस कारण देवी से उसका युद्ध हुआ। युद्ध मे देवी ने बाणासुर को मार डाला। इसी उपलक्ष्य मे आश्विन नवरात्रि के उत्सव होते हैं।

यह तीर्थ शताब्दियो से दर्शकों का आकर्षण रहा है। कहा जाता है कि आदिपुरुष आदम यहा आए थे। कन्याकुमारी मे जहा अरब सागर, हिंद महासागर तथा बंगाल की खाड़ी, इन तीनों समुद्रों का सगम है, वह पवित्र तीर्थ है। यहा स्नान के लिए समुद्र मे एक सुरक्षित घेरा बना है। समुद्र पर यहा पक्के घाट है और महिलाओं के वस्त्र-परिवर्तन के लिए एक ओर कमरे भी बने है। घाट के ऊपर एक मडप है। यात्री यहा श्राद्धादि करते है।

कन्याकुमारी जी

तीर्थस्थल का दर्शनीय विवरण

यहा बंगाल की खाडी के समुद्र में सावित्री, गायत्री, सरस्वती, कन्या, विनायक आदि तीर्थ है। देवी-मंदिर के दक्षिण मातृतीर्थ, पितृतीर्थ और भीमातीर्थ हैं। पश्चिम मे थोडी दूर पर स्थाणुतीर्थ है। कहा जाता है, शुचीद्रम् मे शिवलिंग पर चढा जल भूमि के भीतर से यहां आकर समुद्र मे मिलता है।

समुद्रतट पर, जहां स्नान का घाट है, वहा एक छोटा-सा गणेशजी का मंदिर ऊपर दाहिनी ओर है। गणेशजी का दर्शन करके कुमारी देवी का दर्शन करने लोग जाते है। मंदिर मे द्वितीय प्राकार के भीतर 'इंद्रकात विनायक' नामक गणपति-मंदिर है। इन गणेशजी की स्थापना देवराज इद्र ने की थी।
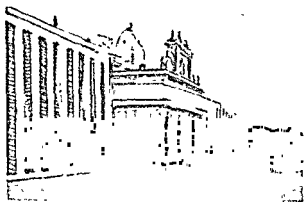
कुमारी देवी मंदिर, कन्याकुमारी

कन्याकुमारी मंदिर—इस मदिर के तीन दरवाजे हैं। वैसे तो दक्षिण की परंपरा के अनुसार चार दरवाजे थे। एक दरवाजा समुद्र की ओर खुलता था, उसे बद कर दिया गया। कहा यह जाता है कि कन्याकुमारी की नाक मे हीरे की जो सीक है, उसकी रोशनी इतनी तेज थी कि दूर से आने वाले नाविक यह समझ कर कि यह कोई दीपक जल रहा है, तट के लिए उधर आते थे किन्तु रास्ते मे जो शिलाए हैं, उनसे टकराकर नावें टूट जाती थी। यहां पर पूजा-अर्चना भी केरल के नंबूद्री ब्राह्मण अपनी प्रथा से करते हैं।

मंदिर मे कई द्वारो के भीतर जाने पर कुमारी देवी के दर्शन होते हैं। देवी की यह मूर्ति प्रभावोत्पादक तथा भव्य है। देवी के हाथ मे माला है। विशेष उत्सवो के अवसर पर देवी का हीरे-जवाहरातो आदि से शृंगार होता है। रात्रि मे भी देवी का विशेष शृंगार होता है।

निजमंदिर के उत्तर-अग्रद्वार के बीच मे भद्रकाली का मंदिर है। ये कुमारी देवी की सखी मानी जाती हैं। वस्तुतः यह 51 पीठो मे मे एक शक्तिपीठ है। यही सती-देह का पृष्ठभाग गिरा था।

मंदिर मे और भी अनेक देव-विग्रह हैं। मदिर के उत्तर मे थोडी दूरी पर 'पाप विनाशनम्' पुष्करिणी है। यह समुद्र के तट पर
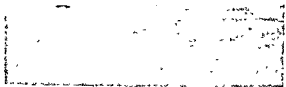
विवेकानद शिला

ही एक बावडी है, जिसका जल मीठा है। यात्री इसके जल से भी स्नान करते है। इसे 'मडूक तीर्थ' भी कहते हैं।

यहा समुद्र-तट पर लाल तथा काली बारीक रेत मिलती है, जिसके दाने चावलो के समान लगते है। समुद्र मे शख, सीपी आदि भी मिलते है।

आसपास के अन्य दर्शनीय स्थल

विवेकानंदशिला—कन्याकुमारी के छोर से आगे एक पहाडी शिला है। 1892 मे स्वामी विवेकानद रामेश्वरम् और मदुरै होते हुए यहा आए थे और देवी के सामने दडवत् प्रणाम करके समुद्र मे शिला को देखकर तैरकर उस शिला के पास पहुचे थे। वहा पर तीन दिन निर्जल व्रत करके वे बैठे आत्मचितन करते रहे थे। तभी से उस शिला का नाम 'विवेकानदशिला' हो गया है। ऐसा लगता है कि प्राचीन काल मे भी यहा पर कोई छोटा-सा मदिर रहा होगा। विवेकानद मदिर के चारो ओर एक परकोटा है और उससे नीचे ही स्नान के लिए घाट बना हुआ है, जहां पर यात्री स्नान कर सकते हैं।

कन्याकुमारी के सूर्योदय और सूर्यास्त का दर्शन अपनी अलग ही विशेषता रखता है। कन्याकुमारी भारत का सुदरतम् तीर्थ है।

शुचींद्रम्—कन्याकुमारी से शुचीद्रम् 12 कि. मी. है। इस स्थान को 'ज्ञानवनक्षेत्रम्' कहते हैं। गौतम के शाप से इद्र को
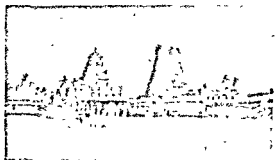
शुचीद्रम् मंदिर तथा सरोवर

यही मुक्ति मिली। यहां इंद्र उस शाप से पवित्र हुए। इसलिए इस स्थान का नाम शुचीन्द्रम् पड़ा। यहां भगवान शंकर का विशाल मंदिर है। मंदिर के समीप ही सविस्तृत सरोवर है। इस सरोवर को 'प्रज्ञाकुंड' कहते हैं। शुचीन्द्रम् मंदिर में ब्रह्मा, विष्णु और महेश—इन तीनों के अलग-अलग मंदिर हैं।

गोपुर के भीतर भगवान शंकर तथा भगवान विष्णु के मंदिर विशाल हैं। इनमें कोई मुख्य या गौण नहीं है। शिवमंदिर में शिवलिंग स्थापित है। इन्हें यहां 'स्थाणु' कहते हैं। इस शिवलिंग के ऊपर मुखाकृति बनी है। मंदिर के सामने नंदी की मूर्ति है। विष्णु मंदिर में श्रीदेवी तथा भूदेवी के साथ भगवान विष्णु की मनोहर चतुर्भुज मूर्ति है। इस मंदिर के सामने गरुड़जी की उच्चाकृति मूर्ति है। इस मंदिर में श्रीहनुमानजी की बहुत बड़ी मूर्ति एक स्थान पर है। इनके अतिरिक्त शिवमंदिर में पार्वती, नटराज, सुब्रह्मण्य तथा गणेश की और विष्णुमंदिर में लक्ष्मीजी एवं भगवान विष्णु की चल प्रतिमाएं हैं। ब्रह्मा का भी एक पृथक् मंदिर यहां है, जो इस मंदिर के घेरे में ही है और वह भी प्रमुख मंदिर है। तीनों ही मंदिरों की परिक्रमा में अनेक देवताओं की मूर्तियां हैं।

नागरकोइल—शुचीन्द्रम् से नागरकोइल पांच कि. मी. है। यह एक बड़ा नगर है। त्रिवेंद्रम्, तिन्नेवली तथा आसपास के अन्य स्थानों को यहां से बसें जाती हैं। इस नगर में शेषनाग तथा नागेश्वर महादेव के मंदिर हैं।

[illegible] शुचीन्द्रम् के मंदिर का दृश्य

यात्रा मार्ग

यात्री के लिए सुविधाजनक यही होता है कि वह तिन्नेवली से कन्याकुमारी जाकर फिर वहां से मोटर-बस द्वारा त्रिवेन्द्रम् जाए अथवा त्रिवेन्द्रम् से कन्याकुमारी आकर फिर तिन्नेवली जाए। इस प्रकार दोनों ओर से मार्गों में आने वाले तीर्थों की यात्रा हो जाती है। कन्याकुमारी से त्रिवेन्द्रम् के बीच के मार्ग में केवल शुचीन्द्रम् और नागरकोइल ही आते हैं। दूसरे तीर्थ मार्ग से अलग हैं, किन्तु उनमें एक से दूसरे तीर्थ को बसें जाती हैं।

पुस्तकें कैसे मंगायें

पुस्तकें वी.पी पी. पैकेट द्वारा या पुस्तकों की पूरी कीमत (डाकखर्च सहित) पेशगी भेजकर रजिस्ट्री पैकेट द्वारा मंगाई जा सकती हैं।

1.3.83 से नई डाकदरों के लागू हो जाने से डाकखर्च पुस्तकों की कीमत का लगभग 25% से 40% तक हो गया है।

17/- रु से 25/- रु. तक की कीमत की पुस्तकों पर यह डाकखर्च असहनीय है, जोकि 7/50 रु कम से कम आता है।

1 मार्च 1983 से बढ़े हुए डाकखर्च का असर

	औसत वजन	रजिस्ट्री चार्ज	वी पी चार्ज	वजन 2/- किलो	कुल
डाकखर्च मिलाकर 10/- तक की कीमत के पैकेट पर	(300 ग्राम)	0-65	1-00	0-60	2-25
डाकखर्च मिलाकर 20/- तक की कीमत के पैकेट पर	(600 ग्राम)	0-65	2-00	1-20	3-85
डाकखर्च मिलाकर 20/- से ऊपर कीमत के पैकेट पर	(750 ग्राम)	2-75	3-00	1-50	7-25

नोट : इसके अतिरिक्त दस नये पैसे का वी पी मनीआर्डर फार्म तथा पैकिंग व अन्य खर्च जोकि लगभग 1/50 प्रति पैकेट आता है प्रकाशक वहन करता है।

उपर्युक्त डाकदरों के अनुसार पुस्तकों को वी पी द्वारा मंगाने पर निम्न डाकव्यय होगा

7/75 तक की पुस्तक पर डाकखर्च 2/25—25% To 30%

7/75 से 16/15 तक की पुस्तकों पर 3/85 —25% To 55%

16/25 से ऊपर की पुस्तकों पर 7/25—25% To 40%

(पुस्तक व्यवसाय में 20/- से ऊपर एक औसतन वी पी पैकेट की रकम 20/- से 30/- के बीच रहती है)

अब चूंकि पूरा डाकखर्च न तो पाठक ही वहन कर सकता है और न ही प्रकाशक—इसलिए हमने डाकखर्च की जो रकम इस सूचीपत्र में दी है, वह औसतन आधी है—अर्थात् आधा डाकखर्च हम वहन कर रहे हैं।

आर्डर देकर वी पी पी न छुड़ाने पर सारा डाकव्यय का भार प्रकाशक पर आ पड़ता है, जो कि लिखे डाकखर्च से औसतन दुगना होता है।

उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए अब अधिकतर हमने एडवांस रकम मांगनी शुरू कर दी है। वी पी पी द्वारा केवल वही आर्डर भेजे जाते हैं, जो हम समझते हैं छूट जायेंगे—और अन्य दूसरे आर्डरों को भेजने से पहले एडवांस मंगाने के लिए उन्हें पत्र लिख दिया जाता है।

आपके आर्डर के प्रत्युत्तर में यदि आपसे एडवांस मांगा गया है, तो उसे फौरन साथ भेजे गये मनीआर्डर फार्म में भरकर भेज देवें जिससे पुस्तकें जल्द से जल्द भेजी जा सकें।

पुस्तकें जल्द मंगाने के लिए मनीआर्डर द्वारा एडवांस रकम भेजकर रजिस्ट्री पैकेट से मंगाइये

वी.पी.पी. द्वारा पुस्तकें मंगाने के लिए 25% रकम एडवांस भेजें।

हमारी प्रकाशित पुस्तकें लगभग सभी प्रतिष्ठित पुस्तक विक्रेताओं एवं ए एच व्हीलर के रेलवे बुक स्टालों पर उपलब्ध हैं—डाक व्यय बचाने के लिए आप अपने निकट के बुकस्टाल से मांग करें अन्यथा कहां मिलेगी, यह उनसे पूछकर वहां से खरीद लें।

कैमरा साधारण हो या बढ़िया आप स्वयं ट्रिक फोटोग्राफी कर सकते हैं!

. . . बोतल के भीतर आदमी, हथेली पर नाचती औरत, सेब में से झांकते बच्चे या पीपल के पत्ते पर अपनी प्रेमिका के फोटो उतारिये! या

- किसी अच्छे भले आदमी का कार्टून जैसा फोटो खींचना चाहते हैं? जैसे कि ऊंट जैसी गर्दन, कुम्हड़े जैसा सिर, बामड़े जैसी नाक, हाथी जैसे कान और अंगुल भर का शरीर! (डिस्टार्शन ट्रिक)
- एक ही फोटो में किसी आब्जेक्ट के कई प्रतिबिम्ब एक साथ उतारना चाहते हैं। (प्रिज्म ट्रिक)
- एक ही फोटो में किसी व्यक्ति को अलग-अलग पोज में एक साथ दिखाना चाहते हैं—फिल्मों के डबल रोल जैसा? (मल्टीपल ट्रिक)

इसके लिए कोई महंगा या विदेशी कैमरा ही जरूरी नहीं है, जरूरत है ट्रिक फोटोग्राफी के ज्ञान की! .... और

ट्रिक फोटोग्राफी की हिन्दी में सिर्फ एक ही पुस्तक है

ट्रिक फोटोग्राफी एंड कलर प्रोसेसिंग

ए एच हाशमी

डिमाई साइज के 248 पृष्ठ
सैकड़ों रेखा व छाया चित्र

मूल्य केवल 21/-
डाकखर्च 4/-

जिसमें डिस्टॉर्शन ट्रिक, प्रिज्म ट्रिक, मल्टिपल एक्सपोज़र्स ट्रिक, फोटोमोंटाज, बेस रिलीफ, रैकिंग, पैनिंग, स्टार इफेक्ट, डिफ्रैक्शन ग्रेटिंग, टेक्सचर, फोटोलिथ, सोलराइजेशन, पोस्टराइजेशन, पेन ड्राइंग इफेक्ट तथा ऐसी ही अन्य अनेकों कैमरा ट्रिक्स की पूरी-पूरी प्रैक्टिकल जानकारी चित्रों के साथ दी गई है। फोटो-ट्रिक्स के अलावा

फोटोग्राफी के प्रारम्भिक ज्ञान के साथ-साथ कलर फोटोग्राफी व कलर प्रोसेसिंग की प्रैक्टिकल जानकारी भी दी गई है, जिसकी मदद से आप अपने घर में ही नेगेटिव या ट्रांसपेरेंसी की प्रोसेसिंग व कलर प्रिंटिंग कर सकते हैं।

भिन्न-भिन्न किस्म की प्रोसेसिंग के लिए सैकड़ों की तादाद में नये से नये फार्मूले हैं और फोटोग्राफिक वस्तुओं के निर्माता व वितरकों, सर्विसिंग सेंटरों के पते।

अपने निकट के बुक स्टाल एव ए एच. व्हीलर के रेलवे तथा बस अड्डों पर स्थित बुक स्टालों पर मांग करें या वी पी पी द्वारा मंगाने के लिए लिखें

पुस्तक महल,
खारी बावली, दिल्ली-110006

श्रेष्ठता का सबूत

रैपिडैक्स कोर्स' भारत भर के प्रसिद्ध समाचार पत्रों की राय में

...इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें चुने हुए, दैनिक उपयोग में आने वाले शब्दों की उपयोगी सूची अर्थ सहित दी गई है।

प्रत्येक पाठ के अन्त में भाषा व व्याकरण सम्बन्धी कुछ आधारभूत बातें अलग से समझाने का प्रयास भी निस्सन्देह प्रशंसनीय है। —युगान्तर, कलकत्ता

...रैपिडैक्स कोर्स ही एकमात्र ऐसा विस्तृत कोर्स है जो हर किसी को 60 दिन में अंग्रेजी बोलना व लिखना बिना किसी शिक्षक या स्कूल में गये सिखाने में सक्षम है। —नागपुर टाइम्स, नागपुर

...इसमें अंग्रेजी सिखाने की अभ्यास सामग्री इतने बढ़िया ढंग से दी गई है कि कान्वेंट स्कूलों में भी यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध हो सकती है। —दिनामनी, मद्रास

...वास्तव में यह एक बहुत ही उपयोगी कोर्स है। इसमें तमिल जानने वाले बगैर किसी परेशानी के ग्रेजुएट जैसी अंग्रेजी बोल सकते हैं। —सण्डे स्टैण्डर्ड मद्रास